॥ ओ३म् ॥

क़ुरआन

[मूल और भाषानुवाद]

[जिसमें अअ़राफ, अन्फ़ाल, तौबा, यूनस, हूद, यूसुफ, रअ़द और इब्राहीम ८ सूरतें हैं]

—:०:—

अनुवादक तथा सम्पादक—
मुहम्मद मीमांसा-मुहम्मद साहब का विचित्र जीवन,
देवदूत दर्पण (जव्त) आदि अनेक पुस्तकों के
लेखक, कुल्लियात आर्य मुसाफ़िर के
हिन्दी अनुवादक—
श्री प्रेमशरण जी प्रणत,
आर्य-प्रचारक।



प्रथम संस्करण

सर्वाधिकार सुरक्षित

Publishers:—
The Manager
Prem Pustakalaya Agra.

द्रष्टव्य ।

क़ुर्आन् का यह अनुवाद
श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के
आदेशानुसार माननीय महात्मा गान्धी के विचारों से
प्रेरित होकर हिन्दू जनता को क़ुर्आन् की शिक्षा का
परिचय कराने मात्र के उद्देश्य से तय्यार किया गया है।

Printer:—
J. S. Printing Press
Agra.

समर्पण



पतितोद्धार प्रेमी, शुद्धि और संगठन के सहायक
और हिन्दू जाति के सच्चे हितैषी, दानवीर
श्री सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला
के कर कमलों में यह पुस्तक सादर
समर्पित की जाती है। आशा है
कि वह इस भेंट को
अवश्य स्वीकार
करेंगे।

प्रेमशरण आर्य,

नम्र निवेदन ।

क़ुर्आन् का चतुर्थ खण्ड अपने सहृदय पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत करते हुए, बिलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थी होना अति आवश्यकीय प्रतीत होता है। और इसीलिये कुछ शब्द नम्र निवेदन के रूप में यहां प्रस्तुत किये जाते हैं, जिससे हमारी बिलम्ब विषयक विवशता पाठकों पर विदित होजावे।

क़ुर्आन् का सारा अनुवाद एक साथ छप जाता, परन्तु धन के अभाव से ऐसा नहीं हो सका और आगरे के जिस प्रेस को क़ुर्आन् के लिये पेशगी रुपया दिया था वह अभी तक न रुपये वापिस करता है और न पुस्तक ही छापता है। इसके अतिरिक्त "देवदूत दर्पण" पुस्तक के ज़ब्त हो जाने से भी भारी क्षति उठानी पड़ी; अन्यथा वह पुस्तक इतनी अच्छी थी कि उसकी अभी तक मांग बनी हुई है। सच पूछो तो "देवदूत दर्पण" विचित्र जीवन से भी प्रमाण पूर्ण पुस्तक थी, क्योंकि विचित्र जीवन में तो केवल मुहम्मद साहब का आलोचनात्मक जीवन दिखाया गया था परन्तु देवदूत दर्पण में ईसाई और मुसल्मानों के सभी मान्य पैग़म्बरों की कलई खोलकर रखदी गई थी और वह भी ऐसे सभ्य और प्रमाणिक ढंग से कि यदि धन होता और हमारी ओर से तनिक भी उद्योग किया जाता तो इसकी जब्ती रद्द हो सकती थी। वह तो दूर अबभी धन के अभाव से हमारे पास बहुतसा उपयोगी साहित्य रुका हुआ है। वह शनैः शनैः अपने प्रेमियों की कृपा और सहायता से ही प्रकाशित किया जा सकता है। आशा है हमारे आर्य साहित्यप्रेमी उदार सज्जन इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे।

विनीत—प्रेमशरण आर्य्य,

अनुवादक।

* ओम् *

सूरतुल् अअ़राफ़+

वसतुल् अन्ना–पारा, शेषांश ।

[मं० २, पारा ८, रु० १ । १०]

(१) [अलिफ़ लाऽम्मीऽम् स्वाद्]

नोट—इन अक्षरों के अर्थों के सम्बन्ध में मननशील मुसलमानों की मन्तव्य है कि इनका अर्थ केवल अल्लाह ही जानता है। फिर भी, कुछ मनुष्यों की कल्पना है कि अलिफ अल्लाह के लिये, लाम जिब्राईल के लिये और मीम मुहम्मद के लिये आते हैं * और कुछ लोग इन अक्षरों को इस अर्बी वाक्य के आदि अक्षर बतलाते हैं—"अमरा लि मुहम्मद सद्दीक़" जिसका अर्थ है, "इस प्रकार सच्चे मुहम्मद ने मुझ से कहा।"

+अअ़राफ का अर्थ है, बहिश्त और दोजख के मध्य की भेदक भित्ति। मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी की सातवीं साल से उनकी हिजरत के समय तक यानी सन् ६१६ ई० से ६२२ ई० तक के दर्मियान में यह आयत मक्के में उतरी है इसमें २४ रुकूअ् और २०६ आयतें हैं।

* तफसीर इतिक़ान अहमदी प्रेस से प्रकाशित के पृ० ४४६ पंक्ति २ में जलालुद्दीन सेवती लिखते हैं—"सूरे अअ़राफ पा० ८, रु० ८ का प्रारम्भ वर्तमान क़ुरआन में 'अलिफ लाऽम्मीऽम् स्वाद्' से होता है। यह वास्तव में केवल अलिफ लाऽम्मीऽम् तीन अक्षर थे उनमें एक अक्षर 'स्वाद' इस लिये बढ़ा दिया गया है कि इसमें नबियों के क़िस्सों का वर्णन है।

मो० त० क़ु० पृ० २४।

(२) किताबुन् उन्ज़िला इलैका फ़ला ऽ यकुन् फ़ी सद्रिका हरजुम्मिन्हु लि तुन्ज़िरा बिही व ज़िक्रा लिल्-मुअ्मिनीन् ॥

(हे पैग़म्बर ! यह) पुस्तक तुझ पर उतारी गई है । अतः इससे तेरा हृदय संकुचित न हो, जिससे कि तू इसके द्वारा (काफ़िरों को अल्लाह के आतङ्क की) सूचना दे; और विश्वासियों (ईमान वालों) को शिक्षा मिले ।

(३) इत्तबिऊ ऽ मा उन्ज़िला इलैकुम्मिर्रब्बिकुम् व ला ऽ तत्तबिऊ ऽ मिन् दूनिही औलियाऽआ, क़लीलऽम्मा ऽ तज़क्करून् ॥

जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से उतरा है, उसी पर चलो; और उसके अतिरिक्त अन्य मित्रों के पीछे मत चलो; परन्तु तुम कुछ कम ध्यान देते हो !

(४) व कम्मिन् क़र्यतिन् अह्लक्नाहा ऽ फ़ जा ऽ अहा ऽ बअ्सुना ऽ बयातन् औ हुम् क़ाइलून ॥

और, हमने कितने (ही) नगरों को नष्ट कर दिया ! फिर रात को या दोपहर को, जब कि वे (नगर-निवासी) निद्रा में निमग्न थे, उन पर हमारा प्रकोप पहुंचा ।

(५) फ़ मा ऽ काऽना दअ्वाहुम् इज़् जाऽअहुम् बअ्सुना ऽ इल्ला ऽ अन् क़ालू ऽ इन्ना ऽ कुन्ना ऽ ज़ालिमीन् ॥

बस, जिस समय, उन पर हमारा प्रकोप पहुंचा तो उनका यही एक आर्त्तनाद था, कि वे बोल उठे, "वस्तुतः हम ही अत्याचारी हैं।"

(६) फ़ लनस् अलन्नऽल्लज़ीना उर्सिला इलय्हिम् व लनस् अलन्नऽल् मुर्सलीन् ॥

फिर जिन लोगों की ओर पैग़म्बर प्रेषित किये गये थे, उनसे हम (क़यामत के दिन) अवश्य प्रश्न करेंगे; और स्वयं पैग़म्बरों से भी अवश्य पूछेंगे।

(७) फ़ लनक़ुस्सुन्ना अलय्हिम् बिइ़ल्मिन्व माऽ कुन्नाऽ ग़ाइ़बीन् ॥

फिर, हम उनको अपने ज्ञान से वृत्तान्त सुनावेंगे; और हम कहीं उनसे अनुपस्थित न थे।

(८) वऽल् वज़्नु यउ्मा इज़ि (नि) ऽल् .हक्क़ु, फ़मन् स़क़ुलत् मवाऽज़ीनुहू फ़ उलाइका हुमुऽल् मुफ़्लिहून ॥

और (कर्मों की) तोल, उस दिन, ठीक-न्यायतः-होगी। फिर जिनके (शुभ) कर्मों का बोझ भारी होगा, वही लोग नेक होंगे।

(९) व मन् ख़फ़्फ़त् मवाऽज़ीनुहू फ़ उलाइकऽल्लज़ीना ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् बिमा काऽऽनू बि आयातिना यज़्लिमून ॥

और, जो तोल में हलके हैं, उन्हों ने अपने जीवन (व्यर्थ) नष्ट किये; क्योंकि उन्हों ने हमारी आयतों पर अत्याचार किया।

(१०) व लक़द् मकन्नाकुम् फ़िऽल् अर्ज़ि व जअ़ल्नाऽ लकुम् फ़ीहाऽ मआऽयिशा, क़लीलऽम्माऽ तश्कुरून् ॥

और, हमने तुमको पृथिवी में स्थान दिया; और उसी में तुम्हारी जीविका स्थापित करदी; फिर भी तुम बहुत ही कम धन्यवाद देते हो !

[मंजिल २, पारा ८, रुकूअ़ २ । १५]

(१) व लक़द् ख़लक़्नाकुम् सुम्मा सव्वर्नाकुम् सुम्मा कुल्नाऽ लिल्मलाइकतिऽस्जुदूऽ लि आदमा फ़ सजदू इल्ला इब्लीस; लम् यकुम्मिन-स्साजिदीन् ॥

और, हमने तुम्हें पैदा किया; फिर सूरत दी; फिर फ़रिश्तों से कहा, "आदम के आगे सिर झुकाओ"—तो सिवाय शैतान के—जो प्रणाम करने वालों में नहीं था—सबने (श्रद्धा से) शिर झुकाया।

(२) क़ाऽला माऽ मनअ़का अल्ला तस्जुदा इज़् अमर्तुका, क़ाऽला अना ख़ैरुम्मिन्हु ख़लक़्तनी मिन्नाऽरिंव्व ख़लक़्तहू मिन्तीन् ॥

(उसने) कहा—"तुम को क्या प्रतिबन्ध था कि जब

मैंने आज्ञा दी,(तूने) सिजदा न किया,अर्थात् सिर न झुकाया ? वह बोला—"मैं इससे श्रेष्ठ हूँ; मुझ को तूने अग्नि से रचा है; और उसको मिट्टी से बनाया है।"

(३) क़ाऽला फ़ऽह् बित् मिन्हा फ़माऽ यकूनु लका अन्ततकब्बरा फ़ीहा फ़ऽख़्रुज् इन्नका मिन-स्साग़िरीन् ॥

(अल्ला ने) कहा—"तू उतर यहां से, तुझ को (ऐसा अवसर) न मिलेगा कि तू यहां अभिमान करे। अतः निकल; तू पामर है।"

(४) क़ाऽला अन्ज़िर्नीऽ इला यउ्मि युब्अ़सू.न् ॥

(उसने) कहा—"मुझे (उस समय तक) अवसर दे (जब-तक) कि लोग (क़यामत में) जी उठें।"

(५) क़ाऽला इन्नका मिनऽल् मुन्ज़रीन् ॥

(अल्लाह ने) आज्ञा दी—"तुझ को छुट्टी है।"

[६] क़ाऽला फ़ बिमाऽ अग़्वय्तनी ल अक़्उदन्ना लहुम् सिराऽतकऽल् मुस्तक़ीम् ॥

उसने कहा—"फिर जैसे तूने मुझे कुमार्गी बनाया है (वैसे ही उन्हें कुमार्गी बनाने के लिए) मैं उनकी प्रतीक्षा में तेरे सीधे मार्ग पर बैठूंगा।"

[७] सुम्मा ल आतियन्नहुम्मिन् बयनि अयदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अ़न् अयमानिहिम् व अ़न् शमाऽ इलिहिम्; वलाऽ तजिदु अक्सर हुम् शाकिरीन् ॥

फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिने से और बांये से आऊँगा; और तुझे उन में से प्रायः कोई कृतज्ञ न मिलेगा ।

[८] क़ाऽलऽख़ुज् मिन्हाऽ मज़ूऊमऽम्मद्हुरऽन्, लमन् तबिअका मिन्हुम् ल अम्लअन्ना जहन्नमा मिन्कुम् अज्मई़न् ॥

(अल्लाह ने) कहा—"निकल यहां से, धूर्त ! दूर भाग !! उन में जो कोई तेरे अनुयायी होंगे, मैं (उन्हें और) तुम्हें, सब को, एकत्रित करके दोज़ख़ को भरूंगा ।

[९] व या ३ आदमुऽस्कुन् अन्ता व ज़ौजुकऽल् जन्नता फ़कुलाऽ मिन् हयसु शिअ्तुमाऽ वलाऽ तक़्रबाऽ हाज़िहि-श्शजरता फ़ तकूनाऽ मिन-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और, हे आदम ! तू और तेरी स्त्री (दोनों) इस बहिश्त में बसो; और दोनों जहां से चाहो, खाओ । एवं उस वृक्ष के के पास न जाओ; अन्यथा तुम पापी हो जाओगे ।

[१०] फ़ वस्वसा लहुमऽ-श्शय्तानु लि युब्दिया लहुमाऽ माऽवूरिया अन्हुमाऽ मिन्सउ् आतिहिमाऽ व क़ाऽला माऽ नहाकुमाऽ रब्बुकुमाऽ अन् हाज़िहि-श्शजरति इल्लाऽ अन्तकूनाऽ मलकय्नि अउ्तकूना मिनऽल् ख़ालिदीन् ॥

फिर उनको शैतान ने बहका दिया; और जो (अंग उनका) गुप्त था, उन पर प्रगट कर दिया; और कहा—"तुम्हारे पालन-कर्त्ता ने इस वृक्ष के (ऊपर से) खाने को इसलिए वर्जित किया है कि ऐसा न हो कि तुम फ़रिश्ते बन जाओ अथवा अमर हो जाओ।

[११] व क़ाऽसम हुमा२ इन्नी लकुमाऽ लमिन-—नासिहीन्— ॥

और उनके सामने शपथ खाकर कहा कि मैं तुम्हारा शुभ-चिन्तक हूँ।

[१२] फ़दल्लाहुमाऽ बि गुरूरिन् फ़लम्माऽ ज़ाऽक़ऽ—श्शजरता बदत् लहुमाऽ सउआतु हुमा व तफ़िक़ाऽ यख़्सिफ़ानि अलय्हिमा मिव्वरक़िऽल् जन्नति, व नाऽदाहुमाऽ रब्बु हुमा२ अलम् अन्हकुमाऽ अ़न्तिल्‌ कुमऽ—श्शजरति व अक़ुल्लकुमा२ इन्न-श्शय्ताना लकुमाऽ अ़दुव्वुम्मुबीन् ।

फिर उनको अपने फ़रेब में फांस लिया; और जब उन दोनों ने उस वृक्ष से खाया; तो उन दोनों को अपने गुप्त स्थल (नग्न) दिखायी दिये। और, बहिश्त के पत्तों को सीं के अपने आपको छिपाने लगे, और उनके पालनकर्त्ता ने कहा—"(क्या) मैंने तुमसे (खाने के लिये) इस वृक्ष को वर्जित नहीं कर दिया था?, और तुम्हें कह न दिया था कि शैतान तुम्हारा साक्षात् शत्रु है?"

[१३] क़ाऽलाऽ रब्बनाऽ ज़लम्नाऽ अन्फुसना, व इल्लम् तग़्फ़िर्लनाऽ व तर्हम्नाऽ लनकूनन्ना मिनऽल् ख़ासिरीन् ॥

वह बोले, "हे हमारे पालकर्त्ता ! हमने अपनी अन्तरात्मा पर अत्याचार किया है। और, यदि तू हमको क्षमा न करे और हम पर दया न करे: तो हमारा सर्वनाश हो जायगा।

[१४] क़ाऽलऽह्बितूऽ बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अदुव्वुन्, व लकुम् फ़िऽल् अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्व मताउन् इला,हीन् ॥

कहा—"तुम यहाँ से उतरो, तुम परस्पर-एक एक के-शत्रु हुये, और तुम को भूमि पर निवास एवं एक विशेष समय तक भोजनार्थ पदार्थ मिलेंगे।"

[१५] क़ाऽला फ़ीहा तह्यऊना व फ़ीहा तमूतूना व मिन्हा तुख़्रजून ॥

कहा—"उसमें तुम जीवित रहोगे; और उसही में तुम मरोगे, एवं उसी से निकाले जाओगे।"

[पारा ८, मं० २, रु० २]

[१] या बनीऽ आदमा क़द् अन्ज़ल्ना अलयकुम् लिबासऽय्युवारी सऊ आतिकुम् वरीशन्; व लिबासु-

त्तक़्वा ज़ालिका खयूरुन्; ज़ालिका मिन् आयातिऽल्लाहि लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून् ॥

हे आदम के वंश! हमने तुम्हारे लिये वस्त्र उतारे, जिससे कि तुम अपने गुप्त अंगों को ढको और (जिस से) शोभा हो। और (यह स्मरण रक्खो कि) संयम के वस्त्र यह कल्याणकारी है, यह अल्लाह के चिन्ह हैं कि कदाचित् तुम्हें ध्यान हो।

[२] या बनी३ आदमा लाऽ यफ़्तिनन्ना कुमु-श्शायृतानु कमा३ अख़्रजा अबवयकुम् मिनऽल् जन्नति यन्ज़िउ अन्हुमाऽ लिबाऽसहुमा लियुरियाहुमा सव्आतिहिमा, इन्नहू यराकुम् हुवा व क़बीलुहू मिन् .हयसु. लाऽ तरउनहुम्; इन्नाऽ जअ़ल्नऽश्शयातीना अव्लियाऽ लिल्लज़ीना लाऽ युअ्मिनून् ॥

हे आदम के वंशजो! तुम को शैतान विचलित न करदे, जिस प्रकार कि उसने तुम्हारे माता-पिता (पूर्व पुरुषाओं) को (विचलित करके) बहिश्त से बहिष्कृत कराया, उनके वस्त्र उनसे उतरवाये, जिससे उनके गुप्त स्थल उन को दिखाई देने लगे, जहां से कि तुम उन्हें नहीं देख सकते, वह और उसकी जाति तुमको देखते हैं। हमने उन लोगों के, जो (इस्लाम पर) ईमान नहीं लाते, शैतान साथी नियत किये हैं।

[३] व इज़ाऽ फ़अ़लूऽ फ़ाऽहिशतन् क़ाऽलूऽ वजद्ना

अलय्हा ३ नाऽवऽल्लाहु अमरना बिहाऽ कुल् इनऽल्लाह
लाऽ यअ्मुरु बिऽल् फ़ह्शाऽइ अतक़ूलूना अलऽल्लाहि
माऽलाऽ तअ्लमून् ॥

और, जब कुछ निन्द्य (अश्लील) कर्म करें, (तो झट) कह देंगे कि हमने अपने पिता प्रपितामहों को इस प्रकार करते देखा और अल्लाह ने हमको इस (के करने) की आज्ञा दी है। (हे पैग़म्बर!) तुम इन्हें बतलाओ कि अल्लाह अश्लील आचरणों की आज्ञा नहीं देता; अल्लाह पर क्यों (ऐसे) असत्य आक्षेप लगाते हो, जो तुम्हें ज्ञात नहीं?

[४] कुल् अमरा रब्बी बिऽल् क़िस्ति व अक़ीमूऽ
वुजूहकम इ़न्दा कुल्लि मस्जिदि व्वऽद्ऊहु मुख्लिसीना
लहुद्दीना; कमाऽबदा अकुम् तऊदून् ॥

(हे पैग़म्बर! तुम इन्हें) बतला दो, मेरे पालनकर्त्ता ने न्याय (दीन इस्लाम की शिक्षा) की आज्ञा दी है, प्रत्येक नमाज़ के समय अपने मुख सीधे करो और केवल उसी को पुकारो। उसीके आज्ञानुवर्त्ती होकर ही तुम जैसा तुमको पहले बनाया, वैसे बनोगे।

[५] फ़रीक़ऽन् हदा व फ़रीक़ऽन् हक़्क़ा अलय्-
हिमु-फ़ज़लालतु, इन्नहुमुऽत्तख़ज़ुऽ-श्शयातीना अव्-
लियाऽआ मिन्दूनि-ल्लाहि व यह्सबूना अन्नहुम्मुह्तदून्॥

एक समुदाय को मार्ग बताया, और दूसरे समुदाय को

मार्ग-च्युत ठहराया, उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को सखा स्वीकार किया और [फिर भी] समझते हैं कि [ठीक] मार्ग पर हैं।

[६] या॰ बनी॰ आदमा खुज़ू॰ ज़ीनतकुम् इ॰न्दा कुल्लि मस्जिदिंव्वकुलू॰ वश्रबू॰ वला॰ तुस्रिफू॰, इन्नहू ला॰ युहिब्बुऽल् मुस्रिफ़ीन् ॥

हे आदम की औलाद! प्रत्येक नमाज़ के समय (वस्त्रों से) अपनी शोभा सजावट कर लिया करो * और खूब खाओ पीओ, और (व्यर्थ धन) मत उड़ाओ, (क्योंकि) वह (अल्लाह) (व्यर्थ) उड़ाने वालों से प्रसन्न नहीं होता।

(पारा आठवां मं० २, रुकूअ . ४ । ८)

(१) कुल् मन् हर्रमा ज़ीनतऽल्लाहिऽल्लती अख़्रजा लिइ॰बाऽदिही व-त्तय्यिबाति मिन-रिज़्क़ि; कुल् हिया

---

* सीरतुर्रसूल नामक मुहम्मद-चरित्र में कहा है कि अरब वासियों के हृदय में काबा तथा अन्य पवित्र स्थानों को अधिक प्रतिष्ठा पैदा करने के लिए कुरैश लोगों ने जलूस के समय में खाने पीने को मनाही कर दी थी और यह प्रथा प्रचलित कर दी थी कि मक्कावासियों से मांगे हुए कपड़ों के अतिरिक्त यात्रियों को कुछ न पहिनना चाहिये अथवा जो कपड़े वह अपने पहने हों उन्हें पवित्र समझकर अल्ला के अर्पण करदें। यही कारण था कि बहुत से हाजी इन पवित्र स्थानों का, नितान्त नंगे होकर दर्शन करते थे। इस आयत द्वारा यह प्रथा निषिद्ध निश्चित की —स०

लिल्लज़ीना आमनूऽ फ़िऽल् हयाति-द्दुन्याऽ ख़ालि सतय्यउमऽल् क़ियामति, कज़ालिका नुफ़स्सिलुऽल् आयाति लिक़उमि य्यअ्लमून् ॥

(हे पैग़म्बर! तुम इन लोगों से) पूछो कि अल्ला ने जो (वस्त्र-भोजनादि) सजावट की और खाने की पवित्र वस्तुएँ, अपने भक्तों के लिए, उत्पन्न की हैं, उन्हें किसने निषिद्ध किया? इनको कह दो कि जो लोग सांसारिक जीवन में (इन वस्तुओं पर) विश्वास रखते हैं कि उन्हींके लिए विशेषतः (यह वस्तुएं) क़यामत के दिन मिलेंगी। जिन लोगों को बोध है, उन्हें हम अपनी आयतें इस प्रकार (स्पष्ट रीति से) बतलाते हैं।

(२) कुल् इन्नमाऽ हर्रमा रब्बियऽल् फ़वाऽहिशा माऽ ज़हरा मिन्हाऽ वमाऽ बतना वऽल् इस्मा वऽल् बग़्या बिग़य्रिऽल् हक़्क़ि व अन्तुश्रिकूऽ बिऽल्लाऽ हिमाऽलम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानऽव्व अन्तक़ूलूऽ अलऽल्लाहि माऽलाऽ तअ्लमून् ॥

उन्हें कहो कि मेरे पालनकर्त्ता ने—अश्लील निर्लज्जता पूर्ण, कार्य जो प्रगट हों अथवा गुप्त, और पाप और व्यर्थ अत्याचार, और यह (बात) कि अल्ला के साथ किसी और को साझी (शरीक) करो जिसका उसने (कोई) प्रमाण नहीं उतारा, और यह कि अल्ला पर, जो तुम्हें विदित नहीं, ऐसा मिथ्या आक्षेप लगाओ, यह सभी बातें निषिद्ध ठहराई हैं।

(३) व लिकुल्लि उम्मतिन् अजलुन्, फ़इज़ाऽ जा३आ अजलु हुम् लाऽयस्तअ्ख़िरूना साऽअ़तव्वलाऽ यस्तक़्दिमून् ॥

और, प्रत्येक जाति की एक नियत अवधि है; और फिर जब उनकी अवधि आ पहुंचे तो, न एक घड़ी भर की देर करें और न शीघ्रता।

(४) या बनी३ आदमा इम्माऽ यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम्मिन्कुम् यक़ुस्सूना अ़लय्कुम् आयाती फ़मनिऽत्तक़ा व अस्लह़ा फ़लाऽ ख़ौफ़ुन् अ़लय्हिम् वलाऽहुम् यह़्ज़नून्॥

हे आदम की औलाद! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से कोई पैग़म्बर पहुंचे-तुमको मेरी आयतें सुनावें, तो जिसने सन्तोष और सुधार स्वीकार किया, उसे न भय है; और न वह (किसी प्रकार) संताप-संतप्त ही होगा।

(५) वऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बिआयातिना वऽस्तक्बरू अन्हा३ उलाऽइका अस्ह़ाबु-न्नाऽरि, हुम्फ़ीहा ख़ालिदून् ॥

और, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य समझीं और उनकी ओर से अभिमान किया, वह नारकीय हैं; और सदा वहीं रहेंगे।

(६) फ़मन् अज़्लमु मिम्मनिऽफ़्तरा अ़लऽल्लाहि कज़िबऽन् अउ कज़्ज़बा बिआयातिही, उलाऽइका यनाऽ

लुहुम् नसीबुहुम्मिनऽल् किताबि; ह़त्ता३ इज़ाऽ जा३ अत्-हुम् रुसुलुनाऽ यतवफ़्फ़ौनहुम् क़ाऽलू३ अय्ना माऽ कुन्तुम् तद्ऊना मिन्दूनिऽल्लाहि, क़ाऽलूऽ ज़ल्लूऽ अन्नाऽ शहिदूऽ अ़ला३ अन् फ़ुसिहिम् अन्नहुम् का ऽनूऽ काफ़िरीन् ॥

फिर उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा, जो अल्ला पर असत्य आक्षेप आरोपित करे अथवा अल्लाह के आदेश को असत्य ठहरावे ?—वह लोग, जिनकी प्रारब्ध पुस्तक में (लिखी) है, (उसे तो) प्राप्त करेंगे (ही) यहां तक कि जब हमारे प्रेषित (मृत्यु के दूत) उनके प्राण निकालने को पहुंचेंगे तो (उनसे) पूछेंगे— "वह (प्रतिमा कहां हैं जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त बुलाते थे ?" वह बतलायँगे—"हम से अलोप हो गईं," इस प्रकार वह अन्तरात्मा के विरुद्ध स्वयं साक्षी हो गये कि वह काफ़िर थे।

(७) क़ाऽलऽद् खुलूऽ फ़ी३ उममिन् क़द्ख़लत् मिन् क़ब्लि कुम्मिनऽल् जिन्नि वऽल् इन्सि फ़ि-न्नाऽरि, कुल्लमाऽ दख़लत् उम्मतुल्लअ़नत् उख़्तहाऽ; ह़त्ता३ इज़ऽऽदाऽरकूऽ फ़ीहाऽ जमीअ़ऽन् क़ाऽलत् उख़राहुम् लिऊलाहुम् रब्बनाऽ हा३उला३इ अज़ल्लू नाऽफ़आतिहिम् अ़ज़ाऽबऽन् ज़िअ़्फ़ऽम्मिन-न्नार । क़ाऽला लिकुल्लिन् ज़िअ़्फ़ुव्वला कि ऽलाऽ तअ़्लमून् ॥

(इस पर अल्ला क़यामत के दिन उनसे) कहेगा कि जिन्न और मनुष्य (आदि) अन्य जातियों के साथ, जो तुम से पूर्व हो चुकी हैं, नर्काग्नि में प्रवेश करो, जहां एक जाति प्रविष्ट हो कर दूसरी जाति को धिक्कारने लगे, यहां तक कि उसमें समस्त जातियां प्रवेश कर चुकें। (फिर) पश्चात् आने वाले पूर्व वालों के सम्बन्ध में कहने लगेंगे—"हे हमारे पालनकर्त्ता! हमको इन्हींने मार्ग भ्रष्ट किया है, अतः तू इनको दोज़ख़ाग्नि का दुःसह दुःख दूना दे।" (तब अल्ला) कहेगा—"दोनों को दूना है, परन्तु तुम नहीं जानते।

(८) व क़ाऽलत् ऊलाहुम् लि उख़्राहुम् फ़मा ऽ काऽना ऽ लकुम् अ़लय्ना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूकु ऽ ल् अ़ज़ा ऽ बा बिमाऽ कुन्तुम् तक्सिबून् ॥

और पहले आने वाले पश्चात् आने वालों के पश्चात् आने वालों से कहेंगे—"तुमको हमसे क्या उत्कृष्टता प्राप्त हुई? अतः अपनी करनी का फल चखो।"

[मंज़िल २ पा० ८ रु० ५]

[१] इन्न ऽल्लज़ीना कज़्ज़बू ऽ बि आयातिना ऽ व ऽ स्तक्बरू ऽ अ़न्हा ऽ ला ऽ तुफ़त्तहु लहुम् अब्वा ऽ बु—स्समा ऽ इ व ला ऽ यद्ख़ुलून ऽ ल् जन्नता हत्ता यलिज ऽ ल् जमलु फ़ी सम्मि ऽ ल् ख़िया ऽ ति; व कज़ालिका नज्ज़ि ऽ ल् मुज्रिमीन् ॥

निस्सन्देह, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य बतलाईं और उसके समक्ष गर्व किया, उनके लिए आस्मान के द्वार न खुलेंगे; और (वे उस समय तक) बहिश्त में प्रविष्ठ न किये जायँगे; यहाँ तक कि ऊँट सुई के नाके (छिद्र) में प्रवेश करेः और इस प्रकार हम अपराधियों को फल देते हैं।

[२] लहुम्मिन् जहन्नमा मिहाऽदुन्व मिन् फ़ौक़िहिम् ग़वाऽशिन्; व कज़ालिका नज्ज़ि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

उनका दोज़ख़ (नर्काग्नि) की दरियाँ देंगे और (उनको) (अग्नि के) ओढ़ने भी और इस प्रकार हम अत्याचारियों को बदला देते हैं।

[३] वऽल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलु-स्सालिहाति लाऽ नुकल्लिफु नफ़्सऽन् इल्लाऽ वुस्अहाः, उलाऽइका अस्हाबुऽल् जन्नति, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून् ॥

हम किसी पर उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं डालते; और जिन्होंने (अल्ला और उसके पैग़म्बर मुहम्मद अथवा मुहम्मदी मन्तव्यों पर) विश्वास किया और शुभ कर्म किये वह बहिश्त के मनुष्य हैं, वह वहाँ ही सर्वदा रहेंगे।

[४] व-न ज़ऊना माऽ फ़ी सुदूरिहिम्मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन्तहतिहिमुऽल् अन्हारु, व क़ाऽलुऽऽल् हम्दु-लिल्लाहिऽल्लज़ी हदानाऽ लिहाज़ाऽ वमाऽ कुन्नाऽ लिनह्तदिया लव्लाऽअन् हदानऽल्लाहु, लक़द् जाऽअत

रूमूलु रब्बिना बिऽल् हक़्क़ि; व नूदू२ अन्तिल् कुमुऽल् जन्नतु ऊरिस्तुमूहाऽ बिमाऽ कुन्तुम् तअ्मलून् ॥

और, हम उनके मनों से समस्त द्वेष दूर कर देंगे, उनके पैरों के नीचे नहरें बहेंगी और वह कहेंगे —"अल्लाह को-जिसने हमें यहां पहुंचा दिया है-धन्य है; क्योंकि हम सन्मार्ग ग्रहण न करते, यदि अल्लाह हमें सन्मार्ग न सुझाता। निस्सन्देह, हमारे पालन कर्त्ता के पैग़म्बर हमारे पास सत्य बात लेकर आये थे।" और यह आवाज आई कि यह बहिश्त है, तुम अपने कामों के परिणाम-स्वरूप उसके संरक्षक (नियत) हुए।"

[५-६] व नाऽ दा२ अस्हाबुऽल् जन्नति अस्हाऽब-न्नाऽरि अन् क़द् वजद्नाऽ माऽ वअ़दनाऽ रब्बुना हक़्क़ऽन् फ़हल् वजत्तुम्माऽ व अ़दा रब्बुकुम् हक़्क़ऽन्; क़ाऽलूऽ नअ़म्, फ़अज़्ज़ना मुअज़्ज़िनुन् बयनहुम् अन् लअ़्न-तुऽल्लाहि अ़ल-ज़्ज़ालिमीनऽल्लज़ीना यसुद्दूना अ़न् सबीलिऽल्लाहि व यब्ग़ूनहाऽ इ़वजऽन्, व हुम् बिऽल् आख़िरति काफ़िरून।

और, जन्नत वाले दोज़ख वालों को पुकारेंगे-जो हमारे पालनकर्त्ता ने हमसे प्रतिज्ञा की थी, उसे हम यथावत् प्राप्त कर चुके; और तुम भी,जो तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुमसे प्रतिज्ञा की थी, उसे यथावत् प्राप्त कर चुके।" (वे) उत्तर देंगे, "हां"

फिर उनमें से एक,घोषक * ढिंढोरा पीटेगा-"(उन) अन्याचारियों को अल्लाह की (ओर से) धिक्कार है कि जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें दोष ढूंढते हैं और जो आखरत (परलोक) पर विश्वास नहीं करते।"

(७) व बयन हुमाऽ हिजाब्बुन्, व अलऽल् अअ्राऽफ़ि रिजाऽलु य्यअ्‌रिफ़ूना कुल्लऽन् विसीमाहुम्, व नाऽ दउ्ऽ अस्हाऽबऽल् जन्नति अन्सलामुन् अलयकुम् लम् यद्‌खुलूहाऽ व हुम् य.त्मऊन्॥

और दोनों के मध्य में एक भित्ति ※ है और उसके सिरे पर मनुष्य है, जो प्रत्येक को (परस्पर) उसके चिन्ह♠ से पहचानते हैं और बहिश्त (स्वर्ग) वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम्हें सुख शान्ति हो। अभी बहिश्त में प्रविष्ट नहीं होंगे; यद्यपि वे उसके इच्छुक हैं।

(८) व इज़ाऽ सुरिफ़त् अब्साऽरुहुम् तिल्काऽअ अस्हाबि-न्नाऽरि क़ाऽलूऽ रब्बनाऽ लाऽ तज्अल्नाऽ मअऽल् क़उमि-ज़्ज़ालिमीन्॥

---

* कुछ इस घोषक अर्थात् ढिंढोरा पीटनेवाले से तात्पर्य इस्राफ़ील फ़रिश्ता बतलाते हैं।—स०

※ इस भित्ति का नाम 'अअ्‌राफ़' है वहां से बहिश्ती और दोज़खी दोनों देख पड़ेंगे।

♠ बहिश्त वाले अपने चेहरों के सफ़ेद रंग से पहचाने जायंगे और दोज़ख वाले अपने काले चेहरों से। —अनुवादक

और जब उनकी दृष्टि से दोज़ख़ वालों की ओर फिरी तो बोले, "हे हमारे पालनकर्ता ! हमको अत्याचारी लोगों के साथ न कर।"

[पारा ८, मं० २, रु० ६।६]

(१) व नाऽदा२ अस्हाबुऽल् अअ्राऽफ़ि रिजाऽलंऽ य्यअ्रिफ़ूनहुम् बिसीमाहुम् क़ाऽलूऽ मा२ अग़्ना अन्कुम् जम्उ़कुम् वमाऽ कुन्तुम् तस्तक्बिरून् ॥

और अअ्राफ़ अर्थात् भित्ति के सिरे वालों ने उन लोगों को पुकारा जिनको यह चिन्हों से पहचानते हैं। कहा, तुम को एकत्र करना क्या काम आया और जो तुम गर्व करते थे।

(२) अहा२उला२इऽल्लज़ीना अक़्सम्तुम् लाऽ यनाऽलुहुमुऽल्लाहु बिरह्मतिन्; उद्ख़ुलुऽल् जन्नता लाऽ ख़ौफ़ुन् अलैकुम् वला२ अन्तुम् तह्ज़नून् ॥

क्या यह वही लोग हैं, जिनके विषय में तुम शपथ खाके कहते थे कि उन पर अल्लाह अपनी अनुग्रह न करेगा। तुम बहिश्त में प्रवेश करो; तुम्हें न भय है और न तुम शोकातुर ही होगे।

(३-४) वनाऽदा२ अस्हाबु-न्नाऽरि अस्हाबऽल् जन्नति अन् अफ़ीज़ूऽ अलैनाऽ मिनऽल् मा२इ अउ मिम्माऽ रज़क़कुमुऽल्लाहु; क़ाऽलू२ इन्नऽल्लाहा हर्रमहुमाऽ

अलऽल्ल काफ़िरीनऽल्लज़ीनऽत्तख़ज़ूऽ दीनहुम् लह्वऽव्व लइ़बऽव्व ग़र्रत् हुमुऽल् ह़यातु-द्दुन्याऽ फ़ऽल् यउ्मा नन्साहुम् कमाऽ नसूऽ लिक़ाऽ यउ्मिहिम् हाज़ाऽ वमाऽ काऽनूऽ बिआयातिनाऽ यज्ह़दून ॥

और दोज़खी बहिश्त-वासियों को कहेंगे कि हम पर स्वल्प जल बहाओ अथवा जो भोजन तुमको अल्लाह ने प्रदान किया है। वह कहेंगे कि अल्लाह ने दोनों द्वार काफ़िरों पर बन्द किये कि जिन्होंने अपना मत हंसी और खेल समझ रक्खा है और (जो,) सांसारिक जीवन पर मुग्ध है अतः आज हम उनको उसी प्रकार भुला देंगे जैसे वह अपने उस दिन का मिलना भूले और जैसे वह हमारी आयतों को अस्वीकार करते थे।

(५) व लक़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अला इ़ल्मिन् हुदऽव्व रह़्मतल्लिक़उ्मिय्युअ्मिनून ॥

और हमने उनको पुस्तक पहुंचा दी है जो ज्ञान की विस्तृत विवेचना करती है और विश्वासियों को समुदाय को सन्मार्ग और दया दिखाती है।

(६) हल् यन्ज़ुरूना इल्लाऽ तअ्वीलहू; यउ्मा यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुऽल्लज़ीना नसूहु मिन्क़ब्लु क़द्जा-अत् रुसुलु रब्बिनाऽ बिऽल् ह़क़्क़ि, फ़हल्लनाऽ मिन्शु-फ़आऽअ फ़यश्फ़ऊऽ लनाऽ अउ् नुरद्दु फ़नअ्मला ग़य्रऽ-

ल्लज़ी कुन्नाऽ नअ्मलु; क़द् ख़सिरू३ऽ अन्फ़ुसहुम् वज़ल्ला अन्हुम्माऽ काऽनूऽ यफ़्तरून् ॥

क्या प्रतीक्षा करते हैं, केवल यही कि इसका स्पष्टीकरण (तावील) हो और जिस दिन इसका स्पष्टीकरण होगा तो जो उसको भूल रहे थे, कहने लगेंगे—"निस्सन्देह, हमारे पालन-के प्रेरित (पैगम्बर) सत्य सन्देश लाये थे। अब क्या कोई हमारा प्रशंसक है कि जो हमारे निमित्त प्रार्थना करे अथवा हम (संसार में) पुनः प्रेषित किये जावें, जिससे हम जो पूर्व करते थे, उसके विपरीत आचरण करें। निस्सन्देह, हमने आत्म हानि की और जिस मिथ्या (मन्तव्य*) को माना था, वह भी उनसे नष्ट हो गया।

[मंज़िल १ पा० ८ रु० ७।५]

(१) इन्ना रब्बकुमुऽल्लाहुऽल्लज़ी ख़लक़—स्समावाति वऽल् अर्ज़ा फ़ी सित्तति अय्याऽमिन् सुम्मऽस्तवा अ़लऽल् अ़र्शि युग् शिऽल्लयल—न्नहाऽरा यत्लुबुहू हसीसऽव-श्शम्सा वऽल् क़मरा व—न्नुजूमा मुसख़्ख़रातिन् ँ विअम्रिही अलाऽ लहुऽल् ख़ल्क़ु वऽल् अम्रु; तबारकऽल्लाहु रब्बुऽल् आ़लमीन् ॥

तुम्हारा पालनकर्त्ता अल्ला है, जिसने धरती और आकाश को छः दिन में रचा, फिर तख़्त (अर्श) पर आसीन

* अल्ला के अतिरिक्त अन्य को मानना।

हुआ, जो रात्रि को दिन से ढकता है और सूर्य, चन्द्रमा और तारागण उसकी आज्ञानुकूल आचरण करते हैं। सुनो, (सृष्टि का) सृजन और आज्ञा प्रदान करना उसी का कार्य है। अल्लाह का—जो सम्पूर्ण संसार का स्वामी है—बड़ा कल्याणकारी है।

(२) उद्ऊ रब्बकुम् तज़र्रुअंव्व ख़ुफ़्यतन् ; इन्नहू ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन् ॥

अपने पालनकर्ता को गिड़गिड़ाते हुए (विनयपूर्वक) और गुप्त रूप में (अथवा एकान्त में) आह्वान (आवाहन) करो; क्योंकि उसे अत्याचारी* प्रिय नहीं।

(३) व ला तुफ़्सिदू फ़िल् अर्ज़ि बअ्द इस्लाहिहा वद्ऊहु ख़ौफ़ंव्व तमअन् ; इन्न रहमतल्लाहि क़रीबुम्मिनल् मुहसिनीन ॥

और पृथिवी में, सुधार होने के उपरान्त उपद्रव उत्पन्न न करो, और उसका आशङ्का तथा आकांक्षा पूर्वक आवाहन करो। निस्सन्देह, अल्लाह का अनुग्रह उपकारियों के उपान्त उपस्थित है।

(४) व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्-रियाह बुश्रन्† बैना

---

*अत्याचारी का तात्पर्य उन लोगों से है जो प्रार्थना के समय परस्पर अशिष्टाचरण करें अथवा कोलाहलकारी स्वर में अथवा व्यर्थ में बार बार पढ़कर शब्दों की भरमार करें।

† कुरान की किन्हीं किन्हीं प्रतियों 'बुश्रन्' के स्थान पर 'नुश्रन्' है जिसके अर्थ 'बिछाना, फैलाना' (Spread abroad) होते हैं।

यदय् र.ह्मतिही; हत्ता२ इज़ा२ अक़ल्लत् स हा5ब5न् सिक़ा5 ल5न् सुक़्नाहु लिबलदिम्मय्यितिन् फ़ अन्ज़ल्ना5 बिहि5ल् मा२आ फ़ अख़्रज्ना5 बिही मिन् कुल्लि-स्समराति, कज़ालिका नुख्रिजु5ल् मउ्ता लअ़ल्लकुम् तज़क्करून् ॥

और, वही है जो पवन को पहले ही से अपनी प्रसन्नता का प्रशस्त समाचार देकर अपने अनुग्रह के साथ भेजता है, यहां तक कि वह थहराती हुई घटाओं वाले घन उठा कर (घुमड़ा घुमड़ा कर) मृतक (शुष्क) भूमि की ओर ले जाती हैं और फिर हम उससे वारि वर्षा करते हैं। इसी प्रकार हम (मुसलमानो) प्रलय के दिन मृतकों को उठायेंगे, जिससे तुम शिक्षा ग्रहण करो।

(९) व5ल् बलदु-त्तय्यिबु यख़्रुजु नबा5तुहू बि इज़्नि रब्बिही, व5ल्लज़ी ख़बुसा ला5 यख़्रुजु इल्ला5 नकिद5न्; कज़ालिका नुसर्रिफ़ुल् आयाति लिक़उ्मि-य्यश्कुरून् ॥

उर्व्वरा भूमि बनस्पति को अपने पालनकर्त्ता की आज्ञा से उत्पन्न करती है, और जो निकृष्ट है, वह कुछ उत्पन्न नहीं करती। हम अपनी आयतों का अल्पांश-मात्र उलट फेर कर उस जाति के सन्मुख वर्णन करते हैं जो कि धन्यवादी हैं।

[मं० २, पारा ८, रु० ६।८]

(१) लक़द् अर्सल्ना5 नूह5न् इला क़उ्मिही

फ़क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ; इन्नीऽ अख़ाऽफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ाऽबा यौमिन् अ़ज़ीम् ॥

निस्सन्देह, हम ही ने नूह ❀ को उनकी जाति वालों के पास (पैग़म्बर बना कर) भेजा तो उन्हों ने (लोगों को जाकर) समझाया कि भाइयो ! अल्लाह ही की उपासना करो; उसके अतिरिक्त अन्य (कोई) तुम्हारा उपास्य नहीं। (और यदि तुम मेरी आज्ञा न मानोगे तो) मुझ को तुम्हारे सम्बन्ध में (प्रलय के) बड़े (भारी) प्रकोप का भय है। वह लोग, जो उस की जाति में पैदा हुए थे, कहने लगे कि हमारे निकट तो तुम बिल्कुल भ्रम में पड़े हो।

(२) क़ाऽलऽल्मलउमिन् क़ौमिहीऽ इन्नाऽल नराका फ़ी ज़लालिम्मुबीन् ॥

उसकी जाति के मुखिया उससे कहने लगे "हम तुझे देखते हैं, तू साक्षात् भ्रान्त है।"

❀ नूह, मुसल्मानों के मतानुसार, उन छः पैग़म्बरों में से एक था, जिन्हे इलहाम मिला है। यद्यपि उसने अपने इलहाम को पुस्तक का रूप नहीं दिया। आदम, शुएब, उदरीस के पश्चात् वह प्रथम पैग़म्बर था। अल्जमख़शरी का कथन है कि नूह बढ़ई था क्योंकि उसने नौका निर्माण किया और ५० वर्ष की आयु में पैग़म्बर बना। कोई ४० वर्ष की आयु में बतलाते हैं। विशेष विवरण हमारी पुस्तक 'देवदूतदर्शन' पढ़ने वालों को विदित होगा। —अनुवादक

(३) क़ा़ला या क़ौ मि लय़्सा बी ज़लालतुंव्वला किन्नी रसूलुम्मिर्रब्बि ल् आलमीन ॥

वह बोले, "हे जातीय पुरुषो ! मैं किञ्चित् भ्रम में नहीं। परन्तु संसार के स्वामी का भेजा हुआ हूँ।"

(४) उबल्लिग़ु कुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व अअ्लमु मिनऽल्लाहि माऽलाऽ तअ्लमून ॥

और अपने पालनकर्त्ता के सन्देश तुम्हें पहुंचाता हूँ और [तुम्हें] उपदेश करता हूँ; और अल्लाह की ओर से [बताई हुई ऐसी २] बातें जानता हूं, जो तुम नहीं जानते।

(५) अ व अजिब्तुम् अन् जाऽअकुम् ज़िक्रुम्मिर्रब्बि-कुम् अ़ला रजुलिम्मिन् कुम् लियुन्ज़िरकुम् वलितत्तक़ू वलअ़ल्लकुम् तुर्हमून ॥

क्या तुम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से तुम्हीं में से एक मनुष्य † के द्वारा शिक्षा आई है, जिसने वह तुम्हें भय सुनाये और जिससे तुम संयम से रहो और कदाचित् तुम पर अनुग्रह हो।

(६) फ़ कज़्ज़बूहु फ़ अन्जय़्नाहु वल्लज़ीना मअ़हू फ़िल् फ़ुल्कि व अग़रक़्नऽल्लज़ीना कज़्ज़बू बि आयातिनाऽ; इन्नहुम् काऽनूऽ क़ौमन् अ़मीन ॥

† क्योंकि 'आद' यह लोग कहते थे कि यदि अल्लाह को इच्छा होती तो वह मनुष्य न भेजता; प्रत्युत एक फ़रिश्ता भेज देता। पर उपास्यों के समय में ऐसा कोई दृष्टान्त नहीं था।

तब उन्होंने उसे झूठा बताया, अतः हमने उसको और जो उसके साथ नौका में थे, उनकी रक्षा की; और उन्हें जो हमारी आयतों को असत्य बतलाते थे—डुबो दिया; (क्योंकि) वह मनुष्य थे ही अन्धे।

(पारा आठवां मं० २, रुकूअ ९।८)

(१) व इला आऽदिन् अख़ाहुम् हूदऽन्; क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू; अफ़लाऽ तत्तकून् ॥

और आद* की ओर उनके भाई हूद† को भेजा। (उसने) कहा, "हे भाइयो! अल्लाह की आराधना करो। उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं। क्या तुम को भय नहीं?"

(२) क़ाऽलऽल् मलउऽल्लज़ीना कफ़रूऽमिन् क़ौमिही इन्ना ल नराका फ़ी सफ़ाहतिंव इन्ना ल नज़ुन्नुका मिनऽल् काज़िबीन् ॥

उसकी जाति में—जो अविश्वासी मुखिया थे—बोले, "हमें

*आद अरब की प्राचीन और बलशाली जाति थी उसका मूर्ति पूजा में महान विश्वास था।

†हज़रत हूद इसी आदि जाति के सुधार के लिए भेजे हुए पैग़म्बर कहे जाते हैं इनका विशेष हाल 'पैग़म्बर प्रकाश' में दिया जायगा।

तो निश्चय पूर्वक देखते हैं कि तुझमें बुद्धि नहीं और हमारे विचार में तू झूठा है।"

(३) क़ाऽला या क़ौ्मि लय्सा बी सफ़ाऽहतुन्वला किन्नी रसूलुम्मिर्रब्बिऽल् आलमीन् ॥

(नूह) बोला—"हे जाति वालों! मैं कोई निर्बुद्धि नहीं; किन्तु मैं संसार के स्वामी का प्रेरित (पैग़म्बर) हूं।

(४) उबल्लिग़ु कुम् रिसालाति रब्बी व अनाऽ लकुम् नाऽसिहुन् अमीन् ॥

मैं तुम्हें तुम्हारे पालनकर्ता के सन्देश पहुंचाता हूँ और विश्वसनीय उपदेष्टा हूँ।

(५) अ व अजिब्तुम् अन्जा रअकुम् ज़िक्रुम्मिर्रब्बिकुम् अला रजुलिम्मिन् कुम् लियुन्ज़िर कुम् वऽज़्कुरूऽ इज़् ज अलकुम् खुलफ़ाअा मिन् ँ वअ्दि क़ौ्मि नूहिव्व-ज़ाऽद कुम् फ़िऽल् ख़ल्क़ि वस्तृतन्, फ़ऽज़्कुरूर आलार अऽल्लाहि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लहून् ॥

क्या तुम आश्चर्य करते हो कि तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हीं में से एक मनुष्य के द्वारा शिक्षा आई कि (वह) तुमको (अल्लाह के आतंकर का) डर सुनावे और स्मरण रक्खो कि किस प्रकार उसने तुमको नूह की जाति के पश्चात् (उसका उत्तराधिकारी) मुखिया बना दिया और उसने तुम्हें शरीर में विशाल कर दिया। अतः अल्लाह

के उपकारों का स्मरण करो, कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

(६) क़ाऽलूऽ अजिअ्तनाऽ लिनअ्बुदऽल्लाहा वह्दहू व नज़र माऽ काऽना यअ्बुदु आबाऽउनाऽ, फ़अ्तिनाऽ बिमा तइ़दुनाऽ इन्कुन्ता मिन-स्सादिक़ीन् ॥

बोले—"क्या तू हमारे समीप इसलिए आया कि हम केवल अल्लाह की आराधना करें और (उन देवों का) परित्याग करदें, जिनको हमारे पुरुषा (पिता-प्रपितामहादि) पूजते रहे ? फिर यदि तू सच्चा है, तो वह वचन लेआ, जिससे हमें भय दिखाता है।

(७) क़ाऽला क़द् वक़अ़ा अ़लय्कुम्मिर्रब्बिकुम् रिज्सुन्व ग़ज़बुन्; अतुजाऽदिलूननी फ़ीऽ अस्माऽइन् सम्मय्तुमूहाऽ अन्तुम् व आबाऽउकुम्माऽ नज़्ज़लऽल्लाहो बिहामिन् सुल्तानिन् फ़ऽन्तज़िरूऽ इन्नी मअ़कुम्मिनऽल् मुन्तज़िरीन् ॥

उसने कहा—"तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता के यहां से आपत्ति और कोप प्रगट हो चुका है। मुझ से अनेक नामों के लिए—जो तुमने और तुम्हारे पुरुषाओं (पिता-प्रपितामहादि) ने रख लिए हैं, जिन का अल्लाह ने कोई प्रमाण पत्र नहीं उतारा—क्यों विवाद करते हो? अतः (प्रकोप को) प्रतीक्षा करो और मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।"

(८) फ़ अन्जय्नाहु वऽल्लज़ीना मअ्हू बिर्ह्मतिम्मिनाऽ व क़तअ्नाऽ दाऽबिरऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ वमाऽ काऽनूऽ मुअ्मिनीन् ॥

फिर हमने उसको और जो उसके साथ थे,उनको अपने अनुग्रह से बचा लिया और जिन्हों ने हमारी आयतों को असत्य ठहराया था;और जो विश्वासियों में नहीं थे,उनको समूल नष्ट किया ।

[मं० २ सिपारा ८ रुकूअ १०।१२]

(१) व इला समूदा अख़ाऽहुम् सालिह्ऽन् क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़य्रुहू; क़द् जाऽअत् कुम् बय्यिनतुम्मिर्रब्बिकुम्; हाज़िही नाऽक़तुऽल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ज़रूहाऽ तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िऽल्लाहि वलाऽ तमस्सूहाऽ बिसूऽइन् फ़ यअ्ख़ुज़ कुम् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और हमने समूद (समुदाय) की ओर उनका सगा सालह भेजा । उसने कहा—"हे जातिवालो ! अल्लाह की आराधना करो। उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं। तुमको तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से प्रमाण प्राप्त हो चुका है। यह ऊँटनी अल्लाह की तुम्हारे लिए प्रमाण है। अतः इसको छोड़ दो कि यह अल्लाह की भूमि में चरे; और

इसे कष्ट पहुंचाने के नाम पर स्पर्श (तक) मत करो; अन्यथा दैवी दण्ड का दुःख तुम्हें निग्रहीत करेगा।

(२) वऽज़्कुरू२ इज़् जअलकुम् खुलफ़ा२आ मिन् बअ्दि आऽदिं व्व बव्वअकुम् फ़िऽल् अर्ज़ि तत्तख़िज़ूना मिन्सुहूलिहाऽ कुसूरऽव्व तन्हितूनऽल् जिबाऽला बुयूतऽन्, फ़ऽज़्कुरू२ आला२अऽल्लाहि वलाऽ तअ्सउऽ फ़िऽल् मुफ़्सदीन् ॥

और वह (समय) स्मरण करो जब कि तुमको आद के पश्चात् उन (लोगों) का उत्तराधिकारी बनाया और भूमि में निवास दिया। इससे स्वच्छ भूमि में दुर्ग रचते हो और पर्वतों को काट काट कर गृह बनाते हो। अतः अल्लाह के अनुग्रह का स्मरण करो और पृथिवी में उत्पात उत्पन्न न करते फिरो।

(३) क़ाऽलऽल् मलऽउल्लज़ीनऽस्तक् बरूऽ मिन्क़उ-मिही लिल्लज़ीनऽस्तुज़् इ.फूऽ लिमन् आमना मिन्हुम् अ तअ्लमूना अन्ना सालिहऽम्मुर्सलुम्मिरब्बिही; क़ाऽलू२ इन्नाऽ बिमा२ उर्सिला बिही मुअ्मिनून् ॥

उसकी जाति के वह प्रधान पुरुष—जिन्हें अहंकार था, जाति के उन निर्बल पुरुषों से, जो विश्वास रखते थे—कहने लगे, "यह तुमको विदित है कि सालह अपने पालनकर्त्ता का प्रेषित (पैग़म्बर) है।" वह बोले—"हमको, जो उस पर और उसके द्वारा भेजा गया है, विश्वास है।"

(४) क़ाऽलऽल्लज़ीनऽस्तक्बरू२ इन्नाऽ बिऽल्लज़ी२ आमन्तुम् बिही काफ़िरून् ॥

परन्तु जो अहंकारी थे, कहने लगे—"जो तुमने विश्वास किया, सो हम स्वीकार नहीं करते।"

(५) फ़ अक़रुऽ—न्नाऽक़ता व अ़तवुऽ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् व क़ाऽलूऽ या सालिहुऽअ्तिनाऽ बिमाऽ त.इ-दुनाऽ इन्कुन्ता मिनऽल्मुर्सलीन् ॥

फिर (अल्लाह की) ऊंटनी (के पैरों) को काट डाला, और अपने पालकर्त्ता की आज्ञा से पराङ्मुख हो गये, और कहने लगे—"हे सालह! यदि तू प्रेषित (पैग़म्बर) है, तो जो भय दिखलाता है, उसे लेआ।"

(६) फ़ अख़ज़तहुमु—र्रज्फ़तु फ़ अस्ब.हूऽ फ़ी दाऽरि-हिम् जासिमीन् ॥

तब भूकंप * ने उन पर आक्रमण किया; अतः प्रातःकाल ही को अपने गृह में औंधे गिर कर मर गए।

(७) फ़ तवल्ला अ़न्हुम् व क़ाऽला या क़ौमि लक़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाऽलता रब्बी व नसह्तु लकुम् वला किल्लाऽ तु.हिब्बून—न्नासि.हीन ॥

फिर (सालहने) उनसे मुंह मोड़ा और कहा "हे जाति-वालो! मैं तुमको अपने पालनकर्त्ता का सन्देश पहुंचा चुका

* किन्हीं किन्हीं का कथन है कि यह जिब्राईल का शब्द था।

और (मैंने) तुम्हारा शुभचिन्तन किया, परन्तु तुम्हें शुभ-चिन्तक प्रिय नहीं लगते।

(८) व लूत्ऽन् इज़्क़ाऽला लिक़ौमिही ३ अतअ्तूनऽ फ़ाऽहिशता माऽ सबक़कुम् बिहाऽ मिन् अ हदिम्मिनऽ आलमीन ॥

और [स्मरण करो, जब] लूतने अपनी जाति से कहा "क्या तुम ऐसा अश्लील [निन्द्य] कार्य करते हो जो तुम से पूर्व संसार में किसी ने नहीं किया।

(९) इन्नकुम् लतअ्तून-र्रिजाऽला शह्वतम्मिनदूनि-न्निसाऽइ; बल् अन्तुम् क़ौमुम्मुस्रिफ़ून् ॥

तुम तो महिलाओं से मुख मोड़ कर, मदनमत्त हो, मनुष्य पर मरते हो; किन्तु तुम लोग मर्यादा पर स्थिर नहीं रहते।

(१०) व माऽ कानऽ जवाऽबा क़ौमिही ३ इल्लाऽ अन्क़ाऽलू ३ अख़्रिजूहुम्मिन् क़र्यतिकुम्, इन्नहुम् उनाऽसुय्यत तह्हरून् ॥

और उसकी जाति-वालों ने कुछ उत्तर नहीं दिया; परन्तु [इसके विपरीत परस्पर यह] कहने लगे कि इन्हें अपने नगर से निकालो; क्योंकि ये पवित्रता चाहते हैं।"

(११) फ़ अन्जय्नाहु व अहलहू ३ इल्लऽऽम्रा अतहू, काऽनत् मिनऽल् ग़ाबिरीन् ॥

फिर हमने उसको और उसके गृहियों की रक्षा की, परन्तु उसकी स्त्री मरनेवालों में सम्मिलित हो गई।

(१२) व अम्तर्ना ऽ अलयहिम्मतरऽन्, फ़ऽन्ज़ुर् कयफ़ा का ऽना आऽक़िबतुऽल्मुजिमीन् ॥

और इन पर [पत्थरों का] मेह बरसाया, अतः देख, अपराधियों का क्या अन्त हुआ !

[मंज़िल १ पा० ८ रु० ११|६]

(१) व इला मद्यना अख़ाऽहुम् शुअ्यबऽन् ; क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़य्रुहू; क़द् जा२अत्कुम् बय्यिनतुम्मिर्रब्बिकुम् फ़अव्फ़ुऽल्क़ल् कय्ला वऽल् मीज़ाऽना वलाऽतब्ख़सुऽन्नाऽसा अश्या२ अहुम् वलाऽ तुफ़्सदूऽ फ़िऽल् अर्ज़ि बअ्दा इस्लाऽहिहाऽ; ज़ालिकुम् ख़य्रुल्लकुम् इन्कुन्तुम्मुअ्मिनीन् ॥

और मदियनों * में हमने उनके भाई शुऐब को (पैग़म्बर बना कर) भेजा। उसने कहा—"हे जातिवालो ! अल्लाह की आराधना करो। उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं। तुमको तुम्हारे पालकर्त्ता की ओर से प्रमाण प्राप्त हो चुका है। अतः नाप तोल पूरी करो, और मनुष्यों को उनकी वस्तुएँ न्यून मत दो; और न पृथिवी में ही, उसके सुधार के

* मिदियन है जाज में एक नगर था। वहां के निवासी मदियन कहलाते थे।

उपरान्त, उपद्रव उत्पन्न करो, यदि तुमको विश्वास है। यह तुम्हारे लिए हितकर है।

(२) वलाऽ तक़्उ़दूऽ बिकुल्लि सिराऽतिन् तूइ़दूना व तसुद्दूना अ़न् सबीलिऽल्लाहि मन् आमना बिही वत-ब्ग़ूनहाऽ इ़वजऽन्, वऽज़्कुरूऽ इज़् कुन्तुम् क़लीलऽन् फ़क़स्सरकुम् वऽन्जुरूऽ कय्फ़ा काऽना आ़ऽक़िबतुऽल् मुफ़्सदीन् ॥

और प्रत्येक मार्ग पर न बैठो और अल्लाह के मार्ग से उनको, जो उस पर विश्वास लाते हैं, भय दिलाते हुए और उसमें दोष ढूँढते हुए न रोको; और उस समय का स्मरण करो जब कि तुम अल्प संख्यक थे, तो तुमको (अल्लाह ने) बहु संख्यक किया और देखो अन्त में उत्पातियों की कैसी अवस्था हुई !

(३) व इन् काऽना ताऽइफ़तुम्मिन्कुम् आमनूऽ बिल्लज़ीऽ उर्सिल्तु बिही व ताऽइफ़तुल्लम् युअ्मिनूऽ फ़ऽस्बिरूऽ हत्ता यह़्कुमऽल्लाहो बय्नना व हुवा ख़य्रूऽल् हाकिमीन् ।

और जो मेरे हाथ भेजा गया है, उसे यदि तुममें से एक समुदाय ने स्वीकार किया है और दूसरे ने नहीं, तो उस समय तक धैर्य धारण करो जब तक कि अल्लाह हमारे मध्य निर्णय करे और वह सर्वोत्तम न्यायकारी है।

पारा [९] क़ालऽल्मलाऽ

(४) क़ाऽलऽल् मलउऽल्लज़ीनऽस्तक्बरूऽमिन् क़ौ-मिही लनुख़्रिजन्नका या शुअ़ैबु वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअ़का मिन् क़र्यतिनाऽऔ लतऊ़दुन्ना फ़ी मिल्लतिनाऽ, क़ाऽला अव लौ कुन्ना कारिहीन् ॥

उसकी जाति के वह लोग—जो कुलीन थे—कहने लगे, "हे शुऐब ! हम तुझको और उनको—जिन्हों ने तेरे साथ विश्वास किया है—अपने नगर से निश्चय बाहर निकाल देंगे; अन्यथा तुम हमारे मत में पुनः आजाओ !" उन्होंने उत्तर दिया—"क्या, हम उससे विमुख हों तो भी ?"

(५) क़दिऽफ़्तरय्नाऽ अ़लऽल्लाहि कज़िबऽन् इन् उ़द्नाऽ फ़ी मिल्लतिकुम् बअ़्दा इज़् नज्जानऽऽल्लाहु मिन्हाऽ; वमाऽ यकूनु लनाऽ अन्नऊ़दा फ़ीहाऽ इल्लाऽ अय्यशाऽअऽल्लाहु रब्बुनाऽ; वसिअ़ा रब्बुना कुल्ला शय्इन् इ़ल्मऽन्; अ़लऽल्लाहि तवक्कल्नाऽ; रब्बनऽऽ-फ़्तह् बय्नननाऽ व बय्ना क़ौमिनाऽ बिऽल्ह़क़्क़ि व अन्ता ख़ैरुल् फ़ाऽतिहीन् ॥

यदि हम तुम्हारे मत में पुनः मिल जायें तो हम अल्लाह पर असत्याक्षेप आरोपित करेंगे। जब अल्लाह हमको उससे

मुक्त कर चुका तो हमारा काम नहीं कि उसमें पुनः आवें। परन्तु (यदि) कभी हमारा पालक अल्लाह चाहे (तो आसकते हैं) हमारे पालक के ज्ञान में प्रत्येक वस्तु का बोध है; हमने अल्लाह पर विश्वास किया है। हे पालनकर्ता! हमारे और हमारी जाति के मध्य न्यायतः निर्णय कर; और तू सर्वोत्तम न्यायाधीश है।

(६) व क़ाऽलऽल् मलउऽल्लज़ीना कफ़रूऽ मिन् क़ौमिही लइनिऽत्तबअ्तुम् शुअय्बऽन् इन्नकुम् इज़ऽल्ल ख़ासिरून ॥

और उसकी जाति के कुलीन लोग, जो काफ़िर थे, कहने लगे—"यदि तुम शुऐब (की शिक्षा) के शरणागत हुए तो निश्चय नष्ट हुए।

(७-८) फ़ अख़ज़तहुम्-र्रज्फ़तु फ़ अस्बहू फ़ी दाऽरिहिम् जासिमीनऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ शुअय्बऽन् कअल्लम् यग़्नउऽ फ़ीहाऽ, अल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ शुअय्बऽन् काऽनूऽ हुमुऽल् ख़ासिरीन् ॥

अतः अ[illegible] से एक आंधी ने उन पर आक्रमण किया और प्रातः काल वे अपने गृहों में मृतक और औंधे पड़े पाये गये। वह—जिन्होंने शुऐब को दोषी ठहराया—ऐसे हो गये, जैसे (मानो) वहां कभी न थे। जिन्होंने शुऐब को दोषी ठहराया, वही नष्ट हुए।

(९) फ़ तवल्ला अन्हुम् व क़ाऽला या क़ौमि लक़द्

अब्लग़ुतुकुम् रिसालाति रब्बी व नसह़्तु लकुम्, फ़कय्फ़ा आसा अ़ला क़ौ़मिन् काफ़िरीन् ॥

फिर वह उनसे पृथक् हुआ और बोला "हे जातीय पुरुषो! तुमको मैं अपने पालनकर्ता का प्रतिशासन प्रदान कर चुका और तुम्हें शुभ शिक्षा भी सुना चुका हूँ, फिर मैं क्यों अविश्वासी लोगों से शोकातुर होऊं ?"

[मंजिल २, पारा ६, रुकुअ़ १२ । ६]

(१) व मा अर्सल्नाऽ फ़ी क़र्यतिम्मिन्नबिय्यिन् इल्लाऽ अख़ज़्नाऽ अह़्लहाऽ बिऽल् बअ्साइ वँ-ज़्ज़र्राइ लअ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रऊ़न् ॥

और हमने किसी नगरी में नबी नहीं भेजा; जब तक कि हमने वहां के लोगों को क्रोध और विषाद के पाश में ग्रसित न किया हो, (जिससे) कदाचित् वह घिघियावें।

(२) सुम्मा बद्दल्नाऽ मकाऽन-स्सय्यिअतिऽल् ह़सनता ह़त्ता अ़फ़उऽव्व क़ाऽलूऽ क़द् मस्सा आबाअ अनऽज़्ज़र्राउ व-स्सर्राउ फ़अख़ज़्नाहुम् बग़्ततव्वहुम् लाऽ यश्उ़रून् ॥

फिर हमने उनकी बुराई को भलाई के रूप में परिवर्तित कर दिया; यहां तक कि उनकी वृद्धि हुई और वह कहने लगे कि हमारे पिता-प्रपितामहादि को भी हानि और प्रसन्नता प्राप्त होती रही है। अतः हमने उन पर अकस्मात् आक्रमण किया और उन्हें ज्ञात न था।

(३) वलउ् अन्ना अह्लऽल् कुरा२ आमनू वऽत्तक़ुउऽ लफ़तह्नाऽ अलयहिम् वरकातिम्मिन-स्समाऽइ वऽल् अर्ज़िवला किन् कज़्ज़बूऽ फ़ अख़ज़्नाहुम् बिमाऽ काऽनूऽ यक्सिबून् ॥

और कभी इन नगरों के निवासी हमारा विश्वास और भय करते तो हम उन पर, निस्सन्देह, आकाश और पृथिवी की आशीर्वादें खोल देते; परन्तु वे हमारी आयतों को असत्य निश्चित करने लगे। इसलिए हमने उनसे उनकी कृति का प्रतिकार ग्रहण किया।

(४) अ फ़ अमिना अह्लुऽल् कुरा२ अ य्यअ्तिय हुम् वअ्सुनाऽ वयाऽतऽव्वहुम् नाऽइमून ॥

अतः क्या उन नगरों के निवासी निर्भय हैं कि उन पर हमारा प्रकोप सायंकाल के समय, जब कि वे सोते हों, नहीं आवेगा ?

(५) अव अमिना अह्ऽल् कुरा२ अय्यअ्तियहुम् यअ्सुनाऽ ज़ु,हऽव्वहुम् यलअबून ॥

अथवा क्या (इस बात से) नगर-निवासी निर्भय हैं कि हमारा प्रकोप उन पर प्रातःकाल—दिन चढ़े—जब खेलते हों, नहीं आवेगा ?

---

*यह आयत उस अकाल की ओर संकेत करती है जो मक्का में पड़ा था और जिसका वर्णन १२७ वीं आयत में आगे आता है।

(६) अ फ़ अमिनूऽ मक्रऽल्लाहि, फ़ लाऽ यअ्मनु मक्रऽल्लाहि इल्लऽल् क़ौमुऽल् ख़ासिरून् ॥

क्या, फिर, अल्लाह के कपट से निर्भय हो गये ?—अतः उन लोगों के अतिरिक्त—जो नष्ट होंगे—अन्य लोग अल्लाह के कपट से सुरक्षित नहीं।

[मं० २, पारा ६, रु० १२ । ६]

(१) अ व लम् यह्दि लिल्लज़ीना यरिसूनऽल् अर्ज़ा मिन् ॅ व अ्दि अह्लिहा२ अल्लउ् नशा२उ असब्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम्, व न.त्बउ अ़ला कुलूबिहिम् फ़हुम्लाऽ यस्मऊन् ॥

क्या उन लोगों से शिक्षा नहीं मिली, जिन्होंने पृथिवी पर, उनके अधिकारियों के पश्चात्, स्वत्व स्थिर किया, जिससे यदि हम चाहें तो उनको उनके पापों के कारण पकड़ें और उनके मनों को मुद्रायुक्त (मुहर) करदें जिससे वह सुन न सकें।

(२) तिल्कऽल्कुरा नकुस्सु अ़लय्का मिन् अन् ॅ बाइहाऽ, व लक़द् जा२अत् हुम् रुसुलुहुम् बिऽल् बय्यिनाति फ़ माऽ कानूऽ लियुअ्मिनूऽ बिमाऽ कज़्ज़बूऽ मिन् क़ब्लु, कज़ालिका यत्बउऽल्लाहु अ़ला कुलूबिऽल् काफ़िरीन् ॥

यह नगर है कि जिसका कुछ समाचार हम तुमको सुनाते हैं: और उनके समीप उनके पैग़म्बर प्रमाण लेकर पहुंच चुके। अतः यह कदापि नहीं हुआ कि जो बात पहले मिथ्या कह चुके, उस पर विश्वास करलें। इस प्रकार, अल्लाह अविश्वासी लोगों—मुनकिरों—के मनों को मुद्राङ्कित (आधीन) करता है।

(३) वमा ऽ वजद्ना लि अक्सरिहिम्मिन् अहदिन्, व इन्वजद्ना अक्सर हुम् लफ़ासिक़ीन् ॥ १०० ॥

और हमने उनमें से अधिकांश को नियम पर निश्चित नहीं पाया और उनमें से अधिकांश सभी अनियन्त्रित पाये गये।

(४) सुम्मा बअस्ना मिन् ँ बअदिहिम्मूसा बि आयातिना इला फ़िर्औना व मलाऽइही फ़ ज़लमू बिहा ऽ, फ़ऽन्ज़ुर्कय्फ़ा काऽना आऽक़िबतुऽल् मुफ़्सदीन् ॥

फिर हमने उनके पश्चात् मूसा को फ़िर्औन और उसके कुलपतियों के पास: सहित अपने चिन्ह (प्रमाण) देकर प्रेरित किया। फिर उनके सन्मुख अत्याचार किया, अतः देखो उपद्रवियों की अन्त में कैसी (अधम) अवस्था हुई!

(५) व क़ाऽला मूसा या फ़िर्औनु इन्नी रसूलुऽम्मिर्रब्बिऽल् आलमीन् ॥

और मूसा ने कहा—"हे फ़िर्औन! मैं संसार के स्वामी का प्रेरित (भेजा हुआ-रसूल) हूं।

(६) हक़ीक़ुन् अला२ अल्ला२ अक़ूला अल्ऽ-ल्लाहि इल्लऽऽल् .हक़्क़ा, क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यिनतिम्मिर्रब्बिकुम् फ़ अर्सिल् मइ.या बनी२ इस्रा२ईल् ॥

इस बात पर दृढ़ स्थिर हूँ कि अल्लाह के सम्बन्ध में सत्य के अतिरिक्त अन्य कुछ न कहूँ; क्योंकि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता का प्रमाण लेकर आया हूं। अतः मेरे साथ इस्राईल के वंश को भेज दे।

(७) क़ाऽला इन् कुन्ता जिअ्ता बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा२ इन् कुन्ता मिन–स्सादिक़ीन् ॥

उसने कहा.–"यदि तू कुछ प्रमाण लेकर आया है तो वह ला, यदि तू सच्चा है।"

(८–६) फ़ अल्क़ा असाऽहु फ़ इज़ाऽ हिया सुअ्-बा-नुम्मुबीनुव्व नज़अ़ा यदहू फ़ इज़ाऽ हिया बय्ज़ा२उ लिन्नाज़िरीन् ॥

फिर उसने अपना डंडा डाला तो उसी समय वह साक्षात् सर्प बन गया। और अपना हाथ निकाला तो उसी समय वह दर्शकों को श्वेत * दिखाई दिया।

---

* रिवायत है कि मूसा बड़ा काला आदमी था और जब वह अपना हाथ सीने में रखता और उसे फिर बाहर निकालता, वह अत्यन्त श्वेत और इतना प्रकाशित हो जाता कि इसके सामने सूर्य का प्रकाश मन्द पड़ जाता

[मंजिल २, पारा ९, रु० १४।१८]

(१–२) क़ाऽलऽल् मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औनुना इन्ना हाज़ा ल साहिरुन् अलीमुय्युरीदु अय्युख्रिजकुम्मिन् अर्ज़िकुम् , फ़माऽज़ाऽ तअ्मुरून् ॥

फ़िऔन की जाति के मुखियागण कहने लगे—"निस्सन्देह, यह कोई बड़ा जादूगर है, (जो) तुमको तुम्हारे देश में से बहिष्कृत किया चाहता है। अतः अब किस आज्ञा का पालन किया जाय।"

(३–४) क़ाऽलूर अर्जिह् व अख़ाऽहु व अर्सिल फ़िऽल् मदाइनि हाशिरीना। यअ्तूका बिकुल्लि साहिरिन् अलीम् ॥

वे कहने लगे—"उसको और उसके भाई को ठहरा ले और अपने परगनों में मुखियाओं को भेज, जिससे वह तेरे समीप पढ़ा लिखा जादूगर लावें।"

(५) वजाइस्स—स्सहरतु फ़िऔनुना क़ाऽलूर इन्ना लनाऽ लअजरऽन् इन् कुन्नाऽ नह्नु ऽल ग़ालिबीन् ॥

और फिऔन के पास जो जादूगर आये, उन्होंने कहा—"क्या हमें अवश्यमेव पारितोषिक प्रदान किया जायगा, यदि हम विजयी होवें।"

(६) क़ाऽला नअ्अम् व इन्नकुम् लमिनऽल् मुक़र्र-बीन ॥

उसने कहा—"हां, और तुम मेरे समीप रहा करोगे।"

(७) क़ाऽलूऽ या मूसा२ इम्मा२ अन्तुऽल् क़िया व इम्मा२ अन्नकूना नह्नुऽल् मुल्क़ीन् ॥

उन्होंने कहा—" हे मूसा! या तो तू डाल अथवा हम डालते हैं।"

(८) क़ाऽला अल्क़ूऽ, फ़लम्मा२ अल्क़ौऽ सह़रू२ अअ्‌युनन्नाऽसि वऽस्तर्हबूहुम् वजा२ऊ बिसिह़रिन् अज़ीम् ॥

(मूसाने) कहा—"तुम डालो।" फिर जब उन्होंने डाला तो उसने मनुष्यों की दृष्टि बांध दी और उनको डरा दिया, और बड़ा जादू का कार्य पूरा किया।

(९) व अव्ह़यना२ इला मूसा२ अन् अल्क़ि अ़साऽका, फ़इज़ाऽ हियतल् क़फ़ु माऽ यअ्फ़िकून् ॥

और हमने मूसा को आज्ञा दी कि (तू) अपना डंडा डाल। अतः (जब डाला जावे) वह उनके जादू के डाले हुए पदार्थों को (सर्प बन कर) निगलने लगा।"

(१०) फ़ वक़अ़ऽल् ह़क़्क़ु व बत़ला माऽ काऽनूऽ यअ्मलून्।

तब सत्य का पाला प्रबल प्रमाणित हुआ और जो वह करते थे, मिथ्या सिद्ध हुआ।

(११) फ़ गुलिबू़ऽ हुनाऽलिका वऽन् क़लबूऽ साग़िरीन् ॥

अतः वहां पर पराजित हुए और लज्जित होकर लौट गए।

(१२-१३-१४) व उल्क़िय-स्सह़रतु साजिदीन् क़ाऽलूऽ आमन्नाऽ बिरब्बिऽल् आलमीन् । रब्बि मूसा व हारून् ॥

और अन्य जादूगरों ने श्रद्धा से शिर झुकाया और कहा "हमने संसार के स्वामी को स्वीकार किया जो मूसा और हारून का पालनकर्ता है।"

(१५) क़ाऽला फ़िर्औनु आमन्तुम् बिही क़ब्ला अन् आज़ना लकुम्, इन्ना हाज़ा ल मक्रुम्मकर्तुमूहु फ़िऽल् मदीनति लितुख़्रिजूऽ मिन्हाऽ अह्लहाऽ, फ़स-उफ़ा तअ़्लमून् ॥

फ़िर्औन ने कहा—"अभी मैंने तुम्हें आज्ञा प्रदान नहीं की; पर तुमने उसे स्वीकार कर लिया। यह एक बड़ा षड्यंत्र (कपट) है जिसे तुमने मेरे नगर में रचा है जिससे कि तुम नगर-निवासियों को नगर से बाहर निकालो। परन्तु तुम अन्त में देखोगे, क्या होता है।"

(१६) ल उक़त्तिअ़न्ना अयदियकुम् व अर्जुलकुम्मिन ख़िलाऽफ़िन् सुम्मा ल उसल्लिबन्नकुम् अज्मई़न् ॥

मैं निश्चय ही, तुम्हारे हाथ और दूसरी ओर के पांव काटूंगा और फिर मैं तुम्हें सूली पर चढ़ाऊँगा।

(१७) क़ालू२ इन्ना२ इला रब्बिना२ मुन्क़लिबून् ॥

उन्होंने कहा—"हमें अपने प्रभु की ओर पुनः (लौट कर) जाना पड़ेगा।"

(१८) व मा२ तन्क़िमु मिन्ना२ इल्ला२ अन् आमन्ना२ बि आयाति रब्बिना२ लम्मा२ जा२अत्ना२, रब्बना२ अफ़्रिग् अलयना२ सब्रन्व तवफ़्फ़ना२ मुस्लिमीन् ॥

और तू हमसे इस बात का प्रतिकार लेता है कि हमने अपने प्रभु (के प्रमाणों) पर—जब कि वे हमारे सामने प्रस्तुत किये गए—विश्वास कर लिया। प्रभो! हमें स्थिरता अथवा धैर्य प्रदान कर और हम को मुसल्मान ही मार।"

[मंजिल २ पारा ६ रु० १५।६]

(१) व क़ा२लल्मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औन्ना अतज़रु मूसा व क़ौमहू लि युफ़्सदू२ फ़िल् अर्ज़ि व यज़रका व आलिहतका, क़ा२ला सनुक़त्तिलु अब्ना२-अहुम्, व नस्तह्यी निसा२अहुम् व इन्ना२ फ़ौक़हुम् क़ा२हिरून् ॥

और फ़िर्औन की जाति के मुखिया कहने लगे—"मूसा और उसके साथियों को क्यों (जीवित) छोड़ता है कि देश में उपद्रव उत्पन्न करें और तुझको और तेरी मूर्तियों को विमुख करें। वह कहने लगा कि अब हम उनके पुत्रों का वध करेंगे और उनकी पुत्रियों को जीवित रहने देंगे और फिर हम इनके स्वामी-शासक-हो जायंगे।

(२) क़ाऽलाऽ मूसा लिक़ऽमिहिऽ स्तईनुऽ बिऽल्लाहि वऽस्बिरूऽ, इन्नऽल् अर्ज़ा लिल्लाहि यूरिसुहा मय्यशाउ मिन् इबादिही; वऽल् आ़क़िबतु लिल् मुत्तक़ीन् ॥

मूसा ने अपनी जाति से कहा—"अल्लाह से सहायता की प्रार्थना करो और धैर्य धारण करो। पृथिवी अल्लाह की है, वह अपने भक्तों में से जिसको चाहे उसका संरक्षक नियत करे और अन्त में भय करने वालों का भला है।"

(३) क़ाऽलू उज़ीनाऽ मिन्क़ब्लि अन्तअ्तियनाऽ व मिन् बअ्दि माऽ जिअ्तनाऽ; क़ाऽला असा रब्बुकुम्

---

* फ़िर्औन् इस्राईलियों को अपने आधीन रखने के लिए यह अत्याचार करता था। भाष्यकारों का कथन है कि फ़िर्औन् को स्वप्न हुआ था कि इस्राईल वंश का बालक ने उसका नाश कर दिया अथवा ज्योतिषियों ने उससे कहा था कि इस्राईल वंश का बालक मेरा नाशक होगा।

अय्युह्लिका अदु व्व कुम् व यस्तख़्लिफ़कुम् फ़िऽल अर्ज़ि फ़ यन्ज़ुरा कय्फ़ा तअ्मलून् ॥

उन्होंने कहा—"हम को तेरे हमारे मध्य आने से पूर्व कष्ट रहा, और जबकि तू हमारे पास आगया है।" उसने कहा— "कदाचित् तुम्हारा प्रभु तुम्हारा शत्रु को नष्ट करेगा और देश में तुम लोगों को उसका उत्तराधिकारी बना देगा और वह देखेगा कि उसके अन्दर तुम किस प्रकार काम करोगे ?"

[मंजिल २ पारा ९ रु १६।१२]

(१) व लक़द् अख़ज़्ना२ आल फ़िर्अव्ना बि-स्सिनीना व नक़्सिम्मिन-स्समराति ल अल्लहुम् यज़्ज़क्करून् ॥

और हमने फ़िऔन वालों को दुर्भिक्षों के दुःख और फलों में हानि पहुंचा कर पीड़ित किया है। कदाचित् वह ध्यान दें।

(२) फ़ इज़ा जा२अत्हुमुऽल् ,हसनतु क़ाऽलूऽ लनाऽ हाज़िही, व इन् तुसिब् हुम् सय्यिअतु य्यत्तय्यरूऽ बिमूसा व मम्मअ़हू, अलाऽ इन्नमाऽ ताऽइरुहुम् इ,न्द्ऽल्लाहि वला किन्ना अक्सरहुम् ला यअ्लमून ॥

फिर जब उनको पुण्य उपकार प्राप्त हुआ तो कहने लगे कि यह हमारे निमित्त है और यदि क्लेश पहुंचा तो वह उसे मूसा और उसके साथ वालों का दुर्भाग्य कहने लगे। सुनलो !

उनका दुर्भाग्य अल्लाह ही के पास है; परन्तु बहुधा मनुष्य ध्यान नहीं देते।

(३) व क़ाऽलुऽ महमाऽ तअ्तिनाऽ बिही मिन् आयातिल्लि तसह़रनाऽ बिहाऽ फ़माऽ नह़्नु लका बि मुअ्मिनीन्॥

और वे कहने लगे—"जो तू हमारे पास ऐसा प्रमाण प्रस्तुत करेगा कि जिससे हम पर उससे जादू करे तो हम तुझ पर विश्वास न करेंगे।"

(४) फ़ अर्सल्नाऽ अ़लयहिमु-त्तूफ़ाऽना वऽल् जराऽदा वऽल् कुम्मला व-ज़्ज़फ़ाऽदिआ व-दमा आयातिम्मु फ़स्सलातिन् फ़ऽस्तक् बरूऽ व काऽनूऽ क़ौमऽ-म्मुजि्मीन्॥

तब हमने उन पर जल-प्लावन (आंधी), टिड्डी दल, चिचड़ी मेंढक और लोहू (आदि) अनेक चिन्ह पृथक् प्रेषित किये। फिर (भी) यह लोग अहङ्कार करते रहे और पाप तो इनका काम ही था। *

---

* शाह अब्दुल क़ादिर कहते हैं "हज़रत मूसा को फ़िरौन से इस बात पर ४० वर्ष तक मुक़ाबला रहा कि बनी इस्राईल को अपने देश जाने दे। उसने न माना उनके स्राप से यह आपत्तियां आईं—नील नदी चढ़ गई खेत, बाग, और घर बहुत मन्दा हुए और टिड्डी खेत खागई। मनुष्यों के शरीरों और कपड़ों में चिचड़ियां पड़ गईं। इसी प्रकार प्रत्येक पदार्थ में मेंढक फल गये और प्रत्येक पानी लोहू बन गया। परन्तु कदापि न माना।"

(५) व लम्माऽ वक़अ़ा अ़लय्हिमु-रिंज्ज़ु क़ाऽलूऽ या मूसऽद् उ़लनाऽ रब्बका बिमाऽ अ़हिदा इ़न्दका, लइन् कशफ़्ता अ़न्नऽ-रिंज्ज़ा लनुअ्मिनन्ना लका व लनुर्सि-लन्ना मअ़का बनीऽ इस्राईल ।

और, जब उन पर प्रकोप प्रगट हुआ तो कहने लगे--"हे मूसा ! हमारे वास्ते अपने प्रभु की प्रार्थना (उसी प्रकार) कर जैसा कि उसने तुझे लिखा रक्खा है। यदि तूने हमसे यह प्रकोप हटाया तो, निस्सन्देह, हम तुझ पर निश्चय (विश्वास) करेंगे और तेरे साथ इस्राईल की सन्तान को भेज देंगे ।

(६) फ़लम्माऽ कशफ़्नाऽ अ़न्हुमु-रिंज्ज़ा इलाऽ अजलिन् हुम् बाऽलिग़ूहु इज़ाऽहुम् यन्कुसून ॥

फिर जब हमने एक अवधि तक उन पर से अपना प्रकोप हटा लिया;और जो अवधि अल्लाह ने निश्चित की थी, व्यतीत हो गई तो फिर अविश्वासी हो गये ।

(७) फ़न्तक़म्नाऽ मिन्हुम् फ़ अग़्रक़्ना हुम् फ़िऽल यम्मि बि अन्नहुम् कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ व काऩूऽ अ़न्हाऽ ग़ाफ़िलीन् ॥

अतएव हमने उनके साथ प्रतिकार की नीति का अवलम्बन किया और उन्हें गम्भीर जल (समुद्र) में डुबो दिया; क्यों कि

उन्होंने हमारी आयतें (आज्ञाएं) असत्य ठहराई थीं; और उन पर ध्यान न देते * थे।

(८) व अउरस्नऽऽल् क़ौमऽल्लज़ीना काऽनूऽ युस्तज़्अफ़ूना मशाऽरिक़ऽल् अर्ज़ि व मग़ाऽरिबहऽऽल्लती बारक्नाऽ फ़ीहाऽ; व तम्मत् कलिमातु रब्बिकऽल् हुस्ना अला बनी३ इस्राईला बिमा सबरूऽ; व दम्मर्नाऽ माऽ काऽना यस्नउ फ़िर्औनु व क़ौमुहू व माऽ काऽनूऽ यअ्रिशून॥

हमने उन मनुष्यों को—जो (फ़िर्औन के यहां) बलहीन बन गये थे—उस (शाम की) भूमि के पूर्वीय भाग और पश्चिमीय भाग का, जिनमें, हमने (उपजाऊ होने की) समृद्धि दे रक्खी है, उत्तराधिकार दिलवाया; और इस्राईल वंश पर,

---

* शाह अब्दुलक़ादिर लिखते हैं—यह सब आपत्तियें उन पर एक सप्ताह के अन्तर से आईं। प्रथम हज़रत मूसा फ़िर्औन को कह आते कि अल्लाह, तुम पर यह आपत्ति भेजेगा फिर वही आपति आती। जब घबराते, मूसाकी खुशामद करते। उनकी आशीर्वाद से आपति हट जाती। परन्तु फिर अविश्वासी हो जाते। अन्त में यह प्रकोप आया कि आधी रात को सारे नगर में प्रत्येक पुरुष का प्रथम पुत्र मर गया। लोग मृतकों का शोक मनाने लगे मूसा अपनी जाति को लेकर नगर से निकल गये। फिर कई दिन बाद फ़िर्औन ने पीछा किया और कुलजम नदी पर जा पकड़ा। मूसाकी जाति बच गई, और फ़िर्औन सारी सेना समेत डूब गया।

तेरे प्रभु के उपकार की प्रतिज्ञा पूर्ण* हुई ; क्योंकि उन्होंने धैर्य-धारणा स्थिर रक्खी। और, हमने फ़िऔन और उसकी प्रजा के बनाये हुई भवनों और कारीगरी को नष्ट—भ्रष्ट कर दिया।

(९) व जाऽवज़्नाऽ बि बनीऽ इस्राईलऽल् बह्‌र फ़ अतव्ऽ अ़ला क़व्मि य्य अ़्कुफ़ूना अ़लाऽअस्नाऽमिल्ल-हुम् क़ाऽलूऽ या मूसऽज्अ़ल्लनाऽ इलाहऽन् कमाऽलहुम् आलिहतुन् ; क़ाऽला इन्नकुम् क़व्मुन् तज्हलून् ॥

और, हमने इस्राईल वंशजों को समुद्र पार उतारा, फिर ऐसी जाति के पास पहुंचे, जो अपनी मूर्तियों की पूजा में प्रवृत्त थी; और (जिसे देख कर उन्होंने मूसासे) कहा—"हे मूसा! हमारे लिएभी एक ऐसीही मूर्तिकी रचना करदे,जैसी कि इनके पास हैं।" (मूसा ने) कहा—"तुम लोग मूर्खता करते हो।"†

(१०) इन्ना हाऽउलाऽइ मुतब्बरुम्माऽ हुम् फ़ीहि व बातिलुम्माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

यह लोग जो (पूजा) कार्य्य कर रहे हैं, वह नष्ट होना है, और जो यह कर रहे हैं, मिथ्या है।

---

*प्रतिज्ञा पूर्ण होने का तात्पर्य शाम पर इस्राईलियों का शासन होने से है।

† मूर्ति पूजा और जैसा कि बेज़ावी कहता है कि इनकी मूर्तियां बैलों की नकल थी। इसीसे उन्होंने सोने का बछड़ा बना कर पूजा की।

(११) क़ाऽला अग़यूरऽल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहऽव्व हुवा फ़ज़्ज़लकुम् अलऽल् आलमीन् ॥

कहा—"क्या तुम्हारे लिए अल्लाह के—जिसने तुमको समग्र संसार में श्रेष्ठता प्रदान की है—अतिरिक्त अन्य आराध्य देव लाऊं ?"

(१२) व इज़् अन्जयनाकुम्मिन् आलि फ़िर्औना यसूमूनकुम् सूऽअऽल् अज़ाऽबि. युक़त्तिलूना अब्नाऽअकुम् व यस्तह्यू न निसाऽअकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बलाऽउम्मिर्रब्बिकुम् अज़ीम् ॥

और, उस समय का स्मरण करो, जब कि हमने फ़िर्औन के वंशजों से—जो तुम को घोर दुःख देते थे. तुम्हारे पुत्रों का बध कर डालते; और तुम्हारी पुत्रियों को जीवित रहने देते थे—तुम्हें सुरक्षित रक्खा; और इस में तुम्हारे पालनकर्ता का अत्यन्त अनुग्रह है।

[मंजिल २ पारा ९ रु० १७ । ६]

(१) व वा अद्नाऽ मूसा सलासीना लय्लतव्व अत् मम्नाहाऽ बि अश्रिन् फ़तम्मा मीक़ाऽतु रब्बिहीऽ अर्बईना लय्लतन्, व क़ाऽला मूसा लि अख़ीहि हारूनऽख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् वलाऽ तत्तबिअ् सबीलऽल् मुफ़्सदीन् ॥

और, मूसा से हमने ३० रात्रि की अवधि निश्चित की और उसको (उस में) दस मिला कर पूर्ण किया, तब तेरे प्रभु की चालीस दिवस की अवधि पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा—"मेरी जाति में मेरा स्थानापन्न होकर रह, और अपना सुधार कर तथा कुमार्ग गामियों के पथ का अनुसरण न कर।"

(२) व लम्माऽ जाऽअ मूसा लिमीक़ाऽतिनाऽ व कल्लमहू रब्बुहू क़ाऽला रब्बि अरिनीऽ अन्ज़ुर् इलयूका; क़ाऽला लन्तरानी वला किनिऽन्ज़ुर् इलऽल् जबलि फ़ इनिऽस्तक़र्रा मकाऽनहू फ़ सौफ़ा तरानी, फ़लम्माऽ तजल्ला रब्बुहू लिल् जबलि जअ़लहू दक्काऽव्व ख़र्रा मूसा सइ़क़ऽन्, फ़लम्माऽ अफ़ाऽक़ा क़ाऽला सुब्हानका तुब्तु इलयूका व अनाऽ अव्वलुऽल् मुअ्मिनीन् ॥

---

*मूसा से ख़ुदा ने प्रतिज्ञा की थी कि तुम तूर पर्वत पर एक मास तक अल्ला की आराधना करो, हम तुमको तौरेत प्रदान करेंगे। पीछे ख़ुदा ने १ मास के बजाय ४० दिन चिल्ला—कर दिया कि मूसा अपनी आराधना करले। चिल्ला पूरा होने पर तौरेत मिली और वह तूर से चले आये। कुछ भाष्यकार यह भी कहते हैं कि मूसा को अल्ला ने ३० दिन तक उपवास करने की आज्ञा दी थी, परन्तु जब ३० दिन बाद मूसा के मुंह में बदबू आने लगी तो उसने अपने दांत साफ किये। इस पर उसे आज्ञा हुई कि उसके मुंह से जो कस्तूरी की गन्ध आती थी वह दांतन से दूर होगई। उसे चाहिये कि १० दिन और रो जा रक्खे औरमूसा ने ऐसा ही किया।

और, जब मूसा हमारी (नियत की हुई) अवधि पर उपस्थित हुआ; और उससे उसके प्रभु ने बातें की तो (मूसा) कहने लगा—"हे पालनकर्ता ! तू मुझ को अपना दर्शन दे, जिससे कि मैं तुझ पर दृष्टि डाल सकूं।" (अल्लाह) बोला—"तू मुझे कदापि न देख सकेगा; परन्तु पर्वत की ओर देखता रहा जब वह(पर्वत)अपने स्थान पर स्थिर होजायगा तो तू मुझे आगे देख सकेगा ।" फिर जब उसका पालनकर्ता पर्वत की ओर प्रगट हुआ तो उसको मिट्टी में मिला दिया; और मूसा अचेत होकर गिर पड़ा। फिर जब सावधान हुआ, कहने लगा—"तेरा स्वरूप शुद्ध है; मैं तेरे पास तोबा (पाप-क्षमा-प्रार्थना) करता हूँ; और मैंने सब से प्रथम विश्वास किया।"

(३) क़ाऽला या मूसा३ इन्निऽस्तफ़यतुका अलन्नाऽसि बिरिसालाती व बिकलाऽमी फ़खुज़्मा३ आतयूतुका व कुम्मिन-श्शाकिरीन् ॥

(अल्लाहने)—कहा,"हे मूसा ! मैंने अपना संदेश भेजकर और (तुझ से) अपने साथ वार्तालाप करके तुझे।अन्य मनुष्यों में विशिष्टता प्रदान की। अतः जो मैंने तुझको प्रदान किया, उसे ग्रहण कर और कृतज्ञ रह।

(४) व कतब्नाऽ लहू फ़िऽल् अल्वाऽहि मिन् कुल्लि शयइम्मउ इज़तव्व तफ्सीलऽ ल्लिकुल्लि शयइन्,

फ़ख़ुज़् हाऽ बिक़ुव्वतिं व्वअ्मुर् क़ौमका य अ्ख़ुज़ूऽ बि अह्सनिहाऽ, साऽवुरीकुम् दाऽरऽल् फ़ासिक़ीन् ॥

और, हमने उसको पट्टिकाओं पर प्रत्येक पदार्थके सम्बन्ध में शिक्षा और प्रत्येक वस्तु की विस्तृत व्याख्या लिख दी। अतः उनको शक्ति के साथ ग्रहण कर, और अपनी जाति से कह कि उसकी श्रेष्ठ शिक्षाओं को ग्रहण किये रहे। अब मैं तुमको दुष्टात्माओं का वास स्थान दिखलाऊँगा।

(५) स अस्रिफ़ु अन् आयातियऽल्लज़ीना यतकब्बरूना फ़िऽल् अर्ज़ि बि ग़य्रिऽल् हक़्क़ि व इय्यरवूऽ कुल्ला आयतिल्लाऽ युअ्मिनूऽ बिहाऽ, व इय्यरवूऽ सबील–र्रुश्दि लाऽ यत्तख़िज़ूहु सबीलऽन्; व इय्यरवूऽ सबीलऽल् ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलऽन्; ज़ालिका बि अन्नहुम् कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ व काऽनूऽ अ्न्हाऽ ग़ाफ़िलीन् ॥

और, पृथिवी पर व्यर्थ अहङ्कार करने वाले लोगों को मैं अपनी आयतों से विमुख कर दूंगा। और यदि वे समग्र आयतों को भी देखें तो विश्वास न करें; और यदि वे सुधार का मार्ग देखें तो वे उसे अपना मार्ग निश्चित नहीं करते, और यदि विपरीत मार्ग देखें तो उसे (अपने लिए सीधा) मार्ग निश्चित करें। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को असत्य समझा और उनसे अनभिज्ञ रहे।

(६) वऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बिआयातिनाऽ व लिक़ाइऽल् आख़िरति हबितत् अअ्मालुहुम्, हल् युज्ज़ौना इल्लाऽ माऽ कानूऽ यअ्मलून ॥

और जिन्होंने हमारी आयतें और अन्तिम (प्रलय की) भेंट असत्य समझीं, उनके कर्म नष्ट हुए, और जो आचरण करते थे, वही परिणाम प्राप्त करेंगे।

(मंजिल २ पारा ९ रु० ५।१८)

(१) वऽत्तख़ज़ा क़ौमु मूसा मिन् बअ्दिही मिन् हुलिय्यिहिम् इज्लऽन् जसदऽल्लहू ख़ुवाऽरुन्; अलम् यरौऽ अन्नहू लाऽ युकल्लिमुहुम् वलाऽ यह्दीहिम् सबीलऽन् इत्तख़ज़ूहु व कानूऽ ज़ालिमीन ॥

और, मूसा की अनुपस्थिति में उसकी जाति ने अपने आभूषणों से एक वत्स बना लिया, उसमें एक भड़ और गाय के रंभाने का शब्द था। उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे वार्तालाप नहीं करता और न मार्ग दिखाता है; उसे (उसको पूजार्थ) ग्रहण किया और वह अन्यायी थे।

(२) वलम्माऽ सुक़ित फ़ी ऐदीहिम व रऔऽ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लूऽ क़ाऽलूऽ लइल्लम् यर्हम्नाऽ रब्बुऽनाऽ व यग़्फ़िर् लनाऽ लनकूनन्ना मिनऽल् ख़ासिरीन ॥

और, जब (उन्होंने) पश्चात्ताप किया और समझा कि

हमने भूल की, तो कहा—"यदि हम पर हमारा पालनकर्ता अनुग्रह न करे और हमें क्षमा न करे तो हम निश्चय नष्ट होंगे।

(३) व लम्मा ऽ रजआ़ मूसा२ इला क़ौमिही ग़ज़्बा ऽना असिफ़ऽन्, क़ाऽला बिअ्सम्मा ऽ ख़लफ़्तुमूनी मिन् ॅ, बअ्दी अ अजिल्तुम् अम्रा रब्बिकुम्; व अल्क़ऽल् अल्वाह्, व अख़ज़ा बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू२ इलैहि; क़ाऽलऽब्ना उम्मा इन्नऽल् क़ौ म ऽस्तज़्अफ़ूनी व काऽदू ऽ यक़्तुलू ननी फ़ला ऽ तुश्मित् बियऽल् अअ्दाऽअ वला तज्अ़ल्नी मअ़ऽल् क़ौमि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और जब मूसा कुपित और शोकातुर हो अपनी जाति की ओर पुनः आया तो कहने लगा—"तुमने मेरे पश्चात् मेरा बड़ा बुरा प्रतिनिधित्व किया, अपने पालनकर्ता की आज्ञा में क्यों शीघ्रता की?"

और, (यह कह कर) वह पट्टिकायें पटक दीं; और अपने भ्राता के सिर (के केशों) को पकड़ा, और उन्हें अपनी ओर खींचने लगा। उसने कहा—"हे मेरी जननी के जनित! लोगों ने मुझे निर्बल समझा; और प्रायः मुझे वध करने को तत्पर थे। अतः मेरे ऊपर मेरे शत्रुओं को मत हंसा, और मुझे पापी पुरुषों में सम्मिलित न कर।"

(४) क़ाऽला रब्बिऽग़्फ़िर्ली वलि अख़ी व अद्ख़िल्ना ऽ फ़ी रह़्मतिका व अन्ता अर्हमु-र्राहिमीन् ॥

(तब मूसा) कहने लगा—"हे पालनकर्ता! मुझको और मेरे भाई को क्षमा कर; और हमारा अपने अनुग्रह में प्रवेश करा; और तू सर्वोपरि अनुग्रह कर्ता है।

[मं० २ सिपारा ९ रुकूअ १९।६]

(१) इन्नऽल्लज़ीनऽत्तखज़ुऽऽल् इ्जला सयनाऽलुहुम् ग़ज़बुम्मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िऽल् हयातिद्दुन्याऽ, व कज़ालिका नज्ज़िऽल् मुफ्तरीन् ॥

हां, जिन्होंने वत्स (की मूर्ति) की रचना की, उनको अपने पालनकर्ता का प्रकोप पहुंचेगा और वे सांसारिक जीवन में नष्ट होंगे; और असत्यारोपण करने वालोंको हम यही दण्ड देते हैं।

(२) वऽल्लज़ीना अमिलुऽ—स्सय्यिआति सुम्मा ताऽबूऽमिन् बअ्दिहाऽ व आमनूऽ इन्ना रब्बका मिन् बअ्दिहाऽ लग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

और, जिन्होंने कुकर्म कमाये, और उसके पश्चात् क्षमा-प्रार्थना की तथा विश्वास किया, उन्हें तेरा दयालु पालनकर्ता क्षमा प्रदान करता है।

(३) वलम्माऽ सकता अ़म्मूसऽल् ग़ज़बु अख़ज़ऽल् अल्वाहा व फ़ी नुस्ख़तिहाऽ हुदऽव्व रह्मतु ल्लिल्लज़ीनहुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून् ॥

और, जब मूसा का प्रकोप शान्त हुआ, उसने पट्टिकाएं

उठालीं; और उनके लिखित निबन्ध में, उनके निमित्त—जो अपने पालनकर्ता से भय करते हैं—पथप्रदर्शन है, अनुग्रह है।

(४) वऽख़्ताऽरा मूसा क़ौमहू सब्ई़ना रजुलऽल्लि मीक़ाऽतिनाऽ, फ़लम्मा॰ अख़ज़त्हुमु-र्रज्फ़तु क़ाऽला रब्बि लउ शिअ्ता अह्लक्तहुम्मिन् क़ब्लु व इय्याऽया, अतुह्लिकुनाऽ बिमाऽ फ़अ़ल-स्सुफ़हा॰उ मिन्नाऽ इन् हिया इल्लाऽ फ़ित्नतुका, तुज़िल्लु बिहाऽ मन्तशा॰उ व तह्दी मन्तशा॰उ; अन्ता वलिय्युनाऽ फ़ऽग़्फ़िर् लनाऽ वऽर्हम्नाऽ व अन्ता ख़ैरुऽल् ग़ाऽफ़िरीन्॥

और, मूसा ने अपनी जाति से चालीस मनुष्य हमारे निश्चित समय को लाने के लिए ग्रहण किये; और जब भूचाल ने उन पर आक्रमण किया, (मूसा) कहने लगा—"हे हमारे पालनकर्ता! यदि तू चाहता, पहले ही उनको और मुझको नष्ट करता। क्या तू एक कार्य के कारण जो हमारे मूर्ख लोगों ने किया—हमको नष्ट करेगा? यह सब तेरा परीक्षा है। जिसको चाहे, तू मार्गच्युत करे और जिसको चाहे सन्मार्ग पर प्रवृत्त करे। तू ही हमारा संरक्षक है। अतः हमें क्षमा कर; और हम पर दया कर, और तू क्षमा करने वालों में सर्वोपरि है।

(५) वऽक्तुब् लनाऽ फ़ी हाज़िहि-द्दुन्याऽ ह़सनतऽ

व फ़िऽल् आख़िरति इन्नाऽ हुद्नाऽ इलयका; क़ाऽला अज़ाबी उसीबु बिही मन् अशाउ, व रह्मती वसिअत् कुल्ला शयइन्, फ़ सअक्तुबुहाऽ लिल्लज़ीना यत्तकूना व युअ्तून-ज़्ज़काता वऽल्लज़ीनहुम् बि आयातिना युअ्मिनून् ॥

और, इस संसार में हमारे निमित्त नेकी लिखदे; और अन्त (आख़िरत) में हम तेरी ओर लौटें। (तब इसने) कहा कि मैं अपने प्रकोप को, जिसपर मैं चाहूं, डालता हूँ; और मेरी दया प्रत्येक वस्तु पर विस्तृत है। अतः जो भय रखते हैं, ज़कात (दान) देते हैं और हमारी आयतों पर विश्वास रखते हैं, उनके नाम उस (दया) को लिख देंगे।

(६) अल्लज़ीना यत्तबिऊन-र्रसूल-न्नबिय्यऽल् उम्मिय्यऽल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबऽन् इन्दहुम् फ़ि-त्तउराति वऽल् इन्जीलि यअ्मुरुहुम् बिऽल् मअ्रूफ़ि व यन्हाहुम् अनि-ऽल् मुन्किरि व युहिल्लु लहुमु-त्तय्यिबाति व युहर्रिमु अलयहिमुऽल् ख़बाइसा व यज़उ अन्हुम् इस्रहुम् वऽल् अग़्लालऽल्लती काऽनत् अलयहिम्, फ़ऽल्लज़ीना आमनूऽ बिही व अज़्ज़रूहु व नसरूहु वऽत्तबउऽ-न्नूरऽल्लज़ी उन्ज़िला मअहू उलाइका हुमु-ल्मुफ़्लिहून् ॥

रसूल, उस निरक्षर नबी,का जो अनुसरण करते हैं कि जिस के सम्बन्ध में तौरेत और इंजील में अपने पास लेख पाते हैं,जो शुभ कर्म करने की आज्ञा देता है; और अशुभ कर्मों का निवारण करता है और उनके वास्ते पवित्र पदार्थ विहित बतलाता है तथा अपवित्र पदार्थों को निषिद्ध नियत करता और जुआ, जो उन पर था, उतारता है। अतः जिन्होंने उस पर विश्वास किया और उससे प्रेम किया तथा उसकी सहायता की, प्राचीनता और उसके प्रकाश * का—जो उसके साथ उतरा है— जिन्होंने अनुसरण किया, वही सफल हुए।

[मं० २ पारा ६, रु० २०।५]

(१) क़ुल् या२ अय्युहऽ—न्नाऽसु इन्नी रसूलुऽल्लाहि इलयकुम् जमीअ़ऽ (नि) ऽल्लज़ी लहू मुल्कु—स्समावाति वऽल् अर्ज़ि, ला२ इलाहा इल्लाऽ हुवा युह़्यी व युमीतु फ़ आमिनूऽ बिऽल्लाहि व रसूलिहि—न्नबिय्यिऽल् उम्मिय्यिऽल्लज़ी युअ्मिनु बिऽल्लाहि व कलिमातिही वऽत्तबिऊहु लअ़ल्लकुम् तह्तदून् ॥

नू. फ़ाउ. "हे लोगो! मैं तुम सब के लिए अल्लाह का पैग़म्बर हूँ कि जिसका आसमान और पृथिवी में शासन है। उसके अतिरिक्त अन्य की आराधना (योग्य) नहीं। वह जीवित करता है और मारता है। अतः अल्लाह पर और

---

* क़ुरान

उसके प्रेषित उम्मी, अर्थात् निरक्षर नबी,पर-जो अल्लाह और उसके सब वाक्य पर विश्वास करता है—विश्वास करो और उसके आधीन हो, कदाचित् तुम्हें सन्मार्ग विदित हो।

(२) व मिन् क़ौमि मूसा२ उम्मतुय्यह्दूना बिल्-हक्क़ि व बिही यअ़्दिलून ॥

और मूसा की जाति में (कुछ लोगों का) एक समुदाय है; जो सत्य का मार्ग बतलाते है; और उसी (की अनुकूलता) पर न्याय करते हैं।

(३) व क़त्त़अ़्ना हुमुऽस्नतय् अश्रता अस्बाऽतन् उममऽन्; व अव् ह़य्ना२ इला मूसा२ इज़िऽस्तस्क़ाहु क़ौ-मुहू२ अनिऽ ज़्रिब् असाऽकऽल् ह़जरा, फ़ऽन् बज-सत् मिन्हुऽस्नताऽ अश्रता अ़य्नऽन्; क़द् अ़लिमा कुल्लु उनाऽसिम्मश्रबहुम्; व ज़ल्लल्नाऽ अ़लय्हिमुऽल् ग़माऽमा व अन्ज़ल्ना अ़लय्हिमुऽल्मन्ना व-स्सल्वा; कुलूऽमिन्त़य्यिबाति माऽ रज़क़्नाकुम्; व माऽ ज़लमूनाऽ वला किन् काऽनू२ अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून।

और, हमने उन (इस्राईलियों) को बारह जातियों में विभाजित किया, और जब इन जातियों ने उस (मूसा) से पानी मांगा तो हमने मूसा को आज्ञा भेजी—"अपनी लाठी से यह पत्थर मार!" तब उससे बाहर वारि-धाराएँ फूट निकलीं लोगों ने अपने अपने घाट पहिचान लिये, हमने उन पर मेघ

की छाया की और उन पर मन्ना व सल्वा उतारे "तुम (उन) पवित्र वस्तुओं का भोजन करो कि जो हमने तुम्हें आहार में प्रदान की हैं।" परन्तु उन्होंने हमारी तो कोई हानि नहीं की किन्तु अपनी हानि करते रहे।

(४) व इज़् क़ीला लहुमुऽस्कुनूऽ हाज़िहिऽल् क़र्‌यता व कुलुऽ मिन्हाऽ हय्‌सु शिअ्‌तुम् व कूलूऽ हित्तुत्‌व्वऽद्‌खुलुऽऽल् बाऽबा सुज्जदऽ नग़्‌फ़िर् लकुम् ख़तीआतिकुम्, सनज़ीदुऽल् मुह्‌सिनीन् ॥

और, जब उनको आज्ञा हुई कि इस नगर में निवास करो; और इस में से, जहां से चाहो, खाओ एवं 'हित्ततु (अर्थात् पाप क्षमा करें) कहो; और द्वारमें सिजदा(अर्थात् प्रमाण)करते हुए प्रवेश करो, तब हम तुम्हारे पाप क्षमा करेंगे और उपकारियों को विशेष देंगे।

(५) फ़बद्दलऽल्लज़ीना ज़लमूऽ मिन् हुम् क़ौलऽन् ग़ैय्‌रऽल्लज़ी क़ीला लहुम् फ़अर्सल्नाऽ अलय्‌हिम् रिज्ज़ऽम्मिनस्‌-स्समाऽइ बिमाऽ काऽनूऽ यज़्लिमून् ॥

फिर अन्यायियों ने उसके अतिरिक्त-कि जो उन्हें बताया गया था—और शब्द लिख दिया। अतः हमने उन पर उनके अन्याय के प्रतिकार में आस्मान से प्रकोप (अज़ाब) अवतीर्ण किया।

[मंज़िल २, पारा ९, रु० २१ । ६]

(१) वस्‌अल्हुम् अनिल्क़र्यतिल्लती काऽनत् हाऽज़िरतल्-बह्रि इज़् यअ्दूना फ़िस्-सब्ति इज़् तअ्तीहिम् हीताऽनुहुम् यौमा सब्तिहिम् शुर्रअऽन्व यौमा लाऽ यस्बितूना-लाऽ तअ्तीहिम्, कज़ाऽलिका नब्लूहुम्; बिमाऽ काऽनूऽ यफ़्सुक़ून्॥

और, उनसे उस नगरी की दशा पूछो कि जो समुद्र के तट पर थी। जब सब्त की आज्ञा के सम्बन्ध में मर्यादा का उल्लंघन करने लगे, तो फिर उन पर सब्त के दिवस पानी के ऊपर मछलियाँ आने लगीं और जिस दिन सप्ताह न हो, न आतीं। इस प्रकार हम उनकी परीक्षा करने लगे, क्योंकि वह अनाज्ञाकारी थे।

(२) व इज़् क़ाऽलत् उम्मतुम्मिन्हुम् लिमा तइ-ज़ुना क़ौमऽ (नि) ल्लाहु मुह्लिकुहुम् अउ मुअज़्ज़िबुहुम् अज़ाऽबऽन् शदीदऽन्; क़ाऽलू ऽ मअ्ज़िरतन् इला रब्बिकुम् व लअल्लहुम् यत्तक़ून्॥

और, जब उनमें एक समुदाय कहने लगा—"उन लोगोंको क्यों शिक्षा करते हो, जिन्हें अल्लाह मारना चाहता है अथवा उन पर प्रचण्ड प्रकोप प्रगट करना चाहता है।" (इस पर वह) कहने लगा—हमारे पालनकर्ता के सम्मुख आक्षेप दूर करने को और कदाचित् वह भय करें।

(३) फ़लम्माऽ नसूऽ माऽ ज़ुक्किरूऽ बिही२ अन्जयूनऽऽल्लज़ीना यन्हव्ना अनि-स्सूऽइ व अख़ज़्नऽऽल्लज़ीना ज़लमूऽ बि अज़ाऽबिन् बईसिन् बिमाऽ काऽनूऽ यफ़्सुक़ून ।

फिर जो उन्हें बतलाया गया था, जब उन्होंने भुला दिया, (तो) हमने उनको बचा लिया जो कुकर्मों का निषेध करते थे और पापियों को उनके आज्ञा-उलंघन के प्रतिकारस्वरूप प्रचण्ड प्रकोप में ग्रस्त किया ।

(४) फ़ लम्माऽ अतव्ऽ अम्माऽ नुहूऽ अन्हु क़ुल्नाऽलहुम् कूनूऽ क़िरदतन् ख़ासिईन् ।

अतः जो काम निषिद्ध बतलाया गया था, जब उससे बढ़ने लगे तो हमने आज्ञा दी कि श्रापित बानर बन जाओ ।

(५) व इज़् तअज़्ज़ना रब्बुका लयब्असन्ना अलैहिम् इला यव्मिऽल् क़ियामति मय्यसूमुहुम् सूइअ़ल् अज़ाऽबि; इन्ना रब्बका लसरीउ़ल् इ़क़ाऽब, व इन्नहू लग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

और, वह समय स्मरण करो, जब तुम्हारे पालनकर्ता ने घोषित किया कि प्रलय (क़ियामत) के दिवस पर्यन्त, वह अवश्यमेव उन (यहूदियों) के विरुद्ध भेजेगा जो कि उनके साथ कुव्यवहार करेंगे। तेरा पालनकर्त्ता शीघ्र दण्ड देता है; और वह क्षमाशील और दयालु है।

(६) व क़त्तअ्नाहुम् फ़िल् अर्ज़ि उममन्, मिन्हु-मुस्-सालिहून व मिन्हुम् दूना ज़ालिका व बलौनाहुम् बिल् हसनाति व-स्सय्यिआति लअल्लहुम् यर्जिऊन ॥

और, हमने उनको भूमि पर भिन्न समुदायों में विभाजित किया। उनमें से कुछ शुभाचारी और कुछ अन्य प्रकार के थे; और उनकी गुणों और अवगुणों में परीक्षा ली। कदाचित् वह पुनः लौटें।

(७) फ़ ख़लफ़ा मिन् ब अ्दिहिम् ख़ल्फ़ुन् वरिसुऽल् किताबा यअ्ख़ुज़ूना अ़रज़ा हाज़ल् अद्ना व यक़ूलूना सयुग़्फ़रु लना, व इंय्यअ्तिहिम् अ़रज़ुम् मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु अलम् युअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाक़ुल् किताबि अल्लाऽ यक़ूलुऽ अ़लल्लाऽहि इल्लल् हक़्क़ा व दरसूऽ माऽ फ़ीहि, व-द्दारुल् आख़िरतु ख़ैरुल्लिल्लज़ीना यत्तक़ूना, अफ़लाऽ तअ्क़िलून ॥

और, उनके पश्चात् उनके ऐसे उत्तराधिकारी आये, जो पुस्तक के उत्तराधिकारी थे। वे तुच्छ जीवन की सामग्री लेते हैं और कहते हैं कि (हमारा अपराध) हमको क्षमा होगा;

---

* यहूदियों को अल्लाह के साथ विशेषता प्राप्त होने का गर्व था। वह कहा करते थे 'नहनु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहू" अर्थात् हम अल्लाह के पुत्र और उसके प्रिय हैं और कुछ दिन के अतिरिक्त नर्काग्नि हमें स्पर्श भी न करेगी।

और यदि ऐसी ही सामग्री पुनः आवे तो ले लेवें। क्या उनसे पुस्तक के सम्बन्ध में प्रतिज्ञा नहीं ली गई कि अल्लाह पर सत्य के अतिरिक्त (अन्य असत्य बात) न बोलें, और जो उसमें लिखा है, वही पढ़ें और संयमियों को अन्तिम गृह (अर्थात् क़यामत काल) श्रेष्ठ है। क्या तुम्हें ज्ञान नहीं ?

(८) व ऽल्लज़ीना युमस्सिकूना बिऽल् किताबि व अक़ाऽमुऽ-स्सलाता; इन्नाऽ ला नुज़ीउ अज्रऽल् मुस्लि-हीन् ॥

और जो पुस्तक को दृढ़ता से ग्रहण करते हैं, प्रार्थनायें (नमाज़)स्थिर रखते हैं,हम उन सुधारकों का फल नष्ट न करेंगे।

(९) व इज़् नतक़्नऽल् जबला फ़उ क़हुम् कअन्नहू ज़ुल्लतुंव व ज़न्नू२ अन्नहू वाऽक़िउन् बिहिम् ख़ुज़ूऽमा२ आतय्नाकुम् बिक़ुव्वतिं व्वऽज़्कुरूऽ मा ऽफ़ीहि लअल्लकुम् तत्तक़ून ॥

और, जब हमने उनके ऊपर वितान के मानिन्द पर्वत को उठाया तो वे डरने लगे कि वह उनके ऊपर गिरेगा। (हमने कहा–) "जो हमने तुम्हें प्रदान किया है, उसे दृढ़ता से पकड़े रहो, और उसे स्मरण करते रहो। कदाचित् तुम्हें भय हो।"

[मंज़िल २, पारा ९, रुकूअ २२। १०]

(१) व इज़् अख़ज़ा रब्बुका मिन् ँ बनी२ आदमा

मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्यतहुम् व अशहद हुम् अला२ अन्फ़ुसिहिम्; अलस्तु बिरब्बिकुम्; क़ाऽलूऽ बला, शहिद्नाऽ अन्त क़ूलूऽ यउमऽल् क़ियामति इन्नाऽ कुन्नाऽ अन हाज़ाऽ ग़ाफ़िलीन् ॥

और, जिस समय तेरे पालनकर्त्ता ने आदम के पुत्रों की पीठ में से उनकी सन्तान निकाली और उनसे उनके जीवन पर (इस प्रकार) वचन भराया कि, "क्या मैं तुम्हारा पालनकर्त्ता नहीं हूँ ?" यह (इसलिए किया कि) कहीं अन्तिम दिवस (क़यामत) में यह न कहें कि—"हम उससे अचेत थे।"

(२) अउ तक़ूलू२ इन्नमा२ अश्रका आबा२उनाऽ मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्मिन् बअ्दिहिम्, अफ़ तुह्लिकुनाऽ बिमाऽ फ़अलऽल् मुब्तिलून् ॥

अथवा कहो कि शिर्क (द्वैतवाद) तो हमारे पुरुषाओं ने पहले ही निकाल दिया और हम तो उनके पश्चात् उत्पन्न हुई (उनकी) सन्तान हैं। तू हमको एक कर्म पर, जो अपराधियों ने किया है, क्यों नष्ट करता है ?

(३) व कज़ालिका नुफ़स्सिलुऽल् आयाति व लअ़ल्लहुम् यर्जिऊन् ॥

और, इस प्रकार हम आज्ञाओं की विस्तृत व्याख्या करते हैं। कदाचित् वह लोग लौट आवें।

(४) वऽत्लु अ़लयहिम् नबअऽल्लज़ी२ आतयनाहु आयातिनाऽ फ़ऽन्सलख़ा मिन्हाऽ फ़अत्बअ़हु-श्शयतानु फ़ काऽना मिनऽल् ग़ावीन् ॥

और, उनको उस मनुष्य का समाचार सुनाओ कि जिसे हमने अपनी आयतें प्रदान कीं। पश्चात् वह उन्हें त्याग बैठा, फिर उस पर शैतान ने शासन जमाया। फिर वह मार्ग-भ्रष्टों में हुआ।

(५) व लव् शिअ्नाऽ लरफ़अ़्नाहु बिहाऽ वला किन्नहू२ अख़्लदा इलऽल् अर्ज़ि वऽत्तबआ़ हवाहु, फ़ मस्‌लुहू कमस्‌लिऽल् कल्बि, इन्तहिमल् अ़लयहि यल्हस् अव् तत्रुक्हु यल्हस्; ज़ालिका मस्लुऽल् क़ौ मिऽल्लज़ीना कज़्ज़बू बि आयातिना फ़ऽक्सुसिऽल्क़ससा लअ़ल्लहुम् यतफ़क्करून् ॥

यदि हम चाहते तो उसे ऊंचा उठा लेते, परन्तु वह पृथिवी पर गिर पड़ा और अपनी इच्छानुकूल चला। अतः उसका दृष्टांत कुत्ते के मानिन्द है कि उस पर यदि तू कुछ लाद दे तो वह जीभ निकाल दे और छोड़ दे तो जीभ निकाल दे। यह उन लोगों का दृष्टांत है, जो हमारी आयतों को असत्य बतलाते हैं। अतः तू गाथाओं का वर्णन कर, कदाचित् वह ध्यान करें।

(६) साऽऽअ मसलऽ (नि) ऽल् क़उ मुऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ व अन्फ़ुसहुम् काऽनूऽ यज़्लिमून ॥

जो हमारी आयतों को असत्य बतलावें उनका दृष्टांत दूषित है, और वे आत्म-अत्याचार करते हैं।

(७) मय्यह् दिऽल्लाहु फ़ हुवऽल् मुह् तदी, व मय्युज़्लिल् फ़ उलाऽइका हुमुऽल् ख़ासिरून ॥

जिसको अल्लाह मार्ग दिखलावे, वही सन्मार्ग को प्राप्त करता है, और जिसको अल्लाह मार्ग-च्युत कर दे, वह हानि उठावेगा।

(८) वलक़द् ज़रअ्नाऽ लि जहन्नमा कसीऽरम् मिनऽल् जिन्नि वऽल् इन्सि लहुम् क़ुलूबुल्लाऽ यफ़्क़हूना बिहाऽ व लहुम् अअ्युनुल्लाऽ युब्सिरूना बिहाऽ व लहुम् आज़ाऽनु ल्लाऽ यस्मऊ़ना बिहाऽ; उलाऽइका काऽल् अन्आऽमि बल् हुम् अज़ल्लु उलाऽइका हुमुऽल् ग़ाफ़िलून ॥

और हमने नर्क के निमित्त अनेकों मनुष्यों और जिन्नों (देवों) की सृष्टि की है। जिनके हृदय है, वह समझते नहीं, जिनके नेत्र हैं, वह देखते नहीं, और कान हैं, उनसे श्रवण नहीं

करते। वह लोग चौपायों के मानिन्द हैं; प्रत्युत उनसे अधिक मार्ग-भ्रष्ट वह लोग हैं, जो अचेत हैं।

(९) व लिल्लाहिऽल् अस्माउऽल् हुस्ना फ़ऽ-दूऊहु बिहाऽ वज़रूऽऽल्लज़ीना युल् हिदूना फ़ी अस्माइही; सयुज्ज़ूना माऽ काऽनूऽ यअ्मलून ॥

अल्लाह के सब नाम सुन्दर हैं, अतः वह (नाम) बोलकर ही उसका आवाहन करो; और जो उसके नामों के विषय में टेढ़े मार्ग पर चलते हैं, उन्हें त्याग दो। वह अपनी कृति का प्रतिफल प्राप्त करेंगे।

(१०) व मिम्मन् ख़लक़्ना उम्मतुं यह्दूना बिऽल् हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून ॥

और, हमारी सृष्टि में एक ऐसा भी समुदाय है, जो सन्मार्ग दिखलाता है; और उसी के अनुकूल न्याय करता है।

[मंज़िल २, पारा ९ रु० २३ ७]

(१) वऽल्लज़ीना कज़्ज़बू बि आयातिनाऽ सनस्तद्रिजुहुम्मिन् हैसु लाऽ यअ्लमून ॥

और, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य बतलाईं, उनको हम शनैः-शनैः इस प्रकार पकड़ेंगे कि जिससे उन्हें पता न चले।

---

* क़ुरान में अल्लाह के निन्नानवे नाम कहे जाते हैं।

(२) व उम्ली लहुम्; इन्ना कय्दी मतीन् ॥

और उन्हें ढील दूँगा; यद्यपि मेरा कपट पक्का है।

(३) अव लम् यतफ़क्करू मा। बिसाहिबिहिम्मिन् जिन्नतिन्; इन् हुवा इल्ला, नज़ीरुम्मुबीन् ॥

क्या उन्होंने नहीं सोचा कि उनके हितैषी (मुहम्मद) की मति पर कुछ शैतान का शासन नहीं है; वह तो साक्षात् भय दिलाने वाला है?

(४) अव लम् यन्जु.रू फ़ी मलकूति-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि व मा ख़लक़ऽल्लाहु मिन् शय्इ व्व अन् असा अय्यकूना क़दि-क़्तरबा अजलुहुम् फ़ बिअय्यि हदीसिन् बअ्दहू युअ्मिनून् ॥

क्या आकाश और पृथिवी के सामाज्य तथा उस वस्तु पर जो अल्लाह ने रची है—दृष्टि नहीं डाली? और यह इसलिए हो कि कदाचित् उनका निश्चित काल (नाश) निकट आपहुंचा है। अतः इसके पश्चात् किस पर विश्वास लाएंगे।

(५) मय्युज़्लिलिऽल्लाहु फ़ लाऽ हादिया लहू; व यज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून् ॥

जिसे अल्लाह मार्ग-भ्रष्ट करे, उसे कोई स-मार्ग सुझानेवाला नहीं, और वह उनको उनकी उद्दण्डता में भटकते हुए छोड़ रखता है।

(६) यस्अलूनका अनि-स्साअति अय्याऽना मुर्साहाऽ, कुल् इन्नमाऽ इल्मुहाऽ इन्दा रब्बी; लाऽ युजल्लीहाऽ लिवक्तिहाऽ इल्लाऽ हुवा, सकुलत् फ़ि-स्स-मावाति वऽल् अर्ज़ि; लाऽ तअ्तीकुम् इल्लाऽ बग़्ततन्; यस्अलूनका क अन्नका हफ़िय्युन् अन्हाऽ; कुल् इन्नमाऽ इल्मुहाऽ इन्दऽल्लाहि वला किन्ना अक्सरन्नाऽसि लाऽ यअ्लमून् ॥

(हे पैग़म्बर! लोग) तुझ से उस साअ़त के सम्बन्ध में पूछते हैं कि (उस क़यामत का) कहीं ठिकाना भी है?—(तू उनसे) कह कि इस (क़यामत) का बोध तो केवल मेरे पालनकर्ता अल्लाहके पास है। वही उसको अपनी उस अवधि पर प्रगट करके दिखलावेगा। वह आकाश और पृथिवी में एक भारी घटना है, जो तुम पर आवेगी तो अकस्मात् आवेगी। हे पैग़म्बर! यह लोग) तुझ से पूछने लगते हैं, मानो तू उसका खोजी है। तू कह—"उसका ज्ञान केवल अल्लाह के पास है; परन्तु प्रायः लोगों में बुद्धि नहीं।

(७) कुल्लाऽ अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़्अऽव्वलाऽ ज़र्राऽ इल्लाऽ माऽशाऽअल्लाहु, वलौ कुन्तु अअ्लमुऽल् ग़ैबा लऽस्तक्सर्तु मिनऽल् ख़ैरि, व माऽ मस्सनिय-

स्सूउ, इन् अनाऽ इल्लाऽ नज़ीरुंव् वशीरुल्लि क़ौमिं-य्युअ्मिनून् ॥

(हे पैग़म्बर!) तू कह कि मैं न अपने आत्मलाभ का ही स्वामी हूँ और न हानि का, परन्तु (वही होकर रहता है।

यदि मैं परोक्ष का भेद जानता होता तो मुझे अनेक लाभ होते और हानि कदापि न पहुँचती। मैं तो (केवल) इतना ही हूँ कि विश्वासी लोगों को भय और हर्ष सुनाऊँ।

[मंजिल २ पारा ९ रु० १४।१८]

(१) हुवऽल्लज़ी ख़लक़कुम्मिन् नफ़्सिंव्वाहिद-तिंव्व जअ़ला मिन्हाऽ ज़ौजहाऽ लियस्कुना इलय्हाऽ; फ़ लम्माऽ तग़श्शाहाऽ ह़मलत् ह़म्लऽन् ख़फ़ीफ़ऽन् फ़ मर्रत् बिही, फ़ लम्मा़ऽ अस्क़लत् दअ़वऽऽल्लाह रब्ब-हुमाऽ लइन् आतय्तनाऽ स्वाऽलिह़ल्लनकूनन्ना मिन-श्शाकिरीन् ॥

वही (अल्लाह) है, जिसने तुमको एक ही व्यक्ति से बनाया; और उसी से उसका जोड़ा (हव्वा स्त्री को) बनाया, जिससे कि वह उसके साथ निवास करे। फिर जब पुरुषने स्त्री को ढांपा, उसे हलकासा गर्भ* स्थिर हुआ, फिर उसके साथ चलती फिरने लगी। फिर जब बोझल हुई तो दोनों ने अपने पालन-

* रिवायत है कि जब हव्वा को हमल (गर्भ) रह गया, तो उसे शैतान

कर्त्ता अल्लाह को (इन शब्दों में) आहूत किया कि यदि तू हमको सर्वथा स्वस्थ (सन्तान) प्रदान करे तो हम तुझे धन्यवाद दें।

(२) फ़लम्मा२ आताहुमाऽ साऽलिहऽन् जअला लहू शुरकाऽ२आ फ़ीमा२ आताहुमाऽ फ़तआलऽल्लाहु अम्माऽ युश्रिकून् ॥

फिर जब उनको सर्वथा स्वस्थ (बालक) प्रदान किया गया तो उसके प्रदत्त पदार्थमें समांश (शरीक) निश्चित करने लगे। फिर अल्लाह उनके समांश बताने से परे (पृथक्) है।

(३) अयुश्रिकूना माऽलाऽ यख़्लुक़ु शय्अऽव्वहुम् युख़्लक़ून् ॥

किन को समांश (साझीदार) बताते हैं?—जो एक पदार्थ भी उत्पन्न न कर सके और जो स्वयं उत्पन्न होते हैं।

ने दर्शन दिये और प्रतिज्ञा की कि यदि वह बालक का नाम अब्दुल्ला (अल्लाह का सेवक जैसा कि आदम ने तजवीज़ किया था) के स्थान में अब्दुल हारिस अथवा अलहारिस (फरिश्तों में शैतान का नाम) रक्खेगो तो वह उसे सुखपूर्वक बालक बनेगी, आदम इस बात पर सहमत हो गया और जब बालक उत्पन्न हुआ, उसे उसी नाम से पुकारा गया जिससे वह तत्काल मर गया। यह कहानी कदाचित 'आदम' शब्द से—जिसका अर्थ इब्री में धरती जोतने वाला और जो अर्बी में अब्दुल हारिस पढ़ा जाता है—[illegible] की गई है।

(४) व लाऽ यस्ततीऊना लहुम् नस्रऽन्वलाऽ अन्फुसहुम् यन्सुरून् ॥

और न, उसको सहायता कर सकते हैं, और अपनी ही सहायता करते हैं।

(५) व इन्तद्ऊहुम् इलऽल् हुदा लाऽ यत्तबिऊ कुम्, सवाऽउन् अलय्कुम् अदअवतुमूहुम् अम् अन्तुम् साऽमितून् ॥

और, यदि उनको सन्मार्ग पर बुलाओ तो तुम्हारे बतलाने पर न चलें, अतः तुम्हारे लिए एक-सा है चाहे उन्हें बतलाओ अथवा मौन रहो।

(६) इन्नऽल्लज़ीना तद्ऊना मिन्दूनिऽल्लाहि इ.बाऽदुन् अम्साऽलुकुम् फ़ऽद्ऊ.हुम् फ़ल्यस्तजीबूऽ लकुम् इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥

जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त आहूत करते हो, वह तुम्हारे जैसे अल्लाह के आराधक हैं, कि यदि उनको निमन्त्रित करो तो उन्हें उचित है कि यदि वह सच्चे हैं तो तुम्हारा निमन्त्रण स्वीकार करें।

(७) अलहुम् अर्जुलु य्यम्शूना बिहाऽ अम् लहुम् अय्दि य्यबि्त़शूना बिहाऽ, अम् लहुम् अअ्युनु य्युब्सिरूना बिहाऽ अम् लहुम् आज़ाऽनु य्यस्मऊ.न बिहाऽ, कुलिऽ

हुऊ, शुरकाऽअा कुम् सुम्मा कीदूनि फ़लाऽ तुन्ज़िरून् ॥

क्या उन (देवों) के पैर हैं जिनसे चलते हैं; अथवा उनके हाथ हैं जिनसे ग्रहण करते हैं, अथवा उनके नेत्र हैं जिनसे देखते हैं, अथवा उनके कान हैं जिनसे श्रवण करते हैं? तू कह–अपने साथियों को बुलाओ, फिर मेरे निमित्त षड्यन्त्र रचो और विलम्ब न करो।

(८) इन्ना वलिय्यि यऽल्लाहुऽल्लज़ी नज़्ज़लऽल् किताबा व हुवा यतवल्ल–स्सालिहीन् ॥

मेरा संरक्षक अल्लाह है, जिसने पुस्तक उतारी है, और शुभ उपासकों की संरक्षता करता है।

(९) वऽल्लज़ीना तद्ऊ,ना मिन्दूनिही लाऽ यस्त-तीऊ,ना नसरकुम् वलाऽ अन्फुसहुम् यन्सुरून् ॥

और, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त आह्वत करते हो, वह तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते और न आत्म-रक्षा कर सकते हैं।

(१०) व इन् तद्ऊ,हुम् इलऽल् हुदा लाऽ यस्म-ऊ,ऽ; व तराहुम् यन्ज़ुरूना इलयका वहुम् लाऽ युब्सिरून् ॥

और, यदि उनको सन्मार्ग की ओर आमन्त्रित करो, तो कुछ न सुनें; और तू देखे कि वे तेरी ओर घूरते हैं; और कुछ नहीं देखते।

(११) ख़ुज़िऽल् अ़फ्वा वअ्मुरबिऽल् उ़र्फ़ि व अअ्‌रिज़् अ़निऽल् जाहिलीन् ॥

पूर्णतः क्षमा कर, और शुभ कर्म की आज्ञा दे तथा मूर्खों से पृथक् रह ।

(१२) व इम्मा ऽ यन्ज़ा ग़न्नका मिन-श्शय्‌तानि नज़्‌ग़ुन् फ़ऽस्तइ़ज़् बिऽल्लाहि, इन्नहू समीऊ़न् अ़लीम् ॥

और, यदि तुझे कभी शैतान की उत्तेजना आवेशयुक्त कर दे तो अल्लाह की शरण पकड़, वही सुनता है, जानता है ।

(१३) इन्नऽल्लज़ीनऽत्तक़ऊ ऽ इज़ाऽ मस्सहुम् ता़इ-फ़ुम्मिन-श्शय्‌तानि तज़क्करूऽ फ़ इज़ाऽ हुम्मुब्सिरून् ॥

जो (अल्लाह का) भय रखते हैं, उन पर जब शैतान की माया का प्रभाव पड़े, अल्लाह का स्मरण करते हैं । फ़िर तभी उनको बोध हो गया ।

(१४) व इख़्वाऽनुहुम् यमुद्दूनहुम् फ़िऽल् ग़य्यि सुम्मा लाऽ युक़्सिरून् ॥

और, उन (शैतानों) के भाई उनको भूल की ओर प्रवृत्ति करते हैं । फिर उसमें कोई न्यूनता नहीं करते ।

(१५) व इज़ाऽ लम् तअ्‌तिहिम् बिआयतिन् क़ाऽलूऽ लौलऽज्तबय्‌तहाऽ; क़ुल् इन्नमाऽ अत्तबिउ़ माऽ यूहाऽ इलय्‌या मिर्रब्बी हाज़ाऽ बसाऽइरु मिर्रब्बिकुम् व हुदव्‌व रह़्मतुल्लि क़ौमिय्युअ्‌मिनून ॥

और, यदि कहीं तू उनके पास कुरान की कोई आयत न लेकर जावे तो कहें—"तू क्यों छांटकर न लाया ?" (हे पैग़म्बर! उन्हें) तू कह कि मैं उसी पर चलता हूँ, जो मेरे पालनकर्त्ता की ओर से मुझ पर आदा आवे।

(१६) व इज़ाऽ कुरिअऽल् कुर्आनु फ़ऽस्तमिऊ ऽलहू व अन्सितूऽ लअ़ल्लकुम् तु.र्हमून् ॥

और, जब कुरान पढ़ा जावे तो उस ओर कान रक्खो और मौन रहो; कदाचित् तुम पर अनुग्रह हो।

(१७) वऽज्.कुर्रब्बका फ़ी न.फ्सका तज़र्रुअ़ऽव्व खी़फ़तऽव्वदूनऽल् जह्रि मिनऽल् क़ौ.लि बिऽल् गुदुव्वि वऽल् आसाऽलि वऽलाऽ तकुम्मिनऽल् ग़ाफ़िलीन् ॥

और, अपने अन्तःकरण में डर कर और (साधारण) वाणी के शब्द से धीमे शब्द में प्रातः और सायं के समय*, अपने पालनकर्त्ता का सुमिरन कर और अचेत मत हो।

(१८) इन्नऽल्लज़ीना इ.न्दा रब्बिका लाऽ यस्तक्बिरूना अ़न् इ.बाऽदतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून् ॥

जो लोग तेरे पालनकर्त्ता के पास हैं, प्रार्थना से प्रमाद नहीं करते, और उसके शुद्ध स्वरूप का स्मरण करते हैं; और उसी को सिजदा (साष्टांग दण्डवत) करते हैं।

---

* कुरान में पञ्चकालीन नमाज का कहीं वर्णन नहीं। हां, इस आयत में स्पष्टतः सायं प्रातः मानसिक प्रार्थना की ओर संकेत है जो आर्य्यों की सन्ध्या का अनुकरण है।

* ओम् *

सूरये-अन्फ़ाऽल×

नवें पारे का शेषांश

मँज़िल २ पारा ९ रु० १०

(१) यस् अलूनका अनिऽल् अन्फ़ाऽलि; कुलिऽल् अन्फ़ाऽलु लिल्लाहि व-र्रसूलि, फ़ऽत्तकुऽऽल्लाहा व अस्लिहूऽ ज़ाऽता बय्नि कुम् व अतीउ,ऽऽल्लाहा व रसूलहू इन् कुन्तुम्मुअ्मिनीन्॥

(हे पैग़म्बर!) लोग तुझ से लूट के धन के सम्बन्ध में पूछते हैं, तू कह "लूट का माल अल्लाह का और पैग़म्बर (मुहम्मद सा०) का है। अतः अल्लाह से डरो और परस्पर

× यह सूरत मदीने में हिजरी के दूसरे वर्ष में उतरी। इसमें १० रुकूअ और ७५ आयतें हैं। इसका अधिकांश बद्र के युद्ध सम्बन्धी चमत्कारों के सम्बन्ध में है। अनफ़ाल का शब्दार्थ लूटकर माल, अतः सूरत का आरम्भ ही काफ़िरों से लूटे हुए माल के विभाजन की मीमांसा करते हुए होता है। बद्र के युद्ध में लूटे हुए माल के सम्बन्ध में मुहम्मद साहब के डेरे के रक्षकों ने मुहम्मद साहिब से यह प्रश्न पूछा था, जिसका उत्तर हज़रत ने यह दिया कि लूट का माल अल्लाह और पैग़म्बर का है।

सन्धि करो, और यदि विश्वासी हो तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा का अनुसरण करो।

(२–३) इन्नमऽऽल् मुअ्मिनूनऽल्लज़ीना इज़ाऽ ज़ुकिरऽल्लाहु व जिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ाऽ तुलियत् अलैहिम् आयातुहू ज़ाऽदत्हुम् ईमाऽनऽ व्व अला रब्बिहिम् यतवक्कलूनऽल्लज़ीना युक़ीमून-स्सलाता व मिम्माऽ रज़क़्नाहुम् युनफ़िक़ून ॥

विश्वासी (मुसल्मान) वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन आता है, उनके हृदय भयभीत हो जाते हैं; और जब उनके वाक्य को पढ़ते हैं तो उनका विश्वास बढ़ता है और अपने पालनकर्त्ता पर विश्वास रखते हैं।

(४) उलाऽइका हुमुऽल् मुअ्मिनूना हक़्क़ऽन; लहुम् दरजातुन् इन्दा रब्बिहिम् व मग़्फ़िरतुव्व रिज़्क़ुन् करीम् ॥ ४ ॥

यही सच्चे विश्वासी (मुसल्मान) हैं, उनको अपने पालन-कर्त्ता के पास पदवियाँ (और) क्षमा और अनुग्रहों का अन्न प्राप्त है।

(५) कमाऽ अख़्रजका रब्बुका मिन् बय्-तिका बिऽल् हक़्क़ि व इन्ना फ़रीक़ऽम्मिनऽल् मुअ्मिनीना ल कारिहून ॥ ५ ॥

जैसे तुझको तेरे पालनकर्त्ता ने सत्य कर्म के लिए अपने गृह से निष्कासित किया; और यद्यपि एक मौमिन मुसल्मानों की मण्डली इसके विरुद्ध थी।

(६) युजाऽदिलूनका फ़िऽल् हक़्क़ि बअ्दा माऽ तबय्यना कअन्नमाऽ युसाऽक़ूना इलऽल् मउ्ति वहुम् यन्ज़ुरून् ॥ ६ ॥

तुझसे सत्य बात प्रगट हुए पश्चात्, विवाद करते हैं, मानो उनको आंखों देखते हुये मृत्यु की ओर पठाते हैं।

(७) व इज़् यइ दुकुमुऽल्लाहु इह्दऽत्ताऽइफ़तय्नि अन्नहाऽ लकुम् व तवद्दूना अन्ना ग़य्रा ज़ाऽति-श्शव्कति तकूनु लकुम् व युरीदुऽल्लाहु अय्युहिक़्क़ऽल् हक़्क़ा बिकलिमातिही व यक़्तआ दाऽबिरऽल् काफ़िरीन् ॥ ७ ॥

और, जिस समय अल्लाह तुमसे दो दलों में से एक (पर आक्रमण करने) की प्रतिज्ञा करता था कि निस्सन्देह वह (लूट) तुम्हारे अधिकारमें आवेगी और तुम(वह)चाहते थे कि जिसमें

---

* मुहम्मद साहब ने ठहरा लिया था कि इस कुरेश के व्योपारियों के दल पर—जो मूरियाने मक्काको जारहा था—धोखे से आक्रमण करें। अबूसुफियान जो इस दल का दलपति था—इस बात को जान गया और मक्का को समाचार भेजा। वहां से एक सहस्र शस्त्रधारी मनुष्य चल पड़े इस कारण मुहम्मदसाहब के अनुयायियों में विवाद हुआ, कोई तो आक्रमण करने के पक्ष में थे और कोई विपक्ष में।

तुम्हारे कांटा न लगे और वह तुम्हें मिल जाय, और अल्लाह चाहता था कि सत्य की अपने वाक्यों से पुष्टि करे और काफ़िरों का पृष्ठ भाग (पीछा) काटे।

(८) लियुहिक़्क़ऽल् हक़्क़ा व युब्तिलऽल् बाऽतिला व लउ् करिहऽल् मुज्रिमून् ॥ ८ ॥

जिससे सत्य को सत्य (सिद्ध) करे और मिथ्या को मिथ्या (सिद्ध) करे और यद्यपि पापी सहमत न होंगे।

(९) इज् तस्तग़ीसूना रब्बकुम् फ़ऽस्तजाऽबा लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बि अल्फ़िम्मिनऽल् मलाइकति मुर्दिफ़ीन् ॥ ९ ॥

और, जब तुमने अपने पालनकर्त्ता से प्रार्थना की तो उस के निमित्त इस बात को ग्रहण किया कि मैं तुम्हारी सहायता एक सहस्र* फ़रिश्तों के साथ करूंगा, और उनके पीछे और भी होंगे।

(१०) वमाऽ जअलहुऽल्लाहु इल्लाऽ बुश्रा व लितत्मइन्ना बिही क़ुलूबुकुम्; व मऽ-न्नस्रु इल्लाऽ मिन् इन्दिऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा अज़ीज़ुन् हकीम् ॥ १० ॥

और, यह तो अल्लाह ने केवल शुभ समाचार दिया है

---

* सू० आलि इम्रान आयत १२० में फ़रिश्तों की संख्या ३००० है इसको यह कह कर समझाया जाता है कि पहले पहल १००० फ़रिश्ते के पीछे ३००० हो गये।

और यह इसलिये कि तुम्हारे मन सन्तुष्ट हों और सहायता तो केवल अल्लाह की ओर से है, अल्लाह शक्तिशाली और बुद्धिमान है।

(मंजिल, २ पारा ९, रु० १६)

(१) इज़् युग़श्शीकुमु-न्नुआऽसा आमनतम्मिन्हु व युनज़्ज़िलु अलयकुम्मिन-स्समाऽइ माऽअल्लि युतह्हिरकुम् बिही व युज़्हिबा अन्कुम् रिज्ज़-श्शय्तानि व लियर्बिता अला क़ुलूबिकुम् व युसब्बिता बिहिऽल् अक्दाम् ॥ ११ ॥

जिस समय तुम पर अपनी ओर से रक्षा के लिए निद्रा भेज दी और तुम पर आस्मान से पानी उतारा (वर्षाया), जिससे उससे तुम को पवित्र करे और तुमसे शैतान की अपवित्रता दूर करदे और तुम्हारे हृदयोंको दृढ़ करदे और (साथही) तुम्हारे पग (भी) स्थिर करे।

(२) इज़् यूही रब्बुका इलऽल् मलाऽइकति इन्नी मअकुम् फ़ सब्बितुऽऽल्लज़ीना आमनूऽ; सउल्क़ी फ़ी क़ुलूबिऽल्लज़ीना कफ़रुऽ-र्रुअबा फ़ऽज़्रिबूऽ फ़ौक़ऽल् अअ्नाऽक़ि वऽज़्रिबूऽ मिन्हुम् कुल्ला बनाऽन् ॥ १२ ॥

और, जब तेरे पालन-कर्त्ता ने फरिश्तों को आज्ञा भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अतः तुम मुसलमानों के मनोंको शुद्ध कर दो, मैं

काफ़िरों के मन में भय डाल दूंगा, अतः उनकी गरदनें मारो और उनकी अंगुलियों के अग्रभागों (पोरुओं) पर आघात पहुंचाओ (अर्थात् कुचलो)।

(३) ज़ालिका बि अन्नहुम् शाक़्क़ुऽऽल्लाहा व रसूलहू, व मय्युशाक़िक़िऽल्लाहा व रसूलहू, फ़ इन्नऽल्लाहा शदीदुऽल् इ.क़ाऽब्॥ १३॥

यह इसलिये कि वह अल्ला और उसके पैग़म्बर के विरोधी हुये और जो कोई अल्ला और उस के पैग़म्बर का विरोधी हुआ तो अल्लाह की भीषण मार है।

(४) ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्ना लिल् काफ़िरीना अज़ाब-न्नाऽर् ॥ १४ ॥

इसे तो तुम चखलो और जाने रहो कि काफ़िरों के लिये दोज़ख़ का दुःख है।

(५) या ऐ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू इज़ाऽ लक़ीतुमुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ ज़हूफ़ऽन् फ़ लाऽ तुवल्लू हुमुऽल् अदबार् ॥ १५ ॥

हे ईमान वालो! जब तुम काफ़िरों से युद्धक्षेत्र में भिड़ो तो उनको पीठ मत दो।

(६) व मय्युवल्लिहिम् यउमइज़िन् दुबुरहू इल्लाऽ मुत.हर्रिफ़ऽन्लि क़िताऽलिन् अउ, मुत.हय्यिज़ऽन् इला फ़ि

अतिन् फ़क़द् बा२आ बिग़ज़बिम्मिनऽल्लाहि वमअ्वाहु जहन्नमु; व बिअ्सऽल् मसीर् ॥ १६ ॥

जो मनुष्य उस दिन उन्हें और जो मनुष्य इसके अतिरिक्त कि युद्ध की निपुणता दिखाता हो अथवा सेना में जा मिला हो उन्हें पीठ दिखावेगा तो उस पर अल्लाह का प्रकोप होगा और उसका निवास नर्क है और वह कैसे बुरे स्थान पर ठहरेगा।

(७) फ़ लम् तक़्तुलूहुम् वला किन्नऽल्लाहा क़तल-हुम्, व माऽ रमय्ता इज् रमय्ता वला किन्नऽल्लाहा रमा; व लियुब्लियऽल् मुअ्मिनीना मिन्हु बला२अन् हसनऽन्, इन्नऽल्लाहा समीउन् अलीम् ॥ १७ ॥

अतः उनको तुमने नहीं मारा, परन्तु अल्लाह ने मारा और तूने उस समय (जो) मिट्टी फेंकी थी, (वह) तूने नहीं फेंकी परंतु अल्लाह ने फेंकी और क्या मुसलमानों पर अपनी ओर से उत्तम उपकार च हता था, निश्चय अल्लाह सुनता जानता है।

(८) ज़ालिकुम् व अन्नऽल्लाहा मूहिनु कय्दिऽल् काफ़िरीन् ॥ १८ ॥

यह तो हो चुका और ज्ञात रक्खो कि अल्लाह काफिरों के उपायों को शिथिल करेगा।

(९) इन्तस्तफ़्तहूऽ फ़ क़द् जा२अकुमुऽल् फ़त्हु, व इन्तन्तहूऽ फ़ हुवा ख़य्रुल्लकुम्, व इन्तऊदूऽ नऊद्,

व लन्तुग़्निया अ़न्कुम् फ़िअतुकुम् शय्अऽन्वलउ्
कसुरत् व अन्नऽल्लाहा मअ़ऽल् मुअ्मिनीन् ॥ १६ ॥

यदि तुम विजय चाहो तो तुमको अल्लाह की विजय पहुंच चुकी, और यदि रुक जाओ तो तुम्हारा भला है; और यदि पुनः करोगे तो हम भी पुनः करेंगे, और तुम्हारा समुदाय तुम्हारे काम न आवेगा; चाहे अधिक ही क्यों न हो; और स्मरण रक्खो कि अल्लाह मुसल्मानों के साथ है।

[मंजिल २ पारा ९ रु० ३:६]

(१) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ अतीऊऽऽ
ल्लाहा व रसूलहू वलाऽ तवल्लउऽ अ़न्हु व अन्तुम् तस्म-
ऊन् ॥ २० ॥

हे मुसल्मानो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा के आधीन रहो उसे सुने पीछे, उससे विमुख मत हो।

(२) वलाऽ तकूनूऽ कऽल्लज़ीना क़ाऽलू समिअ़्नाऽ
वहुम् लाऽ यस्मऊ़न ॥ २१ ॥

और, वैरी मत हो जिन्होंने कहा कि हमने सुना और वे सुनते नहीं।

(३) इन्ना शर्रऽ-द्दवा ब्बि इ़न्दऽल्लाहि-स्सुम्मुऽल्
बुक्मुऽल्लज़ीना लाऽ यअ़्क़िलून् ॥ २२ ॥

अल्लाह के यहां निकृष्ट पशुओं में वही (काफ़िर) बहरे गूंगे हैं जिन्हें बोध नहीं।

(४) व लउ अलिमऽल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरऽल्ल-अस्मअहुम्; वलउ अस्मअहुम् ल-तवल्लउऽ व्वहुम्मु-अ़्रिज़ून ॥ २३ ॥

और यदि अल्लाह को इनमें कुछ सद्गुण दिखाई देता तो उनको सुनाता, और जो इन सबको सुनावे तो पराङ्मुख होकर उलटे लौटें।

(५) या ऽ य्युहऽल्लज़ीना आमनुऽस्तजीबूऽ लिल्लाहि व लि-र्रसूलि इज़ाऽ दआऽकुम् लिमाऽ युह्यीकुम्, वाऽअ़्लमूऽ अन्नऽल्लाहा यहूलु बैनऽल् मर्इ व क़ल्बिही व अन्नहू इलयहि तुह्शरून ॥ २४ ॥

हे मुसलमानो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा सुन कर उस पर विश्वास करो जब कि वह तुमको एक (ऐसे) कार्य के लिए—जिसमें तुम्हारा जीवन है—आहूत करे; और यह स्मरण रक्खो कि अल्लाह मनुष्य से उसके मन को रोक लेता है और यह कि तुम को उसी के समीप एकत्रित होना है।

(६) वऽत्तक़ूऽ फ़ित्नतल्लाऽ तुसीबन्नऽल्लज़ीना ज़लमूऽ मिन्कुम् ख़ाऽस्सतन् वा-अ़्लमूऽ अन्नऽल्लाहा शदीदुऽल् इ़क़ाऽब् ॥ २५ ॥

और, इस उत्पात से घृणा करो: तुम में से अन्यायियों पर विशिष्ट रूप से यह (प्रकोप) अवतीर्ण न होगा; और जान रक्खो कि अल्लाह का आतङ्क कठोर है ।

(७) वऽज़् कुरू३ इज़् अन्तुम् क़लीलुम्मुस्तज़्-अफ़ूना फ़िल् अर्ज़ि तख़ाऽफ़ूना अय्यतख़त्ता फ़कुमु-न्नाऽसु फ़ आवाकुम् व अय्यदकुम् बि नस्रिही व रज़क़कुम्मिन-त्तय्यिबाति लअ़ल्लकुम् तश्कुरून् ॥ २६ ॥

और, (उस समय का) स्मरण करो जब कि तुम (मक्का) देश में अल्पसंख्यक और पराधीनावस्था में पड़े हुये डरते थे कि कहीं तुमको लोग लूट (न लें, फिर उसने तुमको (मदीने में) स्थान दिया और अपनी सहायता से बल प्रदान किया और तुमको भोजनार्थ पवित्र पदार्थ प्रदान किये कि कदाचित् तुम कृतज्ञता स्वीकार करो ।

(८) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तख़ूनु-ऽऽल्लाहा व-र्रसूला व तख़ूनू३ व अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ़्लमून् ॥ २७ ॥

हे मुसल्मानो ! अल्लाह और उसके पैग़म्बर से छल मत करो और न ज्ञान पूर्वक अपनी धरोहर में धोखा करो ।

(९) वाऽअ़्लमू३ अन्नमा३ अम्वाऽलुकुम् व औलाऽ-दुकुम् फ़ित्नतुं व्व अन्नऽल्लाहा इ़न्दहू३ अज्रुन् अ़ज़ीम् ॥

और यह जान रक्खो कि तुम्हारी सम्पत्ति और सन्तति माया-मोह है; और यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।

[मं० २ सिपारा-६ रुकूअ ४।६]

(१) या अय्युहऽल्लज़ीना आमनू इन्ततकुल्ला-हा यज्अल्लकुम् फुर्क़ानऽव्व यकफ़्फ़िर्अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर्लकुम्; वऽल्लाहु ज़ुऽल् फ़ज़्लिऽल् अज़ीम् ॥ २६ ॥

हे मुसलमानो! यदि अल्लाह से भय करते रहोगे तो वह तुम में निर्णय कर देगा और तुम से तुम्हारे पाप उतारेगा और तुम्हें क्षमाप्रदान करेगा; और अल्लाह का अनुग्रह महान है।

(२) व इज़् यम्कुरु बिकऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लियु-स्बितूका अउ् यक़्तुलूका अउ् युख़्रिजूका; व यम्कुरूना व यम्कुरु ल्लाहु; वऽल्लाहु ख़ैरुऽल् माऽकिरीन ॥३०॥

और [illegible] काफ़िर कपट करने लगे कि तुमको बिठा दें अथवा [illegible] अथवा निकाल दें और वह भी कपट करते थे और [illegible] कपट करता था, और अल्लाह सर्वोपरि कपटी

[illegible] तुत्ला अलैहिम् आयातुना क़ाऽ-

ल्ऽ क़द् समिअ़्नाऽ लउ् नशा२उ ल क़ुल्नाऽ मिस्ला हाज़ा२ इन् हाज़ा२ इल्ला२ असाऽतीरुल् अव्वलीन् ।।३१।।

और जब कोई उन्हें हमारी आयतें पढ़ कर सुनावे तो कहते हैं कि हम सुन चुके हैं, हम चाहें तो ऐसे सुना सकते हैं, यह कुछ नहीं है; केवल पूर्वजों की कहानियां हैं।

(४) व इज् क़ाऽलुऽ-ल्लाहुम्मा इन् काऽना हाज़ा२ हुवऽल् हक़्क़ा मिन् इन्दिका फ़ अम्तिर् अ़लैनाऽ हिजाऽरतम्मिन-स्समा२इ अविऽअ्तिनाऽ बि अ़ज़ाऽबिन् अलीम् ।। ३२ ।।

और जब कहने लगे कि हे अल्लाह! यदि तेरी ओर से यही मत सत्य है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा अथवा हम पर दुःख का दण्ड उतार।

(५) व माऽ काऽनऽल्लाहु लियुअ़ज़्ज़िबहुम् व अन्ता फ़ी हिम्, वमाऽ काऽनऽल्लाहु मुअ़ज़्ज़िबहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून् ।। ३३ ।।

और जब तक तू उनमें था, अल्लाह उन पर आतङ्क (प्रगट) न करता था; और जब तक वह (पापों को) क्षमा करता रहेगा, अल्लाह उन पर आतङ्क प्रगट न करेगा।

(६) व माऽ लहुम् अल्लाऽ युअ़ज़्ज़िबहुमुऽल्लाहु वऽल्लाहु यसुद्दूना अ़निऽल् मस्जिदिऽल् हराऽमि वमाऽ

फाऽनू ३ औलियाऽअहू; इन् औलियाऽउहू ३ इल्लऽल्-मुत्तक़ूना वला किन्ना अक्सरहुम् लाऽ यअ्लमून् ॥३४॥

और उनमें क्या (गुण) है कि अल्लाह उन पर प्रकोप न करे और वह मस्जिद हराम (काबे में जाने) से रोकते हैं, और (यद्यपि) उसके अधिकारी * नहीं, उसके अधिकारी तो यही हैं जो संयमी हैं; परन्तु वह प्रायः परिचित नहीं।

(७) व माऽकाऽना सलाऽतुहुम् इ,न्दऽल्-बयृति इल्लाऽ मुकाऽअऽव्व तस्दियतन् ; फ़ज़ूक़ुऽल्-अ़ज़ाऽबा बिमाऽ कुन्तुम् तक्फ़ुरून् ॥ ३५ ॥

और उनकी नमाज़ (प्रार्थना) कुछ न थी; (किन्तु) केवल काबे के पास सीटियां और तालियां बजाना ‡। (Whisling

* वस्तुतः क़ुरैश ही काबा के अधिकारी थे, परन्तु वहां मूर्ति पूजा और अनुचित चेष्टा करते थे। इसीलिए क़ुरान उन्हें काबा का अधिकारी नहीं समझता; अन्यथा काबा तो उनकी कौम के अधिकार मक्का में विजय के पश्चात् भी चला आता था।

‡ It is that they used to go round the Caaba naked, both men and women, whistling at the some time through their frog fingers and clapping their hands.

स्त्री पुरुष काबा की नगे होकर परिक्रमा करते थे और साथ ही ताली और चुटकियां बजाते थे। इसी आयत का आश्रय पाकर—इसी के असत्य आधार पर भारत के मुसलमान मस्जिदों के सामने बाजा बजाने से हिन्दुओं को रोका करते हैं; परन्तु क़ुरान की आयत उन्हें यह अधिकार नहीं देती।

देखा गया है कि कोई कहते हैं कि लोग इस प्रकार का कोलाहल मुहम्मद साहब की नमाज़ में विघ्न डालने को करते थे और कथ्य प्रार्थना करने का बहाना बनाते थे।

d clapping) था, अतः अपने कुफ़्र का फल आस्वादन लो।

(८) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ युन्फ़िक़ूना अम्वाऽलहुम् लियसुद्दूऽ अन् सबीलिऽल्लाहि; फ़ सयुन्फ़िक़ूनहाऽ सुम्मा तकूनु अलयहिम् हसरतन् सुम्मा युग़्लबून। वल्लज़ीना कफ़रूऽ इला जहन्नमा युह्शरून ॥ ३७ ॥

जो लोग काफ़िर हैं, अपना द्रव्य (इसलिये) व्यय करते हैं कि (लोगों को) अल्लाह के मार्ग से रोकें, अतः अभी और व्यय करेंगे, पश्चात् (अन्त में) उनको पश्चात्ताप होगा; और अन्त में पराजित होंगे और जो काफ़िर रहेंगे वे नर्क (दोज़ख़) को भेजे जावेंगे।

(६) लियमीज़ऽल्लाहुऽल् ख़बीसा मिन-त्तय्यिबि व यज्अलऽल् ख़बीसा बअ्ज़हू अला बअ्ज़िन् फ़ यर्कुमहू जमीअऽन् फ़ यज्अलहू फ़ी जहन्नमा; उलाऽइका हुमुऽल् ख़ासिरून ॥ ३७ ॥

जिससे कि अल्लाह अपवित्र को पवित्र से पृथक् करे और एक अपवित्र को एक (दूसरे) अपवित्र पर रखे, फिर सब का ढेर करे, फिर उसको दोज़ख़ (नर्क) में डाले, यही लोग हानि उठाने वाले हैं।

[मँजिल २ पारा ६ रु ५।७]

(१) कुल्लिल्लज़ीना कफ़रूइ इंय्यन्तहूऽ युग़्फ़-र्लहुम्माऽ क़द् सलफ़ा, व इंय्य ऊ,दूऽ फ़क़द् मज़त् सुन्न-तुऽल् अव्वलीन् ॥ ३८ ॥

(हे पैग़म्बर !) तू काफ़िरों से कह दे कि यदि (हमारे विरोध से) रुके रहोगे तो जो कुछ कर चुके हो क्षमा हो जायगा, और यदि वही करोगे तो पूर्वजों का आदर्श (दण्ड इनके सामने) पहले ही व्यतीत हो चुका है (अर्थात् पूर्वजों के भोगे दण्ड के अनुसार इन्हें दण्ड भोगना पड़ेगा ।)

(२) व क़ाऽतिलहुम् हत्ता लाऽ तकूना फ़ित्नतुंव्व यकून-दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि, फ़इनिन्तहउऽ फ़ इन्नऽ-ल्लाहा बिमाऽ यअ्मलूना बसीर् ॥ ३९ ॥

और (ऐसी अवस्था में) उनसे युद्ध * करते रहो जब तक कि उपद्रव (मूर्ति पूजा) के सम्बन्ध में ◄I► किसी प्रकार

---

* 'क़ाऽतिलू' का स्पष्ट अर्थ क़त्ल करने का है, परन्तु शाह अब्दुल क़ादिर मौ० रफ़ीउद्दीन, मौ० वली उल्लाह, George sale, Cannon Sell, J. Passmore and J. M. Rodwell प्रायः सभी इसका अर्थ to fight अर्थात् युद्ध करना अथवा लड़ना करते हैं। अतः हमें भी यही मान्य है।

◄I► Mr G. Sell इसका अर्थ इस प्रकार करते हैं—fight against them until there be no opposition in favour of idolatory, and the religion be wholly God's.

(विवाद) न रहे और सर्वत्र अल्लाह का मत अथवा
ाम (प्रचलित) हो जावे, पश्चात् यदि वह (कुफ़्
त् मूर्ति पूजादि से) रुक जावें तो अल्लाह उनके कार्य
ा है।

(३) व इन् तवल्लवुऽ फ़ाऽअ्लमूऽ अन्नऽल्लाहा
लाकुम्; निअ्मऽल् मउ्ला व निअ्म-न्न
र् ॥ ४० ॥

और यदि वह न मानें तो समझलो कि अल्लाह तुम्हारा
ार्थक है, वह कैसा अच्छा समर्थक और कैसा अच्छा
ायक है!



पारा वाऽअ्लमू

(४) वाऽ अ्लमूऽ अन्नमाऽ ग़निम्तुम् मिन् शय् इन् फ़ अन्ना लिल्लाहि ख़ुमुसहू व लिर्रसूलि व लिज़िल् क़ुर्बा वऽल् यतामा वऽल् मसाकीनि वऽब्नि-स्सबीलि इन्कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि वमाऽ अन्ज़ल्नाऽ अ़ला अ़ब्दिनाऽ यौमऽल् फ़ुर्क़ानि यौमऽल् तक़ऽल् जम्ःआनि, वऽल्लाहु अ़ला क़ुल्लि शय् इन् क़दीर् ॥ ४१ ॥

और ध्यान रहे कि कोई वस्तु लूट के माल में लाओ तो, तुमने उस वस्तु पर—जो हमने अपने भक्त (मुहम्मद) पर भेद * के दिन और उस दिन, जब दो सेनायें भिड़ीं, उतारी है—विश्वास किया है, इसमें से पञ्चमांश अल्लाह के (और) पैग़म्बर के, सम्बन्धी के, और अनाथ और याचक के तथा पथिक के निमित्त है; और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिमान् (शासक) है।

---

* बद्र का युद्ध आकस्मिक था, किसी की इच्छा युद्ध की न थी। इधर से मुसल्मानों का गिरोह काफ़िरों पर चढ़ कर गया उधर से कुफ़्फ़ार गिरोह की सहायता को चला तो गिरोह बच कर निकल गया। अकस्मात् दोनों सेनाओं का सामना हुआ और मुसल्मान विजयी हुए। यदि यह युद्ध न होता तो प्रत्येक अपने बल की प्रशंसा करता, इससे मुसल्मानों को सब विदित हो गया।

(५) इज़् अन्तुम् बिऽल् उद्वति-द्दुन्याऽ व हुम् बिऽल् उद्वतिऽल् .क़ुस्वा व-र्रक्बु अस्फ़ला मिन् कुम्; वलव् तवाऽअत्तुम् लऽख़्तलफ़्तुम् फ़िऽल् मीआदि व ला किल्लियक़्ज़ियऽल्लाहु अम्रऽन् काऽना मफ़्ऊलऽल्लियह्लिका मन् हलका अन् बय्यिनति व्व यह्या मन् .हय्या अन् बय्यिनतिन्; व इन्नऽल्लाहा लसमीउ.न् अलीम् ॥४२॥

और जिस समय तुम घाटी के इस ओर थे और वे उधर, दूसरी ओर थे और अश्वारोही तुम से नीचे पहुंच गये थे; और यदि तुम परस्पर (लड़ने की) प्रतिज्ञा कर लेते तो निश्चित (काल) पर न लड़ते; परन्तु अल्लाह को एक कार्य—जो (उसके यहाँ स्वीकार) हो चुका था—पूरा कर डालना था, जिससे जिसे मरना है वह (मुसल्मान होने की घोषणा की) स्पष्टता के साथ मरे और जिसे जीवित रहना है वह भी

* बद्र का युद्ध आकस्मिक था, किसी की इच्छा युद्ध की न थी, इधर से मुसल्मानों का गिरोह काफ़िरों पर चढ़ कर गया, उधर से अबूजहल गिरोह की सहायता को चला। गिरोह बच कर निकल गया। अकस्मात् दोनों सेनाओं का सामना हुआ और मुसल्मान विजयी हुए यदि वह युद्ध न होता तो प्रत्येक अपने बल की प्रशंसा करता, इस से मुसलमानों का बल विदित हो गया।

(मुस्लिम होने की घोषणा की) स्पष्टता के साथ जीवित रहें; और अल्लाह सुनता है और जानता है।

(६) इज् युरीकहुमुऽल्लाहु फ़ी मनाऽमिका क़लीलऽन्; व लउ् अराकहुम् कसीरऽल्लफ़शिल्तुम् व ल तनाऽज़अ्तुम् फ़िऽल् अम्रि वला किन्नऽल्लाह सल्लमा; इन्नहू अलीमुन् विज़ाऽति-स्सुदूर् ॥४३॥

और जब अल्लाह ने उन्हें तेरे स्वप्न में अल्प संख्यक (करके) दिखलाया और यदि वह बहुसंख्यक (करके) दिखलाता तो तुम लोग कायरता करते और (युद्ध) कार्य (को विवादग्रस्त बना, उस) में विघ्न डालते; परन्तु अल्लाह ने रक्षा की; उसे—जो बात मनों में है—विदित है।

(६ व इज् युरीकुमूहुम् इज़िऽल्तक़यतुम् फ़ी अअ्युनिकुम् क़लीलऽव्व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ्युनिहिम् लियक़्ज़ियऽल्लाहु अम्रऽन् काऽना मफ़ऊलऽन्; व इलऽल्लाहि तुर्जिउऽल् उमूर् ॥

और जब मुठभेड़ हुई, उस (अल्लाह) ने तुम्हारी दृष्टि में उस सेना के अल्प-संख्यक होने का अनुमान कराया और उनकी दृष्टि में तुम्हारे अल्प-संख्यक होने का अनुमान कराया, जिससे कि अल्लाह एक (वह) काम पूरा कर डाले जो (उसके यहाँ निश्चित) हो चुका था; और प्रत्येक कार्य की पहुँच अल्लाह तक ही है।

(मंजिल, २ पारा १०, रू० ६।६)

(१) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू३ इज़ाऽ लक़ीतुम् फ़िअतन् फ़ऽस्बुतूऽ वऽज़्कुरुऽऽल्लाहा कसीरऽल्लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहू न ॥४५॥

हे मुसलमानो! जब किसी सेना से भिड़ो तो (अपने विचार में) स्थिर रहो; और अल्लाह का अतिशय स्मरण करो, कदाचित् तुम विजय प्राप्त करो।

(२) व अतीउऽऽल्लाहा व रसूलहू वलाऽ तनाऽज़ऊऽ त फ़फ़शलूऽ व तज़्हबा रीहु कुम् वऽस्बिरूऽ; इन्नऽल्लाहा मअ़ऽस्साबिरीन् ॥४६॥

और अल्लाह और पैग़म्बर (मुहम्मद) के आधीन रहो और परस्पर विवाद अथवा विग्रह न करो; अन्यथा पराजित हो जाओगे और तुम्हारी हवा (प्रतिष्ठा) बिगड़ जायगी, और सन्तोष करो; अल्लाह सन्तोषियों के साथ है।

(३) व लाऽतकूनूऽ कऽल्लज़ीना ख़रजूऽ मिन्दियाऽरिहिम् बतरऽन् व रिआ३अन्नाऽसि वय सुद्दूना अन् सबीलिल्लाहि; वऽल्लाहु बिमाऽ यअ़्मलूना मुहीतू ॥४७॥

और ऐसे मत बनो जैसे वे लोग थे, जो गर्व करते और मनुष्यों को (अपना दर्प) दिखाते हुए अपने गृहों से निकले

और (उन्हें) अल्लाह के मार्ग से रोकते थे; जो वह करते हैं अल्लाह के अधिकार में है।

(४) व इज़् ज़य्यना लहुमुश्-शैतानु अअ्मालहुम् व क़ाऽला लाऽ ग़ालिबा लकुमुऽल् यौमा मिनन्-नाऽसि व इन्नी जारुल्लकुम्, फ़लम्माऽ तराऽअतिऽल् फ़िअ्-ताऽनि नकसा अला अक़िबय्हि व क़ाऽला इन्नी बरीउ मिन्कुम् इन्नीऽ अरा माऽ लाऽ तरौना इन्नीऽ अख़ाऽफ़ुऽ ल्लाहा, वऽल्लाहु शदीदुऽल् इ़क़ाब् ॥४८॥

और जिस समय शैतान उनकी दृष्टि में उनके काम संभालने लगा और कहने लगा—"तुम पर आज के दिन कोई विजयी न होगा और मैं तुम्हारा साथी हूँ, फिर जब दो सेनायें सन्मुख हुईं अपनी एड़ियों पर उलटा (लौटा) और बोला "मैं तुम्हारे साथ नहीं, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ; और अल्लाह का प्रकोप भीषण है।"

[मंजिल २-पारा १० रु० ७।१०]

(१) इज़् यक़ूलुऽल् मुनाफ़िक़ूना वऽल्लज़ीना फ़ी क़ुलूबिहिम्मरज़ुन् ग़र्रहाउ उलाउइ दीनुहुम्, व मय्यत-वक्कल् अलऽल्लाहि फ़ इन्नऽल्लाहा अज़ीज़ुन् ह़कीम् ॥४९

जब कि मुनाफ़िक़ (कपटी जन) और जिनके मनों में रोग है,

कहने लगे—"इन (मुसल्मान) लोगों को इनके मत ने मदोन्मत्त किया है; और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे तो अल्लाह बलवान् और बुद्धिमान् है।"

(२) व लउ तरा२ इज़् यतवफ़्फ़ऽल्लज़ीना कफ़रुऽल् मलाइइकतु यज़्रिबूना वुजूहहुम् व अद्वाऽरहुम्, वज़ूकूऽ अज़ाऽबऽल् हरीक़् ॥५०॥

और कभी तू (उस समय) देखे जिस समय फरिश्ते काफ़िरोंके प्राण हरण करते हैं उनकी पीठ और उनके मुख पर मारते हैं और (कहते हैं कि) अग्नि का दुःख चखलो।

(३) ज़ालिका बिमाऽ कद्दमत् अयदीकुम् व अन्नऽल्लाहा लयूसा बिज़ल्लाऽमिल्लिल् अबीद् ॥५१॥

यह उसीका* प्रतिफल है जो तुमने अपने हाथों से (शुभाशुभ कर्मों का विपाक) भेजा है; और यह इसलिए कि अल्लाह अपने भक्तों (मनुष्यों) पर अन्याय नहीं करता।

* यह आयत उन आयतों के सर्वथा विरुद्ध है जिन में कहा गया है कि अल्लाह जो चाहता है सो करता है, मनुष्यों से बुरे भले कर्म कराता है, उन्हें मार्ग भ्रष्ट करता है, जो बुरे कर्म हैं वह मनुष्य स्वयं करता है और भले अल्लाह करता है अथवा सन्मार्ग मुसल्मानों ने ग्रहण किया है और काफिरों को अल्लाह ने कुफ्र का जन्मरोगी उत्पन्न किया है, और बहुत से मनुष्यों को दोज़ख भरने के लिए रचा है आदि ? यह आयत इन सब मिथ्या मन्तव्यों के मूल पर कुठाराघात करता है और वैदिक कर्मवाद की पुष्टि करती है।

(४) कदअ्बि आलि फ़िर्अ्उना—वऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम्, कफ़रूऽ बिआयातिऽल्लाहि फ़ अख़ज़-हुमुऽल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, इन्नऽल्लाहा क़विय्युन् शदीदुऽल् इक़ाऽब् ॥

फ़िर्औन के लोगों की भी—जो उनसे पूर्व थे और (जो) अल्लाह की आयतों को अस्वीकार करते थे—यही दशा हुई, अतः अल्लाह ने उनके पापों के कारण उन्हें पकड़ा; अल्लाह बलवान् और कठिन दण्ड देने वाला है।

(५) ज़ालिका बि अन्नऽल्लाहा लम् यकु मुग़य्यिरऽन् निअ्मतऽन् अन्अमहाऽ अला क़उ्मिन् हत्ता युग़य्यिरूऽ माऽ बि अन्फुसिहिम्; व अन्नऽल्लाहा समीउ्न् अलीम् ॥

यह इसलिए कहा कि अल्लाह अपने वरदान को—जो एक जाति को दिया गया—उस समय तक बदलने वाला नहीं, जिस समय तक वह अपने अन्तःकरण की बात को न बदलें, और अल्लाह सुनता है, जानता (भी) है।

(६) कदअ्बि आलि फ़िर्अउ्ना—वऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम्, कज़्ज़बूऽ बि आयाति रब्बिहिम् फ़ अह्लक्ना-हुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना आल फ़िर्अ्उना, व कुल्लुन् काऽनूऽ ज़ालिमीन् ५४।

यही दशा फ़िरऔन के लोगों की—जो उन में पहले थे—हुई, उन्होंने अपने पालनकर्त्ता की आयतों को असत्य कहा, अतः उनके पापों के कारण उन्हें नष्ट कर दिया और फ़िरऔन-वालों को डुबो दिया और (वे) सब के सब अत्याचारी थे।

(७) इन्ना शर्र-द्दवाऽब्बि इन्दऽल्लाहिऽल्लज़ीना कफ़रूऽ फ़ हुम् लाऽ युअ्मिनून ॥५५॥

अल्लाह के यहां सब से पामर पशु वह हैं जो काफ़िर हैं, अतः वह विश्वास नहीं करते।

(८) अल्लज़ीना आऽहत्ता मिन्हुम् सुम्मा यन्क़ुज़ूना अह्दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिव्व हुम् लाऽ यत्तक़ून ॥

जिनसे तूने याचना भरी है, उनमें फिर वह प्रत्येक बार अपना वचन भंग करते हैं और उन्हें भय नहीं।

(९) फ़ इम्माऽतस्क़फ़न्नहुम् फ़िऽल् हर्बि फ़ शर्रिद् बिहिम्मन् ख़ल्फहुम् लअ़ल्लहूम् तज़क्कारून ॥५७॥

अतः यदि ये कभी युद्ध में तेरे हाथ लग जावें तो ऐसा दण्ड दे कि उनके अनुयाई देखकर (भय से ही) भागें, (और) कदाचित् शिक्षा ग्रहण करें।

(१०) व इम्माऽ तख़ाऽफ़न्ना मिन् क़ौमिन् ख़ियाऽनतन् फ़ऽन्बिज़् इलयहिम् अला सवाऽइन्, इन्नऽल्लाहा लाऽ युहिब्बुल् ख़ाऽइनीन ॥५८॥

और यदि तुझे किसी जाति के छल का भय हो तो उन्हें यथा का तथा उत्तर (छलका उत्तर* छल करके) दे; अल्लाह को छली प्रिय नहीं लगते।

[मँजिल २ पारा १० रु ८।५]

(१) व लाऽ यह्सबन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ सबक़ूऽ इन्नहुम् लाऽ युअ्जिज़ून ॥५६॥

और काफ़िर लोग यह न समझें कि वह भाग निकले; वह थका न सकेंगे।

(२) व अइद्दूऽ लहुम्मऽऽस्ततअ्तुम्मिन् क़ुव्वतिव्व मिर्रिबाऽतिल् खय्लि तुर्हिबूना बिही अदुव्वऽल्लाहिवअ्दुव्व कुम् व आखरीना मिन्दूनिहिम् व लाऽ तअ्लमूनहुम्, अल्लाहु यअ्लमुहुम्; वमाऽ तुन्फ़िक़ूऽ मिन् शय्इन् फ़ी सबीलिऽल्लाहि युवफ़्फ़ा इलय्कुम् व अन्तुम् लाऽ तुज़्लमून ॥६०॥

---

*इस पर पाल्मोर साहब एक टिप्पणी देते हैं—If the Muslims suspected people with whom a league had been made of treachery they might use counter treachery, although the use minds up the remark—"The God loveth not the treacherous, The road to Comments weaking & treachery is here made lny अर्थात आयत में यद्यपि यह आज्ञा है कि खुदा को छली लोग नहीं भाते परन्तु छल करने की आज्ञा दीगई है और यहां छल का मार्ग सरल कर दिया है।

और उनसे युद्ध की योजना करो—जो भी सैन्यशक्ति का संचार घोड़े बांधने से कर सको (करो), जिससे अल्लाह के शत्रुओं पर, तुम्हारे शत्रुओं पर और इनके अतिरिक्त उन अन्य लोगों पर—जिन्हें अल्लाह जानता है; तुम नहीं जानते—प्रभाव पड़े; और जो अल्लाह के मार्ग में व्यय करोगे; तुम पर अन्याय न होगा।

(३) व इन् जन हूऽ लि-स्सल्मि फ़ऽज्नह्‌लहाऽ व तवक्कल् अलऽल्लाहि; इन्नहू हुव-स्समीउल् अलीम् ॥

और यदि वह सन्धि के लिए झुकें तो तू भी उसी ओर झुक और अल्लाह पर विश्वास कर; निस्सन्देह वही सुनता (और) जानता है।

(४) व इय्युरीदू२ अय्यख्दऊका फ़ इन्ना हस्ब-कऽल्लाहु; हुवऽल्लज़ी२ अय्यदका बिनस्रिही व बिऽल् मुअ्मिनीन् ॥६२॥

और यदि वे तुझे धोखा देना चाहें तो तेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है; उसी ने तुझको अपनी सहायता दी और मुस-लमानों को शक्ति प्रदान की।

(५) व अल्लफ़ा बय्ना कुलूबिहिम्; लव् अन्फ़क्ता माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि जमीअऽम्मा२ अल्लफ़्ता बय्ना कुलूबिहिम् वलाकिन्नऽल्लाहा अल्लफ़ा बय्नहुम्; इन्नहू अज़ीज़ुन् हकीम् ॥६३॥

और मुसलमानों के मनों में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया; और यदि तुम भूमण्डल के समस्त कोश व्यय कर देते तो भी इनके मनों में प्रेम उत्पन्न न कर सकते थे। परन्तु अल्लाह ने इन लोगों में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया; निस्सन्देह वह प्रबल और प्रयत्नवान् है।

(६) याऽ अय्युहऽ-न्नबिय्यु ह्स्बुकऽल्लाहु व मनिऽत्तबअका मिनऽल् मुअ्मिनीन् ॥६४॥

हे पैग़म्बर! अल्लाह और मुसलमान—जो तुम्हारे साथ मुसलमान हुए हैं—तुम्हारे लिये पर्याप्त हैं।

[मं० २ पारा १० रुकूअ ९।५]

(१) याऽ अय्युहऽ-न्नबिय्यु ह्रिंज़िऽल् मुअ्मिनीना अलऽल् क़िताऽलि; इय्यकुम्मिनकुम् इश्रूना साऽबिरूना यग़्लिबू मिऽअतय्नि, व इय्यकुम्मिनकुम्मिऽअतुय्यग़्लिबूऽ अल्फ़ऽम्मिनऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बिअन्नहुम् क़ौमुऽल्लाऽ यफ़्क़हून् ॥६५॥

पैग़म्बर! मुसलमानों को (काफ़िरों के साथ) युद्ध के लिये उत्तेजित करो, कि यदि तुम (मुसलमानों) में से स्थिर रहने वाले बीस (२०) भी होंगे तो वह दो सौ (२००) पर विजयी होंगे और यदि तुम (मुसलमानों) में से (ऐसे) सौ

(१००) होंगे तो (वे) सहस्र काफ़िरों पर विजय प्राप्त करेंगे; क्योंकि यह (काफ़िर लोग) समझते ही नहीं।

(२) अल्आना ख़फ़्फ़फ़ऽल्लाहु अन्कुम् व अ़लिमा अन्ना फ़ीकुम् ज़अ़्फ़ऽन्; फ़ इय्यकुम्मिन्कुम्मिऽअतुन् साऽबिरतुय्यग़्लिबूऽ मिऽअतय्नि, व इय्यकुम्मिन्कुम् अल्फ़ुय्यग़्लिबू अल्फ़य्ना बि इज़्निऽल्लाहि; वऽल्लाहु मअ़स्साबिरीन् ॥६६॥

मुसल्मानो! अब अल्लाह ने तुम पर से अपनी आज्ञा का भार* हलका किया और समझा कि तुममें निर्बलता है, अतः यदि तुममें से सौ सन्तोषी मनुष्य हों, तो वह दो सौ पर विजयी होंगे और यदि तुममें से सहस्र (१०००) हों तो (वे) अल्लाह की आज्ञा से, दो सहस्र (२०००) पर विजयी होंगे और अल्लाह सन्तोषियों के साथ है।

(३) माऽ काऽना लिनबिय्यिन् अय्यकूना लहू अस्राह़त्ता युस्ख़िना फ़िऽल् अर्ज़ि; तुरीदूना अ़र्ज़-दुन्याऽ वऽल्लाहु युरीदुऽल् आख़िरता; वऽल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम् ॥६७॥

---

* पहली इस प्रतिज्ञा के कि एक मुसलमान दस काफिरों के लिये काफी है, फलस्वरूप एक मुसलमान कतल होगया तब पहली आयत मन्सूख की गई और दूसरी आयत इस आशय युक्त आई कि सौ मुसलमान दो सौ मुसलमानों पर विजयी होंगे।

पया पैग़म्बर को चाहिए कि उसके यहां बन्दी (कैदी) आवें जब तक कि वह पृथ्वी पर (काफ़िरों का) रक्तपात न करें; तुम संसार की भूमि चाहते हो और अल्लाह परलोक चाहता है; और अल्लाह प्रबल और बुद्धिमान् है।

(४) लउला॒ किताबुम्मिनऽल्लाहि सबक़ा लमस्स-कुम् फ़ीमा॒ अख़ज़्तुम् अज़ाबुन् अज़ीम् ॥६८॥

यदि अल्लाह की ओर से पहिले से न लिखा होता तो तुम पर जो कुछ तुमने किया है, उसके निमित्त कठिन कोप उतरता।

(५) फ़ कुलूऽ मिम्माऽ ग़निम्तुम् ह,लालऽन् तय्यि-बऽ वत्तऽऽकुल्लाहा; इन्नऽल्लाहा ग़फ़ूरु-र्रह़ीम् ॥६९॥

अतः पवित्र और भक्ष्य गनीमत (लूट के धन) को खाओ और अल्लाह से डरते रहो; अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।"

मं० २ पारा १०. रु० १०,६

या॒ अय्युहऽ—न्नबिय्यु क़ुल्लमिन् फ़ी॒ अयदीकुम्मि-नऽल् असा॒र इंय्यअ्लमिऽल्लाहु फ़ी कुलूबिकुम् ख़यरऽ-युअ्तिकुम् ख़यरम्मिम्मा॒ उख़िज़ा मिन्कुम् व यग़्फ़-र्लकुम्, वऽल्लाहु ग़फ़ूर्रहीम् ॥७०॥

हे पैग़म्बर! जो बन्दीजन तुम्हारे हाथ (अधिकार) में हैं उन्हें कहदे—"यदि अल्लाह को तुम्हारे मनों में कुछ भलाई ज्ञात होगी तो तुमको जो तुमसे छिन गया उससे अधिक प्रदान करेगा; और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(२) व इय्युरीदूऽ ख़ियाऽनतका फ़क़द् ख़ानुऽऽल्लाहा मिन्क़ब्लु फ़ अम्कना मिन्हुम्; वऽल्लाहू अ़लीमुन् हकीम्।७१॥

और यदि उन्होंने तुम्हें धोखा देने की इच्छा की तो (समझो कि) अल्लाह से पहले ही कपट* किया है अतः उसने तुम्हें उन पर शक्ति प्रदान की है; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(३) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरूऽ व जाऽहदू बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि वऽल्लज़ीना आवऊऽव नसरूऽ उलाऽइका बअ़्ज़ुहुम् औलियाऽउ बअ़्ज़िन्; वऽल्लज़ीना आमनूऽ व लम् युहाऽजिरू माऽल कुम्मिन्व लाऽ यतिहिम्मिन् शय्इन् हत्ता युहाजिरूऽ व इनिऽस्तन्सरू कुम् फ़ि-दीनि

---

* अर्थात् अपने काफिर होने के कारण अल्लाह से छल किया है जैसा कि पहिले भी आ चुका है कि काफिर अल्लाह से कपट करते हैं और अल्लाह उनसे कपट करता है। देखो प्रथम खण्ड।

फ़ अलयकुमु-न्नस्रु इल्लाऽ अला क़ौमिन् बयनकुम् व बयनहुम्मीसाऽक़ुन्, वऽल्लाहु बिमाऽ तअ्मलूना बसीर् ॥७२॥

जिन लोगों ने (इस्लाम पर) विश्वास किया और गृह त्यागा और अपने धन और प्राणों से अल्लाह के मार्ग में युद्ध किया और जिन लोगों ने स्थान और साहाय्य दिया वह परस्पर (एक दूसरे के) मित्र हैं; और जिन्होंने विश्वास किया और गृह नहीं त्यागा तुमको उनकी मित्रता से, जब तक वह गृह न त्याग आवें, कुछ प्रयोजन नहीं, और यदि तुमसे मत में सहायता चाहें तो तुमको ऐसे लोगों की अपेक्षा कि जिनमें और तुममें होड़ है उन्हें सहायता देना आवश्यक है; और अल्लाह, जो तुम करते हो, देखता है।

(४) वऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बअ्ज़ुहुम् औलियाउ बअ्ज़िन् इल्लाऽ तफ़्अलूहु तकुन् फ़ित्नतुन् फ़िऽल् अर्ज़ि व फ़साऽदुन् कबीर् ॥

और जो लोग काफ़िर हैं वे परस्पर एक दूसरे के मित्र हैं; यदि तुम यों न करोगे तो देश में धूम मचेगी (आन्दोलन उठेगा) और बड़ा उत्पात होगा।

(५) वऽल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरूऽ व जाऽहदूऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहि वऽल्लज़ीना आवउऽ व्व नसरू रे

उला३इका हुमुऽल् मुअ्मिनूना ,हक़्क़ऽन; लहुम्मग़्फ़िरतु व्व रिज़्क़ुन् करीम् ॥७४॥

और जिन लोगों ने विश्वास किया, और गृह त्यागे और अल्लाह के मार्ग में युद्ध किये और जिन लोगों ने स्थान और साहाय्य दिया वही निश्चय मुसलमान हैं; उनको क्षमा मिलेगी और अन्त म अनुग्रह।

(६) वऽल्लज़ीना आमनूऽ मिन् ँ , बअ्दु व हाऽजरूऽ व जाऽहदूऽ मअ़कुम् फ़ उला३इका मिन्कुम्; वाऽवुलुऽऽल् अ,र्हाऽमि बअ्ज़ुहुम् अव्ला वि. बअ्ज़िन् फ़ी किताबिऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा बि कुल्लि शय्इन् अ़लीम्॥७५

और जिन लोगों ने (इस्लाम पर) पीछे से विश्वास किया और गृहों का त्यागन किया और तुम्हारे साथ मिलकर युद्ध किया फिर वह तुम्हीं में से हैं; और अल्लाह की पुस्तक में सम्बन्धी एक दूसरे के अधिक निकट हैं; निश्चय अल्लाह प्रत्येक पदार्थ से परिचित है।



महिला मङ्गलाचार।

विवाह, पुत्र जन्म, नामकरण अनेक संस्कारों पर उत्तम स्त्रियों के गाने के लिए भजन, दादरा, गारी, होरी, खोइया, प्रार्थना, आदि संग्रहीत हैं पुस्तक अति उत्तम, छपाई सफाई कमाल की शीघ्र मंगाइये। मूल्य।) प्रेम पुस्तकालय आगरा

सूरये-तौबा ⊛

मं० २ पारा १०, रु० १।८

(१) बराऽअतुम्मिनऽल्लाहि व रसूलिही२ इलऽ ल्लज़ीना आऽहत्तुम्मिनऽल् मुश्रिकीन ॥१॥

उन मुशरिकों (द्वैत वादियों) को—जिन से तुमने प्रतिज्ञा की थी—अल्लाह की ओर से और उसके प्रेरित (पैगम्बर) की ओर से उत्तर है ।

(२) फ़सीहू ऽ फ़िऽल् अर्ज़ि अर्बअना अश्हुरि व्वाऽअ्लमू२ इन्नकुम् ग़ैरु मुअ्जिज़िऽल्लाहि व अन्नऽल्लाह मुख़्ज़िऽल् काफ़िरीन् ॥२॥

अतः इस देश में चार महीने घूमलो और ज्ञात रहे कि तुम अल्लाह को विवश न कर सकोगे और यह भी (ज्ञात रहे) अल्लाह अविश्वासियों का अनादर करता है ।

(३) व अज़ाऽनुम्मिनऽल्लाहि व रसूलिही३ इल-न्नाऽसि यउमऽल् हज्जिऽल् अक्बरि अन्नऽल्लाह बरी३उम्मिनऽल् मुश्रिकीना व रसूलुहू; फ इन्तुब्तुम् फ़ हुवा ख़ैरुल्लकुम् व इन्तवल्लयतुम् फ़ाऽअ्लमू२ अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्जिज़िऽल्लाहि; व बश्शिरिऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बि अज़ाऽबिन् अलीम् ॥३॥

⊛ सूरये तौबा मदीने में उतरी, इसमें १२९ आयतें और १६ रुकूअ हैं ।

और अल्लाह और उस के पैग़म्बर की ओर से बड़े हज के दिन सुना देता है कि अल्लाह और उस का पैग़म्बर मुशरिकों से पृथक है, अतः यदि तुम क्षमा प्रार्थना करो तो तुम्हारा हित है, और यदि न मानो तो तुम अल्लाह को थका न सकोगे; और अस्वीकारियों को दुःख के दण्ड का सुसमाचार दे।

(४) इल्लऽल्लज़ीना आहत्तुम्मिनऽल् मुश्रिकीना सुम्मा लम् यन्क़ुसूकुम् शयअऽन्व लम् युज़ाऽहिरुऽ अलय्कुम् अ,हदऽन फ़ अतिम्मूऽ इलयहिम् अह्दहुम् ; इला मुद्दतिहिम् ; इन्नऽल्लाहा युहिब्बुऽल् मुत्तक़ीन ॥

परंतु जिन मुशरिकों से तुम्हें होड़ थी, उन्होंने फिर तुम्हारे साथ कुछ अपराध न किया और तुम्हारे मुकाबिले में किसी की सहायता न की, अतः उनसे उनकी नियत अवधि तक प्रतिज्ञा पूर्ण करो; निश्चय अल्लाह को संयमी प्रिय हैं।

(५) फ़ इज़ऽऽन्सलख़ऽल् अश्हुरुऽल् हुरुमु फ़ ऽक़्तुलुऽऽल् मुश्रिकीना ह्यसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वऽह्सुरूहुम् वऽक़ुदूऽ लहुम् कुल्ला मर्सदिन फ़ इन्ताऽबूऽ व अक़ाऽमुऽस्सलाता व आतवुऽज़्ज़काता फ़ख़ल्लूऽ सबीलहुम् इन्नऽल्लाहा ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

फिर जब पवित्र मास व्यतीत होजावें तो मुशरिकों को

जहां पाओ – मारो, और पकड़ो, घेरो, और उनकी घात में प्रत्येक स्थल पर बैठो, पुनः यदि वे पापक्षमा-प्रार्थना करें और नमाज निश्चित रक्खें और ज़कात देवें तो उनका मार्ग छोड़ो; क्योंकि उनको अल्लाह की ओर से पापक्षमा और दया है।

(६) व इन् अह़दुम्मिनऽल् मुश्रिकीनऽस्तजाऽरका फ़ अजिर्हु ह़त्ता यस्मआ कलामऽल्लाहि, सुम्मा अब्लिग्हु मअ्मनहु ज़ालिका बि अन्नहुम् क़ौमुल्लाऽ यअ्लमून ॥

और यदि कोई मुशरिक तुझ से त्राण चाहे तो उसे त्राण दो यहां तक कि वह अल्ला का वचन अर्थात् कुरान सुन ले फिर उसको वहां पहुंचा दो जहां वह निर्भय रहे; यह इसलिए कि उन लोगों में ज्ञान नहीं।

[मंजिल २ पा० १० रु० ७।१०]

(१) कय् फ़ा यकूनु लिल् मुश्रिकीना अह़दुन् इन्दऽल्लाहि व इन्दा रसूलिही२ इल्लऽऽल्लज़ीना आऽहत्तुम् इन्दऽल् मस्जिदिल् ह़राऽमि, फ़ मऽऽस्तक़ाऽमूऽ लकुम् फ़ऽस्तक़ीमूऽल हुम्; इन्नऽल्लाहा युहि़ब्बुऽल् मुत्तक़ीन ॥

सिवाय उन लोगोंके और उसके जिन्होंने तुमको मसजिदुल हराम (काबा की पवित्र मस्जिद) के पास का वचन दिया

है अन्य मशरिकों की अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ क्योंकर प्रतिज्ञा होसकती है ? अतः जब तक वह तुमसे सीधे रहें, तुम उन से सीधे रहो; अल्लाह को संयमी प्रिय लगते हैं।

(२) कयफ़ा व इय्यज़्हरू-अलयकुम् लाऽ यर्क़ुबूऽ फ़ीकुम् इल्लऽव्वलाऽ ज़िम्मातन् , युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाऽहि-हिम् व तअ्बा क़ुलूबुहुम् व अक्सरुहुम् फ़ासिक़ून् ॥

सन्धि कैसे रहे ? और यदि वह तुम पर हाथ (अधिकार पावें तो न तुम्हारे मत का और न प्रतिज्ञा का कुछ लिहाज़ करें अपने मुंह की बात से प्रसन्न कर देते हैं और उनके मन स्वीकार नहीं करते, और उनमें अनेकों अनाज्ञाकारी हैं।

(३) इश्तरव्ऽ बिआयातिऽल्लाहि समनऽन् क़लीलऽन् फ़सद्ऽ अन् सबीलिही; इन्न हुम् साऽअमाऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

और उन्होंने अल्लाह की आज्ञाओं को अल्प मूल्य पर विक्रय किया फिर उसके मार्ग से भटके रहे; यह लोग जो कर रहे हैं वह बुरे कार्य हैं।

(४) लाऽ यर्क़ुबूना फ़ी मुअ्मिनिन् इल्लऽव्वला ज़िम्मतन् व उलाऽइका हुमुऽल् मुअ्तदून् ॥

न किसी मुसलमान के सम्बन्ध में न रिश्तेदारी का और न वचन का विचार करें और वह अत्याचारी हैं।

(५) फ़ इन्ताऽबूऽ व अक़ाऽमुऽ-स्सलाता व आतवु-ज़्ज़काता फ़ इख़्वा नुकुम् फ़ि-द्दीनि; व नुफ़स्सिलुल् आयाति लि क़ौमि य्यअ्लमून।

अतः यदि तौबा (पापक्षमा-प्रार्थना) करें और नमाज़ स्थिर रक्खें, और ज़कात देते रहें तो मुहम्मदी मतानुसार तुम्हारे भाई हैं; और हम जानने वाले पुरुषों के लिए विस्तार पूर्वक भेद प्रगट करते हैं।

(६) व इन्नकसूऽ अय्माऽनहुम्मिन् बअ्दि अह्दिहिम् व तअ़्नूऽ फ़ी दीनिकुम् फ़ क़ाऽतिलूऽ अइम्मतऽल् कुफ़्रि इन्नहुम् लाऽ अय्माऽना लहुम् लअ़ल्लहुम् यन्तहून॥

और यदि प्रतिज्ञा के पश्चात् अपनी शपथों का भंग करें और तुम्हारे दीन को दोष दें तो काफ़िरों के प्रमुख पुरुषों से युद्ध करो; उनकी शपथें कुछ नहीं, कदाचित् वह सन्मार्ग पर आवें।

(७) अलाऽ तुक़ाऽतिलूना क़ौमऽन्नकसूऽ अय्माऽनहुम् व हम्मूऽ बिइख़्राऽजि-र्रसूलि व हुम् बदऊकुम् अव्वला मर्रतिन्; अतख़्शौनहुम्, फ़ल्लाहु अहक़्क़ु अन्तख़्शौहु इन्कुन्तुम्मुअ्मिनीन॥

ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो कि जिन्होंने अपनी शपथों

को भंग किया और जो इस चिन्ता में रहे कि पैग़म्बरों को पृथक् करदें और उन्होंने तुमसे पहले छेड़ की; क्या उनसे डरते हो? अतः यदि विश्वासी हो तो तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए।

(८) क़ाऽतिलूहुम् युअज़्ज़िब्हुमुऽल्लाहु बि अय्दीकुम् व युख्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अलैहिम् व यश्फ़ि सुदूरा क़ौ मिम्मुअ्मिनीन् ॥

उनसे लड़ो, जिससे अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों दण्ड दे और लज्जित करे और तुमको उन पर विजयी बनावे और कितने ही मुसल्मानों के मनों को शान्त करे।

(९) व युज़्हिब् ग़य्ज़ा क़ुलूबिहिम् ; व यतूबुऽ-ल्लाहु अला मय्यशाउ; वऽल्लाहु अलीमुन् हकीम् ॥

और उनके मनों का द्वेष दूर करे, और जिसको चाहे अल्लाह क्षमा करेगा; और अल्लाह ज्ञानवान् और बुद्धिमान् है।

(१०) अम् हसिब्तुम् अन्तुतरकूऽ व लम्माऽ यअ्लमिऽल्लाहुऽल्लज़ीना जाऽहदूऽ मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ूऽ मिन्दूनिऽल्लाहि वलाऽ रसूलिही वलऽऽल् मुअ्मिनीना वलीजतऽन् ; वऽल्लाहु ख़बीरुन् ँ बिमाऽ तअ्मलून् ॥

क्या जानते हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे और अभी अल्लाह को तुम लोगों में से उन लोगों का ज्ञान नहीं जो लड़े हैं और जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य किसी को भेदी नहीं माना; और अल्लाह को तुम्हारे कार्य्यों का सब ज्ञान है।

[मंजिल २, पारा १०, रू० ३।८]

(१) माऽ काऽना लिल् मुश्रिकीना अय्यअ्मुरूऽ मसाजिदऽल्लाहि शाहिदीना अ़लाऽ अन्फ़ुसिहिम् बिऽल् कुफ़्रि, उलाऽइका हबितत् अअ्माऽलुहुम्, व फ़ि-न्नाऽरि हुम् ख़ालिदून् ॥

मुशरिकों (मूर्त्ति-पूजकों) का काम नहीं कि अल्लाह की मसजिदों को बसावें और अपने ऊपर कुफ़्र को स्वीकार करते जावें; वह लोग अपने कार्यों के कारण नष्ट हुए और वह सर्वदा नरकाग्नि में निवास करेंगे।

(२) इन्नमाऽ यअ्मुरु मसाजिदऽल्लाहि मन् आमना बिऽल्लाहि वऽल् यउ मिऽल् आख़िरि व अक़ाऽ म-स्सलाता व आत-ज़्ज़काता व लम् यख़्शा इल्लऽल्लाहा फ़ अ़साऽ उलाऽइका अय्यकूनूऽ मिनऽल् मुह्तदीन् ॥

अल्लाह की मसजिदें वही बसावे जिसने अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास किया और नमाज़ स्थिर रक्खी और दान दिया और (जो) अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य किसी से न डरा अतः वह लोग प्रतीक्षित हैं कि शिक्षितों में सम्मिलित हों।

(३) अजअल्तुम् सिक़ाऽयतऽल् हाऽज्जि व इ माऽरतऽल् मस्जिदिऽल् हराऽमि कमन् आमना बिऽल्लाहि वऽल् यउमिऽल् आखिरि व जाऽहदा फ़ी सबीलिऽल्लाहि; लाऽ यस्तवूना इन्दऽल्लाहि; वऽल्लाहु लाऽ यहदिऽल् क़उ म-ज़्ज़ालिमीन् ॥

क्या तुमने हाजियों का पानी पिलाना और मस्जिदुलहराम (काबा) का बसाना उसके समान निश्चित किया जिसने अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर विश्वास किया और अल्लाह के मार्ग में युद्ध किया? अल्लाह के निकट (दृष्टि में तो) समान नहीं; और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं देता।

(४) अल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरूऽ व जाऽहदूऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहि बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फुसिहिम् अअ्ज़मु दरजतन् इन्दऽल्लाहि; व उलाऽइका हुमुऽल् फ़ाऽइज़ून् ॥

जिन्होंने (इस्लाम पर) विश्वास किया और गृह त्याग किया और अल्लाह के मार्ग में अपने तन और धन से युद्ध किया उनको अल्लाह के समीप बड़ा पद है और यही सफलता को प्राप्त हुए।

(५) युबश्शिरु हुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिम्मिन्हु व रिज़्वानिंव् व जन्नातिल्लहुम् फ़ीहा नईमुम्मुक़ीम् ॥

उनको पालनकर्त्ता उनको अपनी ओर से अनुग्रह, अनुमोदन और बागों का-जिनमें उनको नित्य का आनन्द है-हर्ष समाचार देता है।

(६) ख़ालिदीना फ़ीहा अबदन्, इन्नल्लाहा इन्दहू अज्रुन अज़ीम् ॥

इन (जन्नत के बागों) में अनन्तकाल पर्यन्त निवास करें; निश्चय अल्लाह के यहां महान् प्रतिफल है।

(७) या ऽ ऽय्युहऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तत्तख़िज़ूऽ आबाऽअकुम् व इख़्वाऽनकुम् अउलियाऽआ इनिऽस्तहब्बुऽल् कुफ़्रा अलऽल् ईमाऽनि, व मय्यतवल्लहुम्मिन्कुम् फ़उलाऽइका हुमु-ज़्ज़ालिमून ॥

हे विश्वासियो (मुसलमानो !) अपने पिता और भ्राताओं को अपना मित्र (या सहायक) स्वीकार न करो यदि वह कुफ़् को इस्लाम (दीन) से प्रिय समझें. और तुममें से

जिसने उनसे मित्रता की (या सम्बन्ध रक्खा) फिर वही लोग अत्याचारी (और) पापी हैं।

(८) कुल् इन्काऽना आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वाऽनुकुम् व अज़्वाऽजुकुम् व अशीरतुकुम व अम्वाऽलु (नि) ऽक़्तरऽफ़्तुमूहाऽ व तिजाऽरतुन् तख़्शौना कसादहाऽ व मसाकिनु तर्ज़ौनहाऽ अ.हब्बा इलय्कुम्मिनऽल्लाहि व रसूलिही व जिहाऽदिन् फ़ी सबीलिही फ़ तरब्बसूऽ ह.त्ता यअ्तियऽल्लाहु बि अम्रिही; वऽल्लाहु लाऽ यह्दिऽल् क़ौमऽल् फ़ासिक़ीन् ॥

(हे पैग़म्बर!) तू कह, यदि तुम्हारे पिता और पुत्र और भ्राता और तुम्हारी स्त्रियां और तुम्हारे वंशज और तुम्हारी सम्पत्ति जो तुमने उपार्जित की है और व्योपार जिसके बन्द होने का भय है और अनाथ दासियां जिनकी तुम्हें इच्छा है, तुमको अल्लाह और उसके पैग़म्बर और उसके मार्ग में युद्ध करने से अधिक प्रिय हैं तो जब तक अल्लाह अपनी आज्ञा (न) भेजे तब तक प्रतीक्षा करो, और अल्लाह अनाज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

[मंजिल २ पारा १० रु ४।५]

(१) लक़द् नसरकुमुऽल्लाहु फ़ी मवाऽतिना

कसीरतिंव यउ्मा हुनयूनिन् इज़् अअ्जबत्कुम् कस्रतु-
कुम् फ़लम् तुग़्नि अन्कुम् शयअ्ऽव्व ज़ाऽक़त् अलय्-
कुमुऽल् अर्ज़ु बिमाऽ रहुबत् सुम्मा वल्लयतुम्मुद्बिरीन् ॥

(मुसल्मानो !) अल्लाह अनेक अवसरों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और (विशेषतः) हुनैन के (युद्ध के) दिन, जब कि तुम्हारी बहु-संख्या ने तुम्हें गर्वित कर दिया था, फिर वह तुम्हारे लिए कुछ भी उपयोगी न हुई और पृथ्वी, विस्तृत होने के उपरान्त भी, तुम्हारे लिए संकुचित होगई, फिर तुम पीठ फेर कर भाग निकले।

(२) सुम्मा अन्ज़लऽल्लाहु सकीनतहू अला रसूलिही व अलऽल् मुअ्मिनीना व अन्ज़ला जुनूदऽल्लम् तरउ्हाऽ व अज़्ज़बऽल्लज़ीना कफ़रूऽ; व ज़ालिका जज़ाऽ-उऽल् काफ़िरीन् ॥

फिर अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर और मुसल्मानों पर अपना सन्तोष उतारा और (तुम्हारी सहायतार्थ फ़रिश्तों की) ऐसी सेनायें भेजीं, जो तुमको दिखाई नहीं देती थीं और काफ़िरों को अत्यन्त दारुण दुःख दिया; और काफ़िरों के लिए यही दण्ड है।

(३) सुम्मा यतूबुऽल्लाहु मिन् ्बअ्दि ज़ालिका अला मय्यशाऽउ, व ऽल्लाहु ग़फ़ूर्रहीम् ॥

फिर (इसके पश्चात्) अल्लाह जिसको चाहे क्षमा प्रदान करे और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(४) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू३ इन्नमऽऽल् मुश्रिकूना नजसुन् फ़लाऽ यक़्रबुऽऽल् मस्जिदऽल् ,हराऽमा बअ्दा आऽमिहिम् हाज़ाऽ, व इन् ख़िफ़्तुम् अय्लतन् फ़सउ फ़ा युग़्नीकुमुऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही२ इन्शा३आ; इन्नऽल्लाहा अलीमुन् ,हकीम् ॥

हे मुसल्मानो! मूर्तिपूजक जो हैं वह मलीन हैं, अतः इस वर्ष के पश्चात् पवित्र मस्जिद (काबा) के निकट न आवें, और यदि तुम भिखारीपने से भय खाते हो तो आगे अल्लाह यदि चाहे तो तुम्हें अपने अनुग्रह से धनाढ्य बनावेगा; अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(५) क़ाऽतिलुऽऽल्लज़ीना लाऽ युअ्मिनूना बिऽल्लाहि वलाऽ बिऽल् यउमिऽल् आख़िरि व लाऽ युह,-र्रिमूना माऽ,हर्रमऽल्लाहु व रसूलुहू व लाऽ यदीनूना दीनिऽल् ,हक़्क़ि मिनऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा ,हत्ता युअ्तुऽऽल् जिज़्यता अय्यदिं व्व हुम् साऽग़िरून् ॥

युद्ध करो उन लोगों से—जिनका अल्लाह पर विश्वास नहीं और न अन्तिम दिवस (क़यामत) पर (और न ही जिनका विश्वास है); जो न उसे निषिद्ध समझें जिसे अल्लाह और

उनके पैग़म्बर ने निषिद्ध किया है और सत्य मत (इस्लाम) को स्वीकार करते हैं—वह जो कि पुस्तक वाले हैं; यहां तक कि सब एक हाथ से जज़िया कुफ़्र का (कर) और अपमानित होकर देवें।

[मं० २, पारा १०, रु० ५।८]

(१) व क़ालतिऽल् यहूदु उ़ज़ैरु (नि) ब्नुऽ-ल्लाहि व क़ालति-न्नसारऽल् मसीहुब्नुऽल्लाहि; ज़ालिका क़उ लुहुम् बि अफ़्वाऽहि हिम्, युज़ाऽहिऊना क़उ लऽल्लज़ीना कफ़रूऽ मिन् क़ब्लु; क़ातलहुमुऽल्लाहु अन्ना युअ्फ़कून् ॥

और यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह के पुत्र हैं और नसारा कहते हैं कि मसीह अल्लाह के पुत्र हैं; यह उनके मुंह की बातें हैं, वह उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे हैं जो इनसे पूर्व हो चुके हैं; अल्लाह इन्हें नष्ट करे; यह शैतान के भटकाये हुए किधर को जा रहे हैं।

(२) इत्तख़ज़ूऽ अह् बाऽरहुम् व रुह्बाऽन हुम् अर्बाबऽम्मिन्दूनिऽल्लाहि वऽल्मसीहऽब्ना मर्यमा व माऽ उमिरूऽ इल्लाऽ लियअ्बुदूऽ इलाहव्वाऽहिदऽन्, लाऽ इलाहा इल्लाऽहुवा; सुब्हानहू अम्माऽ युश्रिकून् ॥

अल्लाह के स्थान पर इन्होंने अपने विद्वान् और ईश्वर-साधु और मर्यम का पुत्र मसीह पृथक् निश्चित किये हैं; और इन्हें यही आज्ञा हुई थी कि एक मात्र स्वामी की आराधना करें, उसके अतिरिक्त अन्य किसी की आराधना (उचित) नहीं; वह समांश समझने से रहित है।

(३) युरीदूना अय्युत् फ़िऊऽनूरऽल्लाहि बि अफ़्वाऽहि हिम् व यअ्बऽल्लाहु इल्लाऽ अय्युतिम्मा नूरहू व लउ् करिहऽल् काफ़िरून् ॥

चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (अर्थात् इस्लाम) को मुंह से (फूंक मार कर) बुझादें और अल्लाह को अभीष्ट है कि प्रत्येक प्रकार अपने प्रकाश को पूर्ण करके रहे यद्यपि काफ़िरों को बुरा लगे।

(४) हुवऽल्लज़ीऽ अर्सला रसूलहू बिऽल् हुदा व दीनिऽल् हक़्क़ि लि युज़्हिरहू अल-दीनि कुल्लिही व लउ् करिहऽल् मुश्रिकून् ॥

वही है जिसने अपने पैगम्बर को शिक्षा और सत्य मत देकर भेजा है जिससे उसे समस्त संसार पर विजयी बनावे चाहे मुशरिकों को बुरा ही क्यों न लगे ?

(४-५) याऽ अय्युहऽल्लज़ीना आमनूऽ इन्ना कसीरम्मिनऽल् अह्बाऽरि व-र्रुह्बाऽनि लयअ्कुलूना

मास की रुकावट उसे पूरा करलें. फिर जो अल्लाह ने निषिद्ध किया है उसे पवित्र मानते हैं; उनको उनके कुकर्म अच्छे करके दिखाये गये; और अल्लाह अविश्वासी जाति का मार्ग नहीं दिखाता ।

[मं० २, पारा० १०, रु० ६।५]

(१) याऽ अय्यु हऽऽल्लज़ीना आमनूऽ माऽ लकुम् इज़ाऽ क़ील लकुमुऽन् फ़िरूऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहिऽस्साऽ क़ल्तुम् इलऽल् अर्ज़ि; अरज़ीतुम् बिऽल् .हयाति-दुन्याऽ मिनऽल् आख़िरति. फ़ माऽ मताऽउऽल् .हयाति-द्दुन्याऽ फ़िऽल् आख़िरति इल्लाऽ क़लील् ॥

हे मुसल्मानो ! तुमको क्या होगया है कि जब तुम्हें कहा गया कि अल्लाह के मार्ग में प्रस्थान करो (तो) तुम धरती में धसे जाते हो; क्या तुम अन्तिम जीवन को तजकर सांसारिक जीवन पर मुग्ध हुए ? अतः सांसारिक जीवन परलोक के जीवन की अपेक्षा कुछ नहीं प्रत्युत तुच्छ है।

(२) इल्लाऽ तन्फ़िरूऽ युअज़्ज़िब्कुम् अज़ाबऽन् अलीमऽव्व यस्तब्दिल् क़ौमऽन् ग़ैरकुम् वलाऽ तज़ुर्रूहु शैअऽन् ; वऽल्लाहु अला कुल्लि शैअ्इन् क़दीर ॥

यदि (तुम युद्ध के लिए) न निकलोगे तो तुमको दुःख का दण्ड देगा और तुम्हारे अतिरिक्त अन्य मनुष्य बदल लावेगा और तुम उसकी कुछ हानि न कर सकोगे; और अल्लाह प्रत्येक पदार्थ पर शक्तिमान् है।

(३) इल्लाऽ तन्सुरूहु फ़क़द् नसरहुऽल्लाहु इज़् अख़्रजहुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ सानियऽस्नय्नि इज़् हुमाऽ फ़िऽल् ग़ाऽरि इज़् यक़ूलु लि साहिबिही लाऽ तह्ज़न् इन्नऽल्लाहा मअ़नाऽ, फ़ अन्ज़लऽल्लाहु सकीनतहू अ़लय्हि व-अय्यदहू बिजुनूदिऽल्लम् तरव्हाऽ व जअ़ला कलिमतऽल्लज़ीना कफ़रूऽ-स्सुफ़्ला; व कलिमतुऽल्लाहि हियऽल् उल्याऽ, वऽल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम् ॥

यदि तुम पैगम्बर की सहायता न करोगे तो उसकी सहा-

---

* मुसलमान तबूक की चढ़ाई के लिए अनिच्छा से गये, गर्मी की ऋतु थी, सिपाहियों को इतना महान् कष्ट हुआ कि वह सतायी हुई सेना कहलाने लगी। इसके अतिरिक्त मुसलमानों की खेती पकी हुई थी और वह उसे सग्रह करने के लिए ठहरे, इसलिए यह दण्ड का डर दिखलाया गया कि यदि वे सहाय न करेंगे तो अल्लाह उसी प्रकार सहाय करेगा जैसे कि उसने उस समय की जब मुहम्मद और अबूबकर मक्का के पास एक गुफा में छिपे थे। उस समय, जब अबूबकर दुखी होता, मुहम्मद सा० यह कहकर उसे धैर्य बधाते—"अल्लाह हमारे साथ है।" मुहम्मद सा० को फ़रिश्तों की सहायता मिली हुई थी जो कि मुसलमानों को नहीं दीखते थे।

यता अल्लाह ने की है जिस समय काफ़िरों ने उसको जोड़े से निकाला जाय कि दोनों गुफा में थे, जब अपने मित्र को कहने लगा कि तू रंज न कर-अल्लाह हमारे साथ है, फिर अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से सन्तोष उतारा और उसकी सहायता के लिए वह सेनाएँ पहुँची जो कि तुमने नहीं देखीं; और काफ़िरों की बात नीचे डाली; और अल्लाह का कथन सदैव ऊपर है; अल्लाह शक्तिमान् है और बुद्धिमान् है।

(४) इन्फ़िरूऽ ख़िफ़ाऽफ़ऽव्व सिक़ाऽलऽव्व जाऽहिदूऽ बि अम्वाऽलिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि; ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून् ॥

हलके और भारी सभी निकलो और अपने धन और तन से (अल्लाह के मार्ग में) युद्ध करो; यह तुम्हारे लिए, यदि तुममें बुद्धि है तो, सबसे श्रेष्ठ है।

(५) लव् काऽना अ़रज़ऽन् क़रीबऽव्व सफ़रऽन् क़ाऽसिदऽल्लऽ त्तबऊ़का वलाकिन् बउ़दत् अ़लय्हिमुश्शुक़्क़तु; व सयह़्लिफ़ूना बिऽल्लाहि लविऽस्ततअ्नाऽ ल्ख़रज्नाऽ मअ़कुम्, युह्लिकूना अन्फ़ुसहुम्, व ऽल्लाहु यअ्लमु इन्नहुम् ल काज़िबून् ॥

यदि कुछ धन प्राप्त होता और यात्रा हलकी होती तो तेरे साथ चलते; परन्तु मार्ग उनको दूर दिखाई दिया; और अब अल्लाह की सौगन्धें खावेंगे कि यदि हमसे हो सकता तो अवश्य तुम्हारे साथ जाते, (इस प्रकार) अपनी आत्मा और अन्तःकरण का विनाश करते हैं; और अल्लाह जानता है-वह झूठे हैं।

[मंजिल २ पारा १० रु० ७।१७]

(१) अफ़ऽऽल्लाहु अन्का, लिमा अज़िन्ता लहुम् हत्ता यतबय्यना लकऽल्लज़ीना सदक़ूऽ व तअ्लमऽल् काज़िबीन् ॥

अल्लाह तुझे क्षमा करे, पूर्व इसके कि जो सत्य कहते हैं वह तुझ पर प्रगट हो जायँ, और तू झूठों को जान लेता, तूने उन्हें क्यों छुट्टी दी ?

(२) लाऽ यस्तअ्ज़िनुकऽल्लज़ीना युअ्मिनूना बिऽल्लाहि वऽल् यउमिऽल् आख़िरि अय्युजाऽहिदूऽ बि अम्वाऽलि हिम् व अन्फ़ुसिहिम् वऽल्लाहु अलीमुन् बिऽल् मुत्तक़ीन् ॥

---

* यह आयत तबूक के—जो मदीना और दमश्क के बीच में है—। संग्राम के विषय में है जो सन ९ हिजरी में हुआ। उस समय हज़रत 30000 मनुष्यों के सेनापति थे। ४२से४८ तक की आयतें इसी युद्ध की यात्रा में उतरी

(हे पैग़म्बर !) जो लोग अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास रखते हैं, वह तो तुमसे इस बात की छुट्टी मांगते नहीं कि अपने तन और धन से जिहाद में सम्मिलित न हों और अल्लाह संयमियों को भली भाँति जानता है।

(३) इन्नमाऽ यस्तअ्‌ज़िनुकऽल्लज़ीना लाऽ युअ्‌मिनूना बिल्लाहि वऽल्‌ यउमिऽल्‌ आख़िरि वर्ताऽबत् कुलूबु हुम् फ़ हुम् फ़ी रय्बिहिम् यतरद्दूदून् ॥

तुमसे छुट्टी वही मांगते हैं जिनका अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास नहीं है और उनके अन्तःकरण सन्देह में पड़े हैं, अतः वह अपने सन्देह में ही भटकते हैं।

(४) व लउ अराऽदुऽऽल्‌ ख़ुरूजा ल अअ्‌द्दूऽ लहू उद्दत व्वलाकिन् करिहऽल्लाहुऽन् बिआऽसहुम् फ़ सब्बतहुम् व क़ीलऽक्‌ उ़दूऽ मअ़ऽल्‌ क़ाइदीन् ॥

यदि (वे युद्धार्थ) प्रस्थान करना चाहते तो उसका कुछ सामान तैयार करते; परन्तु अल्लाह को उनका उठना अच्छा न लगा, अतः उन्हें उदासी (पूरा आलसी) बना दिया और उन्हें आज्ञा मिली कि बैठने वालों के साथ बैठो।

(५) लउ ख़रजूऽ फ़ी कुम्माऽ ज़ाऽदू कुम् इल्लाऽ ख़बाऽलऽव्व लाऽ अउज़अ़ूऽ ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुऽल्

फ़ित्नता, व फ़ी कुम् सम्माऊ़ना लहु म् ; वऽल्लाहु अ़लीमुन् ँ बि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

यदि वह तुम्हारे साथ प्रस्थान करते तो वह तुममें दोष के अतिरिक्त अन्य कुछ न बढ़ाते और उपद्रव करने की खोज में तुम्हारे अन्दर घोड़े दौड़ाते, और तुममें से कुछ लोग उनके गुप्तचर हैं; अल्लाह अत्याचारियों को भले प्रकार जानता है।

(६) लक़दिऽब्तग़वुऽऽल् फ़ित्नता मिन् क़ब्लु व क़ल्लबूऽ लकऽल् उमूरा ,हत्ता जाऽअल् ,हक़्क़ु व ज़हरा अम् रुऽल्लाहि व हुम् कारिहून् ॥

और पूर्व से विनाश की खोज करते रहे हैं और तेरे कार्यों को विपरीत (उलटे) करते रहे हैं; यहां तक कि सत्य प्रतिज्ञा आ पहुंची और अल्लाह की आज्ञा प्रगट हुई और वह अप्रसन्न ही रहे।

(७) व मिन्हु म्मय्यक़ूलुऽअ्ज़न्ली वलाऽ तफ़्तिन्नी; अलाऽ फ़िऽल् फ़ित्नति सक़तूऽ; व इन्ना जहन्नमा ल मुही़तुन् ँ बिऽल् काफ़िरीन् ॥

और कुछ उनमें कहते हैं कि मुझको छुट्टी दे और आपत्ति में मत डाल; सुनता है वह तो आपत्ति में पड़े हैं; और अस्वीकारकर्ताओं (काफ़िरों) को नर्क घेरे हुए है।

(८) इन् तुसिब्का हसनतुन् तसुअ् हुम्, व इन् तुसिब्का मुसीबतु य्यकूलूऽ क़द् अख़ज़्नाऽ अम्रनाऽ मिन् क़ब्लु व यतवल्लव्ऽव्व हुम् फ़ारिहून् ॥

यदि तुझको कुछ लाभ हो तो वह उन्हें बुरा लगे और यदि आपत्ति आवे तो कहते हैं कि हमने पूर्व ही अपना कार्य्य सँभाल लिया था और प्रसन्न होते हुए लौट जावें।

(९) कुल्लय्युसीबनाऽ इल्लाऽ माऽ कतबऽल्लाहु लना, हुवा मव्लानाऽ, व अलऽल्लाहि फ़ल् यतवक्कलिऽल् मुअ्मिनून् ॥

(हे पैग़म्बर! उनसे) तू कह कि जो अल्लाह ने (हमारे लिलाट में) लिख दिया है उसके अतिरिक्त हमें अन्य कुछ न प्राप्त होगा, वही हमारा स्वामी है, और मुसल्मानों को उचित है कि अल्लाह पर विश्वास करें।

(१०) कुल् हल् तरब्बसूना बिनाऽ इल्लाऽ इह्दऽल् हुस्नयैनि; व नह्नु न तरब्बसु बिकुम् अय्युसीबकुमुऽल्लाहु बि अज़ाबिम्मिन् इन्दिहीऽ अव् बि अय्दीनाऽ, फ़त रब्बसूऽ इन्नाऽ मअकुम्मुतरब्बिसून ॥

कह—दो भलाइयों में से एक के अतिरिक्त और क्या मार्ग तुम हमारे निमित्त खोजोगे? हम भी तुम्हारे निमित्त यही आशा

लगाये हुए हैं कि अल्लाह तुम्हारे ऊपर अपने गाल जे अथवा हमारे द्वारा कुछ भेजे, अतः प्रतीक्षा करो, हमभी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हैं।

(११) कुल् अन्फ़िक़ूऽ तुउअऽन् अव्कर्हऽल्लय्युतक़ब्बला मिन्कुम् ; इन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमऽन् फ़ासिक़ीन् ॥

हे पैग़म्बर ! तू कह—धन को चाहे तुम प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से व्यय करो; यह तुम्हारी ओर से स्वीकार न किया जायगा; निश्चय तुम अनाज्ञाकारी हो।

(१२) व माऽ मनअहुम् अन्तुक़बला मिन्हुम् नफ़क़ातुहुम् इल्ला२ अन्नहुम् कफ़रूऽ बिऽल्लाहि व बिरसूलिही व लाऽ यअ्तून्-स्सलाता इल्लाऽ वहुम् कुसाऽला वलाऽ युन्फ़िक़ूना इल्लाऽ व हुम् कारिहून् ॥

इसके अतिरिक्त कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर अविश्वास किया, और नमाज़ नहीं पढ़ी, परन्तु (यदि पढ़ी भी तो) आलस्य के साथ और (दान-ख़ैरात में) व्यय नहीं किया परन्तु (यदि किया भी तो) कुभाव से-और किसी प्रकार उनके व्यय का स्वीकार होना आवश्यक नहीं होगा।

(१३) फ़लाऽ तुअ्जिब्का अम्वाऽलुहुम् वला२ औलाऽदुहुम् ; इन्नमाऽ युरीदुऽल्लाहु लि युअज़्ज़िबहुम्

बिहाऽ फ़िऽल् हयाति-द्दुन्याऽ व तज़्हक़ा अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून् ॥

अतः तू उनकी सम्पत्ति और सन्तति से आश्चर्य न हो; अल्लाह यही चाहता है कि सांसारिक जीवन में उनको इन वस्तुओं से ग्रस्त करे और जब तक उनके प्राण निकलें वह काफ़िर ही रहें।

(१४) व यह्लिफ़ूना बिऽल्लाहि इन्नहुम् ल मिन्कुम्; व माऽ हुम्मिन्कुम् वला किन्नहुम् क़ौमुय्यफ़्-रक़ून् ॥

और अल्लाह की सौगन्ध खाते हैं कि वह निश्चय तुममें से है; और वह तुममें नहीं किन्तु वह लोग डरते हैं।

(१५) लउ यजिदूना मल्जऽन् अउ मग़ारातिन् अउ मुद्दख़लऽल्ल वल्लउ ऽ इलयहि वहुम् यज्म़हून् ॥

यदि कहीं रक्षा स्थान पावें अथवा कोई गड्ढा वा शिर झुकाने को स्थान पावें तो उसी ओर रस्सियां तुड़ाते उलटे भागें।

(१६) व मिन्हुम्मय्यल्मिज़ुका फ़ि-स्सदक़ाति; फ़ इन् उअ्तूऽ मिन्हाऽरज़ूऽ व इल्लम् युअ्तउ ऽ मिन्हाऽ इज़ाऽ हुम् यस्ख़तून् ॥

और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुझे ज़कात बांटने में ताना देते हैं, अतः यदि उसमें से उनको मिले तो प्रसन्न हों और यदि न मिले तभी वह क्रुद्ध हो जावें।

(१७) व लउ अन्नहुम् रज़ूमा२ आताहुमुऽल्लाहु व रसूलुहू व क़ाऽलूऽ हस्बुनऽऽल्लाहु स युअ्तीनऽऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू२ इन्ना२ इलऽल्लाहि राऽग़िबून् ॥

और क्या अच्छा था यदि वे जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर ने उन्हें दिया है उससे प्रसन्न होते और कहते कि हमको पर्य्याप्त है; अल्लाह और उसका पैग़म्बर हमको अपने अनुग्रह से देता रहेगा, हमको अल्लाह ही चाहिए।

[मँजिल २ पारा १० रु ८।७]

(१) इन्नमऽ-स्सदक़ातु लिल्फ़ुक़राऽइ वऽल् मसाकीनि वऽल् आमिलीना अ़लय्हाऽ वऽल् मुअल्लफ़ति कुलूबुहुम् व फ़ि-रिं क़ाऽबि वऽल् ग़ाऽरिमीना व फ़ी सबीलिऽल्लाहि वऽब्नि-स्सबीलि; फ़रीज़तम्मिनऽल्लाहि; वऽल्लाहु अ़लीमुन् हकीम् ॥

ज़कात (दान) भिखमंगों और अनाथों और उस काम पर निर्वाह करने वालों का और (उनका) जिनके मनों को

खुशाला है और जो दासता में हैं और जो तावान भरते हैं और अल्लाह के मार्ग में और मार्ग के पथिक के लिए अल्लाह का निश्चित किया हुआ है; और बुद्धिमान् अल्लाह सब जानता है।

(२) व मिन्हुमुऽल्लज़ीना युअ्ज़ून-न्नबिय्या व यक़ूलूना हुवा उज़ुनुन् ; क़ुल् उज़ुनु खय़्रिल्लकुम् युअ्मिनु बिऽल्लाहि व युअ्मिनु लिल् मुअ्मिनीना व रह्मतु लिलल्लज़ीना आमनूऽ मिन्कुम् ; वऽल्लज़ीना युअ्ज़ूना रसूलऽल्लाहि लहुम् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और उनमें से कुछ लोग पैग़म्बर की निन्दा करते हैं और कहते हैं यह मनुष्य कान है; तू कह—तुम्हारे हित के लिए कान है, अल्लाह का विश्वास करता है और तुममें से जो मुसलमान हैं उनके साथ अनुग्रह है; और तुममें से जो लोग अल्लाह के पैग़म्बर की निन्दा करते हैं उनको दुःख का दण्ड है।

(३) यह्लिफ़ूना बिऽल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम्, वऽल्लाहु व रसूलुहूऽ अहक़्क़ु अय्युर्ज़ूहु इन्कानूऽ मुअ्मिनीन् ॥

तुम्हारे सन्मुख अल्लाह की सौगन्धें खाते हैं कि तुम्हें प्रसन्न करें; और यदि वह मुसलमान हों तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर को प्रसन्न करना परमावश्यक है।

(४) अलम् यअ्लमू२ अन्नहू मय्युहाऽदिदिऽल्लाहा व रसूलहू फ़ अन्ना लहू नाऽरा जहन्नमा खाऽलिदऽन् फ़ीहाऽ; ज़ालिकऽल् ख़िज़्युऽल् अज़ीम् ॥

वह जान नहीं चुके कि जो कोई अल्लाह और उसके पैगम्बर से समता (मुक़ाबला) करे तो उसको नर्काग्नि (दोज़ख की आग) है जिसमें वह सदैव रहेगा; यही बड़ी लज्जा है।

(५) युह्ज़रुऽल् मुनाफ़िक़ूना अन्तुनज़्ज़ला अलयहिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बि माऽ फ़ी कुलूबिहिम्; कुलिऽस्तह्ज़िऊऽ, इन्नऽल्लाहा मुख़्रिजुम्माऽ तह्ज़रून् ॥

मुनाफ़िक़ डरा करते हैं कि उन पर कोई सूरत न उतरे कि जो उनको—जो कुछ उनके हृदय में है—बतला दे; (हे पैग़म्बर! उन्हें) तू कह—हँसी करते रहो जिस वस्तु का तुम्हें भय है उसे अल्लाह प्रगट करने वाला है।

(६) व लइन् स अल्तहुम् ल यक़ूलुन्ना इन्नमाऽ कुन्नाऽ नख़ूज़ु, व नलअबु; कुल् अबिऽल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन् ॥

और जो तू इनसे पूछे तो कहें—हम तो गोष्ठ करते और खेल करते थे; तू कह—अल्लाह से और उसके वाक्य से और उसके पैग़म्बर से ठट्ठा करते थे।

(७) लाऽ तअ्तज़िरूऽ क़द् कफ़तुम् बअ्दा ईमाऽनिकुम् ; इन्नअ्फ़ु अन्ताऽइफ़तिम्मिन्कुम् नुअ़ज़्ज़िब् ताऽइफ़तन् ; बि अन्नहुम् काऽनूऽ मुज्रिमीन् ॥

बहाने मत बनाओ, तुम विश्वास करके (मुसलमान होकर) काफिर होगए; यद्यपि हम तुममें से किन्हीं को क्षमा करेंगे तथापि किन्हीं को दण्ड भी देंगे क्योंकि वह अपराधी थे ।

मं० २ पारा १०. रु० ६।८

(१) अल् मुनाफ़िक़ूना वऽल् मुनाफ़िक़ातु बअ्ज़ुहुम्मिन् ; बअ्ज़िन् यअ्मुरूना बिऽल् मुन्करि व यन्हउना अनिऽल् मअ्रूफ़ि व यक़्बिज़ूना अय्दियहुम् ; नसुऽल्लाहा फ़ नसियहुम् ; इन्नऽल् मुनाफ़िक़ीना हुमुऽल् फ़ासिक़ून् ॥

मुनाफ़िक़ (धर्म कपटी) स्त्री पुरुष अपने में से एक दूसरे के पीछे चलते हैं, बुरी सीख सिखाते हैं और भली बात छुड़ाते हैं और अपनी मुट्ठी बन्द रखते हैं; यह अल्लाह को भूल गये तो अल्लाह इनको भूल गया; निश्चय वही मुनाफ़िक़ अनाज्ञाकारी हैं ।

(२) वअ़दऽल्लाहुऽल् मुनाफ़िक़ीना वऽल् मुना-

फ़िक़ाति वऽल् कुफ़्फ़ारा नाऽरा जहन्नमा ख़ालिदीना फ़ीहाऽ; हिया हस्बुहुम्, व लअ़नहुमुऽल्लाहु, व लहुम् अ़ज़ाऽबुम्मुक़ीम् ॥

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मनुष्यों और स्त्रियों और मुनकिरों को नर्काग्नि का वचन दिया—उसमें पड़े रहें, उनको वही पर्याप्त है, और अल्लाह ने उनको फटकारा, और उनको स्थायी दुःख है।

(३) कऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिकुम् काऽनू२ अशद्दा मिन्कुम् कुव्वतव्व अक्सरा अम्वाऽलऽव्व अव्लाऽदऽन्; फ़ऽस्तम्तऊऽ बि ख़लाऽक़िहिम् फ़ऽस्तम्तअ़्तुम् बि ख़लाऽक़िकुम् कमऽऽस्तम्तअ़ऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिकुम् बिख़लाऽक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कऽल्लज़ी ख़ाऽज़ूऽ; उलाऽ२-इका हबितत् अअ़्माऽलुहुम् फ़ि-द्दुन्याऽ वऽल् आख़िरति, व उलाऽ२इका हुमुऽल् ख़ासिरून् ॥

जिस प्रकार तुमसे पूर्व (पुरुष) बल में विशेष थे और वे सम्पत्ति और सन्तति अधिक रखते थे; फिर उन्होंने अपने भाग से उस समय लाभ उठाया तो तुम भी अपने भाग से लाभ उठाते हो जैसा उन्होंने—जो तुमसे पहले थे—अपने भाग से लाभ उठाया, तुम भी हँसी करने लगे जैसी उन्होंने

हँसी थी, उनके कर्म इस संसार में और अन्तिम दिवस में असफल होंगे; और वही लोग हानि उठाने वालों में हैं।

(४) अलम् यअ्तिहिम् नबउऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिव्व आऽदिव्व समूदा व क़ौमि इब्राहीमा व अस्हाबि मद्यना वऽल् मुअ्तफ़िकाति; अतत्हुम् रुसुलुहुम् बिऽल् बय्यिनाति, फ़ मा ऽ काऽनऽल्लाहु लि यज़्लिमहुम् व ला किन् काऽनू ऽ अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून ॥

क्या इनको उनका—नूह की जाति और आद और समूद और इब्राहीम की जातियों और मदीना—निवासियों और उलटी नगरियों के जो इनसे पहले थीं, निवासियों का, सन्देश नहीं पहुँचा ? उन (जातियों) के पैग़म्बर उनके पास प्रत्यक्ष चिह्न लेकर आये; क्योंकि अल्लाह उन पर अन्याय नहीं करना चाहता था, किन्तु उन्होंने अपने आप अपने ऊपर अन्याय किया।

(५) वऽल् मुअ्मिनूना वऽल् मुअ्मिनातु बअ्ज़ुहुम् अव्लियाऽउ बअ्ज़िन् यअ्मुरूना बिऽल् मअ्रूफ़ि व यन्हव्ना व अनिऽल् मुन्करि व युक़ीमून-स्सलाता व युअ्तून-ज़्ज़काता व युतीऊनऽल्लाहा व रसूलहू उलाऽइका सयर्हमुहुमुऽल्लाहु; इन्नऽल्लाहा अज़ीज़ुन् हकीम् ॥

और मुसल्मान मनुष्य और महिलाएं परस्पर मित्र हैं, यह सुकर्म की आज्ञा देते और कुकर्म से रोकते हैं और नमाज़ को स्थिर रखते हैं और दान देते हैं और अल्लाह तथा उसके पैग़म्बर की आधीनता करते हैं; यही लोग हैं जिन पर अनुग्रह करेगा; निश्चय अल्लाह बलवान् और बुद्धिमान् है।

(६) वअ़दऽल्लाहु ऽल् मुअ्मिनीना वऽल् मुअ्-मिनाति जन्नातिन् तजी मिन्तह् तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहाऽ व मसाकिना तृय्यिबतन् फ़ी जन्नाति अद्निन् ; व रिज़्वाऽ नुम्मिनऽल्लाहि अक्बरु; ज़ालिका हुवऽल् फ़ौज़ुऽल् अ़ज़ीम् ॥

अल्लाह ने मुसल्मान मनुष्यों और महिलाओं को बहिश्त (के बागों) का वचन दिया है कि जिनके निकट नहरें बहती हैं, उसमें वे सर्वदा निवास करें और बागों में बसने को पवित्र गृह; और सबसे अधिक अल्लाह की प्रसन्नता, यह सबसे महान् (मनोनीत) मनोकामना है (जो उन्हें मिलनी है।

(मंजिल, २ पारा १०, रु० १०।८)

(१) याऽ अय्युह्–ऩबिय्यु जाऽहिदिऽल् कुफ़्फ़ाऽर वऽल् मुनाफ़िक़ीना वऽग़्लुज़् अ़लय्हिम् व मअ्वाहुम् जहन्नमु; व बिअ्सऽल् मसीर् ॥

हे पैग़म्बर! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ाई कर और उन पर तग़्लीज़ (सख़्ती) कर; और उनका निवास स्थान नर्क है: और वह बहुत बुरा स्थान है।

(२) यह़्लिफ़ूना बिल्लाहि माऽ क़ाऽलूऽ, व लक़द् क़ाऽलूऽ कलिमतऽल् कुफ़्रि व कफ़रूऽ बअ़्दा इस्लाऽमिहिम् व हम्मूऽ बिमाऽलम् यनाऽलूऽ, व माऽ नक़मूऽ इल्लाऽ अन् अग़्नाहुमुऽल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही; फ़ इय्यतूबूऽ यकु ख़ैयरऽल्लहुम्; फ़ इय्यतवल्लवऽ युअ़ज़्ज़िब्‌हुमुऽल्लाहु अज़ाऽबऽन् अलीमऽन् फ़िऽद्दुन्याऽ वऽल् आख़िरति, व माऽलहुम् फ़िऽल् अर्ज़ि मिन्वलिय्यिंऽवलाऽ नसीर्॥

यह अल्लाह की सौगन्ध खाते हैं कि हमने नहीं कहा; और निस्सन्देह इन्होंने कुफ़्र का कलमा (शब्द) कहा है और मुसलमान होकर काफ़िर हो गये हैं और जो सोचा था वह प्राप्त न हुआ*, और यह सब इसका बदला करते हैं कि अ-

---

*कहा जाता है कि अलजल्लास इब्नसवीद ने इस सूरत की कोई ऐसी आयत—जो उक्त तबूक युद्ध में न जाने वालों को धतकारती है—सुन कर घोषणा करदी कि जो मुहम्मद साहब अपनी जाति वालों के सम्बन्ध में कहते हैं यदि वह सत्य है तो वे गधों से भी गये-बीते हैं। यह बात मुहम्मद साहब के कान तक पहुँची, उन्होंने उसे बुलवाया जिस पर उसने शपथ खाकर

ल्लाह और उसके पैग़म्बर ने अपने अनुग्रह से इन्हें धनाढ्य कर दिया, अतः यदि पश्चात्ताप करें तो इनके निमित्त हित-कर है, और यदि न मानें तो अल्लाह उन्हें इस लोक और परलोक में दुःख का दण्ड देगा, और उनका भूतल पर न कोई समर्थक है और न सहायक।

(३) व मिन्हुम्मन् अ़हदऽल्लाहा ल इन् आतानाऽ मिन् फ़ज़्लिही ल नस्सद्दक़न्ना व लनकूनन्ना मिन-स्सालिहीन।

और कुछ उनमें वह हैं कि जिन्होंने अल्लाह से प्रतिज्ञा की थी कि यदि (अल्लाह) हमें अपने अनुग्रह से दे तो हम ख़ैरात करें और हम उपकारियों में सम्मिलित हो जावें।

(४) फ़ लम्मा ऽ आताहुम्मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू ऽ बिही व तवल्लउ ऽ व्वहुम्म मुअ़्रिज़ून्॥

फिर जब उसने उनको अपने अनुग्रह से दिया तो उसमें कृपणता करने लगे और पीठ फेर कर पृथक् हो गए।

इस कथन से इन्कार किया परन्तु तत्काल, ज्योंही यह आयत उतरी, उसने अपना दोष स्वीकार किया और उसका तौबा स्वीकार हुआ। —बेज़ावी

*मुहम्मद साहब के वध करने का गुप्त प्रयत्न किया गया था; परन्तु मदीना वालों ने यह कह कर इस काम को न होने दिया कि मुहम्मद सा० और उनके लोगों के हमारे बीच में होने से हमारे व्योपार को बहुत लाभ पहुंचा।

(५) फ़ अअ़क़बहुम् निफ़ाऽक़ऽन् फ़ी क़ुलूबिहिम् इला यउमि यल्क़ूनहू बिमा२ अख़्लफ़ुऽऽल्लाहा माऽ वअ़दूहु व बिमाऽ काऽनूऽ यक्ज़िबून् ॥

फिर इस बात पर कि अल्लाह को जो वचन दिया था उन्होंने उसके विरुद्ध किया और इस बात पर कि वे झूठ बोलते थे, उनके मनों पर उसका प्रभाव वैर भाव रक्खा, जब तक कि वे उससे आकर मिलें।

(६) अलम् यअ़्लमू२ अन्नऽल्लाहा यअ़्लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नऽल्लाहा अ़ल्लाऽमुल् ग़ुयूब् ॥

क्या यह बात नहीं कर चुके कि अल्लाह उनका भेद और मन्त्र जानता है और यह कि अल्लाह प्रत्येक परोक्ष बात से परिचित है।

(७) अल्लज़ीना यल्मिज़ूनऽल् मुत्तव्विई़ना मिनऽल् मुअ़्मिनीना फ़ि-स्सदक़ाति वऽल्लज़ीना लाऽ यजिदूना इल्लाऽ जुह्दहुम् फ़ यस्ख़रूना मिन्हुम् सख़िरऽल्लाहु मिन्हुम् व लहुम् अ़ज़ाऽबुन् अलीम् ॥

वह जो दान देने वाले मुसलमानों को पेट भर कर दोष देते हैं और उन्हें भी जो अपने परिश्रम की कमाई के अतिरिक्त और कोई ढंग नहीं रखते, फिर उन पर हँसते हैं; अल्लाह ने उनसे हंसी की है और उन्हें दुःख का दण्ड।

(८) इस्तग़्फ़िर् लहुम् अउ लाऽतस्तग़्फ़िर् लहुम् ; इन्तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्ईना मर्रतन् फ़लय्यग़्फ़िरऽल्लाहु लहुम् ; ज़ालिका बि अन्नहुम् कफ़रूऽ बिऽल्लाहि व रसूलिही: वऽल्लाह लाऽ यह्दिऽल् क़ौमऽल् फ़ासिक़ीन ॥

तू उनके निमित्त क्षमा याचना कर अथवा न कर; यदि उनके निमित्त सत्तर वार क्षमा मांगे तो भी उनको अल्लाह कदापि क्षमा न करे; यह इस कारण कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर को अस्वीकार किया; और अल्लाह अनाज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

[मं० २ पारा १० रुकूअ ११।६]

(९) फ़रिहऽल् मुख़ल्लफ़ूना बिमक़्अदिहिम् ख़िलाऽफ़ा रसूलिऽल्लाहि व करिहूऽ अय्युजाऽहिदूऽ बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि व क़ाऽलूऽ लाऽ तन्फ़िरूऽ फ़िऽल् हर्रि; क़ुल् नाऽरु जहन्नमा अशद्दु हर्रऽन् ; लउ काऽनूऽ यफ़्क़हून ॥

जो लोग (तबूक संग्राम में) पीछे छोड़ दिये गये थे वे अल्लाह और पैग़म्बर से पृथक् बैठकर प्रसन्न हुए और अल्लाह के मार्ग में अपने तन और धन से लड़ना उन्हें अप्रिय लगा और कहने लगे कि ग्रीष्म में मत चलो; (हे पैग़म्बर,

इन्हें) तू कह—दोज़ख़ (नर्काऽग्नि) और अधिक तप्त है; यदि तुममें विवेक हो।

(२) फ़ल् यज़्हकूऽ क़लीलऽव्वल् यब्कूऽ कसीरऽन् , जज़ाइअन् विमाऽ काऽनूऽ यक्सिवून् ॥

अतः हँस लेवें थोड़ा और रोवें बहुत सा, जो कमाते थे उसका यह फल है।

(३) फ़ इर्रजअ़कऽल्लाहु इ्ला ताइफ़तिम्मिन्हुम् फ़ऽस्तअ्ज़नूका लिल् खुरूजि फ़ क़ुल्लन् तख़्रुजूऽ मइ़या अबद्ऽव्व लन् तुक़ाऽतिलूऽ मइ़या अ़दुव्वऽन् ; इन्नकुम् रज़ीतुम् बिऽल् क़ुऊ़दि अव्वला मर्रतिन फ़ऽक़ूउ़दूऽ मअ़ऽल् ख़ाऽलिफ़ीन् ।

अतः यदि अल्लाह तुझको पुनः उनमें से किसी समुदाय की ओर ले जावे तो यह तुझसे निकलने के निमित्त निर्देश चाहें तो तू कह—तुम मेरे साथ कदापि न निकलोगे और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध करोगे; तुमको प्रथम बार बैठ रहना प्रिय लगा तो (अब भी) पीछे बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो।

(४) वलाऽ तुसल्लि अ़ला इ अ़हदिम्मिन्हुम्माऽता अबदऽव्वलाऽ तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही; इन्नहुम् कफ़रूऽ बिऽल्लाहि व रसूलिही व माऽतूऽ वहुम् फ़ासिक़ून् ॥

और यदि कभी मर जाय तो उनमें किसी पर नमाज़ न पढ़ और न उसकी क़ब्र पर खड़ा हो; उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर को अस्वीकार किया और अनाज्ञाकारी (काफ़िर रहते हुए) ही मरे हैं।

(५) वलाऽ तुअ्जिब्का अम्वाऽलुहुम् व औलाऽ-दुहुम्; इन्नमाऽ युरीदुऽल्लाहु अय्युअ़ज़्ज़िबहुम् बिहाऽ फ़िद्दुन्याऽ व तज़्हक़ा अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून ॥

और उनकी सम्पत्ति और सन्तति से साश्चर्य न हो; अल्लाह को यही अभीष्ट है कि उनको उन वस्तुओं से संसार में दण्डित करे और जब तक उनके प्राण निकलें (तब तक) वे काफ़िर ही रहें।

(६) व इज़ाऽ उन्ज़िलत् सूरतुन् अन् आमिनूऽ बिऽल्लाहि व जाऽहिदूऽ मअ़ा रसूलिहिऽस्तअ्ज़नका उलुऽ-त्तौलि मिन्हुम् व क़ाऽलूऽ ज़र्नाऽ नकुम्मअ़ऽल् क़ाइदीन ॥

और जब कोई सूरत उन पर उतारी जाती है कि तुम अल्लाह पर विश्वास लाओ और उसके पैग़म्बर के साथ मिल कर युद्ध करो तो उनमें से जो सामर्थ्यवान् हैं वह छुट्टी मांगते हैं और कहते हैं हमको छोड़ दे, हम (घर) बैठनेवालों के साथ (घर) रह जावें।

(७) रज़ूऽ बि अय्यकूनूऽ मअ़ऽल् ख़वाऽलिफ़ि व तुबिअ़ा अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़ हुम् लाऽ यफ़्क़हून ॥

उनको यह अच्छा लगा कि पिछली स्त्रियों के साथ (घरों में) रह जावें और उनके मन पर (मौन) मुद्रा लग गई तो उनको बोध नहीं।

(८) ला किनि-र्रसूलु वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअहू जाहदूऽ बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फुसिहिम् व उलाऽइका लहुमुऽल् खय्रातु व उलाऽइका हुमुऽल मुफ्लहून ॥

परन्तु पैगम्बर और जिन्होंने (इस्लाम अथवा उस पर) विश्वास किया है और जिन्होंने उसके साथ साथ अपने तन और धन से युद्ध किया है उन्हीं को यश (प्राप्त) है और वही सफलता प्राप्त करेंगे।

(९) अअद्दऽल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन्त-हतिहऽऽल् अन्हाऽरु खालिदीना फीहाऽः ज़ालिकऽल् फव्-ज़ुऽल् अज़ीम् ॥

अल्लाह ने उनके निमित्त उद्यान उपस्थित कर रक्खे हैं उनके नीचे नहरें बहती हैं—उनमें निवास किया करें। यही महान् मनोकामना पूर्ण होती है।

[मंजिल २ पा० १० रु० १२।१०]

(१) व जाऽअऽल् मुअज़्ज़िरूना मिनऽल् अअ्राऽबि लि युअज़ना लहुम् व कअदऽल्लज़ीना कज़बुऽऽल्लाहा व

रसूलहू; स युसीबुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ मिन्हुम् अ़ज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और पैरावी अर्थात् गंवार लोग बहाने बनाते आये जिससे उन्हें छुट्टी मिले और जो अल्लाह और पैग़म्बर से झूठे हुए वह (घर) बैठ रहे; उनमें जो मुनकिर (अस्वीकारकर्त्ता) हैं उनको अब दुःख का दण्ड मिलेगा।

(२-३) लयसा अ़ल–ज़्ज़ुअ़फ़ाऽइ व लाऽ अ़लऽल् मर्ज़ा वलाऽ अ़लऽल्लज़ीना लाऽ यजिदूना माऽ युन्फ़िकूना हरजुन् इज़ाऽ नस़हूऽ लिल्लाहि व रसूलिही; माऽ अ़लऽल् मुह्सिनीना मिन् सबीलिन्; वऽल्लाहु ग़फ़ूरुऽर्रहीमुऽवलाऽ अ़लऽल्लज़ीना इज़ाऽ माऽ अतउका लितह्मिलहुम् क़ुल्ता लाऽ अजिदु माऽ अह्मिलुकुम् अ़लयहि तवल्लउऽव्व अअ्युनुहुम् तफ़ीज़ु मिन–द्दम्इ, ह़ज़नऽन् अल्लाऽ यजिदूऽ माऽ युन्फ़िकून् ॥

वृद्धों और रोगियों के लिए कुछ दोष नहीं और न उनके लिए जिनको इतनी प्राप्ति नहीं कि जो व्यय कर सकें (और ऐसी दशा में) जब कि वे अल्लाह और पैग़म्बर के साथ शुद्ध हृदय (होकर रहते) हों; उपकारी लोगों पर आक्षेप का मार्ग और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। और न उन पर कि जब तेरे पास आये जिससे कि तू उनको सवारी दे; तूने कहा कि मेरे पास

कुछ नहीं कि जिसकी तुझको सवारी दूं, तब वह उलटे लौटे और उनकी आंखों से इस दुःख में आंसू बहते हैं कि इनकी (इतनी) आय नहीं जो व्यय करें।

(४) इन्नमऽ-स्सबीलु अलऽल्लज़ीना यस्तअज़िनूनका वहुम् अग़िनयाइउ रज़ुऽ बि अय्यकूनूऽ मअऽल ख़वाऽलिफ़ि व तबअऽल्लाहु अला कुलूबिहिम् फ़ हुम् लाऽ यअ्लमून् ॥

दोष तो उनही लोगों पर हैं जो तुझसे छुट्टी मांगते हैं और धनाढ्य हैं; उन्हें यह प्रिय लगा कि पिछली स्त्रियों के साथ रह जावें और अल्लाह ने उनके मनों पर मुहर की है, अतः वह नहीं जानते।

कुल्लियात् आर्य मुसाफ़िर

सृष्टि का इतिहास और पुनर्जन्म आदि विषयों पर धर्मवीर प० लेखराम कृत पुस्तकों का अद्वितीय अनुवाद लगभग १००० पृष्ठ मू० ४) शीघ्र मँगाइये। ग्राहकों को पहुंचने पर थोड़ी कापी बचेंगी।

प्रेम पुस्तकालय, आगरा।

पारा यअ़्तज़िरूना ११

(५) यअ़् तज़िरूना इलयकुम् इज़ा ऽ रजअ़्तुम् इलय्-हिम् ; कुल्ला ऽ तअ़्तज़िरू ऽ लन्नुअ़्मिना लकुम् क़द् नब्बअ़नऽऽल्लाहु मिन् अख़्बा ऽ रिकुम् ; व सयरऽल्लाहु अमलकुम् व रसूलुहू सुम्मा तुरद्दूना इला आ़लिमिऽल् ग़य्बि व—श्शहा ऽ दति फ़ युनब्बिउकुम् बिमा ऽ कुन्तुम् तअ़्मलून् ॥

मुसलमानो ! जब तुम (जहाद से) लौट कर उनकी ओर जाओगे तो वे लोग भांति भांति के बहाने बनावेंगे; (हे पैग़म्बर !) तू कह कि बहाने मत बनाओ हम तुम्हारी बात न मानेंगे, हमको अल्लाह तुम्हारे समाचार बता चुका है और अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे काम अभी देखेंगे। फिर तुम उसकी ओर लौटाये जाओगे जो गुप्त व प्रगट (कामों को) जानता है, अतः वह तुमको जो तुम कर रहे हो, (सभी को) बता देगा।

(६) स यह़्लिफ़ूना बिऽल्लाहि लकुम् इज़ऽऽ—न्क़लब्तुम् इलयहिम् लि तुअ़्रिज़ू अ़न्हुम् ; फ़ अअ़्रिज़ू ऽ अ़न्हुम् ; इन्नहुम् रिज्सुं व्व मअ़्वाहुम् जहन्नमु, जज़ा ऽ अन् बिमा ऽ का ऽ नू ऽ यक्सिबून् ॥

अब (वे) तुम्हारे पास अल्लाह की शपथ खावेंगे जब तुम उनके पास (जहाद से) लौटकर जाओगे जिससे तुम उनसे दरगुजर करो; अत: वह लोग अपवित्र हैं और उनका निवास-स्थान नर्क है, जो उनकी करनी का फल है।

(७) यह्लिफ़ूना लकुम् लि तर्ज़उऽ अन्हुम्, फ़ इन् तर्ज़ूऽ अन्हुम् फ़ इन्नऽल्लाहा लाऽ यर्ज़ा अनिऽल् क़ुउ मिऽल् फ़ासिक़ीन् ॥

तुम्हारे पास शपथ खावेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ, अतः यदि तुम उनसे प्रसन्न होगे तो अल्लाह अनाज्ञाकारी (झूठे) लोगों से प्रसन्न नहीं।

(८) अल् अअ्राऽबु अशद्दु कुफ़्रऽव्व निफ़ाऽक़ऽव्व अज्दरु अल्लाऽ यअ्लमूऽ हुदूदा माऽ अन्ज़लऽल्लाहु अला रसूलिही; वऽल्लाहु अलीमुन् हकीम् ॥

देहाती (गंवार लोग) कोरे काफ़िर और मुनाफ़िक़ हैं और इसी योग्य हैं कि जो नियम अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर उतारे हैं उन्हें न सीखें; और अल्लाह ज्ञानवान और बुद्धिमान् है।

(९) व मिनऽल् अअ्राऽबि मय्यत्ताख़िज़ु माऽ युन्फ़िक़ु मग़्रमऽव्व यतरब्बसु बिकुमु-दवाऽइरा; अलयहिम दाऽइरतु-स्सुउ इ; वऽल्लाहु समीउन् अलीम् ॥

और कुछ गंवार ऐसे हैं कि उनको जो व्यय करना पड़ता है उसको बदला विचार करते हैं और तुम्हारे विषय में दुर्भाग्यता की प्रतीक्षा करते हैं, उन्हीं पर दुर्भाग्यता आ पड़ेगी; अल्लाह सुनता और जानता है।

(१०) व मिनऽल् अअ्राऽबि मय्युअ्मिनु बिऽऽल्लाहि वऽल् यउ्मिऽल् आखिरि व यत्तखिज़ु माऽ युन्फ़िक़ु .क़ुरुबातिन् .इन्दऽल्लाहि व सलवाति र्रसूलि; अलाऽ इन्नहाऽ .क़ुर्बतुल्लहुम् ; सयुद्ख़िलु हुमुऽल्लाहु फी र.ह्मतिही; इन्नऽल्लाहा ग़फ़ूरुर्रही.मि ॥

और आराबों (गँवारों) में कुछ ऐसे (भी) हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन का विश्वास रखते हैं और जो कुछ (अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते हैं उसको अल्लाह को समीपता और पैग़म्बर की आशीर्वादों का साधन समझते हैं, अतः सुन रक्खो कि वह (व्यय करना) उनके लिए समीपता का (कारण) है भी कि अवश्य सरे पीछे अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह में ले लेगा; निस्सन्देह, अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

[मंजिल २, पारा ११, रु० १३]

(१) व-स्साबिक़ूनऽल् अव्वलूना मिनऽल् मुहाजिरीना वऽल् अन्साऽरि वऽल्लज़ीनऽत्तबऊ हुम् बिइह्-साऽनिर्रज़ियऽल्लाहु अन्हुम् व रज़ूऽ अन्हु व अअ्हा

लहुम् जन्नातिन् तज्री तहतहऽल् अन्हारु खालिदीना फ़ीहा३ अबदऽन् ज़ालिकऽल् फ़ौज़ुऽल् अज़ीम् ॥

और हिजरत करने वालों और अन्सार में से जो लोग (इस्लाम के स्वीकार करने में) अग्रणी रहे और सब से पूर्व (विश्वासी हुए) और वह लोग जो इनके पश्चात् शुद्ध हृदय से इस्लाम में प्रविष्ट हुए, अल्लाह उनसे प्रसन्न और वे अल्लाह से प्रसन्न और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बहिश्त के बाग़ तय्यार कर रक्खे हैं जिनके निकट नहरें बह रही होंगी और वह उनमें सदा-सर्वदा निवास करेंगे; (और) यह बड़ी भारी सफलता है।

(२) व मिम्मन् हौलकुम्मिनऽल् अअ़राऽबि मुनाफ़िक़ूना; व मिन् अह्लिऽल मदीनति मरदूऽ अ़लन्निफ़ाऽक़ि लाऽ तअ़्लमुहुम् ; नह्नु नअ़्लमुहुम्; स नुअ़ज़्ज़िबुहुम्मर्रतय्नि सुम्मा युरद्दूना इला अज़ाबिन् अज़ीम् ॥

और (मुसल्मानो !) तुम्हारे निकटवर्त्तीय ग्रामीणों में से (कुछ) मुनाफ़िक़ (कपटी) हैं; और स्वयं मदीना निवासियों में से (भी) जो द्वेष पर दृढ़ (स्थिर) हैं उनको (हे पैग़म्बर !) तुम नहीं जानते; हम इनको (भली भांति) जानते हैं, अतः अभी दो हम (संसार में) इनको दबल

(दुगुना) दण्ड देंगे, फिर महान् दुःख की ओर लौटाए जायँगे।

(३) व आख़रूनऽअ्तरफ़ूऽ बि ज़ुनूबिहिम् ख़लतूऽ अमलऽन् सालिहऽव आख़रा सय्यिअऽन्; असऽल्लाहु अय्यतूबा अलयहिम्; इन्नऽल्लाहा ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

और कुछ मनुष्य हैं जिन्होंने अपने अपराध को स्वीकार किया और मिले जुले कार्य किये—कुछ अच्छे और कुछ बुरे; अतः आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार कर ले; क्योंकि अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(४) ख़ुज़् मिन् अम्वाऽलिहिम् सदक़तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अलयहिम्; इन्ना सलातका सकनुल्लहुम्; वऽल्लाहु समीउन् अलीम् ॥

(हे पैग़म्बर! यह लोग अपने धन की ख़ैरात करें तो) इनके धन का दान ले लिया करो; क्योंकि दान स्वीकार करने से तुम इनको (इनके पापों से) पवित्र और पृथक् करते हो और इनको शुभ आशीष दो; क्योंकि तुम्हारा आशीर्वाद इनके लिए सन्तोष है; और अल्लाह सुनता और जानता है।

(५) अलम् यअ्लमूऽ अन्नऽल्लाहा हुवा यक़्बलुत्तउबता अन् इबाऽदिही व यअ्ख़ुज़ुऽस्सदक़ाति व अन्नऽल्लाहा हुव-त्तव्वाबु-र्रहीम् ॥

क्या इन लोगों को इसका बोध नहीं कि अल्लाह ही लोगों की क्षमा-प्रार्थना स्वीकार करता है और वही दान (का धन) लेता और अल्लाह बड़ा क्षमा-प्रार्थना स्वीकार करने वाला है।

(६) व क़ुलिऽअ्मलू फ़ सयरऽल्लाहु अ़मलकुम् व रसूलुहू वल् मुअ्मिनूना व सतुरद्दूना इला आ़लिमिल् ग़ैबि व-श्शहाऽदति फ़ युनब्बिउकुम् बिमाऽ कुन्तुम् तअ्मलून् ॥

और (हे पैग़म्बर ! तू) कह कि तुम आचरण करते रहो, अतः अभी तो अल्लाह तुम्हारे आचरणों को देखेगा और अल्लाह का पैग़म्बर और मुसलमान (भी देखेंगे) और (मृत्यु के पश्चात्) तुम अवश्य उसकी ओर लौटाए जाओगे, जो गुप्त और उपस्थित है, (वह सब) जानता है फिर जो कुछ तुम संसार में करते रहे हो वह उससे तुमको परिचित कर देगा।

(७) व आख़रूना मुर्जऊना लि अम्रिऽल्लाहि इम्माऽ युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम्; वऽल्लाहु अ़लीमुन् हकीम् ॥

और (कुछ लोग वह हैं कि अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा में उनका मामला मुल्तवी है कि वह या तो उनको दण्ड दे अथवा उनकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार करे; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(८) वऽल्लज़ीनऽत्तख़ज़ूऽ मस्जिदऽन् ज़िराऽरऽव्व कुफ़्रऽव्व तफ़्रीक़ऽन् ँ बयनऽल् मुअ्मिनीना व इर्साऽदऽ-ल्लि मन् हाऽरबऽल्लाहा व रसूलहू मिन् क़ब्लु, व ल यह् लिफुन्ना इन् अरद्ना२ इल्लऽऽल् हुस्ना; वऽल्लाहु युश्हदु इन्नहुम् ल काज़िबून ॥

और (एक प्रकार के मुनाफ़िक़ यह भी हैं) जिन्होंने इस उद्देश्य से एक मसजिद बना खड़ी की कि (मुसलमानों को) हानि पहुंचायें और कुफ़्र करें और मुसलमानों में फूट डालें और उन लोगों को शरण दें जो अल्लाह और रसूल के साथ पहले युद्ध कर चुके हैं और पूछा जायगा तो शपथें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की इच्छा की नहीं; और अल्लाह साक्षी देता है कि यह अवश्य झूठे हैं।

(९) लाऽ तक़ुम् फ़ीहि अबदऽन्; ल मस्जिदुन् उस्सिसा अल-तक़्वा मिन् अव्वलि यउ्मिन् अ हक़्क़ु अन्तक़ूमा फ़ीहि; फ़ीहि रिजाऽलुय्युहिब्बूना अय्यततह् हरूऽ; वऽल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तह् हिरीन ॥

(हे पैग़म्बर !) तुम उस मसजिद में कभी जाकर खड़े भी न होना। हां, वह मसजिद जिसका आधार आरम्भ दिवस से संयम पर रक्खा गया है उसका यद्यपि अधिकार है कि तुम उसमें खड़े होकर इमामत करो क्योंकि उसमें ऐसे लोग हैं

जिन्हें भले प्रकार स्वच्छ पवित्र रहना प्रिय है: और अल्लाह को भली भाँति स्वच्छ पवित्र रहना प्रिय है।

(१०) अफ़मन् अस्ससा बुन्याऽनहू अला तक़्वा मिनऽल्लाहि व रिज़्वाऽनिन् ख़ैरुन् अम्मन् अस्ससा बुन्याऽनहू अला शफ़ाऽ जुरुफ़िन् हाऽरिन् फऽन्हाऽरा बिही फ़ी नाऽरि जहन्नमा, वऽल्लाहु लाऽ यह्दिल् क़ौम-ज़्ज़ालिमीन् ॥

भला, जो मनुष्य अल्लाह के भय और उसकी प्रसन्नता पर अपने भवन की आधार-शिला रक्खे वह श्रेष्ठ है अथवा वह जो फुसफुसे खोखले कगारे के किनारे पर अपने भवन की आधारशिला स्थापित करे तो वह भवन उसको नर्क की अग्नि में ले गिरे; और अल्लाह अत्याचारी मनुष्यों को शिक्षा नहीं दिया करता।

(११) लाऽ यज़ाऽलु बुन्याऽनुहुमुऽल्लज़ी बनउऽरी बतन् फ़ी क़ुलूबिहिम् इल्लाऽ अन्तक़त्तआ क़ुलूबुहुम्; वऽल्लाहु अलीमुन् हकीम् ॥

यह भवन जो इन लोगों ने बनाया है, इसके कारण इन लोगों के हृदयों में सर्वदा शङ्का और भय रहेगा यहां तक कि इनके हृदयों के टुकड़े टुकड़े हो जायँगे; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान* है।

*शाह अब्दुल क़ादिर ने 'वल्लज़ीनत्तख़ज़ू' से लेकर यहां तक को

[मंजिल २ पारा ११ रु १४।८]

(१) इन्नऽल्लाहऽश्तरा मिनऽल् मुअ्मिनीना अन्फुसहुम् व अम्वाऽलहुम् बि अन्ना लहुमुऽल् जन्नता; युक़ाऽतिलूना फ़ी सबीलिऽल्लाहि फ़ यक़्तुलूना व युक़्तलूना वअ्दऽन् अलयहि हक़्क़ऽन् फ़ि-तऊराति वऽल् इन्जीलि वऽल् क़ुर्आनि, व मन् अउ्फ़ा बि अह्दिही

आयतों के विषय में जो हाशिया लिखा है उसमें सभी आवश्यक ऐतिहासिक बातें मभी विद्यमान हैं इसीको हम ज्यों का त्यों उद्धृत किये देते हैं—
"हजरत मक्के से हिजरत कर आये तो मदीने से बाहर—जहां एक मुहल्ला बनी उमर बिन औफ का था—उतरे। कुछ दिनों के पश्चात् नगर में स्थान प्राप्त किया और मस्जिद नबवी बनाई। उस मुहल्ले में जहां नमाज पढ़ते थे वहां लोगों ने मस्जिद बना रक्खी और समुदाय स्थिर रहा। वह मसजिद कबा के नाम से प्रसिद्ध है। हजरत प्रायः सप्ताह के दिन वहां जाते और नमाज पढ़ते। उस मुहल्ले में कुछ मुनाफ़िकों ने चाहा कि अन्य मसजिद बनावें पहलों की हद पर और अपना समुदाय पृथक् स्थिपित करें और एक राहब अबू आमर कि इस्लाम के दायरे से निकल गया था उसको द्वेष से बुलाकर वहां सरदार और इमाम बनावें। हजरत से चाहा कि पहले एक बार आप वहां नमाज पढ़ें तो हम समुदाय स्थापित करें। हजरत को उनके कपट का पता न था अतः वचन दिया कि तबूक के युद्ध से लौटेंगे तो पहले वहां नमाज पढ़कर नगर में घुसेंगे। हकताला ने पहले सावधान कर दिया और पहले मसजिद कबा के लोगों की प्रशंसा की। मनुष्य सावधान रहें कि प्रगट में कोई आराधना है और उसमें दुष्कामना छिपी हुई है उसकी यह अवस्था है।"

और अल्लाह ऐसा नहीं कि किसी जाति को जब कि उसे सत्पथ पर प्रवृत्त करा चुकेगो. जब तक उन पर (वह बात) प्रगट न करदे कि जिससे उन्हें बचना है—पथ-भ्रष्ट करे, निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु से परिचित है।

(६) इन्नऽल्लाहा लहू मुल्कु-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; युही व युमीतु; व माऽ लकुम्मिन्दूनिऽल्लाहि मि न्वलि य्यिन्वलाऽ नसीर् ॥

निश्चय अल्लाह ही है जिसका आसमान और पृथिवी … है, वह जिलाता है और मारता है; अल्लाह के अतिरिक्त अन… कोई तुम्हारा समर्थक और सहायक नहीं।

(७-८) लक़त्ताऽवऽल्लाहु अल-नबिय्यि वऽल मुहाजिरीना वऽल् अन्साऽरिऽल्लज़ीनऽत्त बऊहु फ़ी साऽअतिऽल् उस्रति मिन् बअ़दि माऽ काऽदा यज़ीगु कुलूबु फ़रीक़िम्मिन्हुम् सुम्मा ताऽबा अलय्हिम् इन्नहू बिहिम् रऊफुर्रहीमुन्व अल-स्सलासतिऽल्लज़ीना खुल्लिफूऽ; हत्ताऽ इज़ाऽ ज़ाऽक़त् अलय्हिमुऽल् अर्ज़ु बिमाऽ रहुबत् व ज़ाऽक़त् अलय्हिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्लाऽ मल्जअ मिनऽल्लाहि इल्लाऽ इलय्हि, सुम्मा

ताऽबा अलयहिम् लि यतूबुऽ; इन्नऽल्लाहा हुव—त्तव्वाबु—
र्रहीम् ॥

यद्यपि अल्लाह ने पैग़म्बर पर बड़ा ही अनुग्रह किया मुहाजिरों और अन्सार पर (भी)—जिन्होंने तंगदस्ती के समय में पैग़म्बर का साथ दिया जब कि इनमें से किन्हीं किन्हीं के मन विचलित होगये थे—उसी ने अपना अनुग्रह किया; (कि इनके मनों को संभाल लिया) निश्चय अल्लाह परम दयालु और बुद्धिमान है। उन तीनों (मनुष्यों) पर भी जो (अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा में) पीछे छोड़े गये थे; यहां तक कि पृथ्वी विस्तृत होते हुए भी उनके लिए संकुचित होने लगी और वह अपने जीवन से हताश होगये कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी रक्षा नहीं, फिर अल्लाह ने उनकी तौबा (पाप क्षमा प्रार्थना) स्वीकारकरली जिससे कि (फिर भी) क्षमा प्रार्थना करते रहें; निस्सन्देह अल्लाह बड़ा प्रार्थना स्वीकार करने वाला और दयालु है।

[मँजिल २ पारा ११ रु १५।४]

(१) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनुऽऽत्तक़ुऽऽ-
ल्लाहा व कूनूऽ मअ—स्सादिक़ीन ॥

हे मुसल्मानो! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो।

(२) माऽ काऽना लि अह्लिऽल् मदीनति व मन् हव्लहुम्मिनऽल् अअ्राऽबि अय्यतखल्लफ़ूऽ अर्रसूलिऽल्लाहि वलाऽ यर्ग़बूऽ बि अन्फ़ुसिहिम् अन्नफ़्सिही; ज़ालिका बि अन्नहुम् लाऽ युसीबुहुम् ज़मअन्व लाऽ नसबुव्वलाऽ मख़्मसतुन् फ़ी सबीलिऽल्लाहि व लाऽ यतऊना मव्तिअऽ य्यग़ीज़ुऽल् कुफ़्फ़ारा वलाऽ यनाऽलूना मिन् अदुव्वि न्नय्लऽन् इल्लाऽ कुतिबा लहुम् बिही अमलुन् सालिहुन् ; इन्नऽल्लाहा लाऽ युज़ीउ अज्ऽल् मुह्सिनीन् ॥

मदीना के निवासियों और उसके आसपास के रहने वाले ग्रामीणों को उचित न था कि अल्लाह के पैग़म्बर (के साथ) से पीछे रह जावें और न यह कि पैग़म्बर के प्राणों की अपेक्षा अपने प्राणों से अधिक प्रेम करें; यह इसलिए कि इन (जहाद करने वालों) को अल्लाह के मार्ग में प्यास, थकावट और क्षुधा का क्लेश पहुंचता है तो और जिन स्थानों पर काफ़िरों को इनका चलना असह्य प्रतीत होता है वहां चलते हैं तो और शत्रुओं से (कभी) कुछ मिल मिला रहता है तो (दुःख और सुख दोनों दशाओं में प्रत्येक कार्य के बदले इनका शुभ काम लिखा जाता है; निस्सन्देह अल्लाह सच्चे (हृदय से इस्लाम की सेवा करने वालों) के फल को नष्ट नहीं होने देता।

(३) वलाऽ युन्फ़िक़ूना नफ़क़तन् सग़ीरत व्वलाऽ कबीरत व्वलाऽ यक़्तऊ़ना वाऽदियऽन् इल्लाऽ कुतिबा लहुम् लि यज्ज़ियहुमुऽऽल्लाहु अह्सना माऽ काऽनूऽ यअ़्मलून् ॥

और (इसी प्रकार) थोड़ा अथवा बहुत जो कुछ (अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते हैं और जो घाटियां उन्हें तै करनी पड़ती हैं वह सब (इनके कर्म-पत्र में) इनके नाम लिखा जाता है, जिससे कि अल्लाह इनके कर्मों का इन्हें उत्तम से उत्तम फल प्रदान करें।

(४) व माऽ काऽनल् मुअ़्मिनूना लि यन्फ़िरूऽ काऽफ़्फ़तन्; फ़ लव्लाऽ नफ़रा मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम्मिन् हुम् ताऽइफ़तुल्लि यतफ़क़्क़हूऽ फ़ि द्दीनि व लि युन्ज़िरूऽ क़ौमहुम् इज़ाऽ रजऊ इलयहिम् लअ़ल्लहुम् यह्ज़रून् ॥

और यह उचित नहीं कि मुसल्मान सबके सब (अपने अपने घरों में से) निकल खड़े हों और मदीने में आ घुसें। ऐसा क्यों न किया कि उनके प्रत्येक समुदाय में से कुछ लोग (अपने घरों से) निकले होते कि दीन की समझ पैदा करते

और जब (सीख समझ कर) अपनी जाति में फिर पहुंचते तो उनको (अल्लाह की अवज्ञा से) डराते जिससे वह लोग (बुरे कर्मों से) बचते।

मं० २ पारा ११, रु० १६।७

(१) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ क़ाऽतिलुऽऽल्लज़ीना यलूनकुम्मिनऽल् कुफ़्फ़ाऽरि वल् यजिदूऽ फ़ीहुम् ग़िलज़तन्; वाऽअ्लमू३ अन्नऽल्लाहा मअ़ऽल् मुत्तक़ीन् ॥

मुसल्मानो! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो और चाहिये कि तुममें करारापन मालूम करें (और किसी पर व्यर्थ अत्याचार न करो) और याद रक्खो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो संयमी हैं।

(२) व इज़ाऽ माऽउन्ज़िलत् सूरतुन् फ़ मिन्हुम्म य्यकूलु अय्युकुम् ज़ाऽदतहु हाज़िही३ ईमाऽनऽन्, फ़ अम्मऽऽल्लज़ीना आमनूऽ फ़ ज़ाऽदत् हुम् ईमाऽन व्व हुम् यस्तब्शिरून् ॥

और जिस समय कोई सूरत उतारी जाती है तो मुना फ़िक़ों में से कुछ लोग (एक दूसरे से) पूछने लगते हैं कि भला इस (सूरत) ने तुममें से किसका ईमान (विश्वास) बढ़ा दिया

अतः जो विश्वासी हैं इसने उनका तो विश्वास बढ़ाया और वह अपना हर्ष मनाते हैं।

(३) व अम्मऽऽल्लज़ीना फ़ी क़ुलूबिहिम्मरज़ुन् फ़ज़ाऽदत्हुम् रिज्सऽन् इला रिज्सिहिम् व माऽतूऽ व हुम् काफ़िरून् ॥

और जिनके मन में रोग है अतः उनको मलीनता पर मलीनता बढ़ाई और जब तक वह मरे काफ़िर (ही) रहे।

(४) अ वलाऽ यरउ्ना अन्नहुम् युफ़्तनूना फ़ी कुल्लि आऽमिम्मर्रतन् अउ् मर्रतयनि सुम्मा लाऽ यतूबूना वलाऽ हुम् यज़्ज़क्करून् ॥

यह नहीं देखते कि वह प्रत्येक वर्ष एक वा दो बार परीक्षण में आती है, फिर पश्चात्ताप नहीं देखते और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।

(५) व इज़ाऽ माऽ उन्ज़िलत् सूरतुन्नज़रा बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन्, हल् यराकुम्मिन् अह़दिन सुम्मऽन्सरफ़ूऽ; सरफ़ऽल्लाहु क़ुलूबुहुम् बि अन्नहुम् क़उमुल्लाऽ यफ़्क़हून् ॥

जब एक सूरत उतरी तो एक दूसरे की ओर देखने लगे कि कोई तुमको देखता है फिर चले गये; अल्लाह ने उनके हृदय इसलिए परिवर्तित कर दिये हैं कि वह लोग ऐसे हैं कि उनमें बुद्धि नहीं।

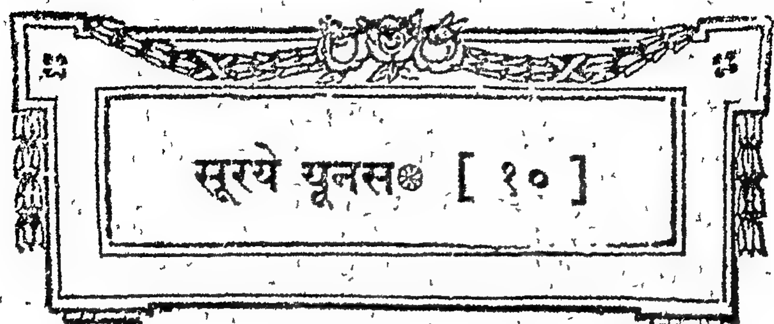
(६) लक़द् जाएअकुम् रसूलुम्मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़ीज़ुन् अलयहि माऽ अ़नित्तुम् ह़रीसुन् अलयकुम् बिऽल् मुअ्मिनीना रऊफ़ुर्रहीम् ॥

तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर आया है यदि तुमको कष्ट मिले तो उसे भार मालूम होता है, वह तुममें जो मुसलमान हैं उनकी खोज रखता है, वह अनुग्रह रखता है और दयालु है ।

(७) फ़ इन्तवल्लौ फ़क़ुल् हस्बियऽल्लाहु लाऽ इलाहा इल्लाऽ हुवा, अलयहि तवक्कल्तु व हुवा रब्बुऽल् अ़र्शिऽल् अज़ीम् ॥

फिर यदि वह जावें तो तू कह—मुझको अल्लाह पर्याप्त है उसके अतिरिक्त अन्य किसी की आराधना (योग्य) नहीं, मैंने उसी पर विश्वास किया और वही बड़े तख़्त का स्व मी है ।





[मं० ३, पारा ११, रु० १।१०]

(१) अलिफ़् लाम् रा तिल्का आयातुऽल् किताबिऽल् हकीम् ॥

अलिफ ल मू रा यह आयतें पक्की पुस्तक की हैं।

(२) अकाऽना लिन्नाऽसि अजबऽन् अन् अउ्हयूना इला रजुलिम्मिन्हुम् अन् अन्ज़िरि-न्नाऽसा व बश्शिरिऽल्लज़ीना आमनू २ अन्ना लहुम् क़दमा सिद्क़िन् इन्दा रब्बिहिम्; क़ाऽलऽल् काऽफ़िरूना इन्ना हाज़ा ल साहिरुम्मुबीन् ॥

---

*सूरये यूनस मक्के में उतरी इसमें १०९ आयतें और ११ रुकूअ हैं। इस सूरत में यूनस (Gonah) पैग़म्बर का वर्णन है, इसमें साथ ही कुरैश काफ़िरों को सम्बोधित किया गया है। यह सूरत हिजरी से पूर्व की है। यहूदियों की रिवायतों और इतिहास की जानकारी से जाना जाता है कि यहूदियों में मुहम्मद साहब के मित्र और परिचित थे।

क्या लोगों को आश्चर्य हुआ कि हमने उनमें से एक मनुष्य को आज्ञा भेजी कि लोगों को भय सुना और (यह हर्ष समाचार दे कि जो कोई विश्वास करें उनको अपने पालनकर्त्ता के यहां सत्य पद है; अविश्वासी कहने लगे—"निस्सन्देह, यह साक्षात् जादूगर है।"

(३) इन्ना रब्बकुमुऽल्लाहऽल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वऽल् अर्ज़ा फ़ी सित्तति अय्याऽमिन् .सुम्मऽस्तवा अलऽल् अर्शि युदब्बिरुऽल् अम्रा; माऽ मिन् शफ़ीइ.न इल्लाऽ मिन् ँ .बअ्दि इज़्निही; ज़ालिकुमुऽल्लाहु रब्बुकुम् फ़ाऽअ्बुदूहु अफ़लाऽ तज़क्करून ॥

(लोगो !) तुम्हारा पालनकर्त्ता वही अल्लाह है जिसने छः दिन में आकाश और पृथिवी को उत्पन्न किया फिर अर्श पर जा विराजा (कि वहीं से) प्रत्येक कार्य का प्रबन्ध कर रहा है; उसकी जो पहले आज्ञा हो उसके अतिरिक्त कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकता; यही अल्लाह तो तुम्हारा पालनकर्त्ता है फिर इसी की उपासना करो; क्या तुम विचार का प्रयोग नहीं करते ?

(४) इलय्हि मर्जिउकुम् जमीअऽन्; वअ्दऽल्लाहि .हक़्क़ऽन्; इन्नहू यब्दउऽऽल् ख़ल्क़ा .सुम्मा युई.दुहू लियज्ज़ियऽल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलुऽस्सालिहाति बिऽल् क़िस्ति, वऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लहुम् .शराऽबुम्मिन्

हमीमि व्व अज़ाऽबुन् अलीमुन् विमा काऽनूऽ यक्फुरून् ॥

तुम सबको उसीकी ओर लौट जाना है; अल्लाह की प्रतिज्ञा सच्ची है; वही उसको बना देगा फिर दुहरा देगा जिससे उन्हें फल दे कि जिन्होंने विश्वास किया था और भले कर्मों को न्याय से किया था; और जिन्होंने अस्वीकार किया—उन्हें खौलता पानी और दुःख का दण्ड पीना है क्योंकि वे अविश्वासी हुये थे।

(५) हु वऽल्लज़ी जअल—श्शम्सा ज़ियाऽ अन्वऽल क़मरा नूरऽव्व क़द्दरहू मनाऽज़िला लि तअ्लमूऽ अदद—सिसनीना वऽल् हिसाऽबा माऽ खलक़ऽल्लाहु ज़ालिका इल्लाऽ बिऽल् हक़्क़ि; युफ़स्सिलुऽल् आयाति लि क़ऊ-मिंय्यअ्लमून् ॥

वही है जिसने सूर्य को चमक और चन्द्रमा को प्रकाश बनाया और उसकी यात्रायें निश्चित कीं तो वर्षों की गणना और गणित का ज्ञान रक्खो; अल्लाह ने इन्हें सत्य के अतिरिक्त और किसी प्रकार नहीं बनाया, वह उन लोगों पर, जिन्हें बुद्धि है, भेद प्रगट करता है।

(६) इन्ना फ़िऽख्तिलाऽफ़ि—ल्लयलि व—न्नहाऽरि वमाऽ खलक़ऽल्लाहु फ़ि—स्समावाति वऽल् अर्ज़ि ल आयाति ल्लि क़उम्मिंय्यत्तक़ून् ॥

जो लोग (अल्लाह का) भय मानते हैं उनके लिए रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ अल्लाह ने आकाश और पृथिवी में उत्पन्न किया है उसमें (अल्लाह की सामर्थ्य वा सत्ता के अनेकों) चिन्ह हैं।

(७) इन्नऽल्लज़ीना लाऽ यर्जू ना लिक़ाऽअना व र.ज़ूऽ बिऽल् .हयाति-द्दुन्याऽ व.त्मअन्नूऽ बिहाऽ वऽल्लज़ीना हु म् अन आयातिना ग़ाफ़िलून् ॥

जिन लोगों को (मृत्यु के पश्चात्) हमसे मिलने का खटका ही नहीं और जो इस संसार के जीवन से प्रसन्न हैं और निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करते हैं और जो लोग हमारे चिन्हों से अपरिचित हैं।

(८) उलाऽइका मअ्वाहुमु-न्नाऽरु बिमा काऽनूऽ यक्सिबून् ॥

वही लोग हैं जिनको करतूत का परिणाम यह होगा कि उनका ठिकाना दोज़ख़ (होगा।

(९) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलु-स्सालि.हाति यह्दीहिम् रब्बुहु म् बि ईमाऽनिहिम् ; तज्री मिन्त.ह तिहिमुऽल् अन्हारु फ़ी जन्नाति-न्नई.म् ॥

जिन लोगों ने विश्वास किया और शुभ कर्म भी किये उनके विश्वास की बरकत से उनको उनका पालनकर्त्ता

(मोक्ष का) मार्ग दिखा देगा, कि (मृत्यु के पश्चात्) आराम के उपवनों में (रहेंगे कि) जिनके निकट नहरें बह रही होंगी।

(१०) दअ्वाहुम् फ़ीहा सुब्हानक-ल्लाहुम्मा व तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलाऽमुन्, व आख़िरु दअ्वाहुम् अनिऽल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिऽल् आलमीन ॥

उनमें (घुसते ही) चिल्ला उठेंगे कि हे अल्लाह ! तू पवित्र है और उनमें उनकी शुभ आशिष—सलाम (अलेक) होगी और अन्त में इस प्रकार पुकारेंगे—सब प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही को है जो संसारों का पालनकर्त्ता है।

[मं० ३, पारा ११, रु० २।१०]

(१) व लउ युअ्जिलुऽल्लाहु लिन्नाऽसि-श्शर्रऽ-स्तिअ्जाऽ लहुम् बिऽल् ख़यरि ल कुज़िया इलयहिम् अजलुहुम्; फ़ नज़रुऽल्लज़ीना लाऽ यर्जूना लिक़ाअनाऽ फ़ी तुग़्याऽनिहिम् यअ्महून ॥

और जिस प्रकार लोग लाभ के लिए शीघ्रता किया करते हैं यदि उसी प्रकार उनको कुकर्मों के दण्ड में हानि पहुंचा दिया करता तो उनकी मृत्यु (कभी की) हो चुकी होती और हम उन लोगों को—जिन्हें (मरे पीछे) हमारे समीप आने का (किञ्चिन्मात्र) सन्देह नहीं है—छोड़े रखते हैं कि (वे) अपनी उद्दण्डता में पड़े भटका करें।

(२) व इज़ाऽ मस्सऽल् इन्साऽन–ज़्ज़ुर्रु दआऽनाऽ लि जन्बिही३ अउ् क़ाऽइदन् अउ् क़ाऽइमन्, फ़लम्माऽ कशफ़्नाऽ अन्हु ज़ुर्रहू मर्रका अल्लम् यद्उ़नाऽ३ इला ज़ुर्रिम्मस्सहू, कज़ालिका ज़ुय्यिना लिल् मुस्रिफ़ीना माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

और जब मनुष्य को (किसी प्रकार का) कष्ट पहुंच जाता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा हमको पुकारे चला जाता है फिर जब हम उसके कष्ट को उससे दूर कर देते हैं तो ऐसा (निश्चिन्त होकर) चल देता है कि मानो उस कष्ट के—जो उसको पहुंच रहा था—(दूर करने के) लिए उसने हमको (कभी) पुकारा ही न था; जो लोग सीमा से बाहर पग रखते हैं उनको उनके कर्म उसी प्रकार भले करके दिखाये गये हैं।

(३) व लक़द् अह्लक्नऽल् क़ुरूना मिन् क़ब्लिकुम् लम्माऽ ज़लमूऽ व जाऽअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल् बय्यिनाति व माऽ काऽनूऽ लि युअ्मिनूऽ कज़ालिका नज्ज़िऽल् क़उमऽल् मुज्रिमीन् ॥

और तुमसे पूर्व कितनी उम्मतें (जातियां) हो चुकी हैं कि जब उन्होंने कुचाल पर कमर कसी, हमने उनको नष्ट कर दिया और उनके पैग़म्बर उनके पास प्रत्यक्ष चमत्कार (मुअ्जिज़े) लेकर आये और उनको (इस्लाम पर) विश्वास

करना सुलभ न हुआ; पापी पुरुषों को हम इसी भांति दण्ड दिया करते हैं।

(४) सुम्मा जअल्नाकुम् खलाइफ़ा फ़िऽल् अर्ज़िमिन् ँ, बअदि हिम् लि नन्ज़ुरा कयफ़ा तअमलून् ॥

फिर उन (की मृत्यु) के पश्चात् हमने तुम लोगों को उनका पृथ्वी में प्रतिनिधि बनाया जिससे देखें कि तुम लोग कैसे आचरण करते हो।

(५) व इज़ाऽ तुत्ला अलयहिम् आयातुनाऽ बय्यिनातिन् क़ाऽलऽल्लज़ीना लाऽ यर्जूना लिक़ाऽअनऽऽअ्ति बि कुर्आनिन् ग़यरि हाज़ाऽ अउबद्दिल्हु कुल् माऽ यकूनु लीऽ अन् उबद्दि लहू मिन् तिल्क़ाइ नफ़्सी; इन् अत्तबिउ इल्लाऽ माऽ यूहाऽ इलय्या, इन्नीऽ अख़ाऽफ़ु इन् असयतु रब्बी अज़ाऽबा यउमिन् अज़ीम् ॥

जब हमारी प्रगट आज्ञाएं इन लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का (तनिक भी) खटका नहीं वह (तुमसे) कहते हैं कि इसके सिवाय कोई और कुरान लाओ अथवा इसीमें हेर-फेर कर दो, (तुम उनसे) कहो कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नहीं कि अपनी ओरसे इसमें हेर-फेर करूं; मेरी ओर जो वही आती है मैं तो उसी-का अनुसरण करता हूँ यदि मैं अपने पालनकर्ता की आज्ञा

का उल्लंघन करूं तो मुझे (क़यामत के) बड़े दिन के दुःख का भय लगता है।

(६) क़ुल्लउ शा३अल्लाहु माऽ तलउतुहू अलय्‌कुम् वला३ अद्राकुम् बिही फ़ क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् उमुरऽम्मिन् क़ब्लिही; अफ़लाऽ तअ्क़िलून् ॥

(हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कह—यदि अल्लाह चाहता तो मैं यह (क़ुर्आन्) पढ़कर तुमको सुनाता ही नहीं और न अल्लाह तुमको इससे परिचित करता, इससे पूर्व मैं चिरकाल पर्यन्त तुम लोगों में रह चुका हूँ; क्या तुम नहीं जानते?

(७) फ़ मन् अज़्लमु मिम्मनिऽफ़्तरा अलऽल्लाहि कज़िबऽन् अउ कज़्ज़बा बि आयातिही; इन्नहू लाऽ युफ़्लिहुल् मुऽज्रिमून् ॥

तो इससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर असत्य आक्षेप आरोपित या उसकी आयतों को असत्य ठहरावे; इसमें तनिक संशय नहीं कि पापी सफलता न करेंगे।

(८) व यअ्बुदूना मिन्दूनिऽल्लाहि माऽ लाऽ यज़ुर्रुहुम् वलाऽ यन्फ़उहुम् व यक़ूलूना हा३उला३इ शुफ़आ३उनाऽ इन्दऽल्लाहि; क़ुल् अतुनब्बिऊनऽल्लाह बिमाऽ लाऽ यअ्लमु फ़िऽस्समावाति वलाऽ फ़िऽल् अर्ज़ि; सुब्हानहू व तआला अम्माऽ युश्रिकून् ॥

और (यह) अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं की पूजा करते हैं जो न तो उनको हानि ही पहुँचा सकती हैं और न उनको लाभ ही पहुँचा सकती हैं और कहते हैं कि हमारे यह (उपास्य देव) अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं; (हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कह—क्या तुम अल्लाह को ऐसी वस्तु का पता देते हो जिसको न (तू कहीं) आकाश में पाता है और न पृथिवी में; वह इन लोगों के समांश से उच्चतर है।

(६) व माऽ काऽन—न्नाऽसु इल्लाऽ उम्मतव्वाऽहिदतन् फ़ऽख़्तलफ़ूऽ; व लउ लाऽ कलिमतुन् सबक़त मिर्रब्बिका ल क़ुज़िया बय्नहुम् फ़ी माऽ फ़ीहि यख़्तलिफ़ून् ॥

और (आरम्भ में) लोग (धर्म के) एक ही ढंग पर थे मत भेद तो पीछे हुआ: और (हे पैग़म्बर!) यदि तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से (प्रलय की) प्रतिज्ञा पूर्व से ही न की हुई होती तो जिन बातों में यह मत भेद दिखा रहे हैं (उन बातों में कभी का) उनके मध्य निर्णय कर दिया गया होता।

(१०) व यक़ूलूना लउ लाऽ उन्ज़िला अ़लय्हि आयतुम्मिर्रब्बिही, फ़ क़ुल् इन्नमऽऽल् ग़य्बु लिल्लाहि फ़ऽन्तज़िरूऽ, इन्नी मअ़कुम्मिनऽल् मुन्तज़िरीन् ॥

और कहते हैं कि इस (पैग़म्बर मुहम्मद) को इसके पालनकर्त्ता की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिया गया?

अतः (हे पैग़म्बर ! इनसे) कह दे कि परोक्ष (भविष्य का ज्ञान) केवल अल्लाह ही को है तो तुम (भी अल्लाह की आज्ञा की) प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।

[मं० ३ पारा ११ रुकूअ ३]

(१) व इज़ा२ अज़क्नऽ-न्नाऽसा र,ह्मतम्मिन् बअ्दि ज़र्रा२ आ मस्सत्हुम् इज़ाऽ लहुम्मक्रुन् फ़ी२ आयाऽतिनाऽ, क़ुलिऽल्लाहु अस्रउ् मक्रऽन्; इन्ना रुसुलनाऽ यक्तुबूना माऽ तम्कुरून् ॥

और जब लोगों को कष्ट पहुँचने के पश्चात् हम (कष्ट दूर करके अपने) अनुग्रह का स्वाद चखा देते हैं तो फिर वे हमारी आयतों (के विरोध) में प्रपंच रचते हैं; (हे पैग़म्बर ! तू इनसे) कहदे कि अल्लाह का प्रपञ्च (तुम्हारे प्रपञ्चों से) अधिक चलता हुआ है; और हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे प्रपञ्चों को लिखते (जाते) हैं।

(२) हुवऽल्लज़ी युसय्यिरु कुम् फ़िऽल् बर्रि वऽल् बह्,रि, हत्ता२ इज़ाऽ कुन्तुम् फ़िऽल् फ़ुल्कि, व जरय्ना बिहिम् बिरी,हिन् तय्यिबतिं व्व फ़रिहू बिहाऽ जा२अत्हाऽ रीहुन् आऽसिफ़ुंव्व जा२अहुमुऽल् मव्जु मिन् कुल्लि मकाऽनिंव्व ज़न्नू अन्नहुम् उह,ीता बिहिम् दअ़वुऽऽ-

ल्लाहा मुख्लिसीना लहु-दीना, ल इन् अन् जयतनाऽ मिन् हाज़िही ल नकूनन्ना मिन–श्शाकिरीन् ॥

यही (खुदा) है जो तुम लोगों को थल और जल में लिये लिये फिरता है यहां तक कि किसी समय तुम नौकाओं में होते हो, और वह लोगों को अनुकूल वायु की सहायता से लेकर चलती है और लोग उनकी चाल से प्रसन्न होते हैं (अकस्मात) नौका को एक हवा का झोंका आ लगता है और लहरें प्रत्येक ओर से उन पर आरही हैं और वह समझते हैं कि (बुरी तरह) आ घिरे तो फिर केवल अल्लाह ही को स्वीकार कर उससे प्रार्थना करते हैं कि यदि तू हमारी इससे रक्षा करे तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ होंगे।

(३) फ़ लम्मा३ अन्जाहुम् इज़ाऽ हुम् यब्गूना फ़िऽल् अर्ज़ि बिग़ैरिऽल् हक्कि; या३ अय्युहन्नाऽसु इन्नमाऽ बग़्युकुम् अला३ अन्फुसिकुम्मताऽ अऽल् हयाति-दुन्याऽ सुम्मा इलयनाऽ मर्जिउकुम् फ़ नुनब्बिउकुम् बिमाऽ कुन्तुम् तअ्मलून ॥

फिर जब वह उनको (इस विपत्ति से) मुक्ति दे देता है तो वह थल पर पहुंचते ही व्यर्थ की उद्दण्डता करने लगते हैं; हे लोगो ! तुम्हारी उद्दण्डता (का प्रभाव) तुम्हारी ही आत्माओं पर (पड़ेगा, यह भी इस) संसार के (क्षणिक) जीवन के लाभ (हैं अतः इनका आनन्द लूट लो) अन्त में तुमको

हमारी ओर लौटकर आना है तो जो कुछ भी तुम (उस समय) करते रहे हो, तुमको (उसका शुभाशुभ) बता देंगे।

(४) इन्नमाऽ मसलुऽल् हयाति-दुन्याऽ कमाऽ इन् अन्ज़ल्नाहु मिन-स्समाऽइ फ़ऽख़्तलता बिही नबाऽतुऽल् अर्ज़ि मिम्माऽ यअ्कुलु-न्नाऽसु वऽल् अनआमु; हत्ताऽ इज़ाऽ अख़ज़तिऽल् अर्ज़ु ज़ुख़्रु फ़हाऽ वऽज़्ज़य्यनत् व ज़न्ना अह्लुहाऽ अन्नहुम् क़ादिरूना अलय्हाऽ अताहाऽ अम्रुनाऽ लय्लऽन् अउ नहाऽरऽन् फ़ जअ़ल्नाहाऽ हसीदऽन् क अल्लम् तग़्ना बिऽल् अम्सि; कज़ालिका नुफ़स्सिलुऽल् आयाति लि क़ौऽमिय्यतफ़क्करून ॥

सांसारिक जीवन का दृष्टान्त तो केवल जलवत् है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर पृथ्वी की वनस्पति— जिसको मनुष्य और पशु खाते हैं—पानी के साथ मिश्रित हो गई, यहाँ तक कि जब पृथ्वी ने अपना शृङ्गार कर लिया और शोभायमान् हुई और खेतवालों ने समझा कि (अब) वह इस पर शक्तिवान् होगये, रात के समय या दिन के समय हमारी आज्ञा उस पर उतरी, फिर हमने उसे काटकर ढेर कर दिया मानो कल यहां खेती थी ही नहीं; जो लोग सोचते समझते हैं उनके लिए हम अपनी आयतें इसी प्रकार विस्तार पूर्वक वर्णन करते हैं।

(५) वऽल्लाहु यद्ऊ२ इला दाऽरि-स्सलामि;
व यह्दी मय्यशा२उ इला सिराऽतिम्मुस्तक़ीम् ॥

और अल्लाह लोगों को शान्ति के सदन (अर्थात् बहिश्त) की ओर बुलाता है और जिसको चाहता है सीधे मार्ग की ओर शिक्षा देता है।

(६) लिऽल्लज़ीना अह्सनुऽऽल् ,हुस्ना व ज़ियाऽ दतुन् ; वलाऽ यर्हकु वुजूहहुम् क़तरुव्व लाऽ ज़िल्लतुन् ;
उला२इका अस्हाबुऽल् जन्नति, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून ॥

जिन लोगों ने (संसार में) भलाई की उनके लिए (परलोक में भी वैसी ही) भलाई है और कुछ अधिक भी और पापियों की भांति उनके मुखों पर न कालिख पुती होगी और न मलीनता; यही लोग बहिश्ती हैं, वहां सदा रहेंगे।

(७) वऽल्लज़ीना कसबुऽ-स्सयिआति जज़ा२उ सय्यिअतिन् ब्रि मिस्लिहाऽ व तर्हकुहुम् ज़िल्लतुन् ; माऽ लहुम्मिनऽल्लाहि मिन् आऽसिमिन् , क अन्नमा२ उग़शियत वुजूहु हुम् क़ितअऽम्मिनल्लयलि मुज़्लिमऽन् ;
उला२इका अस्हाबु-न्नाऽरि, हुम्फ़ीहा ख़ालिदून ॥

और जिन लोगों ने बुरे कर्म किये तो बुरे कर्मों का परिणाम वैसा ही (बुरा) और इनके मुखों पर मलीनता छा रही होगी; अल्लाह से कोई उनकी रक्षा करने वाला नहीं, मानो

अन्धेरी रात की चादर को फाड़कर उनके टुकड़े उनके मुख पर उढ़ा दिये गये हैं; यही नारकीय (दोज़खी) हैं, वहां सर्वदा रहेंगे।

(८) व यउमा नह्शुरुहुम् जमीअ़ऽन् ,सुम्मा नक़ूलु लिल्लज़ीना अश्रकूऽ मकाऽनकुम् अन्तुम् व शुरकाउकुम् , फ़ ज़य्यल्नाऽ बय्नहुम् व क़ाऽला शुरकाउहुम्माऽ कुन्तुम् इय्याऽनाऽ तअ्बुदून् ॥

और जिस दिन हम इन सबको (अपने यहां) इकट्ठे करेंगे, फिर मुशरिकों को आज्ञा देंगे कि तुम और जिनको तुमने (अल्लाह का) साझीदार बनाया, वह तनिक अपने स्थान पर ठहरें, फिर हम इनमें परस्पर फूट डाल देंगे और इनके शरीक (इनसे) कहेंगे कि तुम हमारी पूजा तो कुछ करते नहीं थे।

(९) फ़ कफ़ा बिऽल्लाहि शहीदऽन् ... बय्नानाऽ व बय्नकुम् इन्कुन्नाऽ अन् ,इबाऽदतिकुम् ल ग़ाफ़िलीन्.

अतः हमारे और तुम्हारे मध्य केवल अल्लाह ही साक्षी है, हमको तो तुम्हारी पूजा की सर्वथा सुध न थी।

(१०) हुना लिका तब्लूऽ कुल्लु नफ़्सिम्माऽ अस्लफ़त् व रुद्दूऽ इलऽल्लाहि मउलाहुमुऽल् .हक़्क़ि व ज़ल्ला अन्हुम्माऽ काऽनूऽ यफ़्तरून् ॥

वहां प्रत्येक पुरुष अपने कर्मों की—जो उसने पहिले ही से भेजे हैं—परीक्षा कर लेगा और सब लोग अल्लाह की—जो उनका वास्तविक स्वामी है—और लौटा कर लाये जावेंगे और जो वे पर का वे उड़ाते रहे हैं वह सब उनसे नष्ट हो जावेंगी।

[मंजिल ३ पा० ११ रु० ४।१०]

(१) कुल् मय्यर्ज़ुकु कुम्मिन–स्समाऽइ वऽल् अर्ज़ि अम्मय्यम्लिकु–स्सम्आ वऽल् अब्साऽरा व मय्युख्रिजुऽल् हय्यामिनऽल् मय्यिति व युख्रिजुऽल् मय्यिता मिनऽल् हय्यि; व मय्युदब्बिरुऽल् अम्रा, फ़ स यकूलूनऽल्लाहु, फ़ कुल् अफ़लाऽ तत्तकून् ॥

(हे पैग़म्बर! इनसे) पूछो कि तुमको आकाश और पृथ्वी से कौन भोजन देता है अथवा (तुम्हारे) कान और नेत्र किसके आधीन हैं और कौन है जो मृतक को जीवित से उत्पन्न करता है; और कौन (सृष्टि का) प्रबन्ध चला रहा है; तो तत्क्षण बोल उठेंगे कि अल्लाह; फिर (तुम इनसे) कहो कि तुम इस पर भी (इससे) नहीं डरते।

(२) फ़ ज़ाऽलिकुमुऽल्लाहु रब्बुकुमुऽल् हक्कु, फ़ माऽज़ाऽ बअ्दऽल् हक़्क़ि इल्लऽ–ज़्ज़लालु फ़ अन्ना तुस्रफून् ॥

फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा सत्य पालनकर्त्ता है, फिर

सत्य के विदित हुए पीछे मार्गच्युत होना नहीं तो और क्या है, फिर तुम लोग किधर को फिरे चले जा रहे हो ?

(३) कज़ालिका हक्कत् कलिमतु रब्बिका अलऽल्लज़ीना फ़ सक़ूउ अन्नहुम् लाऽ युअ्मिनून् ॥

(हे पैग़म्बर !) इसी प्रकार तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा अनाज्ञाकारी लोगों पर सत्य होकर रही कि यह किसी प्रकार विश्वास नहीं करेंगे।

(४) कुल हल् मिन् शुरकाइ कुम्मय्यब्दउऽल्ख़ल्क़ा सुम्मा युईदुहू फ़ अन्ना तुअ्फ़कून् ॥

पूछो—तुम्हारे ठहराये हुए शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करे फिर उनको (मारकर) पुनः उत्पन्न करे; कहो कि अल्लाह ही सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करता है और वही उन्हें मारकर पुनः उत्पन्न करेगा तो अब तुम किधर को उलटे जा रहे हो ?

(५) कुल् हल् मिन् शुरकाइकुम्मय्यह्दीउ इलऽल् हक्कि, कुलऽल्लाहु यह्दी लिल् हक्कि, अफ़मय्यह्दीउ इलऽल् हक्कि अहक्कु अय्युत्तबअ अम्मल्लाऽ यहिद्दीउ इल्लाउ अय्युह्दा; फ़माऽ लकुम् कयफ़ा तहकुमून् ॥

(हे पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि तुम्हारे कोई भी ऐसा है

जो सत्य (मत) का मार्ग दिखा सके; कहो—अल्लाह ही सत्य का मार्ग दिखाता है; तो क्या जो सत्य का मार्ग दिखाये वह इसका अधिक अधिकारी है कि उसकी आज्ञा का अनुसरण किया जाय अथवा जो ऐसा (विवश) है कि जब तक दूसरा उसको मार्ग न दिखावे वह स्वयं भी मार्ग नहीं पा सकता, फिर तुम लोगों को क्या हो गया है, कैसे निर्णय करते हो ?

(६) वमाऽ यत्तबिउ अक्सरुहुम् इल्लाऽ ज़न्नऽन ; इन्न-ज़्ज़न्ना लाऽ युग़्नी मिनऽल् हक़्क़ि शय्अऽन ; इन्नऽल्लाहा अलीमुन ँ बिमाऽ यफ़्अलून ॥

और इन लोगों में से प्रायः कल्पना पर चलते हैं, अतः कल्पना के तुक्के सत्य के सम्मुख कुछ उपयोगी नहीं होते; जैसी जैसी मूर्खता यह लोग कर रहे हैं अल्लाह उनसे पूर्णतः परिचित है ।

(७) वमाऽ काऽना हाज़ऽल् क़ुर्आनु अय्युफ़्तरा मिन्दूनिऽल्लाहि वला किन तस्दीक़ऽल्लज़ी बय्ना यदय्हि व तफ़्सीलऽल् किताबि लाऽ रय्बा फ़ीहि मिर्रब्बिऽल् आलमीन ॥

और यह क़ुरान इस प्रकार की पुस्तक नहीं कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई इसको अपनी ओर से बना लावे किन्तु जो पुस्तकें इसके उतरने से पूर्व की हैं (यह) संसार के पा-

लनकर्त्ता की ओरसे उनकी पुष्टि है और पुस्तकों (की आज्ञाओं) का विस्तार पूर्वक वर्णन है।

(८) अम् यकूलूनऽफ़्तराहु: कुल् फ़अ्तूऽ बिसूरति म्मिस्लही वऽद्ऊऽ मनिऽस्तत़अ्तुम्मन्दूनिऽल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ॥

क्या यह लोग (कुरान के विषय में) यह कहते हैं कि इसको पैगम्बर ने स्वयं बना लिया है तो (हे पैगम्बर! इन लोगों से) कहो कि यदि तुम (अपने दावे में) सच्चे हो और जैसा तुम कहते हो कि मैं इसके बना लेने की शक्ति रखता हूँ तो तुम भी (भाषा भिज्ञ होते हुए) ऐसी एक सूरत ही बनालाओ और यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिसको चाहो (अपनी सहायतार्थ) बुलालो।

(९) बल् कज़्ज़बूऽ बिमाऽ लम् युहीतूऽ बिइल्मिही वलम्माऽ यअ्तिहिम् तअ्वीलुहू, कज़ालिका कज़्ज़बऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम् फ़ऽन्ज़ुर् कय्फ़ा काऽना आक़िबतु-ज़्ज़ालिमीन ॥

परन्तु उन्होंने उस वस्तु को असत्य ठहराया, जिसके समझने की उनको सामर्थ्य न थी, अब तक उन पर उनका अर्थ प्रगट न हुआ, ऐसे ही पूर्वजों ने झुठलाया सो देखो दुष्टों का क्या अन्त हुआ।

(१०) व मिन्हुम्मय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम्मल्लाऽ युअ्मिनु बिही; व रब्बुका अअ्लमु बिऽल् मुफ़्सदीन ॥

और उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो क़ुरान पर (भविष्य में) विश्वास कर लेंगे और कुछ ऐसे हैं जो उस पर विश्वास करने वाले नहीं; और (हे पैग़म्बर !) तुम्हारा पालनकर्त्ता उपद्रवियों को भली भांति जानता है।

[मंजिल ३ पारा ११, रु० ५:१२]

(१) व इन् कज़्ज़बूका फ़ कुल्ली अमली व लकुम् अमलुकुम् , अन्तुम् बरीउऊना मिम्मा अअ्मलु व अनाऽ बरीउम्मिम्माऽ तअ्मलून ॥

और (हे पैग़म्बर !) यदि (इतने समझाने पर भी यह लोग) झुठलाते ही चले जाय तो कहदो कि मेरा कृत्य मुझको और तुम्हारा कृत्य तुमको, तुम मेरे कामों के जिम्मेवार नहीं और मैं तुम्हारे काम का जिम्मेवार नहीं।

(२) व मिन्हुम्मय्यस्तमिऊना इलय्का; अफ़अन्ता तुस्मिउ-स्सुम्मा व लउ् काऽनूऽ लाऽ यअ्क़िलून ॥

और (हे पैग़म्बर !) इनमें कुछ लोग हैं कि तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो क्या तुम इन बहरों को सुना सकोगे जिनमें यद्यपि बुद्धि भी नहीं है।

(३) व मिन्हुम्मय्यन्जुरु इलय्का अफ़ अन्ता तह्-दिऽल् उम्या व लउ् काऽनूऽ ला युब्सिरून् ॥

और इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी ओर तकते हैं तो क्या तुम अन्धों को मार्ग दिखा दोगे चाहे इन्हें कुछ न दिखाई देता हो ?

(४) इन्नऽल्लाहा लाऽ यज़्लिमु-न्नाऽसा शय्अऽव्वला किन्न-न्नाऽसा अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून ॥

अल्लाह तो मनुष्यों पर रत्ती भर भी अन्याय नहीं करता परन्तु मनुष्य स्वयं अपने (आत्मा के) ऊपर अत्याचार करते हैं।

(५) व यउ्मा यह्शुरुहुम् क अल्लम् यल्बसूऽ इल्लाऽ साऽ अतऽम्मिन-न्नहारि यत आऽरफ़ूना बय्न-हुम् ; क़द् ख़सिरऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बिलिक़ाऽइऽल्लाहि व् माऽ काऽनूऽ मुह्तदीन् ॥

और जिस दिन (अल्लाह अपने पास) उन्हें एकत्रित करेगा जैसे कि वह न रहे थे परन्तु घड़ी भर दिन, वे परस्पर पहचानेंगे; निस्सन्देह जिन्होंने अल्लाह का मिलना असत्य ठहराया और न आये (सच्चे) मार्ग पर।

(६) व इम्माऽ निरुयन्नका बअ्ज़ऽल्लज़ी नइ्दु-

हुम् अउ नतवफ़्फ़यन्नका फ़ इलयूनाऽ मजिउ हुम् सुम्मऽल्लाहु शहीदुन् अला माऽ यफ़्अलून् ॥

और (हे पैगम्बर !) यदि हम तुमको उन प्रतिज्ञाओं में से, जो हम उनसे करते हैं, कोई प्रतिज्ञा दिखावें अथवा हम तेरा प्राण ले लें, अन्त में उनको हमारे पास फिर आना है, फिर अल्लाह उसका साक्षी है जो वह करते हैं।

(७) व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन्; फ़ इज़ाऽ जाइआ रसूलुहुम् कुज़िया बय नहुम् बिऽल् क़िस्ति व हुम् लाऽ युज़्लमून् ॥

और प्रत्येक जाति का एक पैगम्बर (अपनी जाति के साथ हमारे यहां) उपस्थित होगा तो जाति में और पैगम्बर में न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जायगा; और लोगों पर अत्याचार न होगा।

(८) व यकूलूना मता हाज़ऽल् वअ्दु इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥

और (हे मुसलमानो ! यह लोग तुम्हें) पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो (दण्ड की) प्रतिज्ञा कब पूर्ण होगी ?

(९) कुल्लाऽ अम्लिकु लि न,फ्सी ज़र्रऽव्व लाऽ नफ़्अऽन् इल्लाऽ माऽ शाइअऽल्लाहु; लि कुल्लि उम्मतिन्

अजलुन्; इज़ाऽ जाआ अजलुहुम् फ़ लाऽ यस्तअ़्खिरूना साऽअ़तऽव्वलाऽ यस्तक़्दिमून ॥

(हे पैग़म्बर! तुम इनसे) कहो कि मेरा अपना हानि लाभ भी मेरे अपने वश का नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहता है (वही होता है उसके ज्ञान में) प्रत्येक जाति का एक दिवस नियत है जब उनका समय आ पहुंचता है तो एक घड़ी भी न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

(१०) क़ुल् अरअय्तुम् इन् आताकुम् अ़ज़ाऽबुहू बयाऽतऽन् अउ् नहाऽरऽम्माऽज़ाऽ यस्तअ़्जिलु मिन्हुऽल् मुजि्रमीन ॥

(हे पैग़म्बर! इन लोगों से) पूछो कि भला देखो तो सही, यदि अल्लाह का प्रकोप तुम पर रातों रात प्रगट हो वा दिन दहाड़े, पापी लोग उसके लिये क्योंकर शीघ्रता कररहे हैं!

(११) असुम्मा इज़ाऽ माऽ वक़अ़ा आमन्तुम् बिही आल्ऽआना व क़द् कुन्तुम् बिही यस्तअ़्जिलून ॥

तो क्या फिर जब आ प्रगट होगा तबही उसका विश्वास करोगे या अब? और तुम तो इसके लिए जल्दी मचाया करते थे।

(१२) सुम्मा क़ीला लिल्लज़ीना ज़लमूऽ ज़ूक़ूऽ अ़ज़ाऽबऽल् खुल्दि; हल् तुज्ज़उ्ना इल्लाऽ बिमाऽ कुन्तुम् तक्सिबून ॥

फिर (अन्तिम दिन) अनाज्ञाकारी लोगों को आज्ञा दी जायगी कि अब चिरकालीन प्रकोप चखो, यह जो तुमको दण्ड दिया जारहा है तुम्हारे अपने ही कृत्यों का परिणाम है।

(१३) व यस्तन् ँबिऊनका अ,हक्कु हुवा; कुल् ई व रब्बीऽ इन्नहू ल,हक,कुन्व माऽअन्तुम् बि मुअ्जिज़ीन ॥

और (हे पैगम्बर ! यह लोग) तुमसे पूछते हैं कि जो कुछ तुम इनसे कहते हो क्या वास्तव में होकर रहेगा, (तुम इनसे) कहो—हां, मुझे अपने पालनकर्त्ता की शपथ; हां, वह निश्चयपूर्वक अवश्य होकर रहेगा और तुम अल्लाह को पराजित न कर सकोगे।

मं० ३ पारा ११, रु० ६।७

(१) व लउ अन्ना लि कुल्लि नफ़्सन् ज़लमत् माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि लऽफ़्तदत् बिही; व असर्रुऽन्नदाऽमता लम्माऽरा अवुऽऽल् अज़ाऽबा; व कुज़िया बय्नहुम् बिऽल् क़िस्ति व हुम् लाऽ युज़्लमून ॥

और यदि प्रत्येक प्राणी के पास जिसने पाप किया जितना पृथ्वी में है और वह उसे अपनी मुक्ति के निमित्त डाले; और अपनी लज्जा को छिपाये जब कि दण्ड को देखे; और उनमें न्याय से निर्णय कर दिया जायगा कि उन पर अत्याचार न हो।

(२) अलाऽ इन्ना लिल्लाहि माऽ फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; अलाऽ इन्ना वअ्दऽल्लाहि हक़्कुन्वला किन्ना अक्सरहुम् लाऽ यअ्लमून् ॥

स्मरण रक्खो कि जो कुछ पृथ्वी और आकाश में है सब अल्लाह ही का है; और स्मरण रक्खो कि अल्लाह की (क़यामत की) प्रतिज्ञा सत्य पर (स्थिर) है परन्तु प्रायः मनुष्य विश्वास नहीं करते ।

(३) हुवा युह़्यी व युमीतु व इलय् हि तुर्जऊन ॥

वही जिलाता और मारता है और उसीकी ओर तुम (सब) को लौट कर जाना है ।

(४) याऽ अय्युहऽन्नाऽसु क़द् जाऽअत्कुम्मऊ इज़तुम्मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाऽ उल्लिमाऽ फ़ि-स्सुदूरि व हुदऽव्व रह़्मतुल्लिल् मुअ्मिनीन् ॥

हे लोगो ! तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओरसे तुम्हारे पास शिक्षा आचुकी और हार्दिक रोगों (शिर्क आदि) की औषधि और विश्वासियों के लिये शिक्षा और अनुग्रह भी आचुका) ।

(५) कुल् बिफ़ज़्लिऽल्लाहि व बिरह़्मतिही फ़ बि ज़ालिका फ़ल् यफ़्रहू ऽ; हुवा ख़ैरुम्मिम्माऽ यज्मऊन ॥

(हे पैग़म्बर !) कहो कि लोगों को चाहिए कि अल्लाह

का अनुग्रह और उसकी कृपा (अर्थात् .कुरान) को पाकर प्रसन्न हों कि जिनके एकत्र करने के पीछे पड़े हैं यह उनसे कहीं श्रेष्ठ है।

(६) कुल् अरअयतुम्मा२ अन्ज़लऽल्लाहु लकुम्मिरिंज़्क़िन् फ़ जअल्तुम्मिन्हु .हराऽमऽव .हलाऽलऽन्; कुल् आऽल्लाहु अज़िना लकुम् अम् अलऽल्लाहि तफ़्तरून् ॥

(हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो अल्लाह ने जो तुम्हारे लिए भोजन उतारा, और फिर तुमने उसमें से कोई वस्तु हराम (निषिद्ध) और कोई हलाल (भक्ष्य) ठहराली; (हे पैग़म्बर!) कहो कि तुमको अल्लाह ने आज्ञा दी क्या अल्लाह पर असत्य आक्षेप आरोपित करते हो?

(७) वमाऽ ज़न्नुऽल्लज़ीना यफ़्तरूना अलऽल्लाहिऽल् कज़िबा यउमऽल् क़ियामति; इन्नऽल्लाहा लज़ू फ़ज़्लिन् अल-न्नाऽसि वला किन्ना अक्सरहुम् लाऽ यश्कुरून् ॥

और क्या वह लोग, जो अल्लाह पर लाञ्छन लगाते हैं, प्रलय के दिन का विचार करते हैं; निस्सन्देह अल्लाह लोगों पर अनुग्रह करता है परन्तु बहुधा कृतज्ञता प्रगट नहीं करते।

(१) वमाऽ तकूनु फ़ी शअ्निन्व माऽ तत्लूऽ मिन्हु मिन् कुर्आनि व्व लाऽ तअ्मलूना मिन् अ़मलिन् इल्लाऽ कुन्नाऽ अ़लय्कुम् शुहूदऽन इज़् तुफ़ीज़ूना फ़ीहि; वमाऽ यअ़्ज़ुबु अ़र्रब्बिका मिम्मिस्क़ाऽलि ज़र्रतिन् फ़िऽल् अर्ज़ि व लाऽ फ़िऽस्समाऽइ वलाऽ असग़रा मिन् ज़ालिका वलाऽ अक्बरा इल्लाऽ फ़ी किताबिम्मुबीन् ॥

और तू किसी दशा में क्यों न हो और कुरान में से कुछ (ही) काम क्यों न करते हो, (ऐसा) नहीं (होता) कि जब तुम कार्य्य को आरम्भ करते हो,हम तुम्हारे पर उपस्थित न हों; और तेरे पालनकर्त्ता से एक पृथ्वी और आकाश में ज़र्रे भर भी गुप्त नहीं रहता। और न उससे छोटी वस्तु और न बड़ी वस्तु परन्तु वह प्रगट पुस्तक में है।

(२) अलाऽ इन्ना अउलियाऽअल्लाहि लाऽ खौफ़ुन् अ़लय्हिम् व लाऽ हुम् यह़्ज़नून् ॥

सुन रक्खो, जो लोग अल्लाह की ओर हैं उन्हें न भय है और न शोक।

(३) अल्लज़ीना आमनूऽ व काऽनूऽ यत्तकून ॥

जो विश्वासी हैं और संयम करते हैं,

(४) लहुमुऽल् बुश्रा फ़िऽल् हयाति-द्दुन्याऽ व

फ़िऽल् आख़िरति; लाऽ तब्दीला लिकलिमातिऽल्लाहि; ज़ालिका हुवऽल् फ़ौज़ुऽल् अज़ीम् ॥

उनको संसार के जीवन का और अन्तिम (परलोक के) जीवन का हर्ष-समाचार (दिया जाता) है; अल्लाह की आज्ञाओं का परिवर्तन नहीं होता; यही महान् मनोकामना (है जो) प्राप्त होती है।

(५) वलाऽ यहज़ुन्का क़ौलुहुम्, इन्नऽल् इज़्ज़ता लिल्लाहि जमीअऽन; हुव-स्समीउऽल् अलीम् ॥

और न उनकी बात से शोकातुर हो—वस्तुतः सब शक्ति अल्लाह ही में है; वह (सब) सुनता और जानता है।

(६) अलाऽ इन्ना लिल्लाहि मिन् फ़ि-स्समावाति व मन् फ़िऽल् अर्ज़ि; वमाऽ यत्तबिउऽल्लज़ीना यद्ऊना मिन्दूनिऽल्लाहि शुरकाऽआ; इय्यत्तबिऊना इल्लऽ-ज़्ज़न्ना व इन् हुम् इल्लाऽ यख़्रुसून ॥

सुनते हो, जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है, (सब) अल्लाह का है; और यह (अल्लाह के) समांश पुकारने वाले किसके अनुयायी हैं, (जब कि) अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं; परन्तु (यह तो) अटकल के अनुयायी हैं और अटकलें दौड़ाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं (करते)।

(७) हुवऽल्लज़ी जअला लकुमु-ल्लय्ला लि

तस्कुनूऽ फ़ीहि व-न्नहाऽरा मुब्सिरऽन्; इन्ना फ़ी ज़ालिका ल आयातिल्लि क़ौमिय्यस्मऊन् ॥

वही है जिसने तुम्हारे निमित्त रात को रचा (जिससे) कि तुम उसमें विश्राम करो और दिखलाने वाला दिन दिया; इसमें उन लोगों के लिए—जो सुनते हैं—चिह्न हैं।

(८) क़ाऽलुऽऽत्तख़ज़ऽल्लाहु वलदऽन् सुब्हानहू; हुवऽल् ग़निय्यु लहू माऽ फ़ि-स्समावाति वमाऽ फ़िऽल् अर्ज़ि, इन् इन्दकुम्मिन् सुल्तानिन् बि हाज़ा; अतक़ूलूना अलऽल्लाहि माऽ लाऽ तअ्लमून ॥

यह कहते हैं अल्लाह ने कोई पुत्र (उत्पन्न) किया, वह पवित्र है; वही धनी है और जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है (सब कुछ) उसीका है, उसका तुम्हारे पास कुछ प्रमाण नहीं; क्यों तुम अल्लाह के सम्बन्ध में वह बात कहते हो जो जानते नहीं।

(९) कुल् इन्नऽल्लज़ीना यफ़्तरूना अलऽल्लाहिऽल् क़ज़िबा लाऽ युफ़्लिहून ॥

[हे पैग़म्बर ! इनसे] कह कि जो लोग अल्लाह पर अ-सत्य [आक्षेप] आरोपित करते हैं उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होती।

(१०) मताऽउन् फ़ि-दुन्याऽ सुम्मा इलय्नाऽ

मर्जिउहुम् सुम्मा नुज़ीकुहुमुऽल् अज़ाऽब-श्शदीदा बिमाऽ काऽनूऽ यक्फुरून् ॥

[यह लोग चाहें] संसार में लाभ उठालें फिर उनको हमारी ओर लौट आना है फिर हम उनको उस अधर्म के बदले, जो वह करते हैं, भीषण प्रकोप का फल चखायेंगे।

[मं० ३, पारा ११, रु० ८।१२]

(१) वऽत्लु अलैहिम् नबअा नूहिन् इज़्क़ाऽला लि क़ौमिही या क़ौमि इन्काऽना कबुरा अलैकुम्मक़ाऽमी व तज़्कीरी बि आयातिऽल्लाहि फ़ अलऽल्लाहि तवक्कल्तु फ़ अज्मिऊ अम्रकुम् व शुरकाअकुम् सुम्मा लाऽ यकुन अम्रुकुम् अलैकुम् गुम्मतन् सुम्मऽक़्ज़ू इलय्या वलाऽ तुन्ज़िरून ॥

और उनको नूह का समाचार सुना कि जब उसने अपनी जाति वालों से कहा कि हे जाति ! यदि मेरा रहना और अल्लाह की आयतों के विषय में मेरा समझाना तुम्हें भार विदित हुआ है तो मैंने अल्लाह पर विश्वास किया अब तुम सब एकत्र होकर अपना कार्य्य नियत करो और अपने साथियों को एकत्र करो फिर तुम्हें अपने काम में सन्देह न रहे फिर मुझ पर कर चलो और मुझे अवसर न दो।

(२) फ़ इन्तवल्लयतुम् फ़ माऽसअल्तकुम्मिन् अजिन्

इन् अज्रिया इल्लाऽ अलऽल्लाहि व उमिर्तु अन् अकूना मिनऽल् मुस्लिमीन् ॥

फिर यदि हट जाओगे तो मैं तुमसे [कोई] मूल्य नहीं चाहता; मेरा मूल्य अल्लाह पर है और मुझको आज्ञा हुई है कि आज्ञाकारी [होकर] रहूँ ।

(३) फ़ कज़्ज़बूहु फ़ नज्जयनाहु वमम्मअहू फ़िऽल् फ़ुल्कि व जअ़ल्नाहुम् ख़लाइफ़ा व अग़्रक़्नऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ फ़ऽन्ज़ुर् कय् फ़ा काऽना आऽक़िबतुऽल् मुन्ज़रीन्

फिर उसको झुठलाया फिर हमने उसको और जो उसके साथ नौका में थे [उनको] रक्षा की और उन्हें थल पर ठहराया और जो हमारी आयतों को असत्य ठहराते थे उन्हें डुबा दिया अतः जिनको भय दिलाया था उनका अन्त कैसा हुआ ?

(४) सुम्मा बअ़स्नाऽ मिन् बअ़्दिही रुसुलऽन् इला क़ौमिहिम् फ़ जाऊहुम् बिऽल् बय्यिनाति फ़माऽ काऽनूऽ लि युअ्मिनूऽ बिमाऽ कज़्ज़बूऽ बिही मिन् क़ब्लु; कज़ालिका नत्बऊ अ़ला क़ुलूबिऽल् मुअ़्तदीन् ॥

फिर हमने उसके पश्चात् अपनी जाति में कितने पैग़म्बर प्रेषित किये फिर उनके पास प्रत्यक्ष चिह्न लाये अतः जो बात पूर्व से असत्य ठहरा चुके उस पर कदापि विश्वास करने वाले

न हुए; हम अत्याचारियों के मनों पर इसी प्रकार मुद्रा करते हैं।

(५) सुम्मा बअ़स्नाऽ मिन् बअ़दिहिम्मूसा व हारूना इला फ़िर्औ़ना व मलाऽइही बि आयातिनाऽ फ़ऽस्तक्बरूऽ व काऽनूऽ क़ौ़म ऽम्मुज्रिमीन् ॥

फिर हमने उनके पीछे मूसा और हारून को फ़िर्औ़न और उसके मुखियाओं के पास चिह्न देकर भेजा, फिर [वे] गर्व करने लगे और वह लोग पापी थे।

(६) फ़ लम्माऽ जाऽअहुमुऽल् हक़्क़ु मिन् इन्दि-नाऽ क़ाऽलूऽ इन्ना हाज़ाऽ लि सह़रुम्मुबीन् ॥

फिर जब उनको हमारे पास से सत्य वार्ता आई, वह कहने लगे—यह तो साक्षात् जादू है।

(७) क़ाऽला मूसाऽ अतक़ूलूना लिल् हक़्क़ि लम्माऽ जाऽअकुम्, असिह़रुन् हाज़ा, वलाऽ युफ़्लिहुऽ-स्साऽहिरून् ॥

मूसा ने कहा—"जब तुम्हारे पास सत्य बात पहुंचे तो [उसे] तुम ऐसा कहते हो; यह कोई जादू है और जादू करने वाले विजय नहीं पाते।"

(८) क़ाऽलूऽ अजिअ्तनाऽ लि तल्फ़ितनाऽ अ़म्मा-वजद्नाऽ अ़लय्हि आबाऽअना व तकूनाऽ लकुमऽल्

किब्रियाउ फ़िल् अर्ज़ि; व मा नह्नु लकुमा बि मुअ्मिनीन ॥

वह कहने लगे—क्या तुम [इस वास्ते] आये हो कि हमको उस मार्ग से—जिसपर हमने अपने पिता-प्रपितामहों को पाया—भटकादे और इस देश में तुम दोनों मुखिया बनो, और हम तुम पर विश्वास करने वाले नहीं।

(९) व क़ालः फ़िर्औनुअ्तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अलीम् ॥

और फ़िर्औन ने कहा—जो जादूगर पक्का हो, [उसे] मेरे पास लाओ।"

(१०) फ़लम्मा जाअस्-सहरतु क़ाल लहुम्-मूसा अल्क़ू मा अन्तुम्-मुल्क़ून ॥

फिर जब जादूगर आये तो उन्हें मूसा ने कहा—"डालो जो तुम डालते हो।"

(११) फ़लम्मा अल्क़ौ क़ाल मूसा मा जिअ्तुम् बिहि-स्सिहरु, इन्नल्लाह सयुब्तिलुहु, इन्नल्लाह ला युस्लिहु अमलल्मुफ़्सिदीन ॥

फिर जब उन्होंने डाला, मूसा बोला—जो तुम लाते हो सो जादू है; अब अल्लाह उसको बिगाड़ता है; अल्लाह दुष्टों के कार्य नहीं सुधारता।

(९२) व युहिक्कु ऽल्लाहु ऽल्हक्का बिकलिमातिही लउ करिहि ऽल् व मुजिमून ॥

और अल्लाह सत्य को अपनी आज्ञा से सत्य [सिद्ध] करता है चाहे अपराधी उसको बुरा ही मानें।

[मं० ३, पारा ११, रु ९।१०]

(१) फ़मा३ आमना लि मूसा३ इल्ला ऽ जुरिय्यतुम्मिन क़उमिही अला खउफ़िम्मिन फ़िर्अउना व मला३इहिम् अय्यफ़्तिनहुम; व इन्ना फ़िर्अउना लआऽलिन फ़िऽल् अर्जि, व इन्नहू ल मिनऽल् मुस्रिफ़ीन ॥

फिर मूसा पर उसकी जाति के कुछ मनुष्यों के अतिरिक्त अन्य किसी ने विश्वास न किया [सो भी] फ़िर्औन और उनके मुखियाओं से डरते हुए कि वह उन्हें विचलित न करदे; और फ़िर्औन देश में बलशाली होरहा है, और उसने हाथ छोड़ रक्खा [अर्थात् अत्याचार जारी कर रक्खा] है।

(२) व क़ाऽला मूसा या क़उमि इन्कुन्तुम् आमन्तुम् बिऽल्लाहि फ़ अलयहि तवक्कलू३ इन्कुन्तुम्मुस्लिमीन् ॥

और मूसा ने कहा—"हे जातिवालो ! यदि तुमने अल्लाह पर विश्वास किया है तो यदि आज्ञाकारी हो तो उसी पर [दृढ़] विश्वास करो।"

(३) फ़ क़ाऽलूऽ अलऽल्लाहि तवक्कल्नाऽ, रब्बनाऽ लाऽ तज्अल्नाऽ फ़ित्नतल्लिल् क़उमि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

तब कहने लगे—'हमने अल्लाह पर विश्वास किया, हे पालनकर्त्ता! इस अत्याचारी जाति की शक्ति की परीक्षा हमारे ऊपर न कर।"

(४) व नज्जिनाऽ बि रह्मतिका मिनऽल् क़उमिऽल् काफ़िरीन् ॥

और हमें अपनी दया करके इस काफ़िर क़ौम से मुक्त कर।

(५) व अउ्हय्नाऽ इला मूसा व अख़ीहि अन् तबव्वा आलि क़उमि कुमाऽ बि मिस्रा बुयूतऽव्वऽज् अलूऽ बुयूतकुम् क़िब्लतव्व अक़ीमु-स्सलाता; व बश्शिरिऽल् मुअ्मिनीन् ॥

और हमने मूसा और उसके भाई [हारून] को आज्ञा भेजी कि अपनी जाति के लिए मिस्र देश में निवास नियत करो और अपने गृह क़िब्ले की ओर निर्माण करो और नमाज़ स्थिर करो; और मुसल्मानों [अर्थात् विश्वासियों] को हर्ष सम्वाद सुनाओ।

(६) व क़ाऽला मूसा रब्बनाऽ इन्नका आतय्ता फ़िर्अउ्ना व मलअहू ज़ीनतव्व अम्वाऽलऽन् फ़िऽल्

हयाति-द्दुन्याऽ रब्बनाऽ लि युज़िल्लूऽ अन सबीलिका, रब्बनऽऽत्मिस् अला३ अम्वाऽलिहिम् वऽश्दुद् अला कुलूबिहिम् फ़लाऽ युअ्मिनूऽ हत्ता यरवुऽऽल् अज़ाऽबऽल् अलीम् ॥

और मूसा ने कहा—"हे हमारे पालनकर्त्ता ! तूने फ़िऔन और उसके मुखियाओं को सांसारिक जीवन में ऐश्वर्य और धन दिया है, हे पालनकर्त्ता ! उनके धन नष्ट करदे और उनके हृदयों को कठोर करदे कि [उस समय तक] विश्वास न करें जब तक कि दुःख का दण्ड [न] देखें।

(७) क़ाऽला क़द् उजीबत्‌अ्वतुकुमा फ़ऽस्तक़ीमाऽ वलाऽ तत्तबिआ३न्नि सबीलऽल्लज़ीना लाऽ यअ्लमून ॥

कहा—तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार हो चुकी, अतः तुम दोनों दृढ़ रहो और उनके मार्ग पर मत चलो जो अज्ञानी हैं।

(८) व जाऽ वज़्नाऽ बिनबी३ इस्राईलऽल् बह्‌रा फ़ अत्बअ़हुम् फ़िऔनु व जुनूदुहू बग़्यऽव्व अद्‌वऽन् ; हत्ता३ इज़ा३ अद्रकहुऽल् ग़रक़ु क़ाऽला आमन्तु अन्नहू ला३ इलाहा इल्लऽल्लज़ी३ आमनत् बिही बनू३ इस्राईला व अनाऽ मिनऽल् मुस्लिमीन ॥

और इस्राईल के वंशजों को हमने समुद्र से पार किया उद्दण्डता और अत्याचारिता के साथ फ़िऔन और उसके

सैन्य दल ने उसका [उसके भय तक] पीछा किया यहाँ तक कि वह (सैन्य दल फ़िर्औन सहित] डूब गया। तब कहा— उसके अतिरिक्त कोई आराधनीय नहीं कि जिस पर इस्राईल के वंशजों ने विश्वास किया और मैं आज्ञाकारियों में हूं।

(९) आल्ल् आना व क़द् असयता क़ब्लु व कुन्ता मिनऽल् मुफ़्सिदीन् ॥

अब वह कहने लगा—"और तू पहले अनाज्ञाकारी रहा और उपद्रवियों में (सम्मिलित) रहा।"

(१०) फ़ऽल् यव्‌मा नुनज्जीका बि बदनिका लि तकूना लि मन् ख़ल्फ़का आयतन् ; व इन्ना कसीरम्मिन-न्नाऽसि अन् आयातिनाऽ ल ग़ाफ़िलून् ॥

अतः आज तुझको तेरे शरीर से बचावेंगे जिससे तू अपने पीछे आने वालों के लिए चिह्न [एक प्रकार का प्रमाण] हो; और निस्सन्देह, अनेक पुरुष हमारी आयतों से अचेत हैं।

[म० ३ पारा ११, रु० १०।११]

(१) व लक़द् बव्वअ्नाऽ बनीऽ इस्राईला मुब-

---

*कहावत है कि इस्राईल सन्तान को सन्देह हुआ कि फ़िर्औन भी डूबा कि नहीं। इस पर जिब्राईल ने नगी लोथ को पानी के ऊपर तैरा दिया। कहते हैं कि केवल फ़िर्औन की ही लोथ तैरती देख पड़ी और सब नीचे बैठ गईं और कोई कहता है कि लोथ को निकालकर एक टीले पर डाल दिया; जिससे इस्राईल सन्तान देख के धन्यवाद करे और शिक्षित हो।

व्वआ सिद्किंव्व रज़क्नाहुम्मिन- त्तय्यिबाति,. फ़मऽऽख़्त-
लफ़ूऽ हत्ता जा२ अहुमुऽल् इल्मु; इन्ना रव्वका यक़्ज़ी
वय्नहुम् यव मऽल् क़ियामति फ़ी माऽ काऽनूऽ फ़ीहि
यख़्तलिफ़ून् ॥

और हमने इस्राईल-वंशजों को सत्यता के साथ स्थान दिया और शुद्ध वस्तुएं भोजनार्थ प्रदान कीं, अतः उनमें [उस समय तक] फूट नहीं फैली जब तक उनको ज्ञान नहीं आया; अब जिस बात में उनका मतभेद था, उसमें तेरा पालनकर्त्ता प्रलय के दिन उनका निर्णय करेगा।

(२)फ़ इन् कुन्ता फ़ी शक्किम्मिम्मा२ अन्ज़ल्ना२ इलय्का
फ़स्अलिऽल्लज़ीना तक़्ऊनऽल् किताबा मिन् क़ब्लिका,
लक़द् जाअकऽल् हक़्क़ु मिर्रव्विका फ़लाऽ तकूनन्ना
मिनऽल् मुम्तरीन् ॥

अतः यदि तू उस वस्तु से, जो हमने तेरी ओर उतारी, सन्देह में है तो उनसे पूछले जो तुझसे पूर्व पुस्तक पढ़ रहे हैं, निस्सन्देह, तेरे पालनकर्त्ता की ओर से तुझको सत्य बात आई है, अतः तू सन्देह करने वालों में मत हो।

(३) वलाऽ तकूनन्ना मिनऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ वि
आयातिऽल्लाहि फ़ तकूना मिनऽल् ख़ासिरीन् ॥

और उनमें [सम्मिलित] मत हो जिन्होंने अल्लाह की

आयतों को असत्य ठहराया फिर तू भी घाटा उठाने वाला न होवे ।

(४) इन्नऽल्लज़ीना हक़्क़त् अलैहिम् कलिमतु रब्बिका लाऽ युअ्मिनून् ॥

जिन पर तेरे पालनकर्त्ता की आज्ञा सत्य (सिद्ध हुई) है वह विश्वास करेंगे ।

(५) व लउ जाऽअत्हुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता यरवुल् अज़ाऽबऽल् अलीम् ॥

यद्यपि उन पर समस्त चिह्न पहुंच जावें (पर मानेंगे नहीं) जब तक कि दुःख का दण्ड न देख लेंगे ।

(६) फ़ लउ लाऽ काऽनत् क़र्यतुन् आमनत् फ़ नफ़अहाऽ ईमाऽनुहाऽ इल्लाऽ क़उमा यूनुसा, लम्माऽ आमनूऽ कशफ़नाऽ अन्हुम् अज़ाऽबऽल् खिज़्यि फ़िऽल् हयाति-द्दुन्याऽ व मत्तअ्नाहुम् इलाहीनि ॥

अतः कोई नगरी क्यों न हुई जो विश्वास करती फिर उनको विश्वास लाना उनके काम आता, परन्तु यूनस की जाति ने जब विश्वास किया तो हमने संसार के जीवन में उन पर से दुःख का दण्ड ढीला कर दिया और एक (नियत) समय तक उनका काम चलाया ।

(७) व लउ शाऽअ रब्बुका लआमना मन् फ़िऽल्

अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअऽन ; अफ़अन्ता तुक्रिहु-न्नाऽसा हत्ता यकूनूऽ मुअ्मिनीन् ॥

और यदि तेरा पालनकर्त्ता चाहता तो जितने मनुष्य पृथ्वी पर हैं—सबके सब विश्वास करते; अब क्या तू लोगों पर बलात्कार करेगा जिससे वे विश्वास युक्त अर्थात् मुसल्मान हो जावें ?

(८) व माऽ काऽना लि नफ़्सिन् अन्तुअ्मिना इल्लाऽ बि इज़्निऽल्लाहि; व यजअलु-र्रिज्सा अलऽल्ल-ज़ीना लाऽ यअ्क़िलून् ॥

और यह किसी प्राणी के वश की बात नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना विश्वासी (मुसल्मान) बन जावे; और वह उन पर, जो बुद्धि नहीं रखते, मलीनता डालता है।

(९) क़ुलिऽन्ज़ुरूऽ माऽ ज़ाऽ फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; व माऽ तुग़्निऽल् आयातु व-न्नुज़ुरु अन् क़ौमिऽ-ल्लाऽ युअ्मिनून् ॥

तू कह—देखो तो आकाशों में और भूमि में क्या कुछ है और चिह्न और त्रास उन लोगों के कुछ काम नहीं आते जो विश्वासी नहीं हैं।

(१०) फ़ हल् यन्तज़िरूना इल्लाऽ मिस्ला अय्याऽमिऽल्लज़ीना खलउ् मिन् क़ब्लिहिम् ; क़ुल् फ़ऽन्तज़िरूऽ इन्नी मअकुम्मिनऽल् मुन्तज़िरीन् ॥

फिर अब उन लोगों की भांति प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो उनसे पूर्व हो चुके हैं; (हे पैग़म्बर! तुम) कहो-अब प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूं।

(११) सुम्मा नुनज्जी रुसुलना वऽल्लज़ीना आमनूऽ कज़ालिका, हक़्क़ऽन् अलयना नुन्जिऽल् मुअ्मिनीन् ॥

फिर हम अपने पैग़म्बरों को और उन लोगों को, जो विश्वासी है, बचा लेते हैं, इस प्रकार यह हमारे अधिकार में है कि विश्वासियों को बचालें।

[मँजिल ३ पारा ११ रु ११।६]

(१) क़ुल् याऽ अय्युहऽ-न्नाऽसु इन्कुन्तुम् फी शक्किम्मिन् दीनी फ़लाऽ अअ्बुदुऽल्लज़ीना तअ्बुदूना मिन्दूनिऽल्लाहि वला किन् अअ्बुदुऽल्लाहऽल्लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम्, व उम्रितु अन् अकूना मिनऽल् मुअ्मिनीन ॥

(हे पैग़म्बर! तुम) कहो—हे लोगो! यदि तुम मेरे मत से सन्देह में हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पूजते हो मैं नहीं पूजता; परन्तु मैं अल्लाह को पूजता हूँ जो तुमको खींच लेता है, और मुझको आज्ञा है कि मुसल्मान रहूँ।

(२) व अन् अक़िम् वज्हका लि-द्दीनि हनीफ़ऽन्, व लाऽ तकूनन्ना मिनऽल् मुश्रिकीन् ॥

और यह कि हनीफ होकर अपना मुंह मत पर सीधा कर और शिर्क (समांश समझने) वालों में मत हो।

(३) वलाऽ तद्उ मिन्दूनिऽल्लाहि माऽ लाऽ यन्फ़उ-का वलाऽ यज़ुर्रुका फ़ इन् फ़ अल्ता फ़ इन्नका इज़ऽ-म्मिन-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य किसी) ऐसे को न आमन्त्रित करो, (जो) न तुम्हारा हित कर सके और न अ-हित, फिर यदि यह तुमने किया तो तू भी इस समय पापियों में है।

(४) व इय्यम्सस्कऽल्लाहु बि ज़ुर्रिन् फ़लाऽ काऽ-शिफ़ा लहू२ इल्ला हुवा, व इय्युरिद्का बिखय्रिन् फ़लाऽ राद्दा लि फ़ज़्लिही; युसीबु बिही मय्यशाउ मिन् इबाऽदिही; व हुवऽल् ग़फ़ूरु-र्रहीमु ॥

और यदि अल्लाह तुझे हानि (वा दुःख) पहुंचावे तो उसको उसके अतिरिक्त (अन्य) कोई खोलने (वा दूर करने) वाला नहीं, और यदि तुझे कुछ लाभ पहुंचाना चाहे तो उसके अनुग्रह का कोई फेरने वाला नहीं; वह अपने सेवकों में से जिसे चाहता है पहुंचाता है, और वही क्षमा करने वाला दयालु है।

(५) क़ुल् याऽ अय्युहऽन्नाऽसु क़द् जाऽअकुमुऽल् हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम्, फ़ मनिऽह्तदा फ़ इन्नमाऽ

यह्तदी लि नफ़्सिही, व मन् ज़ल्ला फ़ इन्नमाऽ यज़िल्लु
अलय्हाऽ; व माऽ अनाऽ अलय्कुम् बिवकील् ॥

(हे पैग़म्बर ! तू) कह—हे लोगो ! तुमको तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से सत्य आ चुका, अब जो कोई मार्ग पर आता है उसे अपने भले को मार्ग मिलता है, और जो कोई भूला फिरे सो भूला फिरेगा अपने बुरे को; और मैं तुम्हारा (कोई) वकील (अभिभावक) नहीं बना हूँ।

(६) वऽत्तबिअ् माऽ यू.हाऽ इलय्का वऽस्बिर् .हत्ता
यह्कुमऽल्लाहु, व हुवा ख़य्रुऽल् .हाकिमीन् ॥

और तू उसी आज्ञा का अनुसरण कर जो तेरी ओर पहुँचे और जब तक अल्लाह निर्णय करे (तब तक) दृढ़ (स्थिर) रहे, और वह सबसे श्रेष्ठ अनुग्रह करने वाला है।

पुनर्जन्म ! पुनर्जन्म !

मुसल्मान ईसाई पुनर्जन्म की सत्ता में विश्वास नहीं करते, और भी ऐसे मत हैं, उन्हीं को सन्मार्ग समझाने के लिये यह पुस्तक और हिन्दुओं के हाथों में हथियार का काम देगी। धर्मवीर प० लेखरामजी आर्य पथिक ने कमाल कर दिखाया है। शीघ्र ही आर्डर भेजें। थोड़ी कापी स्टाक में हैं

मू० २)   प्रेम पुस्तकालय—आगरा।

सूरये हूद

(१) अलिफ़् लाऽऽऽमूरा—किताबुन् उह् किमत् आयातुहू, सुम्मा फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीर् ।

यह पुस्तक है कि जिसकी आयतों (आज्ञाओं) की पड़ताल की जा चुकी है फिर एक बुद्धिमान् और ज्ञाता की ओर से इन्हें क्रमबद्ध किया गया है ।

(२-३) अल्लाऽ तअ्बुदू इल्लऽल्लाहा; इन्ननी लकुम्मिन्हु नज़ीरुव्व बशीरुं व्व अनिऽस्तग़्फ़िरूऽ रब्बकुम् सुम्मा तूबू इलयहि युमत्तिअ्कुम्मताऽअऽन् हसनऽन् इलाऽ अजलिम्मुसम्मव्व युअ्ति कुल्लज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू; व इन्तवल्लउऽ फ़ इन्नीऽ अख़ाऽफ़ु अलयकुम् अज़ाऽबा यउमिन कबीर् ॥

कि अल्लाह के अतिरिक्त (किसी को) न पूजो; मैं तुमको उसकी ओर से भय सुनाता और सुसमाचार पहुँचाता हूँ और यह कि अपने पालनकर्त्ता से पाप क्षमा कराओ और फिर उसकी ओर लौटो (जिससे) कि वह तुमको एक निश्चित अवधि तक पहुँचावे और प्रत्येक अधिकता वाले को अपना अनुग्रह प्रदान करे और यदि तुम फिर जाओगे तो तुम पर एक महान् दिवस (प्रलय) के प्रकोप (के प्रगट) होने से डरता हूँ ।

(४) इलऽल्लाहि मर्जिउकुम्, व हुवा अला कुल्लि शयइन् क़दीर् ॥

अल्लाह की ओर से तुमको फिर जाना है, और वह प्रत्येक पदार्थ पर शक्ति रखता है।

(५) अला२ इन्नहुम् यस्नूना सुदूरहुम् लियस्तख्फू ऽ मिन्हु; अलाऽहीना यस्तग्शूना सियाऽबहुम् यअ्लमु माऽ युसिर्रूना व माऽ युअ्लिनूना, इन्नहू अलीमुन् बिज़ाति-स्सुदूर् ॥

वह अपने हृदयों को दुहरा नहीं करते जिससे कि वह उससे छिप जायँ, सुनो जिस समय वह अपने वस्त्र ओढ़ते हैं वह जानता है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह खोलते हैं।

हिन्दू मुसल्मान, ईसाई और आर्य सभी के बच्चे और स्त्रियाँ निश्शङ्क होकर पढ़ें, कोई बात असम्भव न पायँगे, शिक्षा और ज्ञान का तो मानो भण्डार ही है— क्या ? वही

आदर्श रामायण

किसकी, गोस्वामी तुलसीदासजी की बस; देर न करें—आजही आर्डर दें जिससे छपते ही आपके पास पहुंचे। प्रेम पुस्तकालय आगरा।

(१२) पारा वमाऽमिन् दाऽब्बतिन्

(६) वमाऽ मिन् दाऽब्बतिन् फ़िऽल् अर्ज़ि इल्लाऽ अ़लऽल्लाहि रिज़्क़ुहाऽ व यअ़्लमु मुस्तक़र्रहाऽ व मुस्तव्-दअ़हाऽ, कुल्लुन् फ़ी किताबिम्मुबीन् ॥

और पृथ्वी भर में कोई ऐसा चर (प्राणी) नहीं पाया जाता कि जिसे अल्लाह भोजन न देता हो और जहाँ ठहरता है और जहाँ सौंपा जाता है, (इसे) अल्लाह जानता है, सब खुली पुस्तक में विद्यमान है।

(७) व हुवऽल्लज़ी ख़लक़-स्समावाति वऽल् अर्ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव्व काऽना अ़र्शुहू अ़लऽल्माइ लियब्लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़मलाऽ; व लइन् क़ुल्ता इन्नकुम्मब्ऊ़सू ना मिम् बअ़्दिऽल् मउति लि यक़ूलन्नऽल्लज़ीना कफ़रू इन् हाज़ाऽ इल्लाऽ सिह् रुम्मु-बीन् ॥

और वही है जिसने आकाश और पृथिवी छः दिन में निर्माण किये और उसका तख़्त पानी पर था कि तुम्हारी जांच करे कि तुममें से कौन सुकर्म करता है; और यदि तू कहे कि तुम मृत्यु के पश्चात (पुनः जी) उठोगे तो निश्चय काफ़िर कहने लगेंगे कि यह कुछ नहीं प्रत्युत साक्षात् जादू है।

(८) व लइन् अख़्ख़र्नाऽ अन्हुमुऽल् अज़ाऽबा इलाऽ उम्मतिम्मअ्दूदतिल्ल यक़्लुन्ना माऽ यह्बिसुहू; अलाऽ यउ्मा यअ्तीहिम् लयसा मस्रूफ़ऽन् अन्हुम् व हाऽक़ा बिहिम्माऽ काऽनूऽ बिही यस्तह्ज़िऊन् ॥

और यदि हम नियत समय तक दण्ड को रोक रक्खें तो कहेंगे कि किस वस्तु ने उसको रोक रक्खा है; सुनो जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा तो उन पर से न टरेगा और उनको वही फेर लेगा कि जिसका वह उपहास करते हैं।

[मंजिल ३ पारा १२ रु० २।१६]

(१) व लइन् अज़क़्नऽऽल् इन्साऽना मिन्नाऽ रह्मतन् सुम्मा नज़अ्नाहाऽ मिन्हु, इन्नहू ल यऊसुन् कफ़ूर् ॥

और यदि हम मनुष्य को अपनी ओर से (एक बार) अनुग्रह का आस्वादन करादें फिर वह उससे छीन लें, तो वह निराश और कृतघ्न हो।

(२) व लइन् अज़क़्नाहु नअ्माऽअ बअ्दा ज़र्राऽअ मस्सत्हु ल यक़ूलन्ना ज़हब-स्सय्यिआतु अ़न्नी; इन्नहू ल फ़रिहुन् फ़ख़ूर् ॥

और यदि हम उसको कष्ट के जो उसे पहुंचा—पश्चात् के आनन्द का आस्वादन करावें तो कहने लगा कि मुझसे दोष दूर हुये; निश्चय वह बुराई करते हुये प्रसन्न होवे।

(३) इल्लऽल्लज़ीना सबरूऽ व अ़मिलुऽ-स्सालि-हाति, उलाइइका लहुम्मग़्फ़िरतु व्व अज्रुन कबीर् ॥

परन्तु जो लोग सन्तोषी हैं और शुभ कर्म करते हैं, उनको अनुग्रह है और महान् पुण्य है।

(४) फ़लअ़ल्लका ताऽरिकुन् बअ़्ज़ा माऽ यूह़ाइ इलय्का व ज़ाइइकुन् बिही सद्रुका अय्यक़ूलूऽ लउलाऽ उन्ज़िला अ़लय्हि कन्ज़ुन् अउ जाइआ मअ़हू मुल्कुन्; इन्नमाऽ अन्ता नज़ीरुन्, वऽल्लाहु अ़ला कुल्लि शय्-इव्वकील् ॥

फिर कदाचित् तू कुछ छोड़ देने वाला है उसमें से जो हमने तुझ पर प्रेरणा की है तेरा हृदय इससे सन्देह में होगा कहीं ऐसा न हो कि वह कहें—क्यों न उस पर कोई भण्डार उतरा, क्यों न उसके साथ कोई दूत आया तू केवल डर सुनाने वाला है. अल्लाह प्रत्येक वस्तु का देखने वाला है।

(५) अम् यक़ूलूनऽफ़्तराहु क़ुल् फ़अ्तूऽ बि अ़श्रि सुवरिम्मिस्लिही मुफ़्तरयातिं व्वऽद्ऊऽ मनिऽस्ततअ़्तुम्मिन्दूनिऽल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥

क्या कहते हैं (कि तू) उसको बांध लाया है ? तू कह—तुम ऐसी एक दस सूरतें बांध कर ले आओ और यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिसको बुला सको बुलालो

के सम्मुख आवेंगे और साक्षी कहेंगे—यही हैं जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता (अल्लाह) पर असत्य आरोपित किया; सुनलो अत्याचारी लोगों पर अल्लाह की फटकार है जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें खोट खोजते हैं और यही पर-लोक के अविश्वासी हैं।

(११-१२) उला२इका लम् यकूनूऽ मुअ्जिज़ीना फि़ऽल् अर्ज़ि व माऽ का्ना लहुम्मिन्दूनिऽल्लाहि मिन् अव्-लियाऽ२आ युज़ाअ़फु लहुमुऽल् अ़ज़ाबु; माऽ कानूऽ यस्ततीऊ़न-स्सम्अ़ा व माऽ कानूऽ युब्सरून् ॥

वह लोग पृथ्वी में भागकर विवश करने वाले नहीं और इनको अल्लाह के अतिरिक्त (कोई) समर्थक नहीं उनको दूना दण्ड है, (यह) सुन नहीं सकते थे और न देखते (ही) थे।

(१३) उला२इकऽल्लज़ीना ख़सिरू२ अन्फुसहुम् व ज़ल्ला अन्हुम्माऽ कानूऽ यफ्तरून् ॥

यही हैं जो अपने जीवन को नष्ट कर बैठे और उनके (वह) नष्ट हो गया जो असत्य आरोपित करते थे।

(१४) लाऽजरम अन्नहुम् फ़िऽल् आख़िरति हुमुऽल् अख़्सरून् ॥

निस्सन्देह, वही अन्त के दिन हानि उठाने वालों में से है।

(१५) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ व अ़मिलुऽ-स्सा-

लिहाति व अख़्बतू२ इला रब्बिहिम् उलाऽइका अस्हा-बुऽल् जन्नति, हुम् फ़ीहाऽ ख़ालिदून् ॥

निस्सन्देह, जिन्होंने विश्वास किया और भलाइयाँ कीं और अपने पालनकर्त्ता की ओर अधीनता की वह जिन्नत के लोग हैं, वह उसमें रहा करें।

(१६) मसलुऽल् फ़रीक़ैनि काऽल् अअ्मा वऽल् असम्मि वऽल् बसीरि व-स्समीइ; हल् यस्तवियानि मसलऽन्, अफ़लाऽ तज़क्करून् ॥

उदाहरण दोनों समुदायों का जैसे एक अन्धा और एक बहरा और एक देखता और सुनता; क्या दोनों का दृष्टान्त समान है; फिर क्या तुम ध्यान नहीं करते ?

[मंजिल ३ पा० १२ रु० २।११]

(१) व लक़द् अर्सल्नाऽ नूहऽन् इला क़ौमिही२ इन्नी लकुम् नज़ीरुम्मुबीन् ॥

और हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा कि मैं तुमको डर सुनाता हूँ।

(२) अल्लाऽ तअ्बुदू२ इल्लऽल्लाहा; इन्नी२ अख़ाऽफु अलयकुम् अज़ाऽबा यउमिन् अलीम् ॥

कि अल्लाह के अतिरिक्त (किसी को) न पूजो, मैं तुम पर एक दुःख वाले दिन के दण्ड से डरता हूँ।

है उसे अल्लाह भली भांति जानता है, यह कहूँ तो मैं अन्याय हूँ

(८) क़ाऽलूऽ या नूहु, क़द् जाऽदल्तनाऽ फ़ अक्सर्ता जिदाऽलनाऽ फ़अ्तिनाऽ बिमाऽ तइदुनाऽ इन् कुन्ता मिन-स्सादिक़ीन ॥

कहने लगे—हे नूह! तू हमसे झगड़ा और बहुत झगड़ चुका, अब यदि तू सच्चा है तो जो हमको प्रतिज्ञा देता है वह लेआ।

(९) क़ाऽला इन्नमाऽ यअ्तीकुम् बिहिऽल्लाहु इन्शाऽअ व माऽ अन्तुम् बि मुअ्जिज़ीन ॥

कहा—यदि चाहेगा तो उसको अल्लाह ही लावेगा और तुम न थकाओगे भाग कर।

(१०) व लाऽ यन्फ़उकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्सहा लकुम् इन् काऽनऽल्लाहु युरीदु अय्युग्वियकुम्; हुवा रब्बुकुम् व इलय्हि तुर्जऊन् ॥

और जो मैं तुमको उपदेश करूं तो तुमको मेरा उपदेश उपयोगी न होगा यदि अल्लाह चाहता होगा कि तुमको बेराह चलावे; वही तुम्हारा पालनकर्त्ता है और उसी की ओर लौट कर जाओगे।

(११) अम् यक़ूलूनऽफ़्तराहु, क़ुल् इनिऽफ़्तरय्तुहू फ़ अलय्या इज्रामी व अनाऽ बरीउम्मिम्माऽ तुजिमून ॥

क्या (यह लोग) कहते हैं कि तू .कुरान को बना लाया; (हे पैग़म्बर ! इन्हें) तू कह—यदि बना लाया हूँ तो मुझ पर मेरा पाप है और जो तुम पाप करते हो उसका मेरा जिम्मा नहीं।

[मंजिल ३ पारा १२, रु० ४।१४]

(१) व ऊ.हिया इला नू.हिन् अन्नहू लन् युअ्-मिना मिन् क़उमिका इल्लाऽ मन् क़द् आमना फ़लाऽ तब्तइस् बिमाऽ काऽनू यफ़्अलून् ॥

और नूह के प्रति आज्ञा हुई कि जो ईमान ला चुका उनके अतिरिक्त अब ईमान न लावेगा अतः इन कर्मों के कारण, जो करते हैं, शोकातुर न हो।

(२) वस्नइल् फ़ुल्का बि अअ्युनिनाऽ व व ह़ीनाऽ वलाऽ तुख़ाऽतिब्नी फ़िऽल्लज़ीना ज़लमूऽ, इन्न-हुम्मुग़्रकून् ॥

और हमारे सन्मुख और हमारी आज्ञा से नौका निर्माण कर और मुझसे अत्याचारियों के विषय में न बोल, यह नि-श्चय डुबाये जायेंगे।

(३) व यस्नउल् फ़ुल्का व कुल्लमाऽ मर्रा अलैहि मलउम्मिन् क़उमिही सख़िरूऽ मिन्हु, क़ाऽला

इन्तस्खरूऽ मिन्नाऽ फ़ इन्नाऽ नस्खरु मिन्कुम् कमाऽ तस्खरून् ॥

और वह नौका का निर्माण करता था और जब उसके पास से उसकी जाति के मुखिया निकलते तो उससे हँसी करते; (उसने) कहा—यदि तुम हम पर हँसते हो तो हम तुम पर हँसते हैं जैसे तुम हँसते हो।

(४) फ़ सउफ़ा तअ्लमूना मय्यअ्तीहि अज़ाऽबु य्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अलय्हि अज़ाऽबुम्मुक़ीम् ॥

अब आगे जान लोगे कि दण्ड किस पर आता है कि जिससे उसे लज्जित करे और उस पर सदैव का दण्ड प्रगट होता है।

(५) हत्ताऽ इज़ाऽ जाऽअ अम्रुनाऽ व फ़ाऽरत्तन्नूरु कुल्नऽऽ हुमिल् फ़ीहाऽ मिन् कुल्लि ज़ौजय्निऽस्नय्नि व अह्लका इल्लाऽ मन् सबक़ा अलय्हिल् क़ौलु व मन् आमना; व माऽ आमना मअहूऽ इल्लाऽ क़लील् ॥

यहां तक कि जब हमारी आज्ञा हुई और तन्नूर उबलने लगा, हमने कहा,—इसमें प्रत्येक प्रकार में से एक जोड़ा दुहरा रखले और अपने घर के लोगों को (भी चढ़ाले) परन्तु जिस पर पहले आज्ञा हो चुकी और जो ईमान लाया हो (उन्हें चढ़ाले); और कुछ लोगों के अतिरिक्त (अन्यों) ने विश्वास न किया था।

(६) व क़ालऽर्कबूऽ फ़ीहाऽ बिस्मिऽल्लाहि मज्रिहाऽ व मुर्साहाऽ; इन्ना रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

और कहने लगा—नौका पर चढ़ उसका बहना और थमना अल्लाह के नाम से है; निश्चय मेरा पालनकर्त्ता क्षमाशील और दयालु है।

(७) व हिया तज्री बिहिम् फ़ी मउजिन् कऽल् जिबाऽलि व नाऽदा नूहु (नि) ऽब्नहू व काऽना फ़ी मअ्ज़िलिय्या बुनय्यऽर्कम्मअ्नाऽ वलाऽ तकुम्मअ्ऽल् काफ़िरीन् ॥

और वह उनको लहरों के पहाड़ के मानिन्द ले बहती है और नूह ने अपने पुत्रों को और जो तट पर रहा करता था (उसको) पुकारा कि—"हे पुत्र! हमारे साथ चढ़ और अविश्वासियों के साथ मत रह।"

(८) क़ाऽला स आवीइ इला जबलिय्यअ्सिमुनी मिनऽल् माइइ; क़ाऽला लाऽ आऽसिमऽल् यउमा मिन् अम्रिऽल्लाहि इल्लाऽ मर्रहिमा, व हाऽला बय्नहुमऽऽल्‌ मउजु फ़ काऽना मिनऽल् मुग्रक़ीन् ॥

कहा—मैं किसी पर्वत से लग रहूँगा कि जो मुझको पानी से बचावेगा; (वह) कहने लगा—आज अल्लाह की आज्ञा से कोई बचाने वाला नहीं परन्तु जिस पर वही दया करे,

और दोनों के बीच लहर आ पड़ी अतः डूबने वालों में रह गया।

(९) व क़ीला यार् अ,जु ऽब्ल,ई माऽअकि व यासमाऽउ अक़्लई, व ग़ीज़ऽल् माऽउ व क़ुज़ियऽल् अमु वऽस्तवत् अलऽल् जूदिय्यि व क़ीला बुअ्दऽन्लिल् क़ौमि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और आज्ञा आई—हे पृथ्वी! अपना पानी निगल जा और हे आसमान! थमजा और जल को सुखा दिया और काम हो चुका और जूदी पर्वत पर नौका ठहरी और आज्ञा हुई कि अत्याचारी जातियाँ दूर हों।

(१०) व नाऽदा नुहुर्रब्बहू फ़ क़ाऽला रब्बि इन्नऽब्नी मिन् अह्ली, व इन्ना वअ्दकऽल् हक़्क़ु व अन्ता अह्कमुऽल् हाकिमीन् ॥

और नूह ने अपने पालनकर्त्ता को बुलाया फिर बोला—हे पालनकर्त्ता! मेरा पुत्र मेरे घर वालों है, और तेरी प्रतिज्ञा सच्ची है और तेरी आज्ञा सबसे श्रेष्ठ है।

(११) क़ाऽला या नूहु इन्नहू लय्सा मिन् अह्लिका, इन्नहू अमलुन् ग़य्रु साऽलिहिन् फ़लाऽ तस्-अल्नि माऽ लय्सा लका बिही इल्मुन्; इन्नीऽ अइ-ज़ुका अन्तकूना मिनऽल् जाहिलीन् ॥

कहने लगा—हे नूह ! वह तेरे घर वालों में नहीं, उसके काम व्यर्थ हैं अतः जो तुझको विदित नहीं मुझको बात नहीं, मैं तुझे उपदेश करता हूँ कि तू मूर्खों में हो जा।

(१२) क़ाऽला रब्बि इन्नी२ अऊज़ुबिका अन् अस्अलका माऽ लय्स ली बिही इल्मुन्; व इल्लाऽ तग़्फ़िर्ली व तर्हम्नी२ अकुम्मिनऽल् ख़ासिरीन् ॥

कहने लगा—हे पालनकर्त्ता ! मैं तेरी शरण ग्रहण करता हूँ जिससे कि जो मुझको विदित न हो तुझसे पूछूँ; और यदि तू मुझको क्षमा न करे और न (तू मुझ पर) दया करे तो मैं नाश वालों में हूँ।

(१३) क़ीला या नूहुऽह्बित् बि सलामिम्मिन्नाऽ व बरकातिन् अलय्का व अला२ उममिम्मिम्मम्मअका; व उममुन् सनुमत्तिउहुम् सुम्मा यमस्सुहुम्मिन्नाऽ अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और आज्ञा हुई—हे नूह ! कुशल के साथ हमारी ओर से उतर और हमारी आशिषों सहित जो तुझ पर और तेरे साथ वाले समुदायों पर हैं; और कितने (ही) समुदायों को हम लाभ पहुंचायेंगे फिर उनको हमारी ओर से दुःख का दण्ड पहुंचेगा।

(१४) तिल्का मिन् अम्बाऽइऽल् ग़य्बि नूहीहा२ इलय्का; माऽ कुन्ता तअ्लमुहा२ अन्ता व लाऽ क़ौमुका

मिन् क़ब्लि हाज़ाऽ; फ़ऽस्बिर्; इन्नऽल् आक़िबता लिल् मुत्तक़ीन् ॥

यह कुछ समाचार परोक्ष के हैं कि जिनको हम तेरी ओर भेजते हैं इनको इससे पूर्व न तू (ही) जानता था और न तेरी जाति [जानती थी] अतः तू सन्तोष रख; निश्चय ही अन्त में डर वालों का है।

[मं० ३, पारा १२, रु० ५।११]

(१) व इला आऽदिन् अख़ाऽहुम् हूदऽन्; क़ाऽला या क़ौमिऽअबुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन इलाहिन ग़ैरुहू, इन् अन्तुम् इल्लाऽ मुफ़्तरून ॥

और हमने आद की ओर हूद को भेजा; (वह) बोला— हे जाति! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त अन्य कोई शासक नहीं, तुम सब असत्य कहते हो।

(२) या क़ौमि लाऽ असअलुकुम् अलय्हि अज्‌ऽन्; इन् अज्‌रिया इल्लाऽ अलऽल्लज़ी फ़तरनी; अफ़लाऽ तअ्क़िलून ॥

हे जाति! मैं तुमसे इस पर मूल्य नहीं मांगता; मेरा मूल्य उसी पर है जिसने मुझे उत्पन्न किया; फिर क्या तुम नहीं समझते।

(३) व या क़ौमिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्मा तूबू इलय् हि युर्सिलि-स्समाअ अलय् कुम्मिद्रारंव्व यज़िद्कुम् क़ुव्वतन् इला क़ुव्वतिकुम् वला ततवल्लौ मुज्रिमीन ॥

और हे जाति वालो ! अपने पालनकर्त्ता से पाप क्षमा कराओ फिर उसकी ओर लौटो तुम पर आकाश की धारायें छोड़ दे और तुमको बल पर बल अधिक प्रदान करे और पापी हो कर फिर न जाओ।

(४) क़ालू या हूदु मा जिअ्तना बिबय्यिनतिंव्व मा नह्नु बि तारिकी आलिहतिना अन् क़ौलिका वमा नह्नु लका बि मुअ्मिनीन ॥

वह कहने लगे—"हे हूद ! तू हमारे पास कुछ प्रमाण के साथ नहीं आया और हम तेरे कहने से अपने ठाकुरों को छोड़ने वाले नहीं और हम तुम्हें (पैग़म्बर) स्वीकार करने वाले नहीं।

(५) इन्नक़ूलु इल्ला अ़्तराका बअ़्जु आलिहतिना बिसूइन् ; क़ाला इन्नी उश्हिदुल्लाहा वश्हदू अन्नी बरीउम्मिम्मा तुश्रिकून ॥

हम तो यही कहते हैं कि तुमको हमारे ठाकुरों में से किसी ने बुरी तरह झपट लिया है (वह) कहने लगा—"मैं अल्लाह

को साक्षी करता हूँ और तुम साक्षी रहो कि मैं उनसे दुःखित हूँ जिन्हें तुम सम्मिलित करते हो।

(६) मिन्दूनिही फ़ कीदूनी जमीअ़ऽन् सुम्मा लाऽ तुन्ज़िरून् ॥

इसके अतिरिक्त मेरे निमित्त मिलकर सौ बुराई करो फिर मुझको छुट्टी न दो।

(७) इन्नी तवक्कल्तु अलल्लाहि रब्बी व रब्बि-कुम् , माऽ मिन् दाब्बतिन् इल्लाऽ हुवा आख़िज़ुन् बिनाऽ सियतिहाऽ; इन्ना रब्बी अला सिराऽति म्मुस्तक़ीम् ॥

मैंने अल्लाह पर, जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्त्ता है, विश्वास किया; कोई पांव धरने (चलने) वाला नहीं परन्तु उसके हाथ में उसकी शिखा है: निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता सीधे मार्ग पर है।

(८) फ़ इन्त वल्लउऽ फ़क़द् अब्लग़तुकुम्मा उर्सिल्तु बिही इलय् कुम् ; व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमऽन् ग़ैरकुम् , व लाऽ तज़ुर्रू नहू शय्अऽन : इन्ना रब्बी अला कुल्लि शय् इन् हफ़ीज़् ॥

फिर यदि तुम फिर जाओगे तो मैं पहुंचा चुका जो तुमको मेरे हाथ भेजा था; और मेरा पालनकर्त्ता तुम्हारे प्रतिनिधि

किन्हीं और लोगों को (नियत) करेगा, और उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे; निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

(९) व लम्माऽ जाऽआ अम्रुनाऽ नज्जय्नाऽ हूदंऽव्वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअ़हू बि रह्मतिम्मिन्नाऽ, व नज्जय्नाहुम्मिन् अ़ज़ाऽबिन् ग़लीज़ ॥

और जब हमारी आज्ञा पहुंची हमने हूद को और जिन्होंने उसके साथ विश्वास किया था [उनको] अपने अनुग्रह से (अपने) बचा दिया, और उनको उनके भारी दण्ड से रक्षा की।

(१०) व तिल्का आऽदुन् जहदू बि आयाति रब्बिहिम् व असवऽ रुसुलहू वऽत्तबऊ़ अम्रा कुल्लि जब्बाऽरिन् अनीद ॥

और यह आद (जाति के) थे कि अपने पालनकर्त्ता की बातों को अस्वीकार किया; और न उसके पैग़म्बरों को स्वीकार किया और उन की आज्ञा स्वीकार की कि जो उद्दण्ड थे।

(११) व उत्बिऊ़ऽ फ़ी हाज़िहि-द्दुन्याऽ लअ़्नतंव्व यौमऽल् क़ियामति अलाऽ इन्ना आऽदऽन् कफ़रूऽ रब्बहुम्; अलाऽ बुअ़्दऽल्लि आऽदिन् क़ौमि हूद ॥

और पीछे क़यामत के दिन इस संसार में फटकार पाई;

सुनलो आद अपने पालनकर्त्ता के अविश्वासी हुए; सुनलो आद को—जो हूद की जाति थी—फटकार है।

सू० ३ पारा १२, रु० ६।८

(१) व इला समूदा अख़ाऽहुम् सालि हऽन् क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लोहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू; हुवा अन्शअकुम्मिनऽल् अर्ज़ि वऽस्तअमरकुम् फ़ीहाऽ फ़ऽस्तग़्फ़िरूहु सुम्मा तूबू२ इलयहि; इन्ना रब्बी क़रीबुम्मुजीब् ॥

और समूद को ओर उनके भाई सालह को भेजा, (वह) कहने लगा –"हे जाति वालो ! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई शासक नहीं; उसीने तुमको पृथ्वी से रचा और उसमें तुमको बसाया अतः उससे क्षमा कराओ और उसकी ओर आओ निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता निकट है स्वीकार करने वाला है।

(२) क़ाऽलूऽ या सालिहु. क़द् कुन्ता फ़ीनाऽ मर्जुव्वऽन् क़ब्ला हाज़ा२ अतन्हानार अन्नअ्बुदा माऽ यअ्बुदु आबा२उनाऽ व इन्नना ऽ ल फ़ी शक्किम्मिम्माऽ तद्ऊनार इलयहि मुरीब् ॥

कहने लगे – हे सालह ! तुझ पर हमको आशा थी इससे

पूर्व तू हमको रोकता है कि जिनको हमारे पिता प्रपितामहादि पूजते रहे हैं (उन्हें) पूजें और हमको उसमें सन्देह है जिस ओर तू बुलाता है।

(३) क़ाऽला या क़ौमि अरअयतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यिनतिम्मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रहमतन् फ़ मय्यन्सुरुनी मिनऽल्लाहि इन् अ़सयतुहू फ़ माऽ तज़ीदूननी ग़य्रा तख़्सीर् ॥

वह कहने लगा—हे जाति ! भला देखो तो यदि मुझको अपने पालनकर्त्ता से ज्ञान प्राप्त हो गया और उसने मुझको अपनी ओर से अनुग्रह प्रदान की फिर अल्लाह के आगे मेरी कौन सहायता करे यदि मैं उसकी अवज्ञा करूं अतः तुम हानि के अतिरिक्त मेरी कुछ वृद्धि नहीं करते।

(४) व या क़ौमि हाज़िही नाऽक़तुऽल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ ज़रूहाऽ तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िऽल्लाहि वलाऽ तमस्सूहाऽ बि सूइन् फ़ यअ्ख़ुज़कुम् अज़ाऽबुन् क़रीब् ॥

और हे जाति ! यह ऊंटनी तुमको अल्लाह का चिह्न है अतः उसे छोड़ दो (ताकि) अल्लाह की भूमि में चरती फिरे और उसको बुरी तरह न छेड़ो, (अन्यथा) फिर तुमको निकटवर्ती दण्ड ग्रसित करेगा।

(५) फ़ अ़क़रूहाऽ फ़ क़ाऽला तमत्तऊऽ फ़ी दाऽरि

कुम् सलासता अय्यामिन् ; ज़ालिका वअ्दुन् ग़ैरु मक्ज़ूब् ॥

फिर उसके (उन्होंने) पैर काटे तब (उनसे) कहा कि अपने गृहों में तीन दिन बस लो; यह अल्लाह की प्रतिज्ञा है।

(६) फ़ लम्माऽ जाऽअ्आ अम्रुनाऽ नज्जय्नाऽ सालिहऽन वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअ़हू बिरह्‌मतिम्मिन्नाऽ व मिन् ख़िज़्यि यउमिइज़िन् ; इन्ना रब्बका हुवऽल् क़विय्युऽल् अ़ज़ीज़् ॥

फिर जब हमारी आज्ञा पहुँची, हमने सालह को और जो उसके साथ थे (उनको) अपनी अनुग्रह करके (प्रलय के) दिन की रुसवाई से रक्षा की, निश्चय तेरा पालनकर्त्ता वही बलवान् और प्रबल है।

(७) व अख़ज़ऽल्लज़ीना ज़लमुऽ-स्सयहतु फ़ अस्बहूऽ फ़ी दियाऽरिहिम् जासिमीन् ॥

और उन अत्याचारियों को चिग्घाड़ ने पकड़ा फिर (वे) अपने गृहों में प्रातःकाल को औंधे पड़े रह गये।

(८) क अल्लम् यग़्नउऽ फ़ीहाऽ, अलाऽ इन्ना समूदाऽ कफ़रूऽ रब्बहुम् ; अला बुअ्दऽल्लि समूद ॥

मानो कि कभी उसमें रहे न थे; सुन लो समूद ने अपने

पालनकर्त्ता का अविश्वास किया; सुन लो समूद को फट-कार है।

[मं० ३, पारा १२, रु० ७।१५]

(१) व लक़द् जाऽअत् रुसुलुनाऽ इब्राहीमा बिऽल्बुश्रा क़ाऽलूऽ सलामऽन्; क़ाऽला सलामुन् फ़ माऽ लबिसा अन् जाऽआ बि इ्जिलन् हनीज़् ॥

और हमारे भेजे इब्राहीम शुभ समाचार लेकर पास आचुके हैं (वे) कहने लगे सलाम; वह बोला—सलाम है फिर देर न की कि एक बछड़ा जला हुआ ले आया।

(२) फ़ लम्माऽ रआऽ अय् दिय हुम् लाऽ तुसिल्लु इलय्हि नकिरहुम् व अव् जसा मिन्हुम् खीफ़तन्; क़ाऽलूऽ लाऽ तख़फ़् इन्नाऽ उसिल्नाऽ इला क़ौ मि लूत ॥

फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने पर नहीं आते ऊपरी समझा और हृदय में उनसे भयभीत हुआ; वह बोले—डर मत हम लूत की जाति की ओर भेजे हुये आये हैं।

(३) व अम्रा अतुहू क़ाऽइमतुन् फ़ ज़हिकत् फ़ बश्शर्नाहाऽ बि इस्हाक़ा; व मिव्वराऽइ इस्हाक़ा यअ्कूब् ॥

और उसकी स्त्री खड़ी थी तब वह हँस पड़ी फिर हमने उसको इस्हाक़ का; और इस्हाक़ के पश्चात् याक़ूब का शुभ-समाचार दिया।

आगन्तुकों में लज्जित न करो; क्या तुममें एक भी भला मनुष्य नहीं है ?

(११) क़ाऽलूऽ लक़द् अ़लिम्ता माऽ लनाऽ फ़ी बनातिका मिन् हक़्क़िन् , व इन्नका ल तअ़्लमु माऽ नुरीद् ॥

(वह लोग) कहने लगे—तू जानता है कि हमको तेरी पुत्रियों से कुछ प्रयोजन नहीं और निश्चय तू जानता है कि हम क्या चाहते हैं ?

(१२) क़ाऽला लउ् अन्ना ली बिकुम् क़ुव्वतन् अउ् आवीऽ इला रुक्निन् शदीद् ॥

(वह) कहने लगा—कहीं मुझे तुम्हारा सामना करने की शक्ति होती अथवा किसी बली आश्रय की शरण लेता ।

(१३) क़ाऽलूऽ या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बिका लंय्यसिलूऽ इलय्का फ़ अस्रि बि अह्लिका बि क़ित्इम्मिनल्लय् लि वलाऽ यल्तफ़ित् मिन्कुम् अहदुन् इल्लाऽ अम्रअतका; इन्नहू मुसीबुहाऽ माऽ असाऽबहुम् ; इन्ना मौइदहुमुस्सुब्हु, अलय्सस्सुब्हु बि क़रीब् ॥

न देखे परन्तु तेरी पत्नी कि निस्सन्देह उसको वह पहुंचने हारा है यह जो उन पर पहुंचेगा, निस्सन्देह उनकी प्रतिज्ञा का समय प्रातःकाल है क्या प्रातः निकट नहीं ?

(८४-८५) फ़ लम्मा ऽ जा२आ अम्रुना ऽ जअ़ल्ना ऽ आ ऽ लियहा ऽ सा ऽ फ़िलहा व अम्तर्ना ऽ अ़लयहा ऽ हिजा ऽ रतम् म्मिन् सिज्जीलिम्मन्सुदिम्मसव्व मतन् इन्दा रब्बिका; वमा ऽ हिया मिन-ज़्ज़ालिमीना बि ब ईद् ॥

फिर जब हमारी आज्ञा पहुंची, हमने यह नगरी ऊंच नीच कर डाली और हमने उस पर बराबर कंकर और पत्थर बरसाये जो तेरे पालनकर्त्ता की ओर से चिह्न किये हुये थे; और वह नगरी अत्याचारियों से कुछ परे नहीं थी।

[मंजिल ३ पारा १२ रु० ८।१२]

(१) व इला मद्यना अख़ा ऽ हुम् शुअ़यबन्, का ऽ ला या क़ौ मि ऽ अ़्बुदु ऽ ऽ ल्लाहा मा ऽ लकुम्मिन् इला-हिन् ग़यरुहू; व ला ऽ तन्कुसु ऽ ऽ ल् मिक्या ऽ ला व ऽ ल मीज़ा-ऽना इन्नी२ अराकुम् बि ख़यरिंव्व इन्नी२ अख़ा ऽ फ़ु अ़लयकुम् अ़ज़ा ऽ बा यउमिम्मु हीत् ॥

और मद्यन (जाति) की ओर उनका सगा शुऐब भेजा; (उसने) कहा—हे जाति ! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं; और नाप और तोल

में खाण्ती न करो; मैं तुमको सन्तुष्ट देखता हूँ और तुम पर
घेरने वाले दिन की आपत्ति (के आने) का मुझे भय है।

(२) व या क़ौमि औफ़ुल् मिक्याला वल्
मीज़ाना बिल् क़िस्ति वला तब्ख़सुन्-नासा अश्याअ
अहुम् वला तअ्सौ फ़िल् अर्ज़ि मुफ़्सिदीन ॥

और हे जाति वालो ! नाप और तौल न्यायपूर्वक पूरी
करो और लोगों को उनकी वस्तुएँ न घटाओ और पृथ्वी पर
उपद्रव न मचाओ।

(३) बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन्कुन्तुम्मुअ्
मिनीना, वमा अना अलैकुम् बि हफ़ीज़ ॥

जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुमको शुभकारी है
यदि तुम मुसलमान (विश्वासी) हो, मैं तुम्हारा संरक्षक
नहीं।

(४) क़ालू या शुअ़ैबु अ सलातुका तअ्मुरुका
अन्न तत्रुका मा यअ्बुदु आबाउना औ अन्
नफ़्अला फ़ी अम्वालिना मा नशाउ; इन्नका ल
अन्तल् हलीमु-र्रशीद ॥

कहने लगे—हे शुऐब ! क्या तेरी नमाज़ (प्रार्थना) तुझको
सिखाती है कि हम उनको त्याग दें कि जिनको हमारे पितृगण
पूजते थे अथवा हम अपनी सम्पत्ति के साथ वह न करें जो
हम चाहें; तू ही तो बड़ा कोमल स्वभाव और समझदार है।

(५) क़ाऽला या क़ौ मि अ रअय्तुम् इन्कुन्तु अला बय्यिनतिम्मिर्रब्बी व रज़क़नी मिन्हु रिज़्क़ऽन् हसनऽन् ; व माऽ उरीदु अन् उख़ालिफ़ कुम् इला माऽ अन्हाकुम् अन्हु; इन् उरीदु इल्लऽऽल् इस्लाऽहा मऽऽस्ततअ्तु; वमाऽ तौ फ़ीक़ीऽ इल्लाऽ बिऽल्लाहि; अलय्हि तवक्कल्तु व इलय्हि उनीब् ॥

कहने लगा—हे जाति ! देखो तो यदि मुझको अपने पालनकर्ता की ओर से ज्ञान हुआ और उसने मुझको भोजन—शुभ भोजन दिया; और मैं नहीं चाहता कि जो काम तुमसे छुड़ाऊं (उसे) पीछे स्वयं करूं; मैं तो जहाँ तक हो सके यही सुधारना चाहता हूँ; और जो अल्लाह की ओर से बन आता है; मैंने उसी पर विश्वास किया; और उसी की ओर लौटकर जाता हूँ।

(६) व या क़ौ मि लाऽ यजि् रिमन्नकुम् शिक़ाऽक़ीऽ अय्युसीबकुम् मिस्लु माऽ असाऽबा क़ौमा नूहिन् औ क़ौमा हूदिन् औ क़ौमा साऽलिहिन् ; व माऽ क़ौमु लूतिम्मिन्कुम् बिबईद ॥

और हे जाति ! मुझसे हठ करके वह (अपराध) न करना, कि तुम पर वह आपत्ति आ पड़े जैसी कुछ कि नूह की जाति पर या हूद की जाति पर अथवा सालह की जाति पर पड़ी, और लूत की जाति तो तुमसे दूर नहीं।

[मँजिल ३ पारा १२ रु ९।१४]

(१) व लक़द् अर्सल्नाऽ मूसा बि आयातिनाऽ व सुल्तानिम्मुबीन् ॥

और मूसा को अपने चिह्नों और स्पष्ट प्रमाण के साथ भेज चुके हैं।

(२) इला फ़िर्ऑउना व मलाऽइही फ़त्तबऊ३ अम्रा फ़िर्ऑउना, व माऽ अम्रु फ़िर्ऑउना बिरशीद् ॥

फ़िर्औन और उसके मुखियाओं के पास फिर (वे) फ़िर्औन की आज्ञा के अनुकूल चले, और फ़िर्औन की आज्ञा कुछ अच्छी नहीं है।

(३) यक़्दुमु क़ौमहू यउमल् क़ियामति फ़ औरदहुमु-न्नाऽरा; व बिअ्सल्-विर्दुल् मउरूद् ॥

फिर प्रलय के दिन फ़िर्औन अपनी जाति के आगे आगे होगा फिर उनको (दोज़ख़ की) अग्नि पर पहुँचावेगा; और जिस (अग्नि) पर पहुँचे वह बुरा घाट है।

(४) वउत्बिऊ फ़ी हाज़िही लअ्नतन् व यउमल् क़ियामति; बिअ्स-रिफ़्दुल् मर्फ़ूद् ॥

और इस संसार में पीछे से प्रलय के दिन फटकार मिली; यह बुरा-पारितोषिक है जो प्राप्त हुआ है।

(५) ज़ालिका मिन् अन्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अलय् का मिन्हाऽ क़ाइमुंव्व हसीद् ॥

यह नगरियों के थोड़े से समाचार हैं जो हम तु को सुनाते हैं उनमें कोई अब तक स्थिर हैं और कोई उजड़ गयीं।

(६) व माऽ ज़लम्ना हुम् वला किन् ज़लमूऽ अन्फ़ुसहुम् फ़ माऽ अग़नत् अन्हुम् आलिहतु हुमुल्लती यद ऊना मिन्दूनिल्लाहि मिन् शय इ ल्लम्माऽ जाऽअ अम्रु रब्बिका; व माऽ ज़ाऽदू हुम् ग़य् रा तत्बीब् ॥

हमने उन पर अत्याचार नहीं किया किन्तु उन्होंने अपने ऊपर स्वतः अत्याचार किया और उनके (पत्थर के) देवता उनके काम कुछ न आये कि जिनको वह अल्लाह के अतिरिक्त बुलाया करते थे जब तेरे पालनकर्त्ता की आज्ञा आ पहुँची तो उन्होंने नाश के अति रिक्त और कुछ न बढ़ाया।

(७) व कज़ालिका अख़्ज़ु रब्बिका इज़ाऽ अख़ज़ल्क़ुरा व हिया ज़ाऽलिमतुन ; इन्ना अख़्ज़हूऽ अलीमुन् शदीद् ॥

और तेरे पालनकर्त्ता की पकड़ (के प्रकोप) ऐसा ही है जो वह अत्याचारी हैं; निःसन्देह उसके प्रकोप की पकड़ भयङ्कर दुःख देत है।

(८) इन्ना फ़ी ज़ालिका ला आयतल्लिमन् ख़ाऽफ़ा

अज़ाऽबल्-आख़िरति; ज़ालिका यउ़मुम्-मज्मूउ़ल्लहु-न्नाऽसु व ज़ालिका यउ़मुम्मशहूद् ॥

निस्सन्देह इसमें उनके निमित्त चिह्न हैं जो अन्तिम दिवस से डरते हैं; यह एक दिन है जिसमें मनुष्य एकत्र किये जायँगे और इस दिन की साक्षी मिली हुई है।

(९) व माऽ नुअख़्ख़िरुहू इल्लाऽ लि अजलिम्मअ़्दूद् ॥

हम उसको नियत समय के उपरान्त रोक न रक्खेंगे।

(१०) यउ़ मा यअ़्ति लाऽ तकल्लमु नफ़्सुन् इल्लाऽ बि इज़्निही, फ़ मिन्हुम् शक़िय्युंव्व स ईद् ॥

जिस दिन वह आ पहुंचेगा तो कोई प्राणी बिना उसकी आज्ञा के न बोल सकेगा; अतः उनमें कोई भाग्यहीन है और कोई सौभाग्यशाली।

(११) फ़ अम्मऽऽल्लज़ीना शक़ूऽ फ़ फ़ि-न्नाऽरि लहुम् फ़ीहाऽ ज़फ़ीरुंव्व शहीक़् ॥

अतः जो लोग भाग्यहीन हैं वह (दोज़ख़ की) अग्नि में हैं उनको वहां चिल्लाना और दौड़ना है।

(१२) ख़ालिदीना फ़ीहाऽ माऽ दाऽमति-स्समावातु वऽल् अर्ज़ु, इल्लाऽ माऽ शाऽअ रब्बुका; इन्ना रब्बका फ़ अ़्आऽलु ल्लिमाऽ युरीद् ॥

उसमें अब तक आकाश और पृथ्वी रहे रहा करें परन्तु
जो तेरा पालनकर्त्ता चाहे, निःसन्देह तेरा पालनकर्त्ता जो
चाहता है कर डालता है।

(१३) व अम्मऽऽल्लज़ीना सुइदूऽ फ़फ़िऽल्
जन्नति ख़ालिदीना फ़ीहाऽ माऽ दाऽमति स्समावातु
वऽल् अर्जु, इल्लाऽ माऽ शाऽअ रब्बुका, अताऽअन
ग़ैरा मजज़ूज़ ॥

और वह जो सौभाग्यशाली हैं वह जन्नत में हैं जब तक
आकाश और पृथ्वी रहे उसमें रहा करें परन्तु जो तेरा पालन
कर्त्ता चाहे अनन्त देन है।

(१४) फ़लाऽ तकु फ़ी मिर्यतिम्मिम्माऽ यअ़्बुदु
हाऽउलाऽइ; माऽ यअ़्बुदूना इल्लाऽ कमाऽ यअ़्बुदु
आबाऽउहुम्मिन क़ब्लु, व इन्नाऽ लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम्
ग़ैरा मन्क़ूस ॥

अतः तू इन वस्तुओं से धोखे में मत रह कि जिनको यह
लोग पूजते हैं; पूजते कुछ नहीं परन्तु उसी प्रकार जिस प्रकार
उनसे पहले उनके पिता आदि बुज़ुर्ग पूजते थे, और हम
उनको उनका भाग बिना घटाया हुआ देने वाले हैं।

[मंज़िल ३ पा० १२ रु० १ | १५]

(१) व लक़द आतैनाऽ मूसल् किताबा फ़ऽख़्त-

लिफ़ा फ़ीहि व लउ लाऽ कलिमतुन् सबक़त् मिर्रब्बिका ल क़ुज़िया बयनहुम्; व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम्मिन्हु मुरीब् ॥

हमने मूसा को पुस्तक दी फिर उसमें विभेद किया; और यदि एक बात पहले से तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से न आ चुकी होती तो उनमें निर्णय कर दिया गया होता; और निश्चय उनको इसमें सन्देह है कि मन स्थिर नहीं होता।

(२) व इन्ना कुल्लऽल्लम्माऽ लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बुका अअ्मालहुम्; इन्नहू बिमाऽ यअ्मलून ख़बीर् ॥

और जितने मनुष्य हैं तेरा पालनकर्त्ता उनको उनके लिए पूर्ण देगा; उसको सब पता है जो कि वह कर रहे हैं।

(३) फ़ऽस्तक़िम् कमाउमिर्ता व मन्ताऽबा मअ़का वलाऽतत्ग़उऽ; इन्नहू बिमाऽ तअ्मलूना बसीर् ॥

अतः जैसी तुझको आज्ञा हुई, तू सीधा चला जा और जिसने तेरे साथ पाप क्षमा प्रार्थना की और मर्यादा का अतिक्रमण नहीं किया; वह जो तुम कर रहे हो (उसे वह) देखता है।

(४) वलाऽ तर्कनूउ इलऽल्लज़ीना ज़लमूऽ फ़तमस्सकुमुन्नारु व माऽ लकुम्मिन्दूनिऽल्लाहि मिन् अउलियाउआ सुम्मा लाऽ तुन्सरून ॥

और उनकी ओर मत झुको जो अत्याचारी हैं फिर तुमको आग लगेगी और तुमको अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य) कोई सहायक नहीं फिर कहीं सहायता न पाओगे।

(५) व अक़िमि-स्सलाता तरफ़यि-न्नहारि व ज़ुल्फ़म्मिन-ल्लयलि; इन्नऽल्ह़सनाति युज़्हिब्न-स्सय्यिआति; ज़ालिका ज़िक्रा लि-ज़्ज़ाऽकिरीन् ॥

नमाज़ (प्रार्थना) के दोनों सिरे स्थिर रक्खो और कुछ रात गये; निःसन्देह भलाइयां पापों को हटा देती हैं; और यह स्मरण कराने वालों के निमित्त स्मरण कर रहा है।

(६) वऽस्बिर् फ़ इन्नऽल्लाहा लाऽ युज़ीउ अज्रल् मुह्सिनीन् ॥

और धीरज कर फिर निस्सन्देह ईश्वर भलाई करने वालों का प्रतिफल नष्ट नहीं करता।

(७) फ़ लव् लाऽ काऽना मिनऽल् क़ुरूनि मिन् क़ब्लि कुम् उलूऽ बक़िय्यतिय्यन्हव्ना अनिऽल् फ़साऽदि फ़िऽल् अर्ज़ि इल्लाऽ क़लीलऽम्मिम्मन् अन्जयनाऽ मिन्हुम्, वऽत्तबअऽल्लज़ीना ज़लमूऽ माऽ उत्रिफ़ूऽ फ़ीहि व काऽनूऽ मुज्रिमीन् ॥

अतः उन संगतों में तुमसे पहले ऐसे समझने वाले कोई क्यों न हुये कि जो पृथ्वी में उपद्रव मचाने को रोकते थे पर थु

[मं० ३ पारा १२ रुकूअ २।१४]

(१) लक़द् काऽना फ़ी यूसुफ़ा व इख़्वतिही आयातुल्लि स्साइलीन् ॥

निस्सन्देह यूसुफ़ और उसके भाइयों के विषय में प्रश्न करने वालों के लिए इसमें चिह्न हैं।

(२) इज़्क़ाऽलूऽ लु यूसुफ़ु व अख़ूहु अ़हब्बु इलाऽ अबीनाऽ मिन्नाऽ व नह्नु उ़स्बतुन् ; इन्ना अबाऽनाऽ लफ़ी ज़लालिम्मुबीन् ॥

जब कहने लगे—"निस्सन्देह यूसुफ़ और उसका भाई हमारे पिता को हमसे अधिक प्रिय है और यद्यपि हम बलवान हैं; निस्सन्देह हमारा पिता साक्षात् भ्रम में है।

(३) (नि) ऽ क़्तुलूऽ यूसुफ़ा अविऽत्रहूहु अर्ज़ंय्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनूऽ मिन् बअ़्दिही क़ौमन् सालिहीन् ॥

यूसुफ़ का वध करदो अथवा उसे किसी दूर देश में फेंक दो कि तुम पर-तुम्हारे पिता का एकमात्र ध्यान-तुम्हीं पर हो और उसके पश्चात् भले लोगों में हो जाना।

(४) क़ाऽला क़ाइलुम्मिन्हुम् लाऽ तक़्तुलू यूसुफ़ा व अल्क़ूहु फ़ी ग़यायतिऽल् जुब्बि यल्तक़ित्हु बअ़्ज़ु स्सय्यारति इन्कुन्तुम् फ़ाइलीन् ॥

उनमें से एक बोलने वाला कहने लगा—यूसुफ़ को मार न डालो और उसको कोई बटोही उठा ले जायगा यदि तुम्हें कुछ करना ही है।

(५) क़ालूऽ या अबाऽनाऽ माऽ लका लाऽ तअ्-मन्नाऽ अला यूसुफ़ा व इन्नाऽ लहू लनाऽ सिहून् ॥

वह कहने लगे—"हे पिता ! क्या कारण है कि तू यूसुफ़ के विषय में हमारा विश्वास नहीं करता और निस्सन्देह हम तो उस के हितैषी हैं।

(६) असिल्हु मअनाऽ ग़दऽय्यर्तअ् व यल्अब् व इन्नाऽ लहू ल हाफ़िज़ून् ॥

कल उसको हमारे साथ भेज दें कि वह भली भांति खाय और खेले और हम तो उसके रक्षक हैं।

(७) क़ाऽला इन्नीऽ लयहू ज़ुनुबीऽ अन् तज़हबूऽ बिही व अख़ाऽफ़ु अय्यअ् कुलहु-ज़िअ्बु व अन्तुम अन्हु ग़ाफ़िलून् ॥

उसने कहा—निस्सन्देह वह तो हमारे शोक का कारण है कि तुम उसको लेजाओ और मैं डरता हूँ कि (कहीं) उसका भेड़िया खा जायँ और तुम उससे अचेत रहो।

(८) क़ाऽलूऽ लइन् अकलहु-ज़िअ्बु व नह्नु उस्बतुन् इन्नाऽ इज़ऽल्लख़ासिरून् ॥

और (जब कि) हम एक बलशाली समुदाय (बन गये हुये) हैं तो हमने सब कुछ नष्ट किया।

(९) फ़ लम्मा ऽ ज़हबू ऽ बिही व अज्मऊ ३ अय्यज्-अलूहु फ़ी ग़यावति ऽल् जुब्बि, व अउ् हय् ना ३ इल-य् हि ल तु नब्बि अन्नहुम् बि अम्रिहिम् हाज़ा ऽ व हुम् ला ऽ यश्ऊरून् ॥

फिर जब उसको लेकर चले और सहमत हुये कि उसको अन्ध कूप में पटकें; और हमने उनकी ओर प्रेरणा की कि तू उनको उनका यह कार्य बतला देगा और वह न जानेंगे।

[१०] व जा ऽ ऊ ३ अबा ऽ हुम् इशा ३ अय्यब्कून् ॥

और सायंकाल को वह अपने पिता के पास रुदन करते हुये आये।

[११] क़ा ऽ लू ऽ या ३ अबा ऽ ना ३ इन्ना ऽ ज़हब्ना ऽ नस्तबिकु व तरक्ना यूसुफ़ा इन्दा मता ऽ इना ऽ फ़ अक-लहु-ज़्ज़िअ् बु, वमा ३ अन्ता बि मुअ् मिनिल्लना ऽ व लव् कुन्ना ऽ सादिक़ीन् ॥

वे कहने लगे—हे हमारे पिता! निस्सन्देह हम परस्पर दौड करने लगे और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया और उसको भेड़िया खागया, और तू कभी हमारे कथन का विश्वास न करेगा यद्यपि हम सच्चे हैं।

[१२] व जाऽऊ अ़ला क़मीसिही बिदमिन् कज़िबिन् ; क़ाऽला बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रऽन् ; फ़ सब्रुन् जमीलुन् , वऽल्ला हुऽल् मुस्तआ़ऽनु अ़ला माऽ तसिफ़ून् ॥

और उसके कुर्ते पर झूठा लोहू लगा लाये; (उनके) उस (पिता) ने कहा—कुछ नहीं किन्तु तुम्हारे आत्मा ने तुम्हारे निमित्त एक बात बना दी है; अब सन्तोष ही सत्य है; और मैं अल्लाह से उस बात पर सहायता चाहता हूँ जो तुम बताते हो।

[१३] व जाऽअत् सय्याऽरतुन् फ़ अर्सलूऽ वाऽरिदहुम् फ़ अद्ला दल्वहू , क़ाऽला या बुश्रा हाज़ा ग़ुलामुन् ; व असर्रूहु बि ज़ाऽअ़तन् ; वऽल्लाहु अ़लीमुन् बिमाऽ यअ़मलून् ॥

और व्योपारियों का एक दल आ पहुँचा फिर अपना पनिहारा भेजा उसने अपना डोल लटकाया; वह कहने लगा—"क्या प्रसन्नता की बात है कि यह एक लड़का है" और उसको धन समझकर छिपा लिया; और अल्लाह भली भांति जानता है कि जो कुछ वह करते हैं।

[१४] व शरउहु बिसमनिन् बख़्सिन् दराऽहिमा मअ़्दूदतिन् , व काऽनूऽ फ़ीहि मिन-ज़्ज़ाहिदीन् ॥

और उसको तुच्छ मूल्य गिनती के कुछ रुपयों के बदले बेच दिया, और उससे दुःखित हो रहे थे

(१) व क़ालऽल्लज़िऽश्तराहु मिम्मिस्रा लिऽम्र अतिही२ अक्रिमी म,स्वाहु असा२ अय्यन्फ़अना२ अव् नत्तख़िज़हू वलदऽन् ; व कज़ालिका मक्कन्नाऽ लि यूसुफ़ा फ़िऽल् अर्ज़ि व लि नुअल्लिमहू मिन् तअ्वी-लिऽल् अ,हाऽदीसि; वऽल्लाहु ग़ाऽलिबुन् अला२ अम्रिही वला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ यअ्लमून ॥

और उस मनुष्य ने, जिसने मिस्रवालों से उसे मोल लिया था, अपनी स्त्री से कहा—"इसे प्रतिष्ठा से रखना, कदाचित् यह हमारे काम आवे अथवा हम इसको बेटा बनालें", और इस प्रकार हमने यूसुफ़ को उस देश में इसलिए स्थान दिया कि उसको कुछ घटनाओं की व्याख्या बतादें; अल्लाह अपने कार्य पर विजयी है परन्तु अनेकों मनुष्य नहीं जानते।

(२) व लम्माऽ बलग़ा अशुद्दहू२ आतय्नाहु हुक्मऽव्व इल्मऽन् ; व कज़ालिका नज्ज़िऽल् मुह्सि-नीन् ॥

और जब वह बल पूर्ण (युवा) अवस्था को पहुंचा तो हमने उसको आज्ञा और ज्ञान दिया और सुकर्मियों को हम ऐसा ही प्रतिफल देते हैं।

(३) व राऽवदत्हुऽल्लती हुवा फ़ी बय्तिहाऽ

अन्नफ़्सिही व ग़ल्लक़तिऽल् अब्वाऽबा व क़ाऽलत् हीता लका; क़ाऽला मआऽज़ऽल्लाहि इन्नहू रब्बीऽ अह् सना म,स्वाऽया इन्नहू लाऽ युफ़्लिहु-ज़्ज़ालिमून ॥

और उस स्त्री ने जिसके घर में वह रहता था उससे अपना मन लगाया और द्वार बन्द किये और कहने लगी—शीघ्रता कर; (यूसुफ़ ने) कहा—अल्लाह की शरण वह मेरा प्रिय स्वामी है (उसने) मुझको भली भांति रक्खा है; निश्चय जो लोग अन्यायी हों वह भला नहीं पाते।

(४) व लक़द् हम्मत् बिही व हम्मा बिहाऽ लउ्लाऽ अर्रआ बुर्हाऽना रब्बिही; कज़ालिका लि नस्रिफ़ा अन्हु-स्सूआ वऽल् फ़ह्शाऽआ; इन्नहू मिन् इबाऽऽदिनऽल् मख़्लसीन् ॥

और निश्चय स्त्री ने उसकी चिन्ता की और मन लगा ही चुका था यदि उसने अपने पालनकर्त्ता की युक्ति न देखी होती; ऐसा ही हुआ कि हमने उससे दोष और कुकर्म को पृथक् रक्खा; निस्सन्देह वह हमारे पवित्र भक्तों में से है।

(५) वऽस्तबक़ऽऽल् बाऽबा; व क़द्दत् क़मीसहू दुबुरिं व्व अल्फ़याऽ सय्यिदहाऽ लादऽऽल् बाऽबि; क़ाऽलत् माऽ जज़ाऽउ मन् अराऽदा बि अह्लिका सूअन् इल्लाऽ अय्युस्जना अउ् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और दोनों द्वार को दौड़े और स्त्री ने उसके कुर्ते को पीछे से फाड़ डाला और दोनों स्त्री के पति से द्वार के पास मिल गये; (स्त्री) कहने लगी—ऐसे मनुष्य को जो तेरे घर में कुकर्म (करना) चाहे और कुछ दण्ड नहीं परन्तु यही कि कारागार में पड़े अथवा दुःख का दण्ड झेले।

(६) क़ाऽला हियराऽ वदत्नी अ़न्नफ़्सी व शहिदा शाऽहिदुम्मिन् अह्लिहाऽ, इन् काऽना क़मीसुहू कुद्दमिन् कुबुलिन् फ़ सदक़त् व हुवा मिनऽल् काज़िबीन्॥

यूसुफ़ ने कहा—'इसीने मुझसे इच्छा (प्रगट) की कि अपना मन न थामूं और स्त्री की ओर से* एक साक्षी ने साक्षी दी, यदि उसका कुर्ता आगे से फटा है तो स्त्री सच्ची है और वह झूठा है।

(७) व इन् काऽना क़मीसुहू कुद्दा मिन्दुबुरिन् फ़ कज़बत् व हुवा मिन-स्साऽदिक़ीन्॥

और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो यह झूठी और वह सच्चा है।

(८) फ़ लम्माऽ रआ क़मीसहू कुद्दा मिन्दुबुरिन् क़ाऽला इन्नहू मिन् कयदि कुन्न; इन्ना कयदा कुन्ना अ़ज़ीम्॥

---

* एक हदीस में आया है कि यह साक्षी देनेवाला स्त्री का ममेरा भाई था,

फिर जब उस (स्त्री के पति) ने उसका कुर्ता पीछे से फटा देखा तो उसने (अपनी पत्नी से) कहा कि यह (तुम स्त्रियों का) एक त्रिया चरित्र है; निस्सन्देह स्त्रियों के चरित्र बड़े (विचित्र) होते हैं।

(९) यूसुफु, अअ्रिज़् अन् हाज़ाऽ वऽस्तग्फ़िरी लि ज़न्बिकि, इन्नकि कुन्ति मिनऽल् ख़ातिईन ॥

हे यूसुफ़! यह बात जाने दो और स्त्री तू अपना पाप क्षमा करा निश्चय है कि तू ही अपराधिनी थी।

[मं० ३, पारा १२, रु० ४।६]

(१) व क़ाऽला निस्वतुन् फ़िऽल् मदीनतिम्रअतुऽल् अज़ीज़ि तुराऽवि दु फ़ताहाऽ अन्नफ़्सिही, क़द् शग़फ़हाऽ हुब्बऽन; इन्नाऽ ल नराहाऽ फ़ी ज़लालिम्मुबीन् ॥

और उस नगर में कई स्त्रियाँ कहने लगीं—अज़ीज़ की स्त्री अपने दास के साथ इच्छा करती है, उसके प्रेम में अपने मन से मोहित होगई, हमतो देखते हैं वह साक्षात् भूल में है।

(२) फ़ लम्माऽ समिअत् बिमक्रिहिन्ना अर्सलत् इलयहिन्ना व अअ्तदत् लहुन्ना मुत्तकअव्व आतत् कुल्ला वाऽहिदतिम्मिन्हुन्ना सिक्कीनऽ व्व क़ाऽलतिऽख़्रुज् अलयहिन्ना, फ़ लम्माऽ रअयनहू अक्बर्नहू व क़त्तअ्ना

अय्दियहुन्ना व कुल्ना ,हाऽशा लिल्लाहि माऽ हाज़ाऽ बशरऽन् , इन् हाज़ा२ इल्लाऽ मुल्कुन् करीम् ॥

जब (अज़ीज़ की) स्त्री ने उनके ताने सुने उनको बुलवा भेजा और उनके निमित्त (विशेष) भोज तय्यार कराया और उनमें से प्रत्येक के हाथ में एक छुरी दी और यूसुफ़ को इनके सम्मुख निकल आने को कहा, फिर जब (उन्होंने) उसको देखा वे आश्चर्य में आगईं और अपने हाथ काट डाले और कहने लगीं--अल्लाह रक्षा करे यह व्यक्ति मनुष्य नहीं; यह तो कोई महान् फ़रिश्ता (स्वर्गीय दूत) है।

(३) क़ाऽलत् फ़ ज़ालिकुन्नऽल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि; व लक़द् राऽवत्तुहू अन्नफ़्सिही फ़ऽस्तअ्समा; व लइल्लम् यफ़्अल् मा२ आमुरुहू ल युस्जनन्ना व लय-कूनऽ मिनस्-स्साग़िरीन् ॥

(अज़ीज़ की) स्त्री बोली—"सो यह वही है कि जिसके वास्ते तुमने मुझको ताना दिया; और मैंने उससे उसकी इच्छा की फिर उसने अपने को बचा रक्खा यदि जो मैं कहती हूँ (वह) यह न करेगा तो यह निश्चय बन्दी और अपमानित होगा।

(४) क़ाऽला रब्बि-स्सिज्नु अ,हब्बु इलय्या मिम्माऽ यद्ऊननी२ इलय्हि; व इल्लाऽ तस्रिफ़् अन्नी कय्दहुन्ना अस्बु इलय्हिन्ना व अकुम्मिनऽल् जाहिलीन् ।

यूसुफ़ कहने लगा—हे पालनकर्त्ता! मुझको उस बात से जिस ओर यह बुलाती है—क़ैद भली लगती है, और यदि तू मुझसे उनके छल को दूर न कर देगा तो मैं उनकी ओर जा-ऊंगा और मूर्खों में हो जाऊंगा।

(५) फ़ऽस्तजाऽबा लहू रब्बुहू फ़ सरफ़ा अन्हु कय्‌दहुन्ना; इन्नहू हुव-स्समीऽउऽल् अलीम्॥

अतः उसके पालनकर्त्ता ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली फिर उससे उनका छल हटाया; निश्चय वह सुनने वाला और ज्ञानवान् है।

(६) सुम्मा बदाऽलहुम्मिन् ˘ बअ्‌दि माऽर अवुऽऽल् आयाति लयस्जुनन्नहू हत्ताहीन्॥

फिर इन चिह्नों के देखने पर उन्हें यह उचित ज्ञात हुआ कि उसे एक समय तक बन्दी रक्खें।

[मँज़िल ३ पारा १२ रु० ५।७]

(१) व दख़ला मअहु-स्सिज्ना फ़तयानि; क़ाऽला अ‌हदुहुमा३ इन्नी३ अरानी३ अअ्‌सिरु ख़म्‌रऽन्, व क़ाऽलऽल् आख़रु इन्नी३ अरानी अह्‌मिलु फ़ौक़ा रअ्‌सी ख़ुब्ज़ऽन् तअ्‌कुलु तय्‌रु मिन्हु; नब्बिअ्‌नाऽ बि तअ्‌वीलिही, इन्ना नराका मिनऽल् मुहसिनीन्॥

और कारागार में उसके पास दो तरुण प्रवेश किये गये; उनमें से एक ने कहा कि मैं देखता हूँ कि मैं मद्य निचोड़ता हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैं देखता हूँ कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुये हूँ कि पक्षी उसमें चुगते हैं हमको उसका अभिप्राय बतला, हम तुझे भला मानुस पाते हैं।

(२) क़ाऽला लाऽ यअ्तीकुमाऽ तआ़मुन् तुर्ज़क़ानिहीऽ इल्लाऽ नब्बअ्तुकुमाऽ बितअ्वीलिही क़ब्ला अय्यअ्तियकुमाऽ, ज़ालिकुमाऽ मिम्माऽ अ़ल्लमनी रब्बी; इन्नी तरक्तु मिल्लता क़ौमिल्लाऽ युअ्मिनूना बिल्लाहि व हुम् बिऽल् आख़िरति हुम् काफ़िरून् ॥

(यूसुफ़) कहने लगा—जो भोजन तुमको प्रति दिन प्राप्त होता है वह तुम्हारे पास न आने पावेगा और मैं तुमको उसका अर्थ, इससे पूर्व कि वह तुम्हारे पास आये, बतलाऊंगा: यह ज्ञान है जो कि मुझको मेरे पालनकर्त्ता ने सिखाया है: मैंने उस जाति के मत का परित्याग किया कि जो अल्लाह पर विश्वास नहीं रखती और वह अन्तिम दिवस से करती है।

(३) वऽत्तबअ्तु मिल्लता आबाऽईऽ इब्राहीमा व इस्हाक़ा व यअ्क़ूबा; माऽ काऽना लनाऽ अन्नुश्रिका बिऽल्लाहि मिन् शयइन् , ज़ालिका मिन् फ़ज़्लिऽल्लाहि अ़लयना व अ़लन्नाऽसि वला किन्ना अक्सरन्नाऽसि लाऽ यश्कुरून् ॥

और मैंने अपने पिता-प्रपितामहादि इब्राहीम और इस्हाक और याकू.व का मत ग्रहण किया; हमारा यह कार्य नहीं कि किसी वस्तु को अल्लाह का साझी (शरीक) करें; यह अल्लाह का हम पर और सब मनुष्यों पर अनुग्रह है परन्तु अनेकों पुरुष कृतज्ञ नहीं।

(४) या साहि़बयि-स्सिज्नि अअर्बाऽबुम्मुतफ़रिंकूना खयरुन् अमिऽल्लाहुऽल् वाऽहि़दुऽल् कह्हाऽर्॥

हे बन्दीगृह के मित्रो! भला; कई पृथक् पृथक् उपास्यदेव उत्तम हैं अथवा अकेला बली अल्लाह?

(५) माऽ तअ्बुदूना मिन्दूनिही३ इल्ला३ अस्मा३-अन् सम्मयतुमूहा३ अन्तुम् व आबा३उकुम्मा३ अन्जलऽल्लाहु बिहाऽ मिन् सुल्तानिन्; इनिऽल् हुक्मु इल्लाऽलिल्लाहि; अमरा अल्लाऽ तअ्बुदू३ इल्ला३ इय्याऽहु; जालिक-दीनुऽल् क़य्यिमु वला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ यअ्लमून्॥

उसके सिवाय तुम कुछ नहीं पूजते परन्तु नाम हैं जो कि तुमने और तुम्हारे पिता प्रपितामहों ने रख लिये हैं उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा; अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य) किसी का शासन नहीं है; उसने आज्ञा दी है कि उसके अतिरिक्त अन्य किसी को न पूजो; यही सन्मार्ग है परन्तु अनेकों लोग नहीं जानते हैं।

(६) फ़ लम्माऽ रजऊ़ इला़ अबीहिम् क़ाऽलूऽ याऽ अबाऽनाऽ मुनिआ मिन्नऽऽल कय लु फ़ अर्सिल् मअ़नाऽ अख़ाऽना नक्तल् व इन्नाऽ लहू ल ह़ाफ़िज़ून् ॥

फिर जब वह अपने पिता के निकट आये वह बोले—'हे पिता ! हमसे नाप बन्द हुई अतः हमारे भाई को हमारे साथ भेज कि नाप ले आवें निस्सन्देह उसके रक्षक हैं।

(७) क़ाऽला हल् आमनुकुम् अलय हि इल्लाऽ कमाऽ आमिन्तुकुम् अला अख़ीहि मिन् क़ब्लु; फ़ऽल्लाहु ख़य रु ह़ाऽफ़िज़ऽन् व हुवा अ़र्हमु-र्रा़हिमीन् ॥

इस पर उसने कहा कि मैं तुम्हारा उस पर विश्वास करूँ परन्तु पहले इसके भाई के विषय में विश्वास किया था, अतः अल्लाह श्रेष्ठ रक्षक है और सब दयालुओं में श्रेष्ठ दयालु है।

(८) व लम्माऽ फ़तहू मताऽअहुम् वजदूऽ बिज़ाऽअतहुम् रुद्दत् इलय हिम् ; क़ाऽलूऽ याऽ अबाऽनाऽ माऽ नब्ग़ी; हाज़िही बिज़ाऽअतुनाऽ रुद्दत् इलयनाऽ, व नमीरु अहलनाऽ व नह़फ़ज़ु अख़ाऽनाऽ व नज़्दाऽदु कय ला बई़रिन् ; ज़ालिका कय लुय्यसीर् ॥

और जब अपनी वस्तु खोली तो देखा कि अपनी सामग्री उनको फेर दी गई; वह बोले—हे पिता ! और हमें क्या चाहिये

हमारी पूंजी तो हमें फेर दी गई अपने निमित्त अन्न लावेंगे और अपने भाई की रक्षा करेंगे और एक ऊंट की नाप अधिक लेवें, वह नाप आसान है।

(९) क़ाऽला लन् उर्सिलहू मअ़कुम् , हत्ता तुअ़तूनि मउ्सिक़ऽम्मिनऽल्लाहि लतअ़्तुन्ननी बिही२ इल्ला२ अंय्युहाऽता बिकुम् , फ़ लम्मा२ आतउहू मउ्सिक़हुम् क़ाऽलऽल्लाहु अ़ला माऽ नक़ूलु वकील् ॥

कहने लगा—मैं उसको कदापि तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक कि मुझे अल्लाह की शपथ लेकर यह प्रतिज्ञा न करोगे कि तुम इसको मेरे पास फिर लाकर उपस्थित करोगे परन्तु यह कि तुम आपही घर जाओ (तो विवशता है), फिर जब उन्होंने पिता को अपनी प्रतिज्ञा दे दी तो पिता ने कहा कि यह प्रतिज्ञा जो हम परस्पर कर रहे हैं, अल्लाह उसका वकील है।

(१०) व क़ाऽला या बनिय्या लाऽ तद्ख़ुलूऽ मिन् बाऽबि व्वाऽहिदि व्वऽद्ख़ुलूऽ मिन् अब् वाऽबिम्मुतफ़र्रिक़तिन् ; व माऽ उग़्नी अ़न्कुम्मिनऽल्लाहि मिन् शय्इन् ; इनिऽल् हुक्मु इल्लाऽ लिल्लाहि; अ़लय्हि तवक्कल्तु, व अ़लय्हि फ़ल् यतवक्कलिऽल् मुतवक्किलून् ॥

और कहा—हे पुत्रो ! एक द्वार से प्रविष्ट न होना किन्तु

पृथक् पृथक् द्वारों से प्रविष्ट होना; और मैं अल्लाह की आज्ञा को तुम पर से तनिक भी नहीं हटा सकता; आज्ञा तो केवल अल्लाह ही की है: मैंने उसी पर विश्वास कर लिया है, और विश्वास करने वालों को उचित है कि उसी पर विश्वास करें।

(११) व लम्माऽ दखलूऽ मिन् हैसु अमर हुम् अबूहुम्; माऽ काऽना युग्नी अन्हुम्मिनऽल्लाहि मिन शयूइन् इल्लाऽ हाऽजतन् फ़ी नफ़्सि यअ्कूबा क़ज़ाहाऽ व इन्नहू लजू ,इल्मिल्लिमाऽ अल्लम्नाहु व्ला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ यअ्लमून् ॥

और जब यह लोग (उसी प्रकार) जैसे इनके पिता ने इनसे कह दिया था (मिस्र में) प्रविष्ट हुये तो उनको कुछ अल्लाह की किसी वस्तु से न बचा सकता था परन्तु याकूब के हृदय में एक इच्छा थी सो (पूरी) कर चुका; और वह तो हमारे सिखाने से ज्ञानवान् हुआ परन्तु अनेकों मनुष्यों को ज्ञान नहीं होता।

[मंजिल ३ पा० १३ रु० ६।१४]

(१) व लम्माऽ दखलूऽ अला यूसुफ़ा आवाऽ इलैहि अख़ाऽहु क़ाऽला इन्नी अनाऽ अख़ूका फ़लाऽ तब्तइस् बिमाऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

और जब (यह लोग दुबारा) यूसुफ़ के पास गये तो

यूसुफ़ ने अपने भाई को अपने पास बिठा लिया (और धीरे से उससे) कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूँ सो उन कामों से जो वे करते रहे हों तू दुःखित मत हो।

(२) फ़ लम्मा जह्हज़हुम् बि जिहाऽज़िहिम् ज-अ़ल-सिसक़ाऽयता फ़ी रह्लि अख़ीहि सुम्मा अज़्ज़ना मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहऽऽल् ईरु इन्नकुम् ल साऽरिक़ून ॥

फिर जब उनको उनकी सामग्री तय्यार करदी, अपने भाई के बोझ में पीने का बासन रख दिया फिर पुकारने वाले ने पुकारा—"हे व्योपारियो! तुम निश्चय चोर हो।"

(३) क़ाऽलूऽ वअ़ऽक़्बलूऽ अ़लय्हिम्माऽज़ाऽ तफ़्क़ि-दून ॥

वह पुकारने वालों की ओर मुंह करके पूछने लगे "तुम्हारी क्या वस्तु खो गई?"

(४) क़ाऽलूऽ नफ़्क़िदु सुवाऽअ़ऽल् मलिकि व लि मन् जाऽअ बिही हिम्लु बई़रिंव अनाऽबिही ज़ईम् ॥

उन्होंने कहा—शाही माप (पैमाना*) हमको नहीं मिलता और जो कोई उसे लावे उसे एक बोझ ऊंट का मिले और मैं उसका प्रतिभू हूँ।

---

* ह० यूसुफ़ जिस कटोरे में पानी पीते थे उसको अनाज नापने का पैमाना बना लिया था कि अकाल पीड़ितों को सम्भाल के साथ अन्न दिया जाय और यूसुफ़ अन्न के बांटने का काम राज्य की ओर से करते थे इस लिये उस पैमाने [illegible] शाही पैमाना—कहलाता था

(५) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि लक़द् अ़लिम्तुम्माऽ जिअ्नाऽ लि नुफ़्सिदा फ़िऽल् अर्ज़ि वमाऽ कुन्ना साऽरिक़ीन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तुमको ज्ञात है कि हम देश में उपद्रव करने नहीं आये और न हम कभी चोर थे।

(६) क़ाऽलूऽ फ़माऽ जज़ाऽउहू इन्कुन्तुम् काज़िबीन् ॥

कहने लगे-यदि तुम झूठे हो तो फिर उसका दण्ड क्या है।

(७) क़ाऽलूऽ जज़ाऽउहू मन्वुजिदा फ़ी रह्लिही फ़हुवा जज़ाऽउहू; कज़ालिका नज्ज़ि—ऽज़्ज़ालिमीन् ॥

कहने लगे—जिसके बोझ में वह मिले वही उसके बदले में जावे; हम अपराधियों को यही दण्ड देते हैं।

(८) फ़ बदअबि अउ् इयतिहिम् क़ब्ला विआऽइ अख़ीहि सुम्मऽस्तख़्रजहाऽ मि न्विआऽइ अख़ीहि; कज़ालिक़ा किद्नाऽ लि यूसुफ़ा, माऽ काऽना लि यअ्ख़ुज़ा अख़ाऽहु फ़ी दीनिऽल् मलिकि इल्लाऽ अय्यशाऽअऽल्लाहु; नर्फ़उ दरजातिम्मन्नशाऽउ, व फ़ौक़ा कुल्लि ज़ी इल्मिन् अ़लीम् ॥

फिर यूसुफ़ ने पहले अपने भाई की खुर्जी से उनकी खुर्जियां खोजना आरम्भ किया फिर वह पात्र अपने भाई की

कुओं से निकाला; हमने इस प्रकार यूसुफ़ को षड्यन्त्र बता दिया; अन्यथा अपने भाई को उस राजा के न्याय में कदापि नही पकड़ सकता था परन्तु जो अल्लाह चाहे (सो होता है); हम जिसको चाहें पद ऊंचा करते हैं, और प्रत्येक ज्ञानवान् से ऊपर एक ज्ञानवान् है।

(९) क़ाऽलूऽ इय्यस्रिक़् फ़क़द् सरक़ा अखुल्लहू मिन् क़ब्लु फ़ असर्रहाऽ यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही वलम् युब्दिहाऽ लहुम्, क़ाऽला अन्तुम् शर्रुम्मकाऽनऽन्, वऽल्लाहु अअ्लमु बिमाऽ तसिफ़ून् ॥

कहने लगे—यदि उसने चुराया तो उसके एक भाई ने भी पहले चोरी की है, तब यूसुफ़ ने अपने मन में धीरे से कहा और उन्हें न बताया, कहा–तुम पदवी में और निकृष्ट हो, और जो तुम बनाते हो (उसे) अल्लाह भली भांति जानता है।

(१०) क़ाऽलूऽ याऽ अय्युहऽऽल् अज़ीज़ु इन्ना लहूऽ अबऽन् शय्ख़ऽन् कबीरऽन् फ़ ख़ुज़् अ़हदनाऽ मकाऽनहू, इन्नाऽ नराका मिनऽल् मुह्सिनीन् ॥

वह बोले—हे अज़ीज़ ! इसके वृद्ध और दीर्घायु एक पिता है अतः उसके स्थान पर एक हममें से रखले; हम देखते हैं कि तू उपकार करने वाला है।

(११) क़ाऽला मआ़ऽज़ऽल्लाहि अन् नअ्ख़ुज़ा इल्लाऽ मव्वजद्नाऽ मताऽअ़ना इन्दहूऽ इन्नाऽ इज़ऽल्ल ज़ालिमून् ।

कहने लगा—अल्लाह शरण में रक्खे यदि हम (उसके) अतिरिक्त कि जिसके पास अपनी वस्तु पाई अन्य किसी को पकड़ें फिर तो हम अन्यायी हुये।

[मंजिल ३ पारा १३ रू० ६।१४]

(१) फ़लम्माऽस्तऽ यअसूऽ मिन्हु खलसूऽ नजियऽन् क़ाऽला कबीरु हुम् अलम् तअलमू२ अन्ना अबाऽकुम् क़द् अखज़ा अलय् कुम्मउसिक़ऽम्मिनऽल्लाहि व मिन क़ब्लु माऽ फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसुफ़ा फ़ लन् अब्र हऽल् अर्ज़ा हत्ता यअज़ना लीर अबीर अउ यह कुमऽल्लाहु ली, व हुवा खयरुऽल् हाकिमीन् ॥

फिर जब उससे निराश हो गये तो एकान्त में परामर्श के लिये बैठे; इनमें से बड़ा बोला—तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह की प्रतिज्ञा ली है और यूसुफ़ के सम्बन्ध में पहले जो अपराध कर चुके हो; अतः जब तक मेरा पिता मुझे आज्ञा न दें अथवा अल्लाह मेरा विवाद चुका दें मैं इस देश से न हटूंगा और वह अल्लाह सबसे महान् शासक है।

(२) इर्जिऊ२ इलार अबीकुम् फ़क़ूलू यार अबाऽनार इन्नऽब्नका सरक़ा, वमाऽ शहिद्नार इल्लाऽ बिमाऽ अलिम्नाऽ व माऽ कुन्नाऽ लिल् ग़यबि हाफ़िज़ीन् ॥

फिर अपने पिता के पास जाओ और कहो—"हे मेरे पिता! पुत्र ने चोरी की, और हमने वही कहा था जो हमें ज्ञात था और हमको परोक्ष की बात का स्मरण नहीं था।"

(३) वस् अलिऽल् क़र्यतऽल्लती कुन्नाऽ फ़ीहाऽ वऽल् ईरऽल्लती२ अक़्बल्नाऽ फ़ीहाऽ, व इन्नाऽ ल सादिक़ून् ॥

और उस नगर में जिसमें हम थे और उस व्यौपारियों के समुदाय में, जिसमें हम आये हैं पूछले; और हम निस्सन्देह सत्य कहते हैं।

(४) क़ाऽला बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रऽन्; फ़ सब्रुन् जमीलुन्, असऽल्लाहु अय्यअ्तियनी बिहिम् जमीअ़ऽन्; इन्नहू हुवऽल् अलीमुऽल् हकीम् ॥

कहने लगा—"कुछ नहीं किन्तु तुम्हारे हृदय ने एक बात बनाली है; अब सन्तोष ही ठीक है; कदाचित् अल्लाह मेरे पास उन सबको ले आवे; वही ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(५) व तवल्ला अ़न्हुम् व क़ाऽला या२ असफ़ा अ़ला यूसुफ़ा वऽब्यज़्ज़त् अ़यनाहु मिनऽल् हुज़्नि फ़ हुवा कज़ीम् ॥

और उनसे मुंह मोड़ लिया और बोला—शोक यूसुफ़ पर!

और उसकी आंखें शोक से श्वेत होगईं अतः वह आपको घोंट रहा था।

(६) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि तफ़्तउऽ तज़्कुरु युसुफ़ा .हत्ता तकूना .हरज़ऽन् अउ् तकूना मिनऽल् हाऽ लिकीन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तू यूसुफ़ का स्मरण उस समय तक न छोड़ेगा जब तक कि गल जावे अथवा मर जावे।

(७) क़ाऽला इन्नमाऽ अश्कूऽ बस्सी व .हुज़्नी इलऽल्लाहि व अअ्लमु मिनऽल्लाहि माऽलाऽ तअ्लमून् ॥

कहने लगा—मैं तो अपना समाचार और शोक अल्लाह की ओर से (वह) जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

(८) या बनिय्यऽज़्हबूऽ फ़तह्.हसवूऽ मिय्युसुफ़ा व अख़ीहि वलाऽ ताऽ यअसूऽ मिर्रूहि.हऽल्लाहि; इन्नहू लाऽ याऽयअसु मिर्रू.हिऽल्लाहि इल्लऽल् क़उ्मुऽल् काफ़िरून् ॥

हे पुत्रो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की खोज करो और अल्लाह के अनुग्रह से सिवाय उसके—जो अविश्वासी है—कोई निराश नहीं।

(९) फ़ लम्माऽ दख़लूऽ अलैहि क़ाऽलूऽ याऽ अय्युहऽऽल् अज़ीज़ु मस्सनाऽ व अह्लनऽ—ज़्ज़ुर्रु व जिअ्नाऽ बि बिज़ाऽअतिम्मुज़्जातिन् फ़ अउफ़ि लनऽऽल् कयला

व तसद्दक़् अलयना; इन्नऽल्लाहा यज्ज़िऽल् मुतसद्दि-
क़ीन् ॥

फिर जब उसके समीप प्रविष्ट हुये तो कहने लगे—"हे अज़ीज़ ! हम पर और तुम्हारे घर पर कठोरता पड़ी है और हम थोथी पूंजी लाये अतः हमको पूरी तोल दे और हम पर दान कर; निस्सन्देह अल्लाह दान देने वालों को शुभ परिणाम देता है।

(१०) क़ाऽला हल् अलिम्तुम्माऽ फ़अल्तुम् बि
यूसुफ़ा व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाऽहिलून ॥

पूछा—"कुछ पता रखते हो कि जब तुमको समझ न थी (तब) तुमने यूसुफ़ और उसके भाई से क्या किया ?"

(११) क़ाऽलू३आ इन्नका ल अन्ता यूसुफ़ु;
क़ाऽला अनाऽ यूसुफ़ु व हाज़ाऽ अख़ी क़द् मन्नऽल्लाहु
अलयनाऽ; इन्नहू मय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़ इन्नऽल्लाहा
लाऽ युज़ीउ अज्ऽल् मुह्सिनीन ॥

कहने लगे—क्या तू ही वास्तव में यूसुफ़ है; कहा—मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है; अल्लाह ने हम पर अनुग्रह की; निश्चय जो भाई संयमी हो और स्थिर रहे तो अल्लाह शुभ कर्म करने वालों का अधिकार नष्ट नहीं होने देता।

(१२) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि लक़द् आसरकल्लाहु
अलयना व इन् कुन्नाऽ ल ख़ातिईन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, निश्चय तुमको अल्लाह ने इससे अधिक प्रिय रक्खा; और हम चूकने वाले थे।

(१३) क़ाऽला लाऽ तस़्रीबा अलय्कुमुऽल् यउमा; यग़्फ़िरुऽल्लाहु लकुम् ; व हुवा अर्हमु-र्राहि़मीन् ॥

कहने लगा—तुम पर आज कुछ आक्षेप नहीं; और अल्लाह तुम्हें क्षमा करे और वह सब दयालुओं में (अधिक) दयालु है।

(१४) इज़्हबूऽ बि क़मीसी हाज़ा फ़ अल्क़ूहु अ़ला वज्हि अबी यअ्ति बसीरऽन् ; वअ्तुनी बि अह्लिकुम् अज्मईन् ॥

मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे पिता के मुंह पर डालो ताकि आंखों से देखता हुआ चला आवे; और मेरे पास अपना समस्त घर ले आओ।

[मं० ३ पारा १३ रुकूअ ११।११]

(१) व लम्माऽ फ़सलतिऽल् ईरु क़ाऽला अबूहुम् इन्नी ल अजिदु रीह़ा यूसुफ़ा लउला अन्तुफ़न्निदून् ॥

और जब व्यौपारियों का दल पृथक् हुआ उनके पिता ने कहा—मुझे यूसुफ़ की गन्ध आती है यदि यह न कहो कि बूढ़ा बहक गया।

(२) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि इन्नकालफ़ी ज़लालिकऽल् क़दीम् ॥

लोग कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तू अपनी उसी सदा की भूल में है।

(३) फ़ लम्मा३ अन्जा३अऽल् बशीरु अल्क़ाहु अ़ला वजहिही फ़ऽर्तद्दा बसीरन् क़ाऽला; अलम् अकुल्ल-कुम्; इन्नी अअ़लमु मिनऽल्लाहि माऽ लाऽ तअ़लमून ॥

फिर जब सुसमाचार देने वाला पहुंचा तो उसके मुख पर वह कुर्ता डाला तो वह आंखों से देखता हुआ लौटा, कहने लगा—(क्या) मैंने तुम्हें न कहा था; मैं अल्लाह की ओर से (वह) जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(४) क़ाऽलू३ या३ अबाऽनऽऽस्तग़्फ़िर् लनाऽ ज़ुनूबना३ इन्नाऽ कुन्नाऽ ख़ातिईन ॥

वह कहने लगे—हे पिता! हमारे पापों को क्षमा करा; निस्सन्देह, हम अपराधी थे।

(५) क़ाऽला सव्फ़ा अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी; इन्नहू हुवऽल् ग़फ़ूररहीम् ॥

कहा—ठहरे रहो, तुमको अपने पालनकर्त्ता से क्षमा करा ऊंगा, वही क्षमा करने वाला दयालु है।

(६) फ़ लम्माऽ दख़लूऽ अ़ला यूसुफ़ा आवा३

इलय्हि अबवयहि व कालद्खुलू मिस्रा इन्शाअ अल्लाहु आमिनीन ॥

जब यूसुफ़ के पास प्रविष्ट हुये तो यूसुफ़ ने अपने माता पिता को अपने पास स्थान दिया और यदि अल्लाह ने चाहा तो मिस्र में आनन्द पूर्वक प्रविष्ट हो।

(७) व रफ़आ अबवयहि अलल् अर्शि व ख़र्रूलहू सुज्जदन, व क़ाला याअबति हाज़ा तअ्वीलु रुअ्याया मिन क़ब्लु क़द् जअलहा रब्बी हक़्क़न; व क़द् अह्सना बीइज़् अख़्रजनी मिनस्सिज्नि व जाअबिकुम्मिनल् बद्वि मिन बअ्दि अन्नज़ग़-श्शय्तानु बय्नी व बय्ना इख़्वती, इन्ना रब्बी लती फ़ुल्लिमा यशाउ; इन्नहू हुवल् अलीमुल् हकीम् ॥

और अपने पिता को सिंहासन पर ऊँचा बिठाया और सब उसके सन्मुख सिजदा (दण्डवत्) करने को गिर गये और उसने कहा—हे मेरे पिता! यह मेरे पहले स्वप्न का अर्थ है उसको मेरे पालनकर्त्ता ने सत्य सिद्ध किया और उसने मेरे साथ उपकार किया जब मुझको बन्दीगृह से निकाला और तुमको गांव से ले आया, इसके पीछे शैतान ने मुझमें और मेरे भाइयों में विवाद उत्पन्न कर दिया था; निस्सन्देह मेरा पा-

तनकर्त्ता जो चाहता है यत्न से करता है; निस्सन्देह वही ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(८) रब्बि क़द् आतय्तनी मिनऽल् मुल्कि व अ़ल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिऽल् अ़हाऽदीसि, फ़ाऽतिर-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि अन्तावल्लियी फ़ि-द्दुन्याऽ वऽल् आख़िरति, तवफ़्फ़नी मुस्लिमऽव्व अल् हिक़्नी बि-स्सालिह़ीन ॥

हे पालनकर्त्ता! तूने मुझे कुछ शासन दिया और मुझे कुछ घटनाओं का आशय सिखलाया, हे आकाश और पृथ्वी के उत्पन्न करने वाले! तू ही लोक परलोक में मेरा प्रतिपालक है: मुझे इस्लाम में ही मृत्यु दे और मुझे शुभ कर्मियों में सम्मिलित कर।

(९) ज़ालिका मिन् अन्बाइऽल् ग़ैबि नूह़ीहि इलैक; व माऽ कुन्ता लदय्हिम् इज् अज्मऊ़ अम्रहुम् वहुम् यम्कुरून ॥

यह परोक्ष के समाचार हैं जिन्हें हम तुझको भेजते हैं और जब अपना कार्य्य निश्चित करने लगे और कपट करने लगे तो तू उनके पास न था।

(१०) वमाऽ अक्सरु-न्नाऽसि व लौ हरस्ता बि मुअ्मिनीन ॥

और बहुतेरे मनुष्य विश्वास करने वाले नहीं यद्यपि तू ...चाहे ।

(११) व माऽ तस्अलुहुम् अलय् हि मिन् अज्रिन् ; ...न हु वा इल्लाऽ ज़िक्रुल्लिल् आलमीन् ॥

और तू उनसे इस पर कुछ मूल्य नहीं मांगता: यह तो ... और कुछ नहीं परन्तु समस्त संसार को शिक्षा है ।

[मं० ३ पारा १३ रु० १२।७]

(१) व कअय्यिन्मिन् आयतिन् फ़िस्समावाति ... यमुर्रू न अलय् हाऽ वहुम् अन्हाऽ मुअ्‌रिज़ून् ॥

और आकाश और पृथ्वी पर अनेकों चिह्न हैं जो उन पर ... से गुज़र जाते हैं और वे उन पर ध्यान नहीं देते ।

[२] व माऽ युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिऽल्लाहि इल्लाऽ ... वहुम्मुश्रिकून् ॥

और अनेकों पुरुष साथ में साझी किये बिना अल्लाह पर ... विश्वास नहीं करते ।

[३] अफ़अमिनूऽ अन्तअ्तियहुम् गाऽशियतु ... म्मिन् अज़ाऽबिऽल्लाहि अव् तअ्तियहुमुस्साऽअतु बग़्तन् ... व्वहुम् लाऽ यश्अुरून् ॥

क्या वह इस बात से निर्भय हो गये हैं कि उन पर अल्लाह: ...

के प्रकोप की आपत्ति आ पड़े अथवा अकस्मात् प्रलय की घड़ी आ पहुँचे और उनको पता न हो।

[४] कुल् हाज़िही सबीली अद्ऊ इलल्लाहि अला बसीरतिन् अना व मनित्तबअनी; व सुब्हानल्लाहि व मा अना मिनल् मुश्रिकीन् ॥

कहदे—यही मेरे मार्ग का मार्ग है मैं अल्लाह की ओर से खुले प्रमाण के साथ बुलाता हूँ।

[५] व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लिका इल्ला रिजालन्नूही इलैहिम्मिन् अह्लिल् कुरा; अफ़लम् यसीरू फ़िल् अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कैफ़ का़ना आक़िबतुल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम्, व लदारुल् आख़िरति खैरुल्लिल्लज़ीनत्तक़ौ, अफ़ला तअ्क़िलून् ॥

और हमने तुमसे पहले सिवाय मनुष्यों के और किसी को न भेजा कि हम उनकी ओर प्रेरणा करते थे और वह नगरों के निवासी थे, फिर क्या यह लोग देश में नहीं फिरे कि यह देख लेते कि उन लोगों का—जो उनसे पहले थे—क्या अन्त हुआ। निस्सन्देह अन्त के दिन का घर संयमियों के निमित्त उत्तम है सो क्या उनको समझ नहीं?

(६) हत्ता इज़स्तै-असर्रुसुलु व ज़न्नू

अन्नहुम् क़द् कुज़िबू ऽ जा ३ अहुम् नस्रु नाऽ फ़ नुज्जिया मन्नशा ३ उ; वलाऽ युरद्दु वअ्सुनाऽ अनिऽल् क़ौमिऽल् मुज्रिमीन् ॥

यहां तक कि जब पैग़म्बर निराश होने लगे और न विश्वास करने लगे कि उनसे झूठ कहा था तब उनको हमारी सहायता पहुंची; फिर जिनको हमने चाहा बचा दिया; और हमारा दण्ड पापी जाति से नहीं टरता।

(७) लक़द् काऽना फ़ी क़ससिहिम् इब्रतुल्लिउलिऽल् अल्बाऽबि; माऽ काऽना हदीसऽय्युफ़्तरा वला किन् तस्दीक़ऽल्लज़ी बय्ना यदय् हि व तफ़्सीला कुल्लि शय्इंव्व हुदव्व रह्मतल्लिक़ौमिय्युअ्मिनून ॥

निस्सन्देह उनके समाचारों से बुद्धिमानों ने अपनी दया का विचार करना है; कुछ गढ़ी हुई बात नहीं है किन्तु उनको जो उनसे पहले हैं, सिद्ध करती है-और जो लोग विश्वास लाते हैं उनके निमित्त शिक्षा और दया है।



सूरये रअ़द*

[मंजिल ३ पारा १३. रु० १।७]

(१) अलिफ़् लाऽम्मीऽम्रा तिल्का आयातुऽल् किताबि; वऽल्लज़ीऽ उन्ज़िला इलय्का मिर्रब्बिकऽल् हक़्क़ु वला किन्ना अक्सर—न्नाऽसि लाऽ युअ्मिनून ॥

अलिफ़् लाऽम्मीऽम्रा—यह पुस्तक की आयतें हैं; और जो तेरे पालनकर्त्ता से तुझपर उतरा वह सत्य है परन्तु अनेकों विश्वास नहीं करते।

(२) अल्लाहुऽल्लज़ी रफ़अ़—स्समावाति बि ग़यरि अ़मदिन तरउनहाऽ सुम्मऽस्तवा अ़लऽल् -अ़र्शि व सख़्ख़र—श्शम्सा वऽल् क़मरा, कुल्लुय्यज्री लि अजलिम्मुसम्मन; युदब्बिरुऽल् अम्रा युफ़स्सिलुऽल् आयाति लअ़ल्लकुम् बिलिक़ाऽइ रब्बिकुम् तूक़िनून ॥

देखते हो अल्लाह वह है जिसने स्तम्भ रहित उच्च आकाश रचे फिर अ़र्श पर स्थित हुआ और सूर्य और चन्द्रमा को काम लगाया; प्रत्येक एक निश्चित अवधि तक चलता

*सूरये रअ़द मक्के में उतरी इसमें ४३ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

और अविश्वासी कहते हैं—उस पर अपने पालनकर्ता की ओर से कोई चिह्न क्यों न उतरा ? तू तो भय सुनानेवाला ७।३ प्रत्येक जाति को मार्ग बताने वाला है।

[मंजिल ३ पा० १३ रु० २।१]

(१) अल्लाहु यअ्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा वमाऽ तग़ीज़ुऽल् अ.र्हाऽमु व माऽ तज़्दाऽदु; व कुल्लु शय् इन् इन्दहू बि मिक़्दाऽर् ॥

अल्लाह जानता है जो प्रत्येक मादा पेट में रखती है और जो पेट सिकुड़ते हैं और जो बढ़ते हैं; और प्रत्येक वस्तु इसके पास है।

(२) आलिमुऽल् ग़य्बि व-श्शाहाऽदतिऽल् कबीर-ऽल् मुतआऽल् ॥

गुप्त और प्रगट का वेत्ता सबसे बड़ा (और सबसे) ऊपर है।

(३) सवाऽउम्मिन्कुम्मन् असर्ऽल् क़उला व मन् जहरा बिही व मन् हुवा मुस्तख़्फ़िन् ँ बि-ल्लय्लि व साऽरिबुन् ँ बि-न्नहाऽर् ॥

तुममें बराबर है जो चुपके बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छिप रहा है और जो दिन को फिरता है।

(४) लहू मुअक़्क़िबातुम्मिन् बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही यह़फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा लाऽ युग़य्यिरु माऽ बि क़ौमिन् ह़त्ता युग़य्यिरूऽ माऽ बि अन्फ़ुसिहिम् ; व इज़ाऽ अराऽदऽल्लाहु बि क़ौमिन् सूअन् फ़ लाऽ मरद्दा लहू, वमाऽ लहुम् मिन्दूनिही मिन्वाऽल् ॥

उसके फेरे वाले (फ़रिश्ते*) हैं जो बन्दे के आगे और पीछे से उसको अल्लाह की आज्ञा से बचाते हैं; अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह (स्वयं) न बदल दे जो उनके मनों में है; और जब अल्लाह किसी जाति पर बुराई चाहे, तो वह नहीं हटती; और उसके लिए उसके अतिरिक्त अन्य कोई सहायक नहीं।

(५) हुवऽल्लज़ी युरीकुमुऽल् बर्क़ा ख़ौफ़ऽव् व तमअऽव् युन्शिउ-स्सह़ाऽब-स्सिक़ाऽल् ॥

*यह आयत उस समय उतरी जब आमर इब्नुल तफ़ील और लबीद का भाई अरबाद इब्न रबिया मुहम्मद के पास उसे मारने गये। आमर इब्नुल ने उसके सिद्धान्त के मुख्य अंश पर विवाद कर रक्खा था कि अरबाद अवकाश लेकर उसके पीछे उसे तलवार से मारने गया; परन्तु पैग़म्बर को ज्योंही उसके षड्यन्त्र का पता लगा उसने अल्लाह से रक्षा के निमित्त प्रार्थना की, जिस पर कि अरबाद पर विद्युत्पात हुआ और आमर के एक Pestilential boil लगा, जिससे वह बुरी दशा में तत्काल मर गया। —तफ़सीर बैज़ावी

वही है कि जो तुम्हें भय (दिखाने) को विद्युत् दिखलाता है और आशा [उत्पन्न करने) के लिए घोर बादल उठाता है।

(६) व युसब्बिहु,-र्रअदु बि हम्दिही वल् मला२इकतु मिन् खीफतिही; व युर्सिलु-स्सवाऽइका फ युसीबु बिहाऽ मय्यशा२उ वहुम् युजाऽदिलूना फ़िऽल्लाहि, व हुवा शदीदुऽल् मिहाऽल् ॥

और (विद्युत् की) कड़क उसके गुणों का पाठ करती है और सब दूत भी उसके भय से; और (वह विद्युत् की) गरज भेजता है और जिस पर चाहता है डालता है, और यह लोग अल्लाह की बात में* झगड़ते हैं, और उसकी पकड़ दृढ़ है।

(७) लहू दअ्वतुऽल् हक्कि; वऽल्लज़ीना यद्ऊना मिन्दूनिही लाऽ यस्तजीबूना लहुम् बिशय् इन् इल्लाऽ कबाऽसिति कफ़्फ़य् हि इलऽल् मा२इ लि यब्लुगा फ़ाऽहु वमाऽ हुवा बिबाऽलिगिही; वमाऽ दुआ२उऽल् काफ़िरीना इल्लाऽ फ़ी ज़लाल् ॥

---

*मुसल्मानों का विश्वास है कि दो सात्त्विक फरिश्ते प्रत्येक मनुष्य के पास उसके कृत्यों को लिखने के लिए रहते हैं। यह 'मुअक्किबत'—जो एक दूसरे के पश्चात् क्रमशः आते हैं इन्हें [१] कातमन और [२] कातिबीन कहते हैं। इसका विशेष वर्णन पाठकों को 'कुरान कौतुक' में मिलेगा।

उसी को पुकारना सत्य है; और वह जो उसके अतिरिक्त दूसरों को पुकारते हैं उन्हें कोई उत्तर न दिया जायगा परन्तु जैसे कोई अपने हाथ पानी की ओर फैलाये जिससे वह उसके मुंह में पहुंच जाय और वह कभी न पहुंचेगा; और काफ़िरों की सब प्रकार भ्रम भरी है।

(८) व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि तृउ्अऽन्व कर्हऽन्व ज़िलालुहुम् बिऽल् गुदु व्वि वऽल् असाऽल् ॥

और जो कोई आकाश और भूमि में है, प्रसन्नता और दुःख से अल्लाह को सिजदा करता है और प्रातः और सायं उनकी छाया है।

(६) कुल् मर्रब्बु-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; कुलिऽल्लाहु; कुल् अफ़ऽत्तख़ज़्तुम्मिन्दूनिहीऽ अव्लियाऽअ लाऽ यम्लिकूना लि अन्फ़ुसिहिम् नफ़्अऽन्व् लाऽ ज़र्रऽन्, क़ुल् हल् यस्तविऽल् अअ्मा वऽल् बसीरु अम् हल् तस्तवि ज़्ज़ुलुमातु व-न्नूरु, अम् जअ़लूऽ लिल्लाहि शुरकाऽअ ख़लक़ू, कख़ल्क़िही फ़ तशाऽ बहऽल् ख़ल्क़ु अलैहिम्; कुलिऽल्लाहु ख़ाऽलिक़ु कुल्लि शय्इन्व हुवऽल् वाऽहिदुऽल् क़ह्हाऽर् ॥

पूछ—आकाश औ[illegible]नकर्त्ता कौन है;

अल्लाह; कह—फिर तुमने उसके अतिरिक्त ऐसे सहायक स्वीकार किये हैं जो अपने भले बुरे के बचाने वाले नहीं; कह (क्या) कोई अन्धा और सूझता समान होता है अथवा कहीं उजाला और अन्धेरा समान होता है अथवा इन्होंने अल्लाह के कुछ ऐसे समांश निश्चित किये हैं कि उन्होंने कुछ बनाया है, जैसे अल्लाह ने बनाया है फिर उनकी दृष्टि में सृष्टि मिलती जुलती है; कह—अल्लाह प्रत्येक वस्तु का रचयिता है और वही एकमात्र वली है।

(१०) अन्ज़ला मिन-स्समाऽइ मा अन् फ़साऽलत् अव्दियतुन् वि क़दरिहाऽ फ़ऽह्तमल-स्सैलु ज़बदऽ र्राऽबियऽन्, व मिम्माऽ यूक़िदूना अलैहि फ़ि-न्नाऽरिऽब्तिग़ाऽआ हिल्यतिन् अउ मताऽइन् ज़बदुम्मिस्लुहू; कज़ालिका यज़्रिबुल्लाहुऽल् हक़्क़ा वऽल् बाऽतिला, फ़ अम्माऽ-ज़्ज़बदु फ़ यज़्हबु जुफ़ाऽअन् व अम्माऽमा यन्फ़उ-न्नाऽसा फ़ यम्कुसु फ़िऽल् अर्ज़ि; कज़ालिका यज़्रिबुल्लाहुऽल् अम्साऽल् ॥

आकाश से पानी उतारा फिर अपने अपने अनुसार धारायें बहीं फिर वह धारा फूला हुआ झाग ऊपर लाई; और जिस वस्तु को भूषण (बनाने) अथवा सम्पत्ति के निमित्त अग्नि में धौंकते हैं उसमें भी वैसा ही झाग है; इस प्रकार अल्लाह सत्य और असत्य निश्चित करता है; फिर वह जो

भाग है वह सूख जाता है; और वह जो मनुष्यों के उपयोग में आता है सो पृथ्वी में रहता है; यों अल्लाह दृष्टान्त बताता है।

(११) लिल्लज़ीनऽस्तजाऽबूऽ लि रब्बिहिमुऽल् हुस्ना, वऽल्लज़ीना लम् यस्तजीबूऽ लहू लव् अन्ना लहुम्माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि जमीअऽव्व मिस्लहू मअहू लऽफ़्त-दव्ऽ बिही, उलाऽइका लहुम् सूउऽल् हिसाऽबि व मअ्वाहुम् जहन्नमा; व बिअ्सऽल् मिहाऽद् ॥

जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता का आदेश माना है उनको भलाई है और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी यदि उनके पास जो कुछ पृथ्वी में है—सबका सब और इतना ही इसके साथ और भी हो तो, यह लोग अपने बदले में सब दें; इन लोगों का बुरा हिसाब है और उनका स्थान नर्क है; और यह बुरा स्थान है।

[मं० ३, पारा १३, रु० ३।१३]

(१-२) अफ़मय्-यअ्लमु अन्नमाऽ उन्ज़िला इलयका मिर्रब्बिकऽल् हक्कु कमन् हुवा अअ्मा; इन्नमाऽ यतज़क्करु उलुऽल् अल्बाऽबिऽल्लज़ीना यूफ़ूना बि अह्दिऽल्लाहि व लाऽ यन्कुज़ूनऽल् मीसाऽक् ॥

भला, जो मनुष्य जानता है कि जो कुछ तुझ पर तेरे पालनकर्त्ता की ओर से उतरा, सत्य है वह उसके समान होगा जो नेत्र विहीन है; उन्हीं को बोध है जिनमें कि बुद्धि है—और जो अल्लाह की प्रतिज्ञा पूरी करते हैं और निश्चय को भंग नहीं करते।

(३) वऽल्लज़ीना यसिलूना मा२ अमरऽल्लाहु बिही२ अय्यूसला व यख़्शउना रब्बहुम् व यख़ाऽफ़ूना सू२अऽल् हिसाऽब् ॥

और वह जो जोड़ते हैं जिसके जोड़ने की—अल्लाह ने आज्ञा दी है और अपने पालनकर्त्ता का भय करते हैं और बुरे हिसाब की आशंका रखते हैं।

(४) वऽल्लज़ीना सबरुऽऽब्तिग़ा२अ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ाऽमु-स्सलाता व अन्फ़क़ूऽ मिम्माऽ रज़क़्नाहुम् सिर्रऽव्व अलाऽनियतं व्व यद्रऊना बिऽल् हसनति-स्सय्यिअता उला२इका लहुम् उक़्बा-द्दाऽर् ॥

और वह जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता का झुकाव चाहने को धैर्य रक्खा और नमाज़ (प्रार्थना) स्थिर रक्खी और हमारे दिये हुये में से प्रकट और गुप्त व्यय किया वह बुराई के मुक़ाबिले में भलाई करते हैं और इन्हीं लोगों को अन्त का घर है।

(५) जन्नातु अद्निय्यद्ख़ुलूनहाऽ व मन् सलहा

मिन् आबाइहिम् व अज़्वाऽजिहिम् व ज़ुर्रियातिहिम् वऽल् मलाइकतु यद्ख़ुलूना अ़लय्हिम्मिन् कुल्लि बाऽब् ॥

उसमें सदा रहने को जन्नत (स्वर्ग) हैं वहां जायँगे और उनके पिता प्रपितामहों, और स्त्रियों और सन्तान में जो सुकर्मी होंगे उनके निकट प्रत्येक द्वार से फ़रिश्ते (स्वर्गीय दूत) आते हैं।

(६) सलामुन् अ़लय्कुम् बिमाऽ सबर्तुम् फ़निअ़्मा उक़्बऽ-द्दाऽर् ॥

कहते हैं—इसके बदले कि तुम स्थिर रहे तुम पर शान्ति है अतः तुम्हें अन्त का घर भला मिला।

(७) वऽल्लज़ीना यन्क़ुज़ूना अ़ह्दऽल्लाहि मिन् बअ़्दि मीसाऽक़िही व यक़्तऊ़ना माऽ अमरऽल्लाहु बिहीऽ अय्यूसला व युफ़्सिदूना फ़िऽल् अर्ज़ि; उलाऽइका लहुमु-ल्लअ़्नतु व लहुम् सूऽउ-द्दाऽर् ॥

और जो लोग अल्लाह की प्रतिज्ञा भंग करते हैं और जिस वस्तु को अल्लाह ने जोड़ना कहा उसे काटते हैं और पृथ्वी में उपद्रव उठाते हैं; ऐसे मनुष्य हैं कि उनको शाप है और उनको दुःख का घर है।

(८) अल्लाहु यब्सुतु-रिज़्क़ा लि मय्यशाऽउ, व

यविदहु, व फ़रिहू॒ऽ बिऽल् -हयाति-द्दुन्याऽ; व मऽऽल् हयातु-द्दुन्याऽ फ़िऽल् आख़िरति इल्लाऽ मताऽअ् ॥

अल्लाह जिसको चाहता है अनन्त भोजन देता है और (जिसको चाहता है) न्यून कर देता है; और यह सांसारिक जीवन परलोक की अपेक्षा कुछ नहीं परन्तु तुच्छ व्यवहार है।

[मंजिल ३ पारा १३ रु० ४।५]

(१) व यक़ूलुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लउलाऽ उन्ज़िला अलय्हि आयतुम्मिर्रब्बिही; क़ुल् इन्नऽल्लाहा युज़िल्लु मय्यशाऽउ व यह्दीऽ इलय्हि मन् अनाऽब् ॥

और अविश्वासी कहते हैं कि उस पर कोई चिह्न उसके पालनकर्त्ता की ओर से क्यों नहीं उतरा; कह— जिसको चाहे अल्लाह मार्गभ्रष्ट करता है और वही उसको अपनी ओर मार्ग देता है जो उसकी ओर लौटा।

(२) अल्लज़ीना आमनूऽ व ततमइन्नु क़ुलूबुहुम् बिज़िक्रिऽल्लाहि; अलाऽ बिज़िक्रिऽल्लाहि ततमइन्नुऽल् क़ुलूब् ॥

उन्होंने विश्वास किया और उनके हृदय अल्लाह की कथा से शान्ति ग्रहण करते हैं; सुनते हो, हृदय अल्लाह की कथा से ही शान्ति ग्रहण करते हैं।

(३) अल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलुऽ-स्सालिहा ति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब् ॥

जिन्होंने विश्वास किया और सुकर्म-सम्पादन किया उनको प्रशंसा है और उनका स्थान अच्छा है।

(४) कज़ालिका अर्सल्नाका फ़ीऽ उम्मतिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहाऽ उममुल्लि तत्लुवाऽ अलयहिमुऽ-ल्लज़ीऽआउ हयनाऽ इलयका वहुम् यक्फ़ुरूना बि-र्रह-मानि; क़ुल् हुवा रब्बी लाऽ इलाहा इल्लाऽ हुवा, अलयहि तवक्कल्तु व इलयहि मताऽब् ॥

इसी प्रकार हमने तुझको एक जाति के लिए भेजा कि उससे पहले (अनेक) जातियां हो चुकी हैं जिससे तू उनको वह आज्ञा सुनावे जो हमने तेरी ओर भेजी है और वह दयालु का विश्वास नहीं करते; तू कह—वही मेरा पालनकर्त्ता है उसके अतिरिक्त (अन्य) किसी की आराधना (योग्य) नहीं, मैंने उसी पर विश्वास किया है और मैं उसी की ओर छूटकर आता हूँ।

(५) व लउ अन्ना क़ुर्आनऽन् सुय्यिरत् बिहिऽल् जिबाऽलु अउ क़ुत्तिअत् बिहिऽल् अर्जु अउ कुल्लिमा बिहिऽल् मउता, बल्लिल्लाहिऽल् अम्रु जमीअऽन्, अफ़लम् याऽस् अल्लऽल्लज़ीना आमनूऽ अल्लउ यशाउ

पैग़म्बर की शक्ति न थी कि अल्लाह की आज्ञा के बिना मुअ-जिज़ा (चमत्कार या करामात) दिखायें: प्रत्येक समय के लिए हमारे यहां लेखा है।

(२) यम्हु ऽल्लाहु माऽ यशाउ व युस्बितु: व इन्दहू उम्मुऽल् किताऽब् ॥

अल्लाह जिसको चाहता है नष्ट कर देता है और जिसको चाहता है उसके पास स्थिर रखता है, (हमारी आज्ञा का) पहुंचा देना तुम्हारा काम है और लेखा लेना हमारा।

(३) व इम्माऽ नुरियन्नका बअ्ज़ऽल्लज़ी न इदुहुम् अउ् नतवफ़्फ़यन्नका फ़ इन्नमाऽ अलयकऽल् बलाग़ु व अलयनऽल् हिसाऽब् ॥

क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को सब ओर से दबाते चले आरहे हैं और अल्लाह आज्ञा देता है कोई उसकी आज्ञा की अवहेलना करने वाला नहीं।

(४) अवलम् यरउ् अन्नाऽ नअ्तिऽल् अर्ज़ा नन्कुसुहाऽ मिन् अतराऽ फ़िहाऽ; वऽल्लाहु यह्कुमु लाऽ मुअक़्क़िबा लि हुक्मिही; व हुवा सरीउऽल् हिसाऽब् ॥

बदनामियों का उत्तर देने के लिये उतरी जो उनकी, अनेकों स्त्रियों के होने के कारण, होती थी। क्योंकि, जैसा कि बेजावी का कथन है, यदि वह सच्चा पैग़म्बर होता तो उसका ध्यान स्त्रियों और सन्तान की उत्पत्ति के स्थान में किसी दूसरी ही ओर होता।

क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को चारों ओरसे दबाते चले आते हैं और अल्लाह आज्ञा देता है; कोई उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता; और वह अति शीघ्र लेखा लेने वाला है।

(५) व क़द् मकरऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिऽल् मक्रु जमीअऽन् ; यअ़्लमु माऽ तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् ; व सयअ़्लमुऽल् कुफ़्फ़ारु लिमन् उक़्बदाऽर् ॥

और जो लोग इन (मक्के के काफ़िरों) से पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (पैग़म्बरों की रक्षा में) अपने अपने प्रयत्न किये सो प्रयत्न तो सब अल्लाह ही के हैं; मनुष्य जो कुछ कर रहा है, अल्लाह को सब विदित है और काफ़िरों को शीघ्र विदित हो जायगा कि किसका परिणाम शुभ है।

(६) व यक़ूलुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लस्ता मुर्सलऽन् ; क़ुल् कफ़ा बिऽल्लाहि शहीदऽन् बयनी व बयनकुम् व मन् इन्दहू इल्मुऽल् किताब् ॥

और काफ़िर कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो तो तुम इनसे कहो कि मेरे और तुम्हारे मध्य अल्लाह और जिनके पास आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान है, वह साक्षी पर्याप्त है।

——:o:——

सूरये इब्राहीम*

[मंजिल ३, पारा १३, रु० १।७]

(१-२) अलिफ् लाऽम्रा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलय्का लि तुख्रिज-न्नाऽसा मिन-ज़्ज़ुलुमाति इल-न्नूरि बि इज़्नि रब्बिहिम् इला सिराऽतिऽल् अज़ीज़िऽल् हमीदिऽल्लाहिऽल्लज़ी लहू माऽ फ़ि-स्समावाति व माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि व वय्लुंल्लिल् काफ़िरीना मिन् अज़ाऽबिन् शदीद् ॥

अलिफ़ लाम्रा—एक पुस्तक है जो कि हमने तेरी ओर उतारी कि तू लोगों को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर लावे उनके पालनकर्त्ता की आज्ञा से बलवान् और महिमा योग्य है। अल्लाह ही है कि जिसका वह सब हैं जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है और काफ़िरों को एक कठिन प्रकोप के कारण शोक है।

(३) (नि)ऽल्लज़ीना यस्तहिब्बूनऽल् हयात-द्दुन्याऽ अलऽल् आख़िरति व यसुद्दूना अन् सबीलिऽ-

*सूरये इब्राहीम मक्के में उतरी इसमें ७ रुकूअ और ५२ आयतें हैं।

ल्लाहि व यब्गूनहा ऽ इवजऽन्; उलाइ २का फ़ी ज़लालिन् बई.द् ॥

जो परलोक से सांसारिक जीवन को प्रिय समझते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें खोट खोजते हैं वह दूर भ्रम में पड़े हैं।

(४) वमा२ अर्सल्ना ऽ मिर्रसूलिन् इल्ला ऽ बिलि-साऽनि क़उ्मिही लि युबय्यिना लहुम्; फ़ युज़िल्लु ऽल्लाहु मय्यशा२उ व यह्दी मय्यशा२उ; व हुवऽल् अज़ीज़ुल् .हकीम् ॥

और जब कभी हमने कोई पैग़म्बर प्रेषित किया तो (उसको) उसी की जातीय भाषा में* (वार्तालाप करता हुआ भेजा) जिससे वह उनको भली भांति समझा सके; फिर अल्लाह जिसको चाहता है, पथभ्रष्ट करता है और जिसको चाहता है उपदेश देता है; और वह बलवान् और बुद्धिमान् है।

(५) व लक़द् अर्सल्ना ऽ मूसा बि आयातिना२ अन् अख्रिज् क़उमका मिन-ज़्ज़ुलुमाति इल-नूरि व ज़क्किर्हु म् बि अय्यामिऽल्ला.हि; इन्ना फ़ी ज़ालिका ल आयातिल्लि कुल्लि सब्बाऽरिन् शकूर् ॥

हमही ने मूसा को अपने चिह्न देकर भेजा कि अपनी

---

* पैग़म्बर अपनी जाति वालों की भाषा का प्रयोग करते हैं।

जाति को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाओ और उनको अल्लाह के वह दिवस स्मरण दिलाओ; क्योंकि उनमें से प्रत्येक सन्तोषी और कृतज्ञ के लिये चिह्न हैं।

(६) व इज़्क़ाऽला मूसा लिक़ौमिहिऽज़्कुरूऽ निअ्-मतऽल्लाहि अ़लय्कुम् इज़् अन्जाकुम्मिन् आलि फ़िर्अ़ौना यसूमूनकुम् सू२ अऽल् अ़ज़ाऽबि व युज़ब्बिहूना अब्ना२-अकुम् व यस्तह्यूना निसा२अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बला२उम्मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम् ॥

और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा—"अल्लाह के वह उपकार स्मरण करो जब कि उसने तुमको फ़िऔंन के मनुष्यों से बचाया कि जो तुमको बुरी तरह दण्ड देते और तुम्हारे पुत्रों का ढूंढ ढूंढ कर बध करते और तुम्हारी स्त्रीजाति (अर्थात् कन्याओं) को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से तुम्हारे सन्तोष की कठिन परीक्षा थी।

[मंजिल ३ पारा १३ रु० २।६]

(१) इज़्तअज़्ज़ना रब्बुकुम् लइन् शकर्तुम् ल अज़ीदन्नकुम् व लइन् कफ़र्तुम् इन्ना अ़ज़ाबी लशदीद् ॥

और जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने बता दिया था कि यदि तुम हमारा धन्यवाद करोगे तो हम तुमको और अधिक देंगे

और यदि तुमने कृतघ्नता की तो तुम पर हमारा कठिन कोप है।

(२) व क़ाऽला मूसा२ इन्तक्फ़ुरू२ अन्तुम् व मन् फ़िऽल् अर्ज़ि जमीअ़ऽन् फ़ इन्नऽल्लाहा ल ग़निय्युन् हमीद् ॥

और मूसा ने कहा—कि तुम और जितने मनुष्य पृथ्वी में हैं सब मिलकर भी अल्लाह की अवज्ञा करो तो भी अल्लाह निश्चिन्त और प्रशंसनीय है।

(३) अलम् यअ्तिकुम् नवउऽऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिकुम् क़ौमि नूहिव्व आऽदिव्व समूदा; वऽल्लज़ीना मिन् बअ्दिहिम्; लाऽ यअ्लमुहुम् इल्लऽऽल्लाहु, जा२अत्हुम् रुसुलुहुम् बिऽल् बय्यिनाति फ़ रद्दू२ अयदियहुम् फ़ी२ अफ़्वाऽहिहिम् व क़ाऽलू२ इन्नाऽ कफ़र्नाऽ बिमा२ उर्सिल्तुम् बिही व इन्नाऽ लफ़ी शक्किम्मिम्माऽ तद्ऊननाऽ२ इलय्हि मुरीब् ॥

क्या तुमको उन (लोगों) के समाचार नहीं पहुंचे जो तुमसे पूर्व की जातियों—नूह की, आद की और समूद की में थे; और जो इनके पश्चात् उत्पन्न हुई उनका ज्ञान केवल अल्लाह ही को है उनके समीप उनके पैग़म्बर चिह्न लेकर आये तो उन्होंने अपने हाथ अपने मुंह में कर लिये और कहने

लगे—जो तुम्हारे हाथ भेजा गया, उसे हम नहीं मानते और जिसकी ओर तुम हमको बुलाते हो उसके विषय में हम बड़े सन्देह में पड़े हुये हैं।

(४) क़ाऽलत् रुसुलुहुम अफ़िऽल्लाहि शक्कुन् फ़ाऽतिरि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि: यद्ऊकुम लि यग़्फ़िरा लकुम्मिन् ज़ुनूबिकुम् व युअख़्ख़िरकुम् इलाऽ अजलिं म्मुसम्मन्: क़ाऽलू इन् अन्तुम् इल्लाऽ बशरुम्मिस्लुनाः तुरीदूना अन्तसुद्दूना अम्माऽ काऽना यअ्बुदु आबाऽउनाऽ फ़अ्तूनाऽ बिसुल्ताऽनिम्मुबीन ॥

उनके पैगम्बरों ने पूछा—"क्या अल्लाह (के विषय) में शंका है कि जिसने आकाश और पृथ्वी को उत्पन्न किया। वह तुमको बुलाता है जिससे तुम्हारे पाप क्षमा करदे और तुमको एक नियत समय तक वास करने दे; कहने लगे—तुम तो हमारे मानिन्द मनुष्य होने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं तुम चाहते हो कि हमें उससे रोक दो जिसको हमारे पुरुषा पूजते थे अतः हम रे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

(५) क़ाऽलत् लहुम् रुसुलुहुम् इन्नह्नु इल्लाऽ बशरुम्मिस्लुकुम् वला किन्नऽल्लाहा यमुन्नु अला मय्यशाऽउ मिन् इबाऽदिही; व माऽ काऽना लनाऽ अन्नअ्तियकुम् बि सुल्ताऽनिन् इल्लाऽ बि इज़्निऽल्लाहि व अलऽल्लाहि फ़ल् यतवक्कलिऽल् मुअ्मिनीन् ॥

उनको इनके पैग़म्बरों ने कहा—हम भी तुम्हारे मानिन्द मनुष्य हैं परन्तु अल्लाह अपने उपासकों में, जिस पर चाहे, उपकार करता है; और हमारा यह काम नहीं कि तुम्हारे पास अल्लाह की आज्ञा के बिना प्रमाण ले आवें; और विश्वासियों को अल्लाह पर विश्वास करना चाहिये।

(६) वमाऽ लनाऽ अल्लाऽ नतवक्कला अलऽ-ल्लाहि व क़द् हदानाऽ सुबुलनाऽ व लनस्बिरन्ना अला माऽ आज़ैतुमूनाऽ; व अलऽल्लाहि फ़ल् यतवक्कलिऽल् मुतवक्किलून॥

और हमको क्या हुआ कि अल्लाह पर विश्वास न करें और हमको हमारा मार्ग दिखा चुका और हम कष्टों पर, जो हमको देते हो, सन्तोष करेंगे; और विश्वासियों को अल्लाह पर विश्वास करना उचित है।

[मं० ३ पारा १३, रु० ३।६]

(१) व क़ाऽलऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लिरुसुलिहिम् ल नुख़्रिजन्नकुम्मिन अर्ज़िनाऽ अव् लतऊदुन्ना फ़ी मिल्ल-तिनाऽ; फ़ अव्हाऽ इलैहिम् रब्बुहुम् ल नुह्लिकन्न-ज़्ज़ालिमीन्॥

और काफ़िरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से अवश्य निकाल बाहर करेंगे अथवा तुम हमारे

मत में आ जाओगे: इस पर पैग़म्बरों के पालनकर्त्ता ने ओर वही भेजी कि हम इन उद्दण्ड लोगों को अवश्य नष्ट करेंगे।

(२) व लनुस्किनन्नकुमुऽल् अर्ज़ा मिन् बादिहिम्; ज़ालिका लि मिन् खाऽफ़ा मक़ाऽमी व खाऽफ़ा वईदि ॥

और इनके पश्चात् अवश्य तुमको इसी भूमि में बसायेंगे, यह पुरस्कार उस मनुष्य का है जो हमारी सेवा में खड़े होने से डरा और हमारे प्रकोप से डरा।

(३-४-५) वऽस्तफ़्तहू ऽ व खाऽबा कुल्लु जब्बाऽरिन् अनीदि म्मिन् व्वराऽइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्माऽइन् सदीदिय्यत जर्रउहू व लाऽ यकाऽदु युसीगुहू व यअ्तीहिऽल् मउ्तु मिन् कुल्लि मकाऽनि व्व माऽ हुवा बि मय्यितिन्; व मिव्वराऽइही अज़ाऽबुन् ग़लीज़ ॥

और उन्होंने विजय कामना की और प्रत्येक विरोधी हठ करने वाला निराश रहा. उसके पीछे नर्क है और उसे पीप का पानी पिलाया जायगा, कि जिसको घूंट घूंट कर पियेगा और गले से नहीं उतार सकेगा और उस पर प्रत्येक स्थान से मृत्यु चली आती है और वह नहीं मरता और उसके पीछे कठिन दण्ड है।

(६) मसलुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बिरब्बिहिम् अअ्-माऽलुहुम् करमाऽदि (नि)ऽश्तद्दत् बिहि-र्रीहु, फ़ी यौमिन् आऽसिफ़िन्; लाऽ यक़्दिरूना मिम्माऽ कसबूऽ अ़ला शय्इन्; ज़ालिका हुव-,ज्ज़लालुऽल् बईद् ॥

जो लोग अपने पालनकर्त्ता को नहीं मानते उनका दृष्टान्त ऐसा है कि उनके आचरण मानो राख हैं कि आंधी के दिन उनको हवा ले उड़ी; जो (कर्म) यह लोग (संसार में) कर गये हैं उनमें से कुछ भी इनके हाथ नहीं आयगा, परले दर्जे की असफलता यही है।

(७-८) अलम् तरा अन्नऽल्लाहा ख़लक़-स्समा-वाति वऽल् अर्ज़ा बिऽल् हक़्क़ि; इय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बि ख़ल्क़िन् जदीदिन्व्व माऽ ज़ालिका अ़लऽ-ल्लाहि बि अ़ज़ीज़् ॥

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी, जैसे चाहिएं, बनाये; वह यदि चाहे तो, तुमको मार दे और कोई नवीन उत्पत्ति करे; और यह अल्लाह के लिये कठिन नहीं।

(९) व बरज़ूऽ लिल्लाहि जमीअ़ऽन् फ़ क़ाऽल-ज़्ज़ुअ़फ़ाउऽ लिल्लज़ीनऽस्तक्बरूउ इन्नाऽ कुन्नाऽ लकुम् तबअ़ऽन् फ़ हल् अन्तुम्मुग़्नूना अ़न्नाऽ मिन् अ़ज़ाऽबिऽ-

ल्लाहि मिन् शयूइन् ; क़ाऽलूऽ लउ् हदानऽऽल्लाहु लहदयूना कुम् ; सवाऽउन् अलयूनाऽ अजज़िअ्नाऽ अम् सबर्नाऽ माऽ लनाऽ मिम्म,हीस् ॥

और सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे फिर निर्बल बल-वानों से कहेंगे—"हम तुम्हारे पीछे थे अतः तुम हमसे अ-ल्लाह का प्रकोप कुछ कम कराओगे" वह कहने लगे—यदि हमको अल्लाह मार्ग पर लाता तो निश्चय हम तुमको मार्ग पर लाते; अब हमारे निमित्त समान है चाहे हम अधीर हों अथवा सन्तोष करें, हम को मुक्ति नहीं होती।

[मं० ३, पारा १३, रु० ४।६]

(१) व क़ाऽल-श्शयूतानु लम्माऽ कुज़ियऽल् अम्रु इन्नऽल्लाहा वअदकुम् वअ्दऽल् हक़्क़ि व वअत्तुकुम् फ़ अख़्लफ़्तुकुम् ; व माऽ काऽना लिया अ-लयूकुम्मिन् सुल्तानिन् इल्लाऽ अन् दअ्तुकुम् फ़ऽस्त-जब्तुम् ली, फ़ लाऽ तलूमूनी वलूमूऽ अन्फ़ुसकुम् ; माऽ अनाऽ बिमुस्रिख़िकुम् वमाऽ अन्तुम् बि मुस्रिख़िय्याः इन्नी कफ़र्तु बिमाऽ अश्रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु, इन्न-ज़्ज़ालिमीना लहुम् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और जब कार्य पूर्ण हो चुकेगा तो शैतान कहेगा—"अल्लाह

ने तुमको सत्य प्रतिज्ञा प्रदान की थी और फिर मैंने झूठी प्रतिज्ञा की, और मेरा तुम पर शासन न था परन्तु मैंने तुमको बुलाया था फिर तुमने स्वीकार कर लिया, अतः मुझ पर आक्षेप मत करो और अपने ऊपर आक्षेप करो; न मैं तुम्हारी पुकार को पहुंच सकता हूँ और न तुम मेरी पुकार को पहुंच सकते हो; मैं स्वीकार नहीं करता जो कि तुमने मुझे पूर्व साझी ठहराया था; निश्चय जो अत्याचारी हैं उन पर आपत्ति का दण्ड है।

(२) व उद्खिलऽल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलुऽ-स्सालिहाति जन्नातिन् तजी मिन्तह् तिहऽल् अन्हारु खालिदीना फ़ीहा बि इज़्नि रब्बिहिम्; तहिय्यतु हुम् फ़ीहा सलाम् ॥

और जिन लोगों ने विश्वास किया और शुभ कर्म किये थे उनको (बहिश्त के) बागों में प्रविष्ट किया कि जिनके निकट नहरें बहती हैं उनमें अपने पालनकर्त्ता की आज्ञा से सर्वदा रहा करें; वहां उनकी पारस्परिक भेंट सलाम है।

(३) अलम् तरा कय्फ़ा ज़रबऽल्लाहु मसलऽन् कलिमतन् तय्यिबतन् कशजरतिन् तय्यिबतिन् अस्लुहाऽ साऽबितु व्व फ़र् हाऽ फ़ि-स्समाऽइ ॥

क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह ने एक दृष्टान्त कैसा

वर्णन किया है ? पवित्र वचन मानो एक विशुद्ध वृक्ष है उसकी जड़ दृढ़ है और शाखाएं आकाश में (फैली हुई हैं)।

(४) तुअ्ती उकुलहा कुल्ल हीनिन् बि इज्नि रब्बिहाऽ; व यज़्रिबुल्लाहुऽल् अम्सालऽला लिन्नाऽसि लअ़ल्लहुम् यतज़क्करून ॥

(वह वृक्ष) समय पर अपना फल अपने पालनकर्ता की आज्ञा से देता है; और अल्लाह लोगों को दृष्टान्त वर्णन करता है कदाचित् वह विचार करें।

(५) व मसलु कलिमतिन् ख़बीसतिन् कशज रतिन् ख़बीसति (नि ऽज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़िऽल् अर्ज़ि माऽ लहाऽ मिन् क़राऽर् ॥

और बुरे वचन का दृष्टान्त-जैसे निकृष्ट पेड़ जो पृथ्वी के ऊपर से उखाड़ लिया गया उसको कुछ स्थिरता नहीं।

(६) युसब्बितुऽल्लाहुऽल्लज़ीना आमनूऽ बिऽल् क़ौलि-स्साऽबिति फ़िऽल् हयातिद्दुन्याऽ व फ़िऽल् आख़िरति व युज़िल्लुऽल्लाहु-ज़्ज़ालिमीना व यफ़्अ़लुऽल्लाहु माऽयशाऽउ ॥

अल्लाह विश्वासियों को सांसारिक जीवन में दृढ़ वचन से दृढ़ करता और परलोक में अन्यायियों को विचलित कर देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है।

[मंजिल ३ पारा १३ रु० ५।७]

(१) अलम् तरा इलऽल्लज़ीना बद्दलूऽ निअ्मतऽ-ल्लाहि कुफ़्रऽव्व अ हल्लूऽ क़ौमहुम् दाऽरऽल् बवाऽर् ॥

क्या तूने उनकी ओर नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अनुग्रह का बदला कृतघ्नता दिया और अपनी जाति को विनाश के गृह में उतारा।

(२) जहन्नमा, यस्लउनहाऽ; व बिअ्सऽल् क़राऽर् ॥

जो दोज़ख़ (नर्क) है, (वे) उसमें प्रविष्ट होंगे; और (वह) बुरा स्थान है।

(३) व जअ़लूऽ लिल्लाहि अन्दाऽदल्लि युज़िल्लूऽ अन् सबीलिही; क़ुल् तमत्तऊऽ फ़ इन्ना मसीरकुम् इलऽन्नाऽर् ॥

और अल्लाह के सामने ठहराये कि लोगों को उसके मार्ग से भ्रष्ट करें; (हे पैग़म्बर ! इनसे) तू कह—भुगत लो फिर तुमको (नर्क की) अग्नि की ओर लौटना है।

(४) क़ुल्लि इबाऽदियऽल्लज़ीना आमनूऽ युक़ीमुऽ-स्सलाता व युन्फ़िक़ूऽ मिम्माऽ रज़क़्नाहुम् सिर्ऽव्व अ़लाऽ

नियतस्मिन् क़ब्लि अय्यअ्तिया यउमुल्लाऽ बयउन् फ़ीहि वलाऽ खिलालु ॥

(हे पैग़म्बर !) मेरे भक्तों को, जिन्होंने विश्वास किया है, कहदे कि वे नमाज़ को स्थिर रक्खें और गुप्त और प्रगट रूप से हमारे भोजन में से इससे पूर्व व्यय करें कि वह दिवस आवे कि जिसमें न व्यौपार है और न मैत्री भाव।

(५) अल्लाहुऽल्लज़ी खलक़-स्समावाति वऽल् अर्ज़ा व अन्ज़ला मिन-स्समाऽइ माऽअन् फ़ अख़्रजा बिही मिन-स्समराति रिज़्क़ऽल्लकुम्, व सख़्ख़र लकुमुऽल् फ़ुल्का लि तज्रिया फ़िऽल् बह्रि बि अम्रिही, व सख़्ख़रा लकुमुऽल् अन्हार् ॥

अल्लाह वह है जिसने आकाश और पृथ्वी की रचना की और आकाश से पानी उतारा फिर उससे तुम्हारी मेवा-भोजन निकाला, और तुम्हारे काम में नौका दी कि नदी में अल्लाह की आज्ञा से चले और तुम्हारे लिये नदियों को उपयोगी सिद्ध किया।

(६) व सख़्ख़रा लकुमु-श्शम्सा व ऽल्क़मरा दाऽइबयनि, व सख़्ख़रा लकुमु-ल्लयूलाव-न्नहाऽर् ॥

और तुम्हारे सूर्य और चन्द्रमा एक नियम में नियुक्त किये और तुम्हारे रात्रि और दिन नियुक्त किये।

(७) व आताकुम्मिन् कुल्लि मा ऽ सअल्तुमूहु; व इन् तउद्दू ऽ निअ्मतऽल्लाहि ला ऽ तहसूहा ऽ; इन्नऽल् इन्सा ऽ ना लज़लूमुन् कफ्फ़ा ऽ र् ॥

और तुम्हें प्रत्येक वस्तु में से—जो तुमने मांगी—दिया; और यदि अल्लाह के उपकार गृहण करो तो पूर्ण नहीं कर सकोगे; निश्चय मनुष्य महान् अत्याचारी है।

[मं० ३, पारा १३, रु० ६।७]

(१) व इज़्क़ाऽला इब्राहीमु रब्बिऽज् अल् हाज़ऽऽल् बलदा आमिनऽव्वऽज्नुब्नी व बनिय्या अन्नअ्बुदऽल् अस्ना ऽ म् ॥

और जिस समय इब्राहीम ने कहा—"हे पालनकर्त्ता ! इस शहर को शान्ति का कर और मुझको और मेरी सन्तान को मूर्त्तियों के पूजने से बचा।

(२) रब्बि इन्नहुन्ना अज़्लल्ना कसीरऽम्मिन—न्ना ऽ सि, फ़ मन् तबिअ़नी फ़ इन्नहू मिन्नी, व मन् असा ऽ- नी फ़ इन्नका ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

हे पालनकर्त्ता ! उन्होंने अनेकों मनुष्यों को बहकाया, अतः जो कोई मेरे मार्ग पर चला वह तो मेरा है, और जिसने मेरी आज्ञा पालन की तो क्षमा करने वाला दयालु है।

(३) रब्बनाऽ इन्नीऽ अस्कन्तु मिन जुर्रिय्यती बिवाऽदिन गयरिज़ी ज़र् इन इन्दा बयूतिकऽल्‌ मुहर्रमि रब्बनाऽ लि युक़ीमुऽस्सलाता फ़ऽज्अल् अफ़् इदतम्मिन-न्नाऽसि तह्वीऽ इलयहिम् वर्ज़ुक़्हुम्मिन-स्समराति लअ़ल्लहुम् यश्कुरून ॥

हे हमारे पालनकर्त्ता ! मैंने अपनी कुछ सन्तान बन में, जहाँ खेती नहीं होती, तेरे पवित्र गृह के निकट बसाई—हे हमारे पालन-कर्त्ता ! जिससे कि नमाज़ स्थिर रक्खें फिर लोगों में से कुछ के हृदय ऐसे करदे कि उनकी ओर झुकें और उन्हें मेवा (फल आदि) भोजन दे कदाचित यह कृतज्ञ हों।

(४) रब्बनाऽ इन्नका तअ़्लमु माऽ नुख़्फ़ी व माऽ नुअ़्लिनु; व माऽ यख़्फ़ा अ़लऽल्लाहि मिन् शयइन् फ़िऽल् अर्ज़ि वलाऽ फ़ि-स्समाऽअ् ॥

हे हमारे पालनकर्त्ता ! तू तो जानता है जो हम गुप्त रक्खें और जो हम प्रगट करें; और अल्लाह पर न पृथ्वी में कुछ छिपा है और न आकाश मे।

(५) अल्हम्दु लिल्लाहिऽल्लज़ी वहबा ली अ़ल-ऽल् किबरि इस्माईला व इस्हाक़ा, इन्ना रब्बी ल समी-उ़ द्दुआऽअ् ॥

अल्लाह को धन्यवाद है कि जिसने मुझे वृद्धावस्था में इस्माईल और इसहाक़ प्रदान किये; निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता प्रार्थना सुनता है।

(६) रब्बिऽज् अल्नी मुक़ीम-स्सलाति व मिन् ज़ुर्रिय्यती रब्बना वतक़ब्बल् दुआऽअ् ॥

हे मेरे पालनकर्त्ता! मुझे (इस योग्य) कर कि मैं नमाज़ स्थिर रक्खूं और हे पालनकर्त्ता ! मेरी सन्तान को भी (इसी योग्य कर) और प्रार्थना स्वीकार कर।

(७) रब्बनऽऽग़्फ़िर्ली व लि वाऽलिदय्या व लिल् मुअ्मिनीना यव्मा यक़ूमुऽल् हिसाऽब् ॥

हे हमारे पालनकर्त्ता! मुझको और मेरे माता पिता को और सब विश्वासियों को, जिस दिन लेखा स्थिर होवे, क्षमा प्रदान कर।

[मं० ३ पारा १३ रु० ७.११]

(१) व लाऽ तहसबन्नऽल्लाहा ग़ाऽफ़िलऽन् अम्माऽ यअ्मलु-ज़्ज़ालिमूना; इन्नमाऽ युअख़्ख़िरुहुम् लि यव्मिन् तश्ख़सु फ़ीहिऽल् अब्साऽर् ॥

और मत समझ कि अल्लाह इन कार्य्यों से—जो अत्याचारी करते हैं—अनभिज्ञ है; उनको तू उस दिन पर छोड़ रखता है जिस दिन उनकी आंखें ऊपर लग जावेंगी।

(२) मुहृतिईना मुक़िनई, रूऊसिहिम् लाऽ यर्तद इलैहिम् तर्फ़ुहुम् व अफ़इदतुहुम् हवाऽउन् ॥

अपने शिर उठाये हुये दौड़ते होंगे और उनकी दृष्टि उनकी ओर न लौटेगी और उनके हृदय उड़ जायेंगे।

(३-४) व अन्ज़िरि-न्नाऽसा यउमा यअ्तीहिमुल्-अज़ाऽबु फ़ यक़ूलुऽल्लज़ीना ज़लमूऽ रब्बना२ अख़्ख़िर्ना२ इलाऽ अजलिन क़रीबिन्नुजिब् दअ्वतका व नत्तबिइऽ-र्रुसुला, अवलम् तकूनू२ अक़्सम्तुम्मिन क़ब्लु माऽ लकुम्मिन ज़वाऽलिन्व सकन्तुम् फ़ी मसाकिनि-ऽल्लज़ीना ज़लमू२ अन्फ़ुसहुम् व तबय्यना लकुम् कयफ़ा फ़अल्नाऽ बिहिम् व ज़रब्नाऽ लकुमुऽल् अम्साऽल् ॥

और लोगों को उस दिन से भय दिलावें कि उनको प्रकोप आवेगा तब अत्याचारी कहेंगे—"हे हमारे पालनकर्ता! हमको कुछ समय की छुट्टी दे कि हम तेरा निमन्त्रण स्वीकार करें और पैग़म्बरों के साथ हों, तुम आगे शपथ न खाते थे; क्योंकि तुम्हारे निमित्त कोई न्यूनतता नहीं थी और तुम उन्हीं के नगरों में बसे थे जिन्होंने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया और तुम पर प्रगट

हो चुका कि हमने उन पर कैसा किया और हमने तुमको दृष्टान्त बतलाये ।

(५) व क़द मकरूऽ मक्रहुम् व इन्दऽल्लाहि मक्रुहुम्; व इन् काऽना मक्रुहुम् लि तज़ूला मिन्हुऽल् जिबाऽलु ॥

और वह अपना छल कर चुके हैं और उनका छल अल्लाह के आगे है; और उनका छल ऐसा न होगा कि उससे पर्वत टल जावें ।

(६) फ़लाऽ तहसबन्नऽल्लाहा मुख़्लिफ़ा वअ्दिही रुसुलहू, इन्नऽल्लाहा अज़ीज़ुन ज़ुऽन्तिक़ाऽम् ॥

अतः यह मत समझ कि अल्लाह अपने पैग़म्बरों से अपनी प्रतिज्ञा पृथक् करेगा; निस्सन्देह अल्लाह बलवान और परिवर्त्तन करने वाला है ।

(७) यउमा तुबद्दलुऽल् अ़ज़ु ग़यरऽल् अर्ज़ि वऽस्समावातु व बरज़ूऽ लिल्लाहिऽल् वाऽहिदिऽल् क़हहाऽर ॥

जिस दिन इस पृथ्वी से और पृथ्वी बदली जायगी और आकाश (भी) और मनुष्य एकमात्र बलशाली अल्लाह के सन्मुख निकल खड़े हों ।